ज्योतिष पुस्तक माला

फलित ज्योतिष

महेन्द्रनाथ केदार

भारतीय प्राच्य एवम् सनातन विज्ञान संस्थान

फलित ज्योतिष

ज्योतिष पुस्तक माला

फलित ज्योतिष

महेन्द्र नाथ केदार

प्रकाशक

भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान

मूल्य : ₹ 400-00

बारहवां संशोधित संस्करण, मार्च 2011
तेरहवां संस्करण, 23 सितम्बर 2012 (श्री राधाष्टमी, सम्वत् 2069)
विस्तृत एवं संशोधित संस्करण जन्म अष्टमी सम्वत् 2070 (तदानुसार 28 अगस्त 2013)
पंद्रहवां संशोधित संस्करण, राम नवमी, सम्वत् 2073
सोलहवाँ संस्करण, चैत्र शुक्ल पड़वा (प्रथम नवरात्री) शुभ सम्वत् 2075 तदानुसार 18 अप्रैल 2018 (रविवार)
© भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली

लेखक
महेन्द्र नाथ केदार
बी. ए., एस. ए. एस., डी. आई. एम.,
281 आम्रपाली अपार्टमैन्ट्स, 56 इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली-110092
दूरभाष - 9811040963, 9871666660

प्रकाशक
भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान (पंजी.)
4649/21 दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष - 011-23271975, 011-22248601

लेजर टाइपसैटिंग :
एब्रो एन्टरप्राईजिज
2369, छत्ता शाहजी, चावड़ी बाजार,
दिल्ली-110006
दूरभाष : 23284462

मुद्रक :
अशोक प्रिंटिंग प्रेस
2810, गली माता वाली, नई सड़क,
दिल्ली-110006
दूरभाष : 23264968, 9810377836

पुस्तक मिलने का पता

आर.वी.एस. बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स
जी-4/30, गली नं. 3, पांचवा पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110094
फोन : 09582971153, 09953918219

पुस्तक भारती
भारतीय विद्या भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली—110001
फोन : 23381369

प्रस्तावना

ज्योतिष एक दैवी विज्ञान है जिससे भविष्य में झांकने में हमें सहायता मिलती है। वैदिक ज्योतिष, (जिसे हिन्दू ज्योतिष प्रणाली के नाम से जाना जाता है) हस्तरेखा, प्रश्न, वर्षफल आदि सभी मानव कल्याण के लिये उपयोगी है क्योंकि वह मानव का मार्गदर्शन करते हैं।

ज्योतिष शास्त्र पिछले जन्मों में जातक द्वारा किए गए कर्मों के फल का एक चित्र झलकाता है। कर्म तीन प्रकार के होते हैं–

1. संचित कर्म
2. प्रारब्ध कर्म
3. क्रियमान या आगामी कर्म

जन्म कुण्डली में संचित कर्म प्रदर्शित होते हैं अर्थात् पिछले जन्मों में किए गए कर्मों के अभुक्त शेष फल इसमें प्रदर्शित होते हैं। (जिसे अच्छे या बुरे कर्मों का तुलना पत्र कहा जा सकता है)। इन संचित कर्मों के फल जिन्हें 'प्रारब्ध' कहते हैं वह इस जन्म के लिए (वर्तमान जन्म के लिए) आबंटित होते हैं। जातक को अच्छे कर्मों के शुभ और दुष्ट कर्मों के अशुभ फल मिलते हैं जिसके परिणामस्वरूप उसे कष्ट भोगना पड़ता है। यह उस दशाक्रम और गोचर स्थिति पर निर्भर करता है जो जातक को इस जन्म में मिलता है।

तीसरी श्रेणी के कर्म अर्थात् क्रियमान या आगामी कर्म वह कर्म है जो जातक इस जन्म में करता है। इन कर्मों के फल जातक को वर्तमान जन्म में मिलते हैं अथवा वे कर्म संचित कर्म के खजाने में जमा हो जाते हैं। यह भी इस जन्म में जातक को प्राप्त दशाक्रम और गोचर स्थिति पर निर्भर करता है। हमने अनेक लोगों को निष्ठापूर्वक पूर्ण ईमानदारी से काम करते हुए देखा है और वह उसके विशेष फल को प्राप्त करने के योग्य होते हैं किन्तु उन्हें उसकी प्राप्ति नहीं होती। जो व्यक्ति कम निष्ठावान होता है

और शुभ फल प्राप्त पाने की योग्यता नहीं रखता फिर भी उसे शुभ फल की प्राप्ति हो जाती है। इस का कारण है कि शुभ ग्रहों की दशा होती है तो उसे सफलता मिल जाती है और अशुभ ग्रहों की दशा में उसे शुभ फल नहीं मिलता।

फलित करना अत्यधिक कठिन है। यदि पूर्ण अध्ययन नहीं किया गया तो सही फलित नहीं किया जा सकता। ज्योतिष के रहस्य और गहन सिद्धांतों के अर्थ को समझने तथा उसे लागू करने के लिए गहन चिंतन की आवश्यकता है। हमें ईश्वर से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें इस पवित्र विज्ञान को सीखने तथा वैदिक ज्योतिष की सहायता से मानव जाति की सेवा करने में हमारी सहायता करें।

हमने ज्योतिष की विभिन्न प्राचीन पुस्तकों में दिए गए सिद्धांतों को सरल ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। आवश्यकतानुसार उदाहरण द्वारा उसे स्पष्ट भी किया गया है।

1993 में प्रथम बार यह पुस्तक प्रकाशित हुई थी। तदोपरान्त इसके पंद्रह संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। पाठकों, ज्योतिष के विद्यार्थियों एवं ज्योतिषियों द्वारा इसको बहुत सराहा गया है। श्री पंकज जोशी, ज्योतिष विशारद ने इस संस्करण को त्रुटि मुक्त बनाने में जो सहयोग दिया है वह सराहनीय है। मुझे कोई संकोच नहीं होगा यदि मैं अपनी भतीज बहु श्रीमती लीना केदार, ज्योतिष विशारद को भी अपना आभार और आप सबकी ओर से शुभाशीष की कामना करूँ क्योंकि उनका योगदान भी मुझे पूर्ण रूपेण प्राप्त हुआ है। भगवान उनको ज्योतिष ज्ञानार्जन में सहायक हों। इसका विराट संशोधित संस्करण प्रस्तुत है।

हम सुझावों का सदैव स्वागत करते हैं।

भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान
दिल्ली

कृतज्ञता

मोरि सुधारिहिं सो सब भांति।
जासु कृपा नही कृपा अघाती।।

ज्योतिष में विशेष रूचि भविष्य फल जानने के कारण, नहीं केवल ज्ञान प्राप्ति की लालसा से ही रही। यदि समर्पित भाव से कर्म किया जाए तो भगवान स्वयं दायित्व सम्हाल लेते हैं।

"जिसके सिर उपर तू स्वामी सो दुख कैसा पावे" माता पिता की गोद में बालक सदैव सुखी व सुरक्षित रहता है। माता पिता के आर्शीवाद से भगवान पर भविष्य छोड़ने का स्वभाव सदा से रहा। मेरे पिता श्री केदार नाथ (सीनियर) एडवोकेट, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन भगवान शिव की अराधना में लगा दिया, पूर्णरूपेण आत्म-समर्पण कर दिया था, केवल अपने कर्त्तव्य पालन व दूसरे के हित की चिन्ता में डूबे रहे। भगवान की मेरे माता पिता पर सदैव कृपा बनी रही मुझे उनका पुत्र होने पर गर्व है और मैं उस परमपिता परमात्मा का इस उपकार के लिए सदा आभारी रहूंगा। मैंने भगवान की उस कृपा को बहुत करीब से देखा है।

सौभाग्य से मेरी धर्म पत्नी ब्रह्मलीन सरोजिनी केदार ने फरवरी 2013 तक इस कार्य में मेरा पूर्ण सहयोग दिया, तब ही ज्योतिष का अध्ययन व कार्य कर पाया।

भगवत कृपा और संयोगवश मुझे ज्योतिष का अध्ययन करने को मिला। भगवत भजन व सन्तों का संग तो मिला ही गुरू कृपा से ज्योतिष का ज्ञान भी प्राप्त हुआ। उस दिन से आज तक प्रभु के आदेश का पालन हो रहा है। मैं अपने गुरु का भी आभारी हूँ जिनकी कृपा से मैं इस योग्य बना। मम पुत्रीवत श्रीमती कुसुम वशिष्ठ का इस पुस्तक की संरचना में सहयोग सराहनीय है। मैं उन विद्यार्थियों का भी आभारी हूं जिनके आग्रह से यह पुस्तक लिखनी संभव हो पायी। भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान, जिसने इस पुस्तक को प्रकाशित किया उसका भी आभार प्रकट करना है। पाठक इसे स्वीकार करें तो मेरा अहोभाग्य होगा।

त्वदीयं वस्तु गोविदं तुम्यमेव समर्पये।

महेन्द्र नाथ क़ेदार

आत्मकथ्य

इंडियन कौंसिल आफ एस्ट्रोलॉजिकल साइसेंज, चेन्नई द्वारा संचालित ज्योतिष विशारद की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में '*द्वादश भावों के संदर्भ में भावनिर्णय एवं मानव जीवन में संभावित घटनाओं की विवेचना* (Judgement of Bhavas wth reference to the twelve houses. Annalysing 12 different houses for concerning events in life) *तथा घटनाओं का दशा व गोचर के द्वारा समय निर्धारण* महत्त्वपूर्ण विषय हैं। इन विषयों पर अंग्रेजी में श्री एम. एन. केदार द्वारा लिखित Judgement of Bhavas and Timing of Events through Dasa and Transit नामक पुस्तक अपने आप में अद्वितीय है जिसमें उन्होंने भाव निर्णय, वक्री ग्रह, दशा तथा अन्तर्दशाओं आदि के फल का सरल भाषा में विवेचन किया है। पुस्तक की एक विशेषता यह है कि वृहत पाराशरहोरा, जातक पारिजात, जातकाभरणम, वृद्धयवन जातकम जैसे ग्रन्थों का सार एक साथ ही उपलब्ध हो जाता है, साथ ही विद्वान लेखक ने अपने अनुभव के आधार पर इन दशाओं में मिलने वाले फल को भी दृष्टाँत देकर प्रस्तुत किया है। इस ज्ञानसुधा का रसपान करने से हिन्दी भाषी ज्योतिष प्रेमी पाठक व विद्यार्थी वंचित थे।

गत वर्ष दैवयोग से मेरे आदरणीय गुरुवर श्री रमेश चिन्तक जी, चेयरमैन, कानपुर चैप्टर, आई. सी. ए. एस. ने श्री एम. एन. केदार जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, आई. सी. ए. एस. से दिल्ली जाकर मिलने को निर्देशित किया। ज्योतिष जगत की महान विभूति श्री एम. एन. केदार जी से मेरा प्रथम साक्षात्कार अविस्मरणीय रहा। उनकी सरलता व सादगी हृदय को छू लेती है। उसी दिन श्री एम. एन. केदार जी ने ज्योतिष के प्रति मेरी रूचि और गहन अध्ययन की प्रबल इच्छा देखकर मुझे अपनी इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करने के लिए कहा, तो मैंने इसे ईश्वरीय कृपा समझ अपनी दिल्ली यात्रा को सार्थक माना।

मैंने अपनी अल्प बुद्धि से पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करने का प्रयास किया है। आशा है, हिन्दीभाषी ज्योतिष प्रेमी पाठकों को मेरा यह प्रयास पसन्द आयेगा। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आदरणीय गुरुवर श्री रमेश चिन्तक जी के आशीर्वाद तथा मार्गदर्शन के फलस्वरुप यह पुस्तक ''**फलित ज्योतिष**'' हिन्दी भाषी विद्यार्थियों तथा ज्योतिष प्रेमी पाठक जो वैज्ञानिक ढंग से ज्योतिष अध्ययन करके ज्ञानवर्धन एवं सतप्रतिशत भविष्य कथन करना चाहते हैं उनके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

नीरज जोशी

एम. टेक्स्ट, ज्योतिष विशारद (2002)

लेखक का परिचय

श्री महेन्द नाथ केदार का जन्म दिनाँक 10 जून 1933 (शनिवार) को प्रात: 9 बज कर 11 मिनट (9 घटी 27 पल 8 विपल) आषाढ़ कृष्ण तृतीय सम्वत् 1990 शाका 1855 को दिल्ली के एक धार्मिक/संभ्रांत व प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। भारत के नियन्त्रक महालेखा परीक्षक के कार्यालय से एक वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी के पद से निवृत्त हुए। आप सदैव समाज तथा मानव उत्थान के लिए सेवारत रहे, देश प्रेम तथा भारतीय संस्कृति के पुजारी रहे हैं। 1994 में आपको दिल्ली की सौ वर्ष पुरानी संस्था वैश्य बीसा अगवाल ने **"वैश्य शिरोमणि"** की उपाधि देकर सम्मानित किया। भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (पंजीकृत) मद्रास के दिल्ली चैप्टर के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में 1987 में भारतीय विद्या भवन दिल्ली में डा. बी. वी. रमन (परिषद के संस्थापक प्रधान) एवं अपने गुरु श्री के. एन. राव के आशीर्वाद तथा अपने सहयोगी न्यायाधीश शंकर नाथ कपूर (तत्कालीन मन्त्री दिल्ली चैप्टर) वर्तमान में, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद, सर्व श्री आर. एन. वशिष्ठ, श्रीमती (डा.) ललिता गुप्ता, जे. एन. शर्मा, जैड अंसारी, आर. के. विश्वकर्मा के साथ मई, 1987 में भारतीय विद्या भवन दिल्ली में आइकास के तत्त्वाधान में ज्योतिष की कक्षाऐं (अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम) प्रारंभ की परन्तु ग्रहों के वशीभूत होकर जनवरी 1995 से आइ. कास. की कक्षाऐं भारतीय विद्या भवन से हट कर चलाई, जो आज दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों (1) पूसा रोड, (2) रूप नगर, (3) यमुना पार (मधुविहार) (4) सरस्वती बाल मन्दिर, एल ब्लाक हरि नगर (5) फरीदाबाद (6) गुड़गाँव (7) साकेत (8) नौएडा आदि स्थानों पर समाज के प्रतिष्ठित/शिक्षित वर्ग को ज्योतिष की शिक्षा देकर ज्योतिष की वैज्ञानिक महत्ता का आभास करवा रहे हैं। 1993 में पत्राचार द्वारा ज्योतिष प्रशिक्षण शुरु किया जो 1996 तक चला। इसी बीच आवश्यकतानुसार

पाठ्यक्रम के आधार पर पुस्तकें लिखकर ज्योतिष पढ़ने वालों को लाभान्वित किया तथा शिक्षण को अति सरल बना दिया। अपनी पुस्तकों एवं स्मारिकाओं में शोध कार्य प्रकाशित कर अनेकों शंकाओं का समाधान किया। आप सरलतम ढंग से फलित करने की विधि के लिए प्रसिद्ध हैं। परन्तु वह स्वयं को एक विद्यार्थी, जिज्ञासु तथा ज्योतिष समाज के एक सेवक के रूप में ही मानते हैं।

अन्य विद्वानों द्वारा आपकी प्रशंसा

1. ए बुक आन प्रोफैशन (1993 में प्रकाशित)

   एम. एन. केदार एक सुविख्यात वैदिक ज्योतिषी हैं।

   श्री के. एन राव के नाम के बाद एक अनुभवी तथा सफल ज्योतिषी के रूप में आप ही माने जाते हैं।

2. **श्रीमती गायत्री देवी वासुदेव (सुपुत्री डा. बी वी रमन), संपादक-ऐस्ट्रोलॉजिकल मैगजीन**

   भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् आज संसार में सबसे शक्तिशाली संस्था बन चुकी है। जिसके पीछे एम. एन केदार जैसे ईमानदार एवं समर्पित ज्योतिष के विद्वानों का योगदान है जिन्होंने हृदय, तन, मन, धन से इसको सींचा है तथा पल्लवित किया है। (अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन (2-3 नवम्बर 1996)

3. श्री के. एन. राव के विभिन्न समय पर प्रकट किये गये विचार

   एडवाँस टेकनीक्स आफ एस्ट्रोलोजिकल प्रिडिक्शन (1991) में प्रकाशित–केदार जी की ज्योतिषीय योग्यता बहुमुखी है। उनकी शिक्षा, विवाह एवं व्यवसाय संबन्धी परामर्श उन्हें विश्व के उच्च कोटि के सफल ज्योतिषियों की श्रेणी में रखता है।

एम. एन केदार की पहचान है उनकी गहन शोध कृतियाँ जिनमें वर्गों का फलित ज्योतिष में प्रयोग दर्शाया गया है। उनके अनेकों विद्वत्तापूर्ण लेख अंग्रेजी व हिन्दी में छपते रहे हैं।

कुज दोष (मंगली दोष), व्यवसाय, कुण्डली मिलान एवं अन्य विषयों पर उनके शोध कार्य को न केवल सराहा गया बल्कि प्रयोग एवं उद्धृत किया जाता रहा है। मंगल तथा शनि की तीसरे भाव में स्थिति इनकी व न्यायाधीश एस. एन. कपूर की एक अद्भुत शोधकृति है जो संसार की प्रमुख ज्योतिष पत्रिकाओं तथा एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन्स, रश्मि विज्ञान, ज्योतिषमति, ज्योतिष मंथन आदि में प्रकाशित हो चुकी है।

'अपराध' पर ज्योतिषीय शोधकृत लेखों की एक श्रृंखला भी एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन में प्रकाशित हुई है। शिक्षा संबंधी परामर्श, विवाह समय निर्धारण, वैवाहिक जीवन में साम्यता तथा असाम्यता आदि विषयों पर कुशल मार्गदर्शक के रूप में इनकी पहचान है।

इनकी विशेषताएँ

वास्तव में उभरते हुए विद्यार्थियों एवं ज्योतिषियों के लिए एक समर्पित अध्यापक एवं गुरु, मित्र तथा मार्गदर्शक के रूप में माने जाते हैं। सेवानिवृत्त होने के बाद आप पूरा समय ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन, अध्यापन तथा शास्त्र के प्रचार में लगा रहे हैं। आपके अनेकों शोध लेख, जो पाठकों को नये-नये विचारों से अवगत कराकर शास्त्र अध्ययन के लिए प्रेरणा देते हैं, स्मारिकाओं तथा ज्योतिष पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आपकी अनेकों पुस्तकें स्वलिखित तथा सहायक लेखक के रूप में भी प्रकाशित हुई हैं जो पाठकों के ज्ञानवर्धक एवं शंका समाधान करने वाली मानी गई हैं।

आपने विदेशीयों के लिये छोटे-छोटे समय के लिए निःशुल्क कक्षाएँ चलाकर उन्हें ज्योतिष ज्ञान दिया जिसके कारण विदेशों में भी आपकी पुस्तकों एवं ज्ञान की प्रशंसा होती है।

आप भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे, वर्तमान में तकनीकी सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं।

श्री एम.एन. केदार जी, भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान, दरियागंज, दिल्ली के महामंत्री एवं प्रधान रहे हैं। आप पिछले दो दशक से ज्योतिष के विद्वानों को सपरिवार भारत के विभिन्न तीर्थ स्थलों पर ले जाकर ज्योतिष कार्यशाला का आयोजन कर स्थानीय विद्वानों को आमंत्रित कर सम्मानित करते हैं। भजन, स्त्रोत पाठ, हवन आदि करवाते हैं। देश में कहीं आपत्ति होती है तो इनकी संस्था सबसे पहले सहायता लेकर पहुँचती है। अभी हाल में 23 जून से 26 जून, 2013 में देहरादून जाकर उत्तराखण्ड में पड़ी विपत्ति के लिए अपनी संस्था से यथा शक्ति योगदान देकर लौटे हैं।

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली के अतिथि संकाय सदस्य भी रहे हैं।

सम्मान

निम्नलिखित संस्थाओं ने इनकी विद्वता एवं ज्योतिष शास्त्र की अनन्य सेवाओं, प्रबुद्ध व्याख्यान, शोध एवं प्रयोगात्मक शैली द्वारा शैक्षण के लिए इनको सम्मानित किया है।

1. दी इन्स्टीट्यूट ऑफ ऐस्ट्रोलोजी एण्ड ऑकल्ट साइंसिस, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली-(दिसम्बर 1989)
2. भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (पंजीकृत) चेन्नैई के द्वितीय अखिल भारतीय सम्मेलन, पूना में आपको सम्मानित किया गया (1994)
3. मौडर्न एस्ट्रो स्टडीज (स्थापित 1930) बंगलौर ने स्वर्ण जयन्ती के समारोह के अवसर पर विशेष उपाधि द्वारा सुशोभित किया।
4. भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद, दिल्ली चैप्टर ने इनकी अभूतपूर्व सेवाओं एवं ज्योतिष कार्यशालाओं, सम्मेलनों, दीक्षान्त समारोह के आयोजन एवं शोधकार्यों के लिए सम्मानित किया (1989)
5. देश की एक महान संस्था भारत निर्माण ने राष्ट्रीय सम्मेलन, 24 से 26 दिसम्बर 1993 में **प्राचार्य आवार्ड** तथा **ज्योतिष सुधाकर** (17 दिसम्बर 1996) द्वारा सुशोभित किया।

1995 में भारत निर्माण ने इनके ज्योतिष में सर्वोच्च योगदान के लिए **प्राचार्य आवार्ड** दिया।

मिस्टिक इण्डिया एण्ड ऑकल्ट इण्डिया फाउण्डेशन द्वारा अक्टूबर 1999 में आर्यभट्ट के अवार्ड से सम्मानित किया।

6. त्रिस्कन्ध ज्योतिष में दक्षता के लिए **ज्योतिष वाचस्पति** की उपाधि से 1996 में इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोलोजी एण्ड आकल्टीज्म, दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया।
7. भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (पंजी) चेन्नैई, ने ज्योतिष वाचस्पति (1991), ज्योतिष भूषण (1996) तथा ज्योतिष भानु (1999), ज्योतिष आचार्य (9 जुलाई 2006) तथा ज्योतिष मार्तण्ड, 2 जुलाई 2011) उपाधियाँ देकर सुशोभित किया।
8. अखिल भारतीय विराट् ज्योतिष सम्मेलन 2001 में वेदाँग ज्योतिष अनुसंधान संस्था कोटा (राजस्थान) द्वारा
9. अखिल भ़ारतीय ज्योतिष महासम्मेलन (2000) में गायत्री ज्योतिष एवं परामनोविज्ञान शोध संस्थान, अजेमर द्वारा।
10. कालिदास अकादेमी, उज्जैन द्वारा (2001)
11. नेशनल फैड्रेशन आफ एस्ट्रोलाजी एण्ड स्प्रीच्युल साइंस, चन्डीगढ़ (भारत) मातारा (श्रीलंका) द्वारा
12. प्राच्य विद्या ज्योतिष अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान ने **एस्ट्रो साइंटिस्ट** की उपाधि द्वारा ज्योतिष महाकुंभ प्रयाग में (2001)
13. ज्योतिष महाविद्यालय (इंडिया), दिल्ली द्वारा (2000)
14. विश्व तंत्र-ज्योतिष, ज्योतिष-अनुसंधान केन्द्र, आध्यात्मिक साधना-सिद्धि केन्द्र, जोधपुर द्वारा '**ज्योतिष मनीषी**' उपाधि द्वारा।
15. दिव्यज्योति कालिज ऑफ एस्ट्रोलोजी बंगलौर द्वारा वेदिक ज्योतिष तथा एलाइड साइंसेस पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय समागम में (अप्रैल-मई 2009 में) ज्योतिर्विद्या वाचस्पति तथा दिसम्बर 2012 में ज्योतिष **महा महोपाध्याय की उपाधी** से सुशोभित किया।

16. फ्यूचर पाइंट, दिल्ली ने 'नक्षत्र मेला' आयोजन 2010 तथा 2011 में त्रिस्कन्ध ज्योतिष में दक्षता होने पर सम्मानित किया।

17. डा. राधाकृष्ण श्रीमाली द्वारा आयोजित शहस्राब्दी-सम्मान समारोह, जोधपुर, **ज्योतिष मनीषी** की उपाधि से सम्मानित किया।

श्री एम. एन. केदार ने अनेकों ज्योतिष कार्याशालाओं तथा विचार विमर्श सभाओं मे भाग लिया जिनमें कुछ का विवरण दे रहे हैं।

(*i*) श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा मैडिकल एस्ट्रोलोजी पर आयोजित संगोष्ठी में

(क) 27 तथा 28 मार्च 2008

(ख) 29-30 मार्च 2011

(*ii*) एस्ट्रो साइंटिस्ट/प्राच्य विद्या ज्योतिष अध्ययन तथा अनुसंधान संस्थान इलाहबाद द्वारा आयोजित

24-25 अक्टूबर 1998, प्रयाग में

(*iii*) भारतीय ज्योतिष शोध संस्थान, पलवल (19 नवम्बर 2001) में

(*iv*) ज्योतिष महाविद्यालय (भारत), नई दिल्ली द्वारा आयोजित बाहरवें वार्षिक ज्योतिष सम्मेलन एवं निःशुल्क शिविर के अवसर पर

(*v*) डा. देवी प्रसाद गौड़ प्राच्य विद्या अनुसंधान संस्थान (पंजी) इलाहाबाद द्वारा 29 अक्टूबर 1999, को आयोजित समारोह में

(*vi*) भारतीय ज्योतिष परिषद इंदौर द्वारा 2-3 अक्टूबर 2000 को आयोजित सम्मेलन में

(*vii*) ज्योतिष मंथन, जयपुर द्वारा आयोजन में (12 नवम्बर 2000)।

(*viii*) अंतर्राष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास संस्थान फतेहपुर बेरी, महरौली द्वार 15 अगस्त 2001 को 'ज्योतिष समराट' की उपाधि दी गई।

(*ix*) अखिल भारतीय ज्योतिष स्वाध्याय संस्थान, दिल्ली द्वारा दिसम्बर 1997 को **'ज्योतिष शिरोमणी'** द्वारा अलंकृत किए गए।

(*x*) महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, ज्योतिषपुरम, रतलाम द्वारा 4 जनवरी 2004 को **'अभिनव मिहिर सम्मान'** द्वारा अलंकृत किए गए।

(*xi*) आल इण्ड़िया फैडरेशन ऑफ ऐस्ट्रोलोजिकल सोसाइटीस द्वारा आयोजित इंटरनेशनल सिम्पोजियम ऑन ऐस्ट्रोलोजिकल साइंसेस, अहमदाबाद 26-27 दिसम्बर 2011 को

(*xii*) ह्यूमन केयर चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी) साकेत, दिल्ली द्वारा 12 अगस्त 2011 को **''लाइफ टाइम्स अजीवमैन्ट अवार्ड''** दिया गया।

(*xiii*) दिल्ली एस्ट्रो सर्किल द्वारा 16 फरवरी 2013 को इण्डिया इंटरनेशनल सैंटर के सभागार, लोधी गार्डन्स दिल्ली में **''लाइफ टाइम अचीवमैन्ट अवार्ड''** से सुशोभित किया।

एस्ट्रोलॉजिकल रिसर्च इंस्टिच्यूट इंडिया, देवधर (वैद्यनाथ धाम), झारखण्ड में दिसम्बर 2012 में।

श्री केदार इनके अतिरिक्त एक सलाहकार संरक्षक, मार्गदर्शक के रूप में भी अनेको स़ंस्थाओं से जुड़े हैं।

लेखक इन सबको ज्योतिष का सम्मान मानते हैं यह उनकी मान्यता है।

विद्या ददाति विनयम्।

तथा

सर्वे भवन्तु सुखिनः।।

वे विनय शील है तथा सब के सुख की कामना करते हैं।

श्री केदार जी को यह सब दिखाने की इच्छा नहीं है, वह तो एक विद्यार्थी एवं सेवक के रूप में ज्योतिष अध्ययन व प्रचार-प्रसार करना चाहते हैं। परन्तु आज के युग में इसकी आवश्यकता है इसलिए उपलब्धियों का विवरण हम उनकी इच्छा न होते हुए भी कर रहे हैं जिसके लिए केदार जी हमें क्षमा करेंगे।

भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान

विषय सूची

खण्ड–प्रथम

पाठ 1

भचक्र की राशियां और ग्रह

	पृष्ठ
नक्षत्र	1
नक्षत्र सारिणी	2
नक्षत्रों का परिचय	3
राशि, चिन्ह तथा स्वामी ग्रह एवं चिन्ह	5
जन्म-लग्न-निर्णय हेतु	6
ग्रहों की गति	7
नैसर्गिक शुभ और अशुभ ग्रह	8
ग्रहीय आधिपत्य अथवा ग्रहीय संचालन	9
ग्रहीय मंत्रालय	9
ग्रहीय देवता	9
व्यंजन और स्वर	10
ग्रहों के गुणधर्म	10
ग्रह एवं उनके लिंग	16
ग्रहों से इंगित दिशाएँ	16
ग्रह और उनके उच्च अंश आदि	16
उच्च/नीच ग्रह सारिणी	17
ग्रहों की मूलत्रिकोण राशि और अंश	18
श्री आदि शंकराचार्य की कुण्डली नं. I	19
उच्चाभिलाषी ग्रह	20
आरोही-अवरोही ग्रह	21
चंद्रमा के पक्षीय बल	21
प्रश्न-माला	22

पाठ 2

राशियां और उनकी विशेषताएं

राशियों की प्रकृति	23
राशियों के तत्त्व	23
विषम और सम राशियां	24
राशियों के लिंग	24
काल पुरुष के अंग और बारह राशियां	24
राशियां और (कफ, पित तथा वायु) प्रकृति तथा वर्ण	25
राशियों के तत्त्वों का प्रयोग	26
जल राशियां राशि व दिशाएं–दिवा बली-रात्रिबली	26
द्विपाद, चतुष्पाद, आदि राशियां, राशियों के चिन्ह	27
राशियों के गुणधर्म	28
पृष्ठोदय, शीर्षोदय व उभयोदय	31
अंधी, बहरी व लंगड़ी राशियाँ	31
प्रश्नमाला	31

पाठ 3

ग्रहों एवं भावों के कारकत्व भाग एक

कारक, कारकत्व और भाव	33
कारकत्व और ग्रह	34
ग्रह जो भावों के कारक हैं	38
ग्रह कतिपय संबंधों और वस्तुओं के कारक	39
प्रश्नमाला	39

पाठ 4

ग्रहों की अवस्थाएं

वालादि अवस्थाएं	40
सारिणी III–राशियाँ व ग्रहों की स्थिति	41
ग्रहों की उच्चतम, नीचतम, मूलत्रिकोण तथा	

अस्त ग्रह 43
ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री (तालिका), तात्कालिक मैत्री 44
पंचधा मैत्री, उच्च ग्रहों का फल, राहू तथा केतू 45
ग्रहों की अवस्थाओं की नौ श्रेणियाँ अथवा अवस्थाएं 47
सारिणी IV–नवग्रहों की दीप्तादि अवस्थाएं 48
अन्य शयनादि अवस्थाएं 50
वक्री ग्रह की चर्चा 51
प्रश्नमाला 53

पाठ 5

ग्रहों और भावों के कारकत्व भाग-दो

कारकतत्व-चर आदि कारक, आत्मकारकादि 54
स्थिर कारक, कारकग्रह और भाव के अनुसार कारक 56
बारह भावों के कारक 57
योगकारक ग्रह 58
डा. बी. वी. रमन की कुण्डली नं. II 59
प्रश्नमाला 59

पाठ 6

जन्म समय-संशोधन के सिद्धांत

जन्म समय के ज्ञान पर चर्चा 61
जन्म नक्षत्र का पता लगाना 63
जन्म लग्न निकालना 65
जन्म समय संशोधन, उदाहरणों सहित 67
कुण्डली नं. III तथा IV 68
अन्य विधि 70
जातक को देखकर लग्न का पता लगाना 71
निष्कर्ष 72
प्रश्नमाला 74

पाठ 7
दशा और अन्तर्दशा की परिगणनाएं

महात्मा गांधी की जन्मकुंडली विश्लेषण	75
महात्मा की जन्म कुंडली नं. V	75
सामान्य विश्लेषण	76
केन्द्र स्थान/त्रिकोण स्थानों पर चर्चा	77
गजकेसरी योग, अमल, लक्ष्मी व लग्नाधि योग	80
चामर, भाग्य व अन्य योग	81
दशा परिचय	83
नक्षत्र सारिणी तथा उनकी दशावधि	84
परिगणना की शास्त्रीय विधि	85
आधुनिक विधि	86
अन्तर्दशा की गणना	92

पाठ 8
लग्न/राशियों के परिणाम

भचक्र की 12 राशियों में लग्न		96
कुण्डली VI	जौर्ज फरनान्डिस	96
कुण्डली VII	श्री के करूणाकरण	97
कुण्डली VIII	फ्रांस की रानी	98
कर्क, सिंह लग्न		99
कुण्डली IX	गुरु नानक	100
कुण्डली X	हैरी ट्रयुमैन	101
कुण्डली XI	श्री चैतन्य	102
कुण्डली XII	चितरंजनदास	103
कुण्डली XIII	विवेकानंद	104
कुण्डली XIV	एम.एस. गोलवारकर	105
कुण्डली XV	श्री रामकृष्ण परमहंस	106

खण्ड–द्वितीय

पाठ 9

ग्रहों की दृष्टियाँ

ग्रहों का संबंध	109
विशेष दृष्टि	111
राहू/केतू, उनकी स्थिति के कारण	111
पाद दृष्टियाँ	112
प्रत्येक भाव की अवधि	113
पाश्चात्य ज्योतिषियों के अनुसार	114
ग्रहों के मध्य संबंध	116

पाठ 10

राशियों के लिए मुख्य ग्रह

भावों का सामान्य निर्धारण	121
योगकारक	123
केन्द्राधिपत्य दोष	123
बाधक स्थान और उनके स्वामी	124
त्रिषड्याधिपति	125
राशियों के समूह	126
सारिणी–विभिन्न लग्नों के लिए शुभाशुभ ग्रह	127

पाठ 11

आयुर्दया और मारक

आयुर्दया	135
बालारिष्ट	136
माता-पिता को कष्ट	137
दिन मृत्यु	137
दिन रोज	138
विष घटी काल	138

गण्डमूल	139
गण्डमूल सारणी	139
गण्डान्त फल	140
बालारिष्ट की अवधारणा	140
मृत्यु भागों के माध्यम से निर्णय	141
मुहुर्त/जन्म के समय चंद्रमा के शुभाशुभ अंश	142
बालारिष्ट भंग होने के योग	146
कुण्डली XVIII	150
आयुर्खण्ड का बटवारा	150
अंशायु, पिण्डायु, नैसर्गायु	151
आयुर्खण्ड का पता लगाना	153
सिद्धांत सारणीबद्ध प्रयुक्ति	154
कुण्डली XIX : श्री एल.एन. मिश्र	155
होरा लग्न की गणना	156
आर्युदया का विश्लेषण	157
मारक शक्ति	158

पाठ 12

ग्रह–विभिन्न राशियों में

सूर्य मेषादि	163
चंद्रमा मेषादि	170
मंगल मेषादि	177
बुध मेषादि	184
बृहस्पति मेषादि	190
शुक्र मेषादि	198
शनि मेषादि	206
राहू/केतु	214
कुण्डली XX/XXX : गुरु जी	215

भाग-तृतीया

पाठ 13

विशेष योग

योगों के प्रकार	217
चंद्र संबंधी योग	218
सूर्य व लग्न संबंधी योग	219
अन्य, महाभाग्य, विपरीतादि	220
कुण्डली XXI, XXII	224
अनफा योग	224
कुण्डली XXIII : इन्दिरा गांधी	225
कुण्डली XXIV : मोरारजी	226
कुण्डली XXV – XXVI	228
केमद्रुम योग	229
केमद्रुम भंग	230
कुण्डली XXVII	232
कुण्डली XXVIII	233
केमद्रुम योग भंग	234
गजकेसरी योग	236
कुण्डली XXIX : डॉ. वी.वी. रमन	238
कुण्डली XXX : डॉ. के.एन. राव	239
अमल योग	242
गरुड़ योग	242
वेसि योग	243
वासि योग	244
उभयचारी योग	246
कुण्डली XXXI : महिला	246
लग्नाधि योग	247
अमल योग, पंचमहापुरुष योग	248

भद्र योग	249
कुण्डली XXXII : वीर सावरकर	249
हंस योग	250
मालव्य योग	251
सस/ससक योग	252
केदार योग	253
सकट योग	253
महाभाग्य योग	254
विपरीत राजयोग	255
कुण्डली XXXIII (एस.एस. गुजराल)	261
कुण्डली XXXIV (मोरारजी देसाई)	262
विमल योग	264
कुण्डली XXXV (मारग्रेट अल्वा)	264
कुण्डली XXXVI (शिराज शहीद)	264
राजयोग	265
घटिक लग्न (गणना)	266
होरा लग्न (गणना)	267
उत्तराकालामृत के अनुसार	268
सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार	269
सारावली के अनुसार	269
राजयोग पर लेखक के मत	270
केन्द्र और त्रिकोण स्वामियों द्वारा राज योग	271
राजयोग भंग	272
कुण्डली XXXVII (श्री एस. एस. एस)	273
कुण्डली XXXVIII (संजय श्रीवास्तव)	274
नीचभंग राज योग	275
(*i*) नीच ग्रहों के प्रभावों के समझें	275
कुण्डली XXXIX (अमिताभ बच्चन (अभिनेता))	276
कुण्डली LX (डॉ. दिनेश)	277

भाग-चतुर्थ

पाठ 14

जातक निर्णय

जातक निर्णय का अर्थ	279
ज्योतिष एक उत्कृष्ट विज्ञान	279
फल निष्ठा पर निर्भर होता है	280
भविष्यवाणी की सफलता ईश्वर की कृपा पर निर्भर है	280
चार तत्त्वों के प्रभाव और पांच इन्द्रियों के साथ संबंध	280
इन्द्रियों के साथ ग्रहों के संबंध	281
ज्योतिषी के कर्त्तव्य	282
जातक निर्णय	282
ध्यान में रखने योग्य महत्त्वपूर्ण चरण	283
जातक निर्णय की पद्धति भावों तथा उनके कारकों की स्थिति	283
प्रथम भाव का विश्लेषण	284
चतुर्थ भावों का निर्णय	284
कुण्डली XLI (अ) वर्ग को लेकर व्याख्या	285
द्वादशांश चक्र	286
नवांश चक्र	287
फलित में दशा का प्रयोग	287
कुण्डली XLII की व्याख्या तथा योगों आदि का प्रयोग .	288
गहन अध्ययन : ग्रहों व उनके प्रभाव	290
लग्नादि योग	298
दुरधरा योग	298
वसि योग	298
विपरीत राजयोग	298
नीच भंग	299

पाठ 15

नवांश पर विस्तृत विचार

भाव शूचक नवांश पद्यति	301
प्रयोग	302
एक अनूठा विचार	303
शनि का गोचर	304
यम घण्ट	304
अनुबद्ध I : बालारिष्ट/योगारिष्ट	306
अनुबद्ध II : गण्डमूल	307
अनुबद्ध III : आयुर्दया का विश्लेषण	309
गजकेसरी योग	311
अनुबद्ध IV : स्पष्टीकरण (राहू-केतू)	315
केन्द्राधिपत्य दोष	318
अनुबद्ध V : ज्योतिषीय योगों पर चर्चा	320
चमर योग, धन योग, शौर्य योग, जलाधि योग, छत्र योग, अस्त्र योग	322
असुर योग, भाग्य योग, ख्याति योग, पारिजात योग, मूसल योग	323
गौरी योग, वसुमान योग, पुश्कल योग, शुभ माला योग, अशुभमाला योग, लक्ष्मी योग	324
सरस्वती योग	325
श्री कंठ योग, श्रीनाथ योग, वृन्ची योग	326
महायोग	327
खल योग, दैन्य योग	328
पर्वत, खल व शंख योग	329
वकलाकी योग, दामिनी योग, पाश योग, केदार योग, शूल योग	330

युग-यिगा योग	331
गोल योग	331
अशुभ योग, अव योग, निस्व, मृति, कुहु योग	331
पामर, हर्ष, दुष्कृति, सरल, निर्भाग्य, दुर्योग	332
दरिद्र, विमल योग	333
अनुबद्ध VI : ग्रहों का गोचर, भावों का आंकलन एवं दशाओं का फलित में प्रयोग	335
अनुबद्ध VII : इन्दु लग्न की गणना	350
अनुबद्ध VIII : पुष्कर नवांश	351
अनुबद्ध IX: वर्गों के स्वामियों के नाम	352

खण्ड–प्रथम

पाठ–1

भचक्र की राशियां और ग्रह

1.1 (क) हिन्दू खगोलशास्त्र सौर प्रणाली पर उसके मूलभूत संघटक तत्त्वों, नवग्रहों और सत्ताईस नक्षत्रों के सन्दर्भ में विचार करता है। हमारी सौर प्रणाली (जिससे हम परिचित हैं) बह्माण्ड का केवल एक अंश है जिसमें ऐसे-ऐसे अन्य अनेक सौर जगत् विधमान हैं, पर कुछ ग्रह भी हैं। नक्षत्रों में कोई गति नहीं होती किंतु भचक्र में नक्षत्रों के माध्यम से ग्रह गतिशील होते हैं।

1.1 (ख) खगोलशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र में ग्रहों का एक ही अर्थ नहीं लिया जाता। खगोलशास्त्र में चन्द्र सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिम्बित करता है, किन्तु ज्योतिषशास्त्र में उसे सूर्य के बराबर पद पर रखा गया है। राहु और केतु एक दूसरे से सदैव 180° की निश्चित दूरी पर रहते हैं। उनकी ऐसी स्थिति तब बनती है जब चन्द्रमा क्रांतिवृत्त को पार करने के लिए उत्तरी अक्षांश से दक्षिणी अक्षांश तथा दक्षिणी अक्षांश से उत्तरी अक्षांश की ओर जाता है।

1.1 (ग) भचक्र (360° का वृत्त) प्रकाश का एक वृत्त मात्र है। इसका कोई आरम्भ और अंत नहीं है। इस वृत्त को मापने के लिए एक काल्पनिक बिन्दु मान लिया जाता है। प्रथम नक्षत्र–अश्विनी नक्षत्र के 0° प्रथम को ही काल्पनिक बिन्दु माना जाता है।

360° के भचक्र को यदि 27 से भाग दिया जाए तो प्रत्येक नक्षत्र का माप 13°20' होगा। प्रत्येक नक्षत्र को पुनः चार भागों में बांटते हैं और 3°20' के प्रत्येक भाग को चरण या पाद कहते हैं। इससे अभिप्राय यह हुआ कि 360° के भचक्र को 3°20' के कुल 108 भागों में बांटा जाता है।

1.1 (घ) नक्षत्र

27 नक्षत्रों के नाम और उनके स्वामी के नाम निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं। इन 27 नक्षत्रों में से तीन-तीन नक्षत्रों का स्वामित्व प्रत्येक ग्रह

को सौंपा गाया है। इन 27 नक्षत्रों के अतिरिक्त एक अभिजित नाम का नक्षत्र भी होता है जिसका मान 4°13'20" मकर राशि में होता है (276°40' से 280°53'20" तक जिसका विस्तार है।) इसकी संगणना की विधि है–उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण को लेकर, उसमें श्रावण नक्षत्र के मान का 1/15वां भाग जोड़िए। इस नक्षत्र का उपयोग सामान्यतया मुहुर्त तथा चक्रों में किया जाता है।

1.1 (ङ) (*i*) नक्षत्र सारिणी

सारिणी I
नक्षत्र, भोगांश तथा नक्षत्रः स्वामी ग्रह

नक्षत्र	भोगांश (तक)	नक्षत्र	भोगांश (तक)	नक्षत्र	भोगांश (तक)	स्वामी भोगांश	ग्रहों के प्रतीक
1. अश्विनी	13°20'	10. मघा	133°20'	19. मूल	253°20'	केतु	☋
2. भरणी	26°40'	11. पूर्व फाल्गुनी	146°40'	20. पूर्वाषाढ़ा	266°40'	शुक्र	♀
3. कृत्तिका	40°	12. उत्तर फाल्गुनी	160°	21. उत्तराषाढ़ा	280°	सूर्य	☉
4. रोहिणी	53°20'	13. हस्त	173°20'	22. श्रावण	293°20'	चन्द्र	☽
5. मृगशिरा	66°40'	14. चित्रा	186°40'	23. घनिष्ठा	306°40'	मंगल	♂
6. आर्द्रा	80°	15. स्वाति	200°	24. शतभिषा	320°	राहु	☊
7. पुनर्वसु	93°20'	16. विशाखा	213°20'	25. पूर्वभाद्रपद	333°20'	गुरु	♃
8. पुष्या	106°40'	17. अनुराधा	226°40'	26. उत्तराभाद्रपद	346°40'	शनि	♄
9. अश्लेषा	120°	18. ज्येष्ठा	240°	27. रेवती	360°	बुध	☿

1.1 (ङ) (*ii*) नक्षत्र परिचय

नक्षत्र	स्वामी देवता	नक्षत्रों का परिचय			वार	आकार	योनि
		तारा	गण	प्रकृति			
1. अश्विनी	अश्विनी कुमार	3	देव	क्षिप्र/उतावला	गुरुवार	अश्वमुख	अश्व
2. भरणी	यमराज	3	मनुष्य	उग्र/क्रूर	मंगलवार	स्त्री गुप्तांग	गज
3. कृतिका	अग्नि	6	राक्षस	मिश्र/सामान्य	बुधवार	छुरी	मेष
4. रोहिणी	धाता/ब्रह्मा	5	मनुष्य	ध्रुव/स्थिर	रविवार	बैल गाड़ी	सर्प
5. मृगशिरा	चन्द्र	3	देव	मृदु/मित्र	शुक्रवार	हिरण-का सिर	सर्प
6. आर्द्रा	शिव	1	मनुष्य	तीक्ष्य/दा/ण	शनिवार	मूंगा/मणि	श्वान
7. पुनर्वसु	अदिति	4	देव	चंचल/चर	सोमवार	घर का द्वार	मार्जार
8. पुष्य	गुरु	3	देव	क्षिप्र/उतावला	गुरुवार	तीर	मेष
9. श्लेषा	सर्प	5	राक्षस	तीक्ष्ण/दारुण	शनिवार	पहिया/चक्र	मार्जार
10. मघा	पितर	5	राक्षस	उग्र/क्रूर	मंगलवार	मकान	मूषक
11. पू. फाल.	भग/सूर्य	2	मनुष्य	उग्र/क्रूर	मंगलवार	बैंच	मूषक
12. उ. फाल.	अर्यमा/सूर्य	2	मनुष्य	ध्रुव/स्थिर	रविवार	शैया	गौ
13. हस्त	सूर्य	5	देव	क्षिप्र/उतावला	गुरुवार	खुला हाथ	महिष
14. चित्रा	विश्वकर्मा	1	राक्षस	मृदु/मैत्र	शुक्रवार	मोती	व्याघ्र
15. स्वाती	वायु	1	देव	चर/चंचल	सोमवार	अंडाकार मूंगा	महिष

	स्वामी	नक्षत्रों का परिचय					
	देवता	तारा	गण	प्रकृति	वार	आकार	योनि
16. विशाखा	इंद्राग्नि	4	राक्षस	मिश्र/सामान्य	बुध्वार	बन्दनवार	व्याघ्र
17. अनुराधा	मित्र (सूर्य)	4	देव	मृदु/मित्र	शुक्रवार	मणि, लड़ी	मृग
18. ज्येष्ठा	इन्द्र	3	राक्षस	तक्ष्ण/दारुण	शनिवार	कुण्डल	मृग
19. मूल	निऋति/राक्षस	11	राक्षस	तक्ष्ण/दारुण	शनिवार	शेर की पूंछ	श्वान
20. पू. षाढा	जल	2	मनुष्य	उग्र/क्रूर	मंगलवार	हाथी दाँत	वानर
21. उ. षाढा	विश्वदेव	2	मनुष्य	ध्रुव/स्थिर	रविवार	खाट	नकुल
22. श्रावण	विष्णु	3	देव	चर/चंचल	सोमवार	गरुड़ (बैठा हुआ)	वानर
23. घनिष्ठा	वसु	4	राक्षस	चर/चंचल	सोमवार	मृदंग	सिंह
24. शतभिषा	वरुण	100	राक्षस	चर/चंचल	सोमवार	गोलाकार झुण्ड	अश्व
25. पू. भाद्रा	अजैकपाद	2	मनुष्य	उग्र/क्रूर	मंगलवार	जुड़वा बच्चे	सिंह
26. उ. भाद्रा	अहिर्बुधन्य	2	मनुष्य	ध्रुव/स्थिर	रविवार	सुंदर चौकी	गौ
27. रेवती	पू.अहिर्बुधन्य (सूर्य)	32	देव	मृदु/मित्र	शुक्रवार	लम्बोतरा ढोल	गज

1.1 (च) राशियां–भचक्र को तीस-तीस डिग्री के 12 बराबर भागों में भी बांटा जाता है। प्रत्येक भाग को राशि का नाम दिया जाता है। हम यह भी कह सकते हैं कि एक राशि सवा दो नक्षत्रों के मान ($13°20' \times 2\frac{1}{4} = 30°$) अथवा 9 चरणों ($9 \times 3°\text{-}20' = 30°$) के मान तक विस्तृत होती है।

जैसा कि हम 1.1 (ग) परिच्छेद में विचार कर चुके हैं कि भचक्र का प्रथम बिन्दु अश्विनी से लिया जाता है। इस प्रथम बिन्दु से भचक्र की 12 राशियों की गिनती आरम्भ होती है। इन 12 राशियों के नाम और उनके स्वामी (वे ग्रह जिन्हें इन राशियों का स्वामित्व प्राप्त हैं) निम्नलिखित हैं–

सारिणी II

राशि, चिह्न तथा स्वामी ग्रह एवं चिह्न

अंग्रेजी	हिन्दी	अंश तक	राशि चिह्न/ प्रतीक	स्वामी	ग्रह प्रतीक
1. Aries	मेष	0.30	♈	मंगल	♂
2. Taurus	वृष	60	♉	शुक्र	♀
3. Gemini	मिथुन	90	♊	बुध	☿
4. Cancer	कर्क	120	♋	चन्द्र	☽
5. Leo	सिंह	150	♌	सूर्य	☉
6. Virgo	कन्या	180	♍	बुध	☿
7. Libra	तुला	210	♎	शुक्र	♀
8. Scorpio	वृश्चिक	240	♏	मंगल	♂
9. Sagittarius	धनु	270	♐	वृहस्पति	♃
10. Capricorn	मकर	300	♑	शनि	♄
11. Aquarius	कुंभ	330	♒	शनि	♄
12. Pisces	मीन	360	♓	वृहस्पति	♃

नोटः राहू तथा केतु की कोई राशि नहीं है अपितु कुछ विद्वान राहू की कन्या राशि मानते हैं, मिथुन को राहू की उच्च की राशि मानते हैं, धनु में राहू को नीच का मानते हैं। अन्य विद्वान वृषभ में राहू उच्च का कुंभ में मूलत्रिकोण कर्क को भी प्रिय राशि मानते हैं। नारायण भट्ट कन्या में राहू को स्वगृही मिथुन में उच्च का, धनु में नीच का, कर्क में मूल त्रिकोण का मानते हैं।

राहू का स्थान पहाड़ की चोटी तथा जंगल (वैद्यनाथ का कथन) आयु (100 वर्ष) रत्न (गोमेद) दक्षिण-पश्चिम दिशा, फीका रंग, चाण्डाल, धुंआ।

धातु–सुरमा, साल का वृक्ष, नीले रंग का धुआँ।

केतु–जटा मसी, दक्षिण-पश्चिम, रत्न नीलमणि, रंग बिरंगा, छोटे पेड़, लाल नेत्र, तेज स्वर, भयानक शस्त्र, लहसुनिया।

नोटः राहु और केतु के विषय में मतभेद हैं। राहु को कुंभ का स्वामित्व देते हैं।

1.1 (छ) हम सब जानते हैं कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमने में 24 घंटे लेती है और सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने में 365 दिन लेती है। पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के कारण सूर्योदय और सूर्यास्त होते हैं। पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर चक्कर काटने के कारण ऋतुएं बनती हैं। इसे आसान रूप में समझने के लिए हम कह देते हैं कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूम रहा है ओर सूर्य पूर्व में उदय होता है तथा पश्चिम में अस्त होता है। 12 राशियों में से जो कोई भी राशि (किसी विशिष्ट स्थान और समय पर घटित हुई घटना के समय; वह घटना किसी जातक का जन्म भी हो सकती है) पूर्व में उदय होती है, उसे **'लग्न'** अथवा **'उदय राशि'** का नाम दिया जाता है। पूर्व में उदय होने वाली वह राशि **लग्न** बन जाती है।

1.1 (ज) जन्म–लग्न–निर्णय–हेतु

पृथ्वी की गति की दर 15° प्रति घंटा के लगभग हैं अर्थात् यह 24 घंटे में 360° पूरे करती है। एक-एक करके प्रत्येक राशि पूर्व में उदय होती है और पूर्वी क्षितिज के मध्य में से गुजरने में मोटे तौर पर दो घंटे लेती है। इस क्रम से 12 राशियां (एक सम्पूर्ण दिन) 24 घंटे/60 घटी लेती है।

ज्योतिष–शास्त्र में भविष्यवाणियां करने के लिए जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति का आधार, ग्रहों के स्वामित्व का आधार, उनके कारकत्व का आधार तथा ग्रहीय मंत्रिमंडल में उनके पद का आधार लिया जाता है। ग्रहों और नक्षत्रों के द्वारा संकेतित विविध देवताओं को ध्यान में रखकर उपायों को सुझाया जाता है। प्रश्न–शास्त्र और जन्म–कुंडली मिलान में व्यंजनों और स्वरों पर भी विचार किया जाता है क्योंकि उन्हें भी सात ग्रहों का संचालन और स्वामित्व प्राप्त है। वर्तमान में ज्योतिष शास्त्र का आरम्भिक ज्ञान प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए इस विषय में विचार-विमर्श करना परिश्रम को व्यर्थ करना होगा। किन्तु, इतना उल्लेख कर देना पर्याप्त होगा कि सभी समायोजन और योग विभिन्न ग्रहों के मध्य अंतः संबंध के आधार पर विभिन्न राशियों में, विभिन्न नक्षत्रों में और उनकी पारस्परिक दूरियों और स्थितियों के कारण बनते हैं। इसी प्रकार ग्रहों की गति घटनाओं के घटने के समय को जानने में सहायता करती है। आइए, इन पर एक-एक करके विचार करें।

1.1 (झ) ग्रहों की गति

हम यह पहले भी बता चुके हैं कि भचक्र में नक्षत्र स्थिर रहते हैं और उनमें कोई गति नहीं होती। ग्रह ही नक्षत्रों में गतिशील रहते हैं। ग्रहों की गति की अपनी एक रफ्तार है

ग्रह	गति प्रतिदिन की दर से (लगभग)	राशि भ्रमण का लगभग समय
सूर्य	1 डिग्री	1 मास/30 दिन
चन्द्र	13 से 15 डिग्री तक	2 से 2 ¼ दिन
मंगल	30 से 45 मिनट तक	1½ मास
बुध	65 से 100 मिनट	24 दिन
शुक्र	62 से 82 मिनट	25 दिन
वृहस्पति	5 से 15 मिनट	1 वर्ष
शनि	2 मिनट	2½ वर्ष
छाया ग्रह	3 मिनट	1½ वर्ष

गतियों में ऐसी भिन्नता के कारण ही ग्रह अन्य ग्रहों से विविध संबंध स्थापित करते हैं। एक दूसरे के साथ ये ग्रह जो संबंध स्थापित करते हैं

(भोगांशीय अन्तरालों के माध्यम से) उनकी ज्योतिष में बहुत अधिक उपयोगिता है।

ग्रहों की गति को खगोल शास्त्रीय साहित्य (देखिए संस्थान द्वारा प्रकाशित 'ज्योतिष से संबंद्ध 'खगोल विज्ञान' नामक पुस्तक) और संहिताओं (नारद संहिता, गर्ग संहिता, वशिष्ठ संहिता आदि) के अध्ययन से भली भांति समझा जा सकता है।

1.1 (ज) नैसर्गिक शुभ और अशुभ ग्रह

पूर्ववर्ती परिच्छेद 1.1 (च) में दी गई तालिका में जैसा दिखाया गया है सात ग्रहों को 12 राशियों का स्वामित्व प्राप्त है। राहु और केतु का अपना निजी कोई राशि नहीं है। जिस राशि में उनकी अवस्थिति होती है अथवा जिन ग्रहों के साथ वे युति करते हैं, वैसा ही प्रभाव देने लगते हैं। इस संबंध में विस्तृत चर्चा बाद में की जाएगी। इन ग्रहों में से सूर्य, शनि, मंगल, क्षीण चन्द्रमा (कृष्ण पक्ष का चन्द्र) राहु और केतु, अशुभ ग्रह से संयुक्त पीड़ित बुध अशुभ ग्रह हैं। वृहस्पति, शुक्र, वर्धमान चन्द्रमा (शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा), शुभ ग्रह से संयुक्त बुध शुभ ग्रह हैं।

टिप्पणी–(1) सूर्य की स्थिति के सापेक्ष में चन्द्रमा की जो गति होती है, उसके कारण ही क्षीण चन्द्रमा और वर्धमान चन्द्रमा कहा जाता है। जब चन्द्रमा सूर्य से आगे-आगे चलता है और जब तक वह 180° की दूरी तक नहीं पहुंच जाता, तब तक वह वर्धमान चन्द्रमा (शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा) कहा जाता है। 180° के पश्चात् जब चन्द्रमा सूर्य की दिशा में चलता है वह कृष्ण पक्ष होता है जब उसकी दूरी सूर्य के निकट पहुंचते-पहुंचते 0° रह जाती है और चन्द्र की सूर्य से युति होती है अथवा अमावस्या हो जाती है। तब उसे घटता हुआ चन्द्रमा कहते हैं। (कृष्ण पक्ष का चन्द्र अथवा क्षीण चन्द्र) *0 से 120 डिग्री तक चन्द्रमा मध्यम कहलाता है। सूर्य से दूरी यदि 120° से 240° तक शुभ (बली) चन्द्रमा कहलाता है और 240° से 0° तक चन्द्रमा का बल क्षीण हो जाता है।* (कुछ विद्वान शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक चंद्रमा को बली मानते हैं।) अर्थात् सूर्य से चतुर्थ स्थान तक 'मध्यम, पंचम से अष्टम तक बली या शुभ, और नवम भाव से सूर्य के साथ आने तक क्षीण या अशुभ माने।

(2) पराशर ऋषि के अनुसार बुध तब अशुभ ग्रह बनता है जब वह किसी अशुभ ग्रह से युति करता है। **यदि क्षीण चन्द्रमा और बुध एक साथ होते हैं तो दोनों ही अशुभ माने जाते हैं।**

(3) मंत्रेश्वर कल्याण वर्मा, महर्षि वशिष्ठ और ऋषि पराशर के अनुसार सूर्य पाप ग्रह नहीं है अपितु यह एक क्रूर ग्रह है (नृशंस, दयाहीन, कठोर)। ब्रह्मांड की आत्मा और पिता का कारक होने के कारण सूर्य अन्य अशुभ ग्रहों की तरह पापी नहीं हो सकता। वह कठोर हो सकता है। **शफीरियल नामक पाश्चात्य ज्योतिषी** ने सूर्य को एक शुभ ग्रह माना है। अन्य पाश्चात्य ज्योतिषियों ने सूर्य को पृथक्ता का कारण बनने के लिए उत्तरदायी ठहराया है।

1.2 (*i*) ग्रहीय आधिपत्य अथवा ग्रहीय संचालन–

सूर्य	:	आत्मा	शुक्र	:	वीर्य
चन्द	:	मन	शनि	:	शोक
मंगल	:	शक्ति, ऊर्जा			
बुध	:	वाणी			
वृह०	:	ज्ञान एवं हर्ष			

1.2 (*ii*) ग्रहीय मंत्रालय

सूर्य एवं चन्द्र	:	राजसी पद
मंगल	:	सेनाध्यक्ष
बुध	:	राजकुमार
वृह० एवं शुक्र	:	मंत्री
शनि	:	सैनिक, सेवक
राहु और केतु	:	सेना

1.2 (*iii*) ग्रहीय देवता

सूर्य	:	अग्नि
चन्द्र	:	(वरुण) जल (वर्षा के देवता)
मंगल	:	सुब्राहमन्य (कार्तिकेय)
बुध	:	महा विष्णु

वृहस्पति	:	इन्द्र
शुक्र	:	शची देवी (इन्द्र की पत्नी)
शनि	:	ब्रह्म

1.2 (*iv*) व्यंजन और स्वर–

सूर्य	:	12 स्वर	स्वर	अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः
चन्द्र	:		अंतःस्थ	य र ल व
			उष्म	श ष स
			महाप्राण	ह
मंगल	:	कंठ्य अक्षर	कवर्ग	क ख ग घ ङ
बुध	:	मूर्धन्य	टवर्ग	ट ठ ड ढ ण
वृहस्पति	:	दंत्य	तवर्ग	त थ द ध न
शुक्र	:	तालव्य	चवर्ग	च छ ज झ ञ
शनि	:	ओष्ठ्य	पवर्ग	प फ ब भ म

1.3 इन सब राशियों और ग्रहों में, मानव के शारीरिक एवं मानसिक विकास तथा उसकी चतुर्दिक वस्तुओं एवं वातावरण को, प्रभावित करने के नैसर्गिक गुण होते हैं। जन्म-कुंडली का अध्ययन करने के पूर्व हमें इन सबका ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए। आइए सर्वप्रथम प्रत्येक ग्रह के गुणधर्म का हम अध्ययन करें:

ग्रहों के गुणधर्म

1.3 (*i*) सूर्य–ज्योतिषीय दृष्टि से सूर्य लम्बा, अग्नि प्रकृति, पीली आंखे, गहरा ब्राउन रंग, अल्प बाल, गंजा सिर, पित्त प्रकृति का माना जाता है। पिता का प्रतीक, व्यक्तित्व–आकर्षण, शक्ति–प्रदायक, पुरुषवत्, क्रूर, ग्रह, तांबे जैसा रंग, अहंवादी, राजसी, दार्शनिक प्रकृति, पूंजी उधार में देने वाला (साहूकार), दृढ़ इच्छा–शक्ति, प्राधिकार और पद का प्रतीक, ईंधन, चर्म, त्वचा, ऊन, हथियार, रेशमी कपड़ा, चंदन की लकड़ी, तीक्ष्ण स्वाद, रूखा अनाज, सोना, गेहूं अग्नि, विष, औषधियां, चिकित्सक, राजा वर्ग और

राज्य के व्यक्ति सूर्य के द्वारा शासित होते हैं। सूर्य बीजों का उत्पादनकर्त्ता, वपनकर्त्ता और विकसनकर्त्ता है। सूर्य विश्व का पिता कहा जाता है। वह ब्रह्मंड की आत्मा है, रोगों से बचने की शक्ति है, मोती, चंदन की लकड़ी, शेर, शक्ति, भगवान् शिव की पूजा, कांटों वाले पेड़, मजिस्ट्रेट, स्वर्ण–आभूषण, बिजली का करेंट, दूत, राजा का अनुग्रह, डॉक्टर, दायाँ नेत्र और विश्व की आत्मा है।

सूर्य के द्वारा शासित स्थान हैं : खुले स्थान, पर्वत–क्षेणियां और पहाड़ियां, वन, प्रमुख शहर, पूजा के स्थान, शिव मंदिर, समुद्र, न्यायालय, प्रदर्शनी, जन-समूह, किला, ऐसा इलाका जहां पानी न हो, पूर्वी हिस्सा।

शरीर के जो भाग उसके द्वारा शासित हैं, वे हैं–रक्तचाप, अधिक तेज बुखार, नेत्र संबंधी रोग, कंठ, हृदय, कान, नाक की बीमारियां, पाचन शक्ति, अतिसार, आदि। जब सूर्य प्रतिकूल भावों में पाप ग्रहों से पीड़ित जलीय राशियों में होता है तब क्षय रोग, पेचिश रोग का कारण बन जाता है।

वर्ण–क्षत्रिय लिंग–पुरुष दिशा–पूर्व

1.3 (*ii*) चन्द्र–उसका स्थूल शरीर है, यह युवा एवं वृद्ध दोनों हैं, वह घुंघराले बाल, श्वेत, गोरा रंग और आकर्षक, सुन्दर आंखों का प्रतीक है। चन्द्रमा मन, प्रतिभा, मनोभावों, दिल, माता, सुन्दरता, युवतियों, प्रसिद्ध व्यक्तियों, सैर के शोकीन, मृदु वाणी, आकर्षण शक्ति, इत्र, रस, अस्थिर मन, व्यसन और रक्त के प्रवाह का शासक है। वह जलीय तत्वों, झीलों, समुद्र, दुर्गादेवी के मंदिर, वर्षा, टैक्सटाइल, दूध, शहद, गन्ना, मोती, मीठी वस्तुएं, चावल, जौं, गेहूं और कृषि का प्रतीक है।

शरीर के जिन अंगों का वह प्रतीक हैं–वे हैं–धमनियां, नसें, मस्तिष्क, पेट, गर्भाशय, ब्लैडर, छाती, अंडाशय और प्रजनन अंग रोग रतिज (रतिरोग, यौन रोग, मैथुनिक आदि) संबंधी रोग, पीलिया, सांस की बीमारी, त्वचा की बीमारियां, अपच (अजीर्ण, मन्दाग्नि, अग्निमान्द्य), श्वसन संबंधी रोग (दमा) इसके पीड़ित होने पर होते हैं। यह कफ़ और वायु के रोग का कारण है।

वर्ण–वैश्य लिंग–स्त्री दिशा–उत्तर–पश्चिम (वायव्य कोण)

1.3 (*iii*) मंगल–उसकी पतली कमर, घुंघराले और चमकीले बाल, अग्निमय लाल आंखें, क्रूर प्रकृति और अस्थिर बुद्धि है। वह स्वतंत्र प्रकृति का, दुराग्रही और उम्र में युवक है। मंगल एक अशुभ ग्रह है। वह छोटे भाई, पुरुषत्व, रक्त जैसे लाल रंग, परिष्कृत रुचि, राजदूत, सैनिक गतिविधियों, कॉमर्स, सड़ी हुई वस्तुओं, हवाई यात्राएं, लोक-भाषण देने वाले और बुनाई का प्रतिनिधित्व करता है। मंगल हवाई सेना का रणक्षेत्र और सेनाध्यक्ष है। उसका वर्ण लाल है, गर्म और अग्निमय है, वह मूत्राशय, शरीर के अंग, तर्क, अग्नि स्थानों, रसोई, इंजिन कक्ष, बायलर, रात्रि में काम करने वाले कर्मचारियों, हत्यारों, षड़यंत्र, हड़ताल, शत्रु, घाव, प्रबंध क्षमता, कांटे, नेतृत्वशक्ति, मजदूरों के ऊपर नेतागिरी, प्रशासनिक योग्यता, पुलिस विभाग और स्कैन्डल का प्रतीक है।

पदार्थ–तांबा, धातु, खनिज पदार्थ, कच्ची धातु, खदान, सोना, मूंगा, हथियार, भूमि और तम्बाकू आदि वस्तुएं मंगल ग्रह का प्रतिनिधित्व करती हैं। तामसिक प्रवृत्ति।

शरीर के अंग–कान, नाक, पित्त, स्नायु, तंतु, माँसपेशी संबंधी टीशू का प्रतीक है।

मंगल के पीड़ित होने पर जो बीमारियां होती हैं–वे हैं–शिराओं (नसों) और धमनियों की टूट-फूट, अस्थि–मज्जा की बीमारियां, रक्त-स्राव, गर्भपात, मासिक धर्म में 'अव्यवस्था, सूज़ाक, मांसपेशियों में गठिया, कूबड़ और जलना।

वर्ण–क्षत्रिय लिंग–पुरुष दिशा–दक्षिण

1.3 (*iv*) बुध–बुध यदि शुभ ग्रह से युति करता है तो शुभ माना जाता है। पर जब पाप ग्रहों से या अशुभ ग्रहों से युति करता है तो अशुभ माना जाता है। बुध हास्य-विनोद का शौकीन होता है। उसके पास विविध विषयों से संबंधित बहुत सारी सूचनाएं होती हैं। वह प्रतिभाशली होता है। आकाशीय ग्रहों में वह राजकुमार है। वह गठन (संयोजन व बनावट) में भूमि तत्त्व माना जाता है। वह मितव्ययी, पतला, हरे वर्ण का, व्यापारिक गतिविधियों वाला, जनता की बात बोलने वाला, ठंडा और अधीर होता है। वह

व्यापार/कॉमर्स, चर्च, स्कूल, खेल का मैदान, पार्क, जुआघर का प्रतिनिधित्व करता है और बरबादी/नुकसान करके खुश होता है।

उसके द्वारा शासित वस्तुएं हैं—हरा चना, पन्ना, सीसा, तिलहन, खाद्य तेल, सिक्कों की ऐलॉय और पीतल।

वह कई अन्य वस्तुओं का भी प्रतीक है। जैसे—क्लर्क, पानी, काव्य—प्रतिभा, शिक्षा, लेखन प्रतिभा, मामा, नाना, परनाना, दादा, चाचा, ताऊ, घोड़े, डॉक्टर, व्यापारी, भव्य भवनों आदि।

शरीर के अंग

वह शरीर के निम्नलिखित भागों का प्रतिनिधित्व करता हैः मस्तिष्क, जिह्वा, स्नायु, तंत्र, कंठ-ग्रंथि, त्वचा, **गर्दन** और वाक् शक्ति।

बीमारियां—स्मरणशक्ति की हानि, सिरदर्द, त्वचा की बीमारियां, दौरे, चेचक, पित्त, कफ़ और वायु प्रकृति की बीमारियां, गूंगापन उन्माद।

वर्ण—वैश्य **लिंग**—नपुंसक **दिशा**—उत्तर

1.3 (*v*) वृहस्पति—उसकी भूरी आंखें, भूरे बाल, लम्बा कद होता है। वह मोटा और कफ प्रधान होता है, वह स्थूलकाय, ऊंची और भारी आवाज़ रखने वाला होता हैं वह पुरुषवत्, शुभ, पीला रंग, चमकीला, प्रजनन शक्ति वाला, सत्यवादी, दार्शनिक, प्रत्येक प्रकार के विज्ञान में रुचि रखने वाला, भक्तिवादी, धार्मिक प्रवृत्ति रखने वाला होता है। धन, यश, पुत्र, पोते, बच्चे, शिक्षित व्यक्तियों, दादा, प्रतिभा, शिक्षा, मंत्री, सलाहकार, रोग, बैंक और बीमा कंपनियों, आकाशीय तत्त्व, धर्म-ग्रन्थ, और पारा का प्रतीक है।

वह ज्ञान और विवेक का मूल होता है। वह धर्म-गुरु होता है। वह कोष, शिक्षित व्यक्तियों के रहने के स्थान तथा पुखराज, टोपाज का प्रतिनिधित्व करता है। सोना उसकी धातु है।

शरीर के अंग—गुर्दे, मोटापा, पेट, शरीर की आंतों का प्रतिनिधि होता है।

उससे होने वाली बीमारियां हैं—जिगर की गड़बड़ी, जलोदर, उदरवायु, कारबंकल, पाचन में गड़बड़ी, गुर्दा आदि से संबंधित बीमारी।

वृहस्पति को देव गुरु, ज्ञानकारक कहकर पारिभाषित किया गया है। **ऋषि वराहमिहिर** ने वृहस्पति को गौर गात्र कहा है, **मंत्रेश्वर** ने पीत द्युति कहा है और **कल्याणवर्मा** ने स्वर्ण अथवा कनक कहा है। वृहस्पति आकाश तत्त्व अथवा पारलौकिक जगत् का प्रतिनिधित्व करता है।

वर्ण–ब्राह्मण **लिंग**–पुरुष **दिशा**–उत्तर–पूर्व (इशान कोण)

1.3 (*vi*) शुक्र–उसके काले घुंघराले बाल हैं, विशाल शरीर है, गेऊंआ रंग है, स्त्रियोचित है, शुभ है, सभी रंगों का मिश्रण है, पत्नी, प्रेम संबंध, ऐन्द्रिय आनन्द, पारिवारिक आनन्द और जीवन-शक्ति है। वह जलीय तत्त्व है, श्वेत शरीर और आकर्षक रूप है, पत्नी या पति का वैवाहिक सुख है, नृत्य कक्ष है, ऐन्द्रिय आनन्द देने वाला है। वह वाहनों, गन्ने की फैक्टरियों, व्यापार, रसायनिक दवाइयों, सिल्क, रेशमी तथा सूती कपड़ा (उत्तम क्वालिटी का), ऐश्वर्य की वस्तुओं, वासना, आनन्द, घर की सेविका, इत्र और संगीत वाद्य–यंत्रों का प्रतीक है।

शरीर के अंग–वह शरीर के जिन भागों का प्रतीक है, वे हैं–यौन संबंधी अंग, वीर्य, मांसपेशियाँ, मूत्राशय, जांघ और बाल।

रोग–उससे अनेक बीमीरियां होती हैं जैसे–रतिज संबंधी शिकायतें, यौन असमर्थता, गठिया संबंधी रोग, दृष्टि कमज़ोर होना, सूंघने की शक्ति कम होना, वीर्यपात, श्वेत प्रदर या लिकोरिया आदि नारियों के रोग।

वर्ण–ब्राह्मण **लिंग**–स्त्री **दिशा**–दक्षिण–पूर्व (अग्नि कोण)

1.3 (*vii*) शनि–उसके सख्त बाल हैं, लम्बे बड़े अंग हैं, शरीर का काला रंग है, वह अशुभ ग्रह है, अड़ियल और प्रचंड स्वभाव है, वह नैतिक पतन का द्योतक है, उससे वायु संबंधी बीमारियां होती हैं, वह हताश, निराशा और जुएं का प्रतीक है। उसका वायु, पर्वत और पहाड़ियों जंगली इलाकों और गन्दे स्थानों पर आधिपत्य है। लोहे, नीलम, दाह–संस्कार गृहों, कब्रिस्तानों जेलों और वृद्ध व्यक्तियों का वह प्रतीक है।

पदार्थ–वह काला चना, भांग, जौं, तिल और तेलों का प्रतिनिधित्व करता है।

शरीर के अंग—शरीर के निम्नलिखित भागों का वह प्रतीक है : ब्लैडर, मलोत्सर्ग प्रणाली, दांत, मांस पेशियाँ, कलाई, और पैर।

रोग—मांस-पेशियों संबंधी दर्द, दांत का दर्द, सांस की बीमारी, क्षय रोग, हिस्टीरिया, मिरगी, जोड़ों का दर्द और अल्सर नामक बीमारियां शनि से होती हैं।

वर्ण—शूद्र **लिंग**—नपुंसक **दिशा**—पश्चिम

1.3 (*vii*) राहु—वह अशुभ ग्रह है, स्त्रियोचित है, भ्रष्टाचार, संक्रामक रोग का प्रतीक है। वह लम्बा और कफ़-प्रकृति का है, उसका रंग काला है, वह गन्दा है। वह भौतिकवादी है, विदेश यात्रा, वह दादा, नानी का प्रतीक है, वह निम्न क्षेणी के लोगों व मलेच्छों के साथ रहकर षड्यंत्र करने वाला है।

शरीर के अंग—शरीर की त्वचा और रक्त पर राहु का आधिपत्य है।

रोग—हैजा, चेचक, कुष्ठ रोग, मिरगी, रक्त में विष मिलना, खुजली, मलेरिया, प्लेग आदि बीमारियां राहु के कारण होती है।

वर्ण—निम्न वर्ग, मलेच्छ **लिंग**—स्त्री **दिशा**—दक्षिण—पश्चिम (नैॠत्य कोण)

1.3 (*viii*) केतु—केतु का रंग काला है, धुएं जैसा रंग है, आध्यात्मिक मोक्षदाता है। वह लम्बा है और धुएं को सांस से अन्दर खींचता है। वह नाना और दादी का प्रतीक है। वह घमंडी है, स्वार्थी है और तंत्र विद्या का प्रतीक है।

रोग—वह आंतरिक कीड़ों, चेचक, हैज़ा और अन्य संक्रामक रोगों का कारण है। वह प्रायः राहु की तरह ही, उन्हीं बीमारियों का कारण बनता है।

वर्ण—निम्न वर्ग, शूद्र **लिंग**—स्त्री **दिशा**—दक्षिण—पश्चिम (नैॠत्य कोण)

नोट 1. पापी और अशुभ ग्रह की सदैव हानि पहुंचाने की प्रवृत्ति है किंतु कतिपय स्थितियों में वे उतनी हानि नहीं पहुंचा पाते। इसी प्रकार शुभ ग्रहों की प्रवृत्ति लाभ पहुंचाने की होती है किन्तु अनेक बार वे भी हानि पहुंचा देते हैं।

2. केतू के वर्ग में आधुनिक व्यवस्था को देखते हुए यह कह सकते हैं कि सिख (केशधारी) सन्यासी आदि तथा राहू में इसाई व मुस्लिम भाई हो सकते हैं। बीसवीं सदी के अनुसार।

1.4. (*i*) ग्रह एवं उनके लिंग

लिंग	ग्रह
पुरुष	सूर्य, मंगल, गुरु
नपुंसक	बुध, शनि, केतू (उभयलिंगी)
स्त्री	चंद्रमा, शुक्र, राहू

1.4. (*ii*) ग्रहों से इंगित दिशाएँ

दिशा	ग्रह
(*i*) पूर्व	सूर्य
(*ii*) उत्तर पूर्व (इशान कोण)	वृहस्पति
(*iii*) उत्तर	बुध
(*iv*) उ० पश्चिम (वायव्य कोण)	चंद्रमा
(*v*) पश्चिम	शनि
(*vi*) दक्षिण पश्चिम (नैऋृत्य कोण)	राहू—केतू
(*vii*) दक्षिण पूर्व (अग्नि कोण)	शुक्र
(*viii*) दक्षिण	मंगल

1.5. ग्रह और उनके उच्च अंश आदि

परिच्छेद 1.1 (च) में ग्रह किन-किन राशियों के स्वामी हैं, के विषय में हम अध्ययन कर चुके हैं।

1.1 (झ) भचक्र में ग्रहों की गति के कारण वह अन्य ग्रहों से संबंध बनाते हैं हमने पढ़ा, अब हम जानेंगे, राशियों और नक्षत्रों के किन्हीं अंशों के मध्य में से जब ग्रह गुजरते हैं तो वे बल को प्राप्त करते हैं अथवा बल से हीन हो जाते हैं। इस पाठ में हम ग्रहों की उन स्थितियों के बारे में चर्चा करेंगे जिनमें वे बली, अधिकतम बली, मध्य बली अथवा अन्य स्थिति को प्राप्त होते हैं। ग्रहों के बल के बारे में जानना अत्यंत आवश्यक है। बल के बारे में जानकारी न होने पर हम यह फलित नहीं कर पाएंगे कि कोई ग्रह किन विशिष्ट स्थितियों में श्रेष्ठ फल देगा, अशुभ फल देगा अथवा प्रभावहीन हो जाएगा।

निम्नलिखित तालिका से हमें ग्रहों की स्थितियों का पता चलेगा कि ग्रह किसी विशिष्ट भोगांश पर होने के कारण कैसे उच्च या नीच स्थिति को प्राप्त करते हैं–

1.5 (क) ग्रहों के उच्च अंश ओर नीच अंश एवं राशियां

ग्रह जब किसी विशिष्ट राशि में, विशिष्ट अंश पर होते हैं तो उच्च या नीच स्थिति को प्राप्त करते हैं–

		उच्च का ग्रह		नीच का ग्रह	
क्रमांक	ग्रह	राशि	परमोच्च अंश	राशि	परम नीच अंश
1.	सूर्य	मेष	10°	तुला	10°
2.	चन्द्र	वृष	3°	वृश्चिक	3°
3.	मंगल	मकर	28°	कर्क	28°
4.	बुध	कन्या	15°	मीन	15°
5.	वृहस्पति	कर्क	5°	मकर	5°
6.	शुक्र	मीन	27°	कन्या	27°
7.	शनि	तुला	20°	मेष	20°
8.	राहु	वृष	20°	वृश्चिक	20°
9.	केतु	वृश्चिक	20°	वृष	20°

राहु और केतू के बारे में ज्योतिषियों में मतभेद है। कुछ विद्वान राहु को मिथुन में उच्च और धनु में नीच का मानते हैं, केतु को धनु में उच्च का और मिथुन में नीच का मानते हैं।

नोटः चार राशियाँ सिंह, कुंभ, धनु तथा मिथुन ऐसी हैं जिनमें कोई ग्रह न उच्च का और ना ही नीच का होता है। उनमें केवल उनका स्वामी ही स्वगृही होता है। इनको "पतिव्रता" राशियाँ कहा जा सकता है।

उपर्युक्त तालिका को और अधिक स्पष्ट करना आवश्यक जान पड़ता है। सूर्य का सम्पूर्ण सिंह राशि पर अधिकार है। यदि सूर्य सिंह राशि में हो

तब कहेंगे कि सूर्य बली है क्योंकि वह स्वग्रही है। यदि सूर्य मेष में है तो हम कहेंगे कि सूर्य अपनी उच्च राशि में है इसलिए बली है अथवा सूर्य उच्च का है। यदि सूर्य तुला राशि में हे तो कहेंगे कि सूर्य अपनी नीच राशि में है, इसलिए बलहीन है अथवा सूर्य नीच का है।

ग्रह अपनी उच्च राशि में होने पर उत्तम फल देते हैं और नीच राशि में होने पर इसके विपरीत फल देते हैं। नीच का ग्रह दुर्बल हो जाता है इसलिए प्रभाव हीन हो जाता है। अशुभ ग्रह यदि नीच की राशि में है तो अशुभ फल नहीं देगा तथा शुभ ग्रह यदि नीच की राशि में है तो शुभ फल नहीं देगा।

कारण–नीच का होने पर ग्रह प्रभाव हीन हो जाता है, उसे 'सम' समझें।

उच्च का ग्रह उच्च भावना या प्रवृत्ति दर्शाता है नीच का ग्रह नीचता की ओर प्रवृत्ति या सोच देता है ऐसा भी अभिप्राय ले सकतें हैं।

चन्द्र वृष राशि में 3° का परम उच्च अंश पर होता है और वृश्चिक राशि में 3° का परम नीच अंश होता है। उच्च की राशि में 180° जोड़ देने पर नीच की राशि को जाना जा सकता है। ग्रह अपने उच्च अंश पर जो फल देते हैं उसका विपरीत फल नीच अंश पर देते हैं। उच्च की राशि से सातवीं राशि नीच की राशि हो जाती है।

1.5 (ख) ग्रहों के मूल त्रिकोण की राशि/अंश–

ग्रह	मूल त्रिकोण राशि	मूल त्रिकोण अंश
सूर्य	सिंह$_1$	0° से 20°
चन्द्र	वृष$_2$	4° से 30°
मंगल	मेष$_3$	0° से 12°
बुध	कन्या$_4$	16° से 20°
वृहस्पति	धनु$_5$	0° से 10°
शुक्र	तुला$_6$	0° से 15°
शनि	कुम्भ$_7$	0° से 20°

यदि ग्रह मूल त्रिकोण राशि में होता है तो अच्छे फल देता है। अथवा कहेंगे कि वह अपना फल देने की सामर्थ्य रखता है।

1. 20° से उपर स्वगृही
2. कर्क में 0 से 30° स्वगृही
3. 12° से उपर स्वगृही, वृश्चिक में 0° से 30° तक स्वगृही
4. 20° से उपर स्वग्रही, मिथुन में 0° से 30° स्वगृही
6. 15° से उपर स्वगृही, वृष में 0° से 30° स्वगृही
5. 10° से उपर स्वगृही, मीन में 0° से 30° स्वगृही
7. 20°से उपर स्वगृही तथा मकर में 0 से 30° स्वगृही

उदाहरण के लिए

डा. रमन द्वारा प्रकाशित

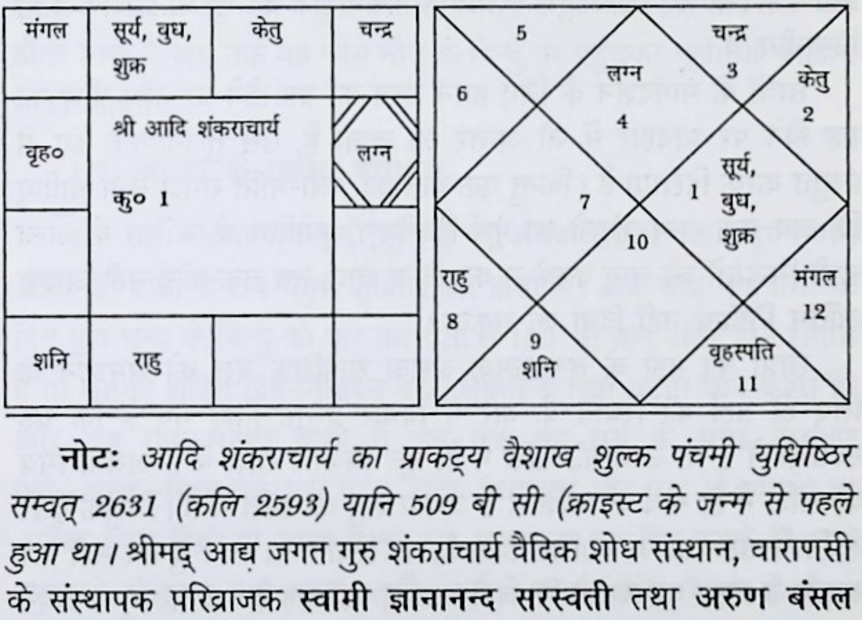

नोटः *आदि शंकराचार्य का प्राकट्य वैशाख शुल्क पंचमी युधिष्ठिर सम्वत् 2631 (कलि 2593) यानि 509 बी सी (क्राइस्ट के जन्म से पहले हुआ था।* श्रीमद् आद्य जगत गुरु शंकराचार्य वैदिक शोध संस्थान, वाराणसी के संस्थापक परिव्राजक **स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती** तथा **अरुण बंसल** संस्थापक "फ्यूचर पाइंट" दिल्ली के द्वारा शोध करने पर यह जन्म विवरण प्राप्त हुआ है।

सूर्य मेष में, चंद्रमा वृष में होगा पर मिथुन में नहीं जैसा डा० रमन ने दिखाया है।

दशम भाव में स्थित सूर्य इस कुंडली में उच्च का है, द्वितीय भाव का स्वामी है। द्वितीय भाव वाणी का स्थान है। इसका कारक बुध (प्रतिभा और

तक) दसवें भाव में शुक्र (काव्य–प्रतिभा का कारक) के साथ है। इसीलिए ये अकाट्य तर्क के स्वामी थे, किंतु अत्यंत मृदु-भाषी थे। हजारों-हजारों विरोधियों को अपनी तर्क–शक्ति से अपने अनुकूल कर लेते थे।

श्री गौतम बुध, पैगम्बर मोहम्मद, श्री रामानुजाचार्य, स्वामी विद्यारन्य सभी का सूर्य उच्च का था। सूर्य आत्मा का प्रतीक है, सात्विक गुण, दार्शनिक वृत्ति, मानव प्रेम का प्रतीक है।

औरंगजेब का सूर्य नीच का था। उसका चन्द्र उच्च का था (मानस अथवा मन का प्रतीक चन्द्र) जिससे उसकी अत्याधिक वैविध्ययुक्त क्षमता और धीरज वृत्ति का संकेत मिलता है। उसने अपने राजनीतिक जीवन में जो भूलें की, वे सर्वविदित हैं। वे भूलें सूर्य के नीच स्थिति में होने का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं इसीलिए वह अशुभ स्वभाव व नीच प्रवृत्ति का भी था। उसके कार्य निन्दनीय थे।

छात्रों के मार्गदर्शन के लिए हमने उच्च का ग्रह होने पर और नीच का ग्रह होने पर व्यवहार में जो अन्तर आ जाता है, उसे तुलनात्मक ढंग से प्रस्तुत करके दिखाया है। किन्तु एक बात को भली-भांति समझ लेना चाहिए कि जब तक जन्म-कुंडली का पूर्ण विश्लेषण, ज्योतिष के फलित के अन्य सभी सिद्धांतों को लागू करके न कर लिया जाए, तब तक कोई सही अथवा अंतिम निष्कर्ष नहीं दिया जा सकता।

छात्रों को ग्रहों के तुलनात्मक अथवा सापेक्षिक बल को समझाने के लिए ही ग्रहों की स्थिति के बारे में विचार प्रस्तुत किए गए हैं कि ग्रह स्वराशि में है या उच्च की राशि में है; मूल त्रिकोण राशि में है अथवा मित्र की राशि में है, नीच की राशि में है अथवा शत्रु की राशि में है। भिक्षुक दूसरे से मिली सहायता पर आश्रित होता है, वह स्थिति का स्वयं चुनाव नहीं कर सकता है। एक कहावत है कि जहाँ चाह है, वहाँ राह है अथवा मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता होता है, पर जब तक वह पर्याप्त सशक्त नहीं होता और परिस्थितियां उसे वैसा करने की अनुमति नहीं देती, तब तक वह श्रेष्ठतर परिणामों तक नहीं पहुंच पाएगा।

1.5 (ग) उच्चाभिलाषी ग्रह

कोई भी ग्रह यदि किसी राशि में हो जिसके बाद उसकी उच्च की राशि आती हो तो उसे उच्चभिलाषी कहा जाता है। ऐसे ग्रह की प्रवृत्ति अच्छे फल देने की है। जातक के विचार भी उन्नतिशील होते हैं।

1.6. आरोही व अवरोही ग्रह

1.6 (क) कोई भी ग्रह यदि अपने नीच बिन्दु (जो कि परम उच्च के बिन्दु से एकदम 180° की दूरी पर होता है) को पार करके आगे बढता है और अपने उच्च के बिन्दु की ओर बढता है तो उसे **आरोही** कहते हैं।

1.6 (ख) कोई भी ग्रह जब परम उच्च के अंश को पार करके अपने परम नीच के बिन्दु (जो कि परम उच्च के बिन्दु से एकदम 180° की दूरी पर होता है) की ओर बढता है तो उसे **अवरोही** कहते हैं।

1.6 (ग) प्रथम स्थिति में ग्रह धीरे-धीरे बल लाभ करता जाता है और दूसरी स्थिति में ग्रह का बल प्रति मिनट कम होता जाता है, तब तक कम होता जाता है जब तक वह परम नीच के बिन्दु पर पहुंचकर पूर्णतया बलहीन न हो जाए।

1.7. चंद्रमा के पक्षीय बलाबल

1.7 (*i*) चन्द्रमा जब पूर्ण (पूर्णिमा का अथवा सूर्य से 180° दूर सामने आता है) होता है तब बहुत शक्तिशाली होता है। जब चन्द्र पूर्णमासी के दिन पूर्ण चन्द्र के बिन्दु को पार कर लेता है 180° से कम अंतर होने लगता है तो उसकी शक्ति दिन-प्रतिदिन घटने लगती है (उसे घटता चांद कहते हैं) और तब तक घटती जाती है जब तक वह सूर्य के साथ मिलकर पूर्ण–अस्त–बिन्दु तक नहीं पहुंच जाता *(जब सूर्य और चन्द्र के भोगांश का अन्तर शून्य डिग्री हो जाता है तो उसे अमावस्या का दिन कहते हैं)*। इस *पखवाड़े को* **कृष्ण पक्ष** कहा जाता है। सूर्य से चन्द्रमा के दूसरे पक्ष के गोचर की स्थिति एकदम विपरीत होती हे। अमावस्या के बाद 0° से अंतर बढ़ने लगता है, चन्द्रमा दिन-प्रतिदिन बल प्राप्त करता जाता है और सूर्य से 180° के अन्तर पर पहुंच कर पूर्ण चन्द्रमा कहलाता है। इस पखवाड़े को **शुक्ल पक्ष** कहते हैं। सूर्य के भोगांश को जिस क्षण वह पार कर लेता है आगे बढता है, उसे 'नया चांद' (पड़वा या एकम् तिथि) कहते हैं।

प्रश्न-माला

1. शनि, बुध और वृहस्पति के गुण-धर्म क्या हैं? प्रकाश डालिए।
(उ० 1.2 (ज), 1.2 (घ) तथा 1.2 (च))
2. पुरुष ग्रहों और नपुंसक ग्रहों के नाम दीजिए। (1.2 (अ))
3. शुभ ग्रहों अशुभ ग्रहों (सौम्य, क्रूर और पाप ग्रहों) के नाम दीजिए। (उ० 1.1 (च))
4. धनु, मकर, मेष, कर्क, वृश्चिक और कन्या राशियों के स्वामियों के नाम दीजिए। (उ० 1.1 (च))
5. क्या राहु और केतु को किसी का स्वामित्व दिया गया है?
(उ० 1.1 (च))
6. सभी ग्रहों की उच्च स्थिति और नीच स्थिति को अंशों के साथ दीजिए। इन ग्रहीय स्थितियों की क्या उपयोगिता है?
(उ० 1.5 (क))
7. सभी सात ग्रहों की मूल त्रिकोण राशियों को अंशों के साथ दीजिए। इन ग्रहीय स्थितियों का क्या महत्व है? (उ० 1.5 (ख))
8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–
(क) नक्षत्र और उनके स्वामी। (उ० 1.1 (ग))
(ख) निम्नलिखित ग्रहों के द्वारा शासित नक्षत्रों के भोगांश–
(*i*) मंगल (*ii*) चन्द्र (*iii*) शनि
(*iv*) शुक्र (*v*) राहु (*vi*) बुध
(*vii*) सूर्य (*viii*) वृहस्पति (*ix*) केतु। (उ० 1.1 (ग))
(ग) निम्नलिखित ग्रहों के द्वारा किसी राशि को पार करने में कितना समय लगता है–
(*i*) बुध (*ii*) वृहस्पति (*iii*) मंगल (*iv*) शनि
(उ० 1.1 (च))
(घ) कौन से ग्रह निम्नलिखित के कारक है?
(*i*) मन (*ii*) वाणी (*iii*) शिक्षा और आनन्द
(उ० (*i*) (च), (*ii*) बु, (*iii*) वृ०, (*iv*) शु)
(च) 'ग्रहीय केबिनेट'। (उ० 1.1 (त))
(छ) ग्रहों के देवता। (उ० 1.1 (थ))

□□□

पाठ–2

राशियां और उनकी विशेषताएं

2.1 (क) हमने भचक्र के 12 भागों के बारे में जान लिया है जिन्हें राशि कहते हैं। इन राशियों के नाम परिच्छेद 1.1 (च) में दिए जा चुके हैं। इन राशियों के स्वामी जो ग्रह हैं, उनके बारे में और उन ग्रहों की विशेषताओं के बारे में भी हम भली भांति ज्ञान प्राप्त कर चुकें हैं।

इस पाठ में हम राशियों की विशेषताओं के बारे में विचार विमर्श करेंगे। जब तक हम राशियों के प्रभाव और उनकी प्रकृति से सुपरिचित नहीं होंगे, तब तक हम इन राशियों में ग्रहों की युति के प्रभावों को नहीं समझ सकेंगे। अतः हमें बारह राशियों की विशेषताओं को गम्भीरता से समझना होगा।

2.1 (ख) राशियों को उनकी विशेषताओं के अनुसार निम्नलिखित ढंग से वर्गीकृत करना होगाः

(*i*) **राशियों की प्रकृति**–बारह राशियों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया हैः चर, स्थिर, द्विस्वभाव

चर–	(1) मेष	(4) कर्क
	(7) तुला	(10) मकर
स्थिर–	(2) वृष	(5) सिंह
	(8) वृश्चिक	(11) कुम्भ
द्विस्वभाव–	(3) मिथुन	(9) धनु
	(6) कन्या	(12) मीन

(*ii*) **तत्त्व**–शरीर पांच तत्वों से बना है उनमें से चार कुण्डली में हैं–अग्नि, पृथ्वी, वायु और जल

अग्नि–	(1) मेष	(5) सिंह	(9) धनु
पृथ्वी–	(2) वृष	(6) कन्या	(10) मकर
वायु–	(3) मिथुन	(7) तुला	(11) कुम्भ
जल–	(4) कर्क	(8) वृश्चिक	(12) मीन

नोटः पंचमहाभूतों का पाँचवा तत्व "आकाश" भगवान या विधाता के हाथ में है। इष्ट कृपा से देवज्ञ इसका प्रयोग कर पाते हैं।

(*iii*) **विषम और सम राशियां–**

विषम–मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ।

सम– वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन।

(*iv*) **राशियों के लिंग : पुरुष और स्त्री–**

पुरुष– मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ

(सभी अग्नि और वायु तत्त्व राशियां एवं सभी विषम राशियां)

स्त्री– वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन

(सभी जल और पृथ्वी तत्त्व राशियां और सम राशियां)

पुरुष राशियां प्रबल, प्रभावशाली, फुर्तीली और आक्रामक होती है।

स्त्री राशियां मृदुल, आत्मसमर्पणशील, मातृत्व लिए और शांत व गंभीर होती है।

(*v*) **काल पुरुष के अंग :** भचक्र की 12 राशियां शरीर के निम्नलिखित अंगों का प्रतिनिधित्व करती हैं :

राशियां	शरीर के भाग
(1) मेष	सिर
(2) वृष	चेहरा, गर्दन सहित चेहरा
(3) मिथुन	भुजाएं, छाती का ऊपर का हिस्सा, कंधे
(4) कर्क	दिल, छाती, फेफड़े, पेट का ऊपरी हिस्सा
(5) सिंह	छाती से नीचे का पेट और नाभि से ऊपर का पेट
(6) कन्या	कमर, कूल्हा, बस्ति के ऊपर और नाभि के नीचे का हिस्सा।
(7) तुला	बस्ति के नीचे का भाग।
(8) वृश्चिक	गुदा, जननेन्द्रिय, गुप्तांग
(9) धनु	कूल्हा
(10) मकर	दोनों जाँघे ओर पीठ
(11) कुम्भ	टखने, टांगों की पिंडलियां
(12) मीन	पैर

उपर्युक्त भागों के अतिरिक्त शरीर के अनेक अन्य भीतरी भागों का भी ये राशियां प्रतिनिधित्व करती हैं।

ज्योतिष विशारद में 'मेडिकल ज्योतिष' का अध्ययन करते समय हम इस विषय का ज्ञान प्राप्त करेंगे। 12 राशियों को विभिन्न वर्गों में विभक्त करने की और भी अनेक विधियां हैं जिससे शरीर के प्रत्येक और सभी भागों का प्रतिनिधित्व हो सके। इसके लिए **द्रेष्काण**[1] और **द्वादशांश**[2] का भी उपयोग किया जाता है। वर्तमान में काल पुरुष के बारे में एक प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त करनी पर्याप्त होगी।

(*vi*) **राशियों की प्रकृति**–कफ, पित्त और वायु।

पित्त प्रकृति–मेष, सिंह, धनु (अग्नि तत्त्व राशियां)

वायु प्रकृति– वृष, कन्या, मकर (पृथ्वी तत्त्व राशियां)

मिश्रित प्रकृति–मिथुन, तुला, कुम्भ (वायु तत्त्व राशियां)

कफ प्रकृति–कर्क, वृश्चिक और मीन। (जल तत्त्व राशियां)

मैडिकल ज्योतिष में (*v*) और (*vi*) दोनों में दी गई जानकारियां बहुत अधिक लाभदायक हैं। ग्रहों का इन राशियों से सम्बन्ध ठीक फलित देता है।

(*vii*) **वर्ण**–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शुद्र।

ब्राह्मण–सभी जल तत्त्व राशियां ब्राह्मण हैं (अध्यापक, पुजारी, प्रचारक) कर्क, वृश्चिक, मीन।

क्षत्रिय– सभी अग्नि तत्त्व राशियां क्षत्रिय हैं (सैनिक) मेष, सिंह और धनु राशि।

वैश्य– सभी पृथ्वी तत्त्व राशियां वैश्य हैं (व्यापारी, किसान आदि) वृष, कन्या ओर मकर राशि।

शुद्र– सभी वायु तत्त्व राशियां शुद्र हैं (कर्मचारी वर्ग) मिथुन, तुला और कुम्भ।

1. तथा 2 वर्गों में द्रेष्कोण तथा द्वादशांश

जातक की प्रकृति और रुझान के निर्णय करने में ओर जातक के काम काज के बारे में फैसला लेने में यह विभाजन अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होता है।

(*viii*) **राशियों के तत्वों का प्रयोग**

जल राशियां (क) कर्क, वृश्चिक, मकर और मीन

(ख) जल पर निर्भर राशियां–वृष, मिथुन, कन्या और कुम्भ।

(ग) टेढ़ा मेढ़ा रास्ता जो जलहीन हो–ये भूखंड मेष, सिंह, तुला और धनु द्वारा प्रतिनिधित्व पाते हैं।

(*ix*) **दिशाएं–** ये 12 राशियां निम्नलिखित ढंग से चार दिशाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं–

पूर्व– मेष, सिंह, और धनु (अग्नि) (1, 5, 9)

दक्षिण– वृष, कन्या और मकर (पृथ्वी) (2, 6, 10)

पश्चिम– मिथुन, तुला, कुम्भ (वायु) (3, 7, 11)

उत्तर– कर्क, वृश्चिक, मीन (जल) (4, 8, 12)

फलित में इस विभाजन का भी बहुत उपयोग होता है। इनका उपयोग अनेक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। किन्तु अधिकांशतः इसका उपयोग इस निर्णय के लिए किया जाता है कि किस दिशा से वर या वधू मिलेगी और किस दिशा में व्यक्ति गया था अथवा किस दिशा में व्यक्ति जाएगा अथवा किस दिशा में उसका स्थानांतरण होगा आदि।

(*x*) **दिवाबली और रात्रि बली राशियां**–कुछ राशियां दिन में बली होती हैं ओर कुछ राशियां रात्रि के समय बली होती है।

दिवाबली राशियां–सिंह (5), कन्या (6), तुला (7), वृश्चिक (8), कुम्भ (11) और मीन (12)

रात्रि बली राशियां–मेष (1), वृष (2), मिथुन (3), कर्क (4), धनु (9), मकर (10)

टिप्पणी–सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन माना जाता है और सूर्यास्त से सूर्योदय तक रात्रि मानी जाती है।

(*xi*) **द्विपाद राशियां तथा चतुष्पाद राशियां–**

द्विपाद–मिथुन, कन्या, तुला, धनु राशि का प्रथम आधा भाग (जिसका प्रतिनिधित्व मनुष्य धनुष को लिए करता है) और कुम्भ।

चतुष्पाद–मेष, वृष, सिंह, धनु राशि का द्वितीय आधा भाग (जिसका प्रतिनिधित्व घोड़ा करता है) और मकर राशि का ऊपर का आधा भाग (जो हिरण मुख है)

जलीय–कर्क, मीन और मकर राशि का पीछे का आधा भाग।

अपवाद–कुछ ज्योतिषी कुंभ को भी जलीय राशि मानते हैं और कर्क को कीट राशि मानतें हैं।

कीट–वृश्चिक (कीड़ा आदि)

टिप्पणी– मानव राशियां यदि प्रथम भाव-मध्य में आती हैं तो वे बली होती हैं। **चतुष्पाद राशियां** दशम भाव मध्य में आने पर बली होती हैं। **जलीय राशियां** चतुर्थ भाव मध्य में आने पर बली समझी जाती हैं। **द्विपाद राशियां** दिन के समय बली होती हैं। **चतुष्पाद राशियां** रात्रि के समय बली होती हैं। **सरीसृप** (रैपटाइल) अथवा रैंगने वाले जीव की राशियां भोर के समय और सूर्यास्त के समय बली होती हैं।

2.2 राशियों के चिन्ह

1. मेष मेढा है।
2. वृष सांड है।
3. मिथुन में पुरुष और स्त्री का जोडा है।
4. कर्क एक कंर्कट है
5. सिंह एक शेर है
6. कन्या एक नौका में बैठी हुई स्त्री है जिसके एक हाथ में धान्य है और दूसरे हाथ में भंवरजाल हैं
7. तुला एक व्यक्ति हाथ में तराजू लिए हुए हैं।
8. वृश्चिक रेंगने वाला सरीसृप है।
9. धनु में एक व्यक्ति धनुष ताने हुए है, उसका निचला भाग अश्व का है।

10. मकर एक मगरमच्छ है जिसका चेहरा हिरण जैसा है।
11. कुम्भ एक व्यक्ति हाथ में घड़ा लिए हुए है।
12. मीन (दो मछलियां हैं जिनके सिर और पूंछ एक दूसरे से विपरीत स्थिति में हैं)

राशियों की विशेषताओं की जानकारी देने के लिए ही उपर्युक्त वर्गीकरण पर विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त हम प्रत्येक राशि के बारे में एक-एक करके और अधिक विवेचन प्रस्तुत करेंगे।

2.3 (ग) राशियों के गुणधर्म–

(*i*) **मेष**–रत्नों को रखने का स्थान, धातु, अग्नि, पृथ्वी का वह तल जिसके नीचे रत्नों और खनिज-पदार्थों का भंडार हो। **वर्ण**–रक्त, लाल, चन्द्र राशि, पाप राशि, उद्गम स्थान में बली, निवास वन। उसकी गोलाकार आंखें, चौकोर चेहरा, अच्छी व्यावहारिकता, मिलनसार, तुनुकमिज़ाज़, झूठी बात बोलने में ज़रा भी झिझकती नहीं। पृष्ठोदय राशि, रजोगुण की प्रबलता, *रात्रि की गहनता में अन्धी*।

(*ii*) **वृष**–वन अथवा खेत। भूमि जहां पशु अथवा खेतिहार रहते हैं। जलपूर्ण खेत जहां धान उगाए जाते हैं। वर्ण– श्वेत, चन्द्र राशि, शुभ राशि, चौड़ी जांघें, वड़ा चेहंरा, क्षमाशील, व्यावहारिक योग्यता, तंगहाली, विशिष्ट नेत्र, सांड की तरह व्यवहार करने वाला, तुनुकमिज़ाज़, (यदि भड़काया जाए), गांव, व्यापारी-वर्ग, *पृष्ठोदय, रात्रि बली*।

(*iii*) **मिथुन**–वह स्थान जहां नर्तक, संगीतकार, कलाकार, वेश्याएं रहती हैं। शयनकक्ष, मैथुनिक आनन्द लेने का स्थान, अंतःकक्षीय खेल, वह स्थान जहां ताश अथवा अन्य प्रकार की शर्तें लगाना चलता हो। जुए के अड्डे। रंग तोतिया हरा, चन्द्र राशि, पाप राशि, उद्गम स्थान में मध्यम उभयोदया राशि, घुंघराले बाल, काले ओठ, अन्य व्यक्तियों के विचारों की व्याख्या करने में चतुर, उन्नत नाक, संगीत में रुचि, गृह-कार्य में रुचि, पतली भुजाएं, लम्बी ऊँगलियां, शर्मीली, गांवों में निवास करने वाली, *मध्य दिन में अच्छी*।

(*iv*) **कर्क**—जलीय खेत जहां धान पैदा होता है, कुएं, तालाब, नदी के किनारे जहां पौधों की अधिकता होती है, झाड़ियां और पेड़ जो कि नमी और अतिरिक्त आर्द्रता के कारण हो जाते हैं, पानी का झरना।

रंग—गेहुंआ लाल, चन्द्र क्षेत्र, क्रूर, साधारण लग्न पृष्ठोदय, उद्गम स्थान में लम्बा, चलने में तेज़, धन का शौकीन, शुभ राशि, गुह्य प्रवृत्तियां, मिलनसार प्रकृति, स्वार्थहीन, दूसरों के लिए बलिदान करने वाला। घुंघराले बाल, धन का इच्छुक, धार्मिक, संकोची।

(*v*) **सिंह**—घने वनों के इलाके, पर्वत, पहाड़ियां और टीले, किले। वर्ण—पीलापन लिए हुए श्वेत जैसे धुआं होता है, सूर्य राशि, मध्यम उत्थान। दिन बली शीर्षोदय राशि, निवास—गुफाएं, पर्वत। लाल आंखें, लम्बे गाल, चौड़ा चेहरा, गौरवमय, क्रूर राशि, *रात्रि की गहनता में अंधा, लाल आंखे, चौड़ा चेहरा*।

(*vi*) **कन्या**—मिस्त्रीगिरी के स्थान, स्त्रियों के मनोरंजन के स्थान, चरागाह भूमि, धान्यवाली भूमि। वर्ण—बहुरंगी, शुभ राशि, मध्यम उत्थान, शीर्षोदय राशि, पेड़-पौधों वाली भूमि, कन्धों और भुजाओं का झुकना, सच्चा और दयालु, बच्चों की सीमित संख्या, काले बाल, अच्छी मानसिक योग्यता, विधि-अनुसार कार्य करने वाला और तर्कशील, **सूर्य राशि,** ***दोपहर में अंधा***।

(*vii*) **तुला**—ऊंची भूमि जहां अनाज उत्पन्न होता है। अनाज मुख्य वस्तु अथवा मुख्य वाणिज्य है और तुला तोलने वाली तराजु का प्रतिनिधित्व करती है। नुक्कड़नुमा दुकानें, एक धनी व्यक्ति के रहने का स्थान (व्यापारी अमीर हुआ करते हैं) एक व्यापारी का घर। वर्ण—काला, शुभ राशि, मध्यम उत्थान, शीर्षोदय राशि, बाजार, सुन्दर बाह्मकृति, तर्क करने में निष्पक्ष, बहादुर, ज़वानी में छरहरा शरीर, किन्तु मोटापे की तरफ झुकाव। गोल चेहरा, अच्छा रंग, पाप राशि, ***दोपहर—पूर्व बहरा***।

(*viii*) **वृश्चिक**—वे स्थान जहां छेद अथवा बिवर हो, जहां रेंगने वाले जीव जैसे सांप रहते हों, विष, पहाड़ों ओर टीलों में हिम दरारें, छिपे हुए स्थान, स्वर्णिम वर्ण, शुभ राशि, मानव-शरीर के गुप्त भाग, लम्बा उत्थान,

शीर्षोदय राशि, चौड़ी और फैली हुई आंखें और चौड़ी छाती। बाल्यावस्था में बीमारी से ग्रस्त, क्रूर काम करेंगे, आत्मनिर्भर, साहसी, सहनशक्ति, प्रबन्धक योग्यता, *दोपहर–पूर्व बहरी*।

(*ix*) **धनु**–वह स्थान जहां घोड़े, रथ और हाथी रखे जाते हैं। राजा का निवास स्थान। ब्राउन रंग, दिन बली, लम्बा उत्थान, पृष्ठोदय राशि, निवास स्थानः युद्ध का स्थान, लम्बोत्तरा चेहरा और गर्दन, बडे कान और नाक, अत्यधिक शक्ति, उदार, प्रसन्नचित, अच्छे दिल वाला, भौतिक संस्कृति को पसंद करने वाला, यात्रा–पसंद, ऊंची आवाज़ तीसरे प्रहर बहरी, और अपंग *दोनों सन्ध्किाल में विघातक*।

(*x*) **मकर**–नदियां, वन, जलीय स्थान, बहुत मात्रा में पानी वाले स्थान, नदी के दोनों किनारे अथवा पहाड़। गेहुआं पीला वर्ण, उत्थान, पृष्ठोदय राशि। निचले अंगों में कमज़ोर, अच्छी शक्ति, नाक, *दोपहर–पश्चात् बहरी और संध्याकाल में पंगु और विघातक*।

(*xi*) **कुम्भ**–वे स्थान जहां पानी सूख चुका है। वे स्थान जहां वे मनुष्य रहते हैं जो शराब बनाते हैं अथवा जहां पक्षी रहते हैं। घर का वह स्थान जहां घड़े रखे जाते हैं। वह स्थान जहां बहुत सारे घड़े रखे जाते हैं। वर्ण–कालापन लिए हुए सफेद, चन्द्र राशि, टांगें घुटने एवं टखने के बीच का भाग, पाप राशि, दिन बली, शीर्षोदय राशि, देखने में सुंदर, प्रतिभावान, काले बाल, क्षमाशील स्वभाव। दोपहर पश्चात् पंगु तथा दोनों संध्याकाल में विधातक।

(*xii*) **मीन**–धार्मिक और पवित्र स्थान, वे नदियां जिनमें पवित्र स्नान लिया जाता है, समुद्र, महासागर, वे स्थान जहां मंदिर और तीर्थस्थान होते हैं, वायलेट रंग, चन्द्र राशि, शुभ राशि, कम उत्थान, उभयोदय राशि, चमकता और सुगठित शरीर, पत्नी को चाहने वाला, शिक्षित विद्वान, रिजर्व प्रकृति का। *दोनों संध्याकाल में विघातक*।

टिप्पणी–कर्क, वृश्चिक और मीन राशि के अंतिम भाग को ऋक्ष सन्धि कहते हैं और उन्हें प्रगण्डान्त के नाम से जाना जाता है। *दोनों संध्याकाल में विधातक*।

2.3 (घ) नोटः 1. पैरा 2.1 (ख) (*xi*)

(*i*) **पृष्ठोदय राशियां**–मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर (जो उदय होते समय शरीर का पूँछ वाला भाग पहले उठे)

(*ii*) **शीर्षोदय**–सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक तथा कुंभ (जिनका पहले सिर उठता है)

(*iii*) **उभयोदय राशियां**–मिथुन तथा मीन (प्राशर होरा तथा वृहद जातक में मिथुन को शीर्षोदय माना है जबकि फलदीपिका में उभयोदय ही माना गया है।

2.4. बारह राशियों का प्रयोग मुहुर्त में करते समय लग्न के लिए निम्न प्रकार से व्यवहार करते हैं:

श्रेणी	**दिन के समय**	**रात्रि के समय**
अन्धी–	मेष, वृष तथा सिंह	मिथुन, कर्क तथा कन्या
बहरी–	तुला, वृश्चिक	धनु, मकर
लंगड़ी–	कुंभ	मीन

नोटः विभिन्न ग्रंथकारों ने विभिन्न-विभिन्न मत दिए गए हैं। हमने प्रयास से सर्वमान्य लिए हैं। हो सका तो भविष्य में इस भ्रांति पर शोध करके प्रकाश डालेंगे।

प्रश्न-माला

1. ग्रहों की विशेष्ताओं के बारे में आप क्या जानते हैं? क्या तुम सोचते हो कि ग्रहों की विशेषताओं से मानव-मात्र के भौतिक और मानसिक विकास पर प्रभाव पड़ता है? (उ० 1.3)
2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

(क) चर, स्थिर और द्विस्वभाव राशियां। (उ० 2.1 (व) (*i*))

(ख) राशियों के तत्त्व (3.1 (ख) (*ii*))

(ग) राशियों के लिंग (घ) शरीर के वे भाग जिनका प्रतिनिधित्व वृश्चिक, सिंह, कन्या और वृष राशियां करती हैं।

(2.1 (ख) (*i*))

3. उन वर्णों (रंगों) के बारे में आप क्या जानते हैं जिनका प्रतिनिधित्व राशियां करती हैं। क्या उन वर्णों और तत्त्वों के बीच कोई संबंध होता है जिनका प्रतिनिधित्व भचक्र की राशियां करती हैं?

(उ० 2.1 (ख) (*vii*))

4. निम्नलिखित राशियां किसकी प्रतीक हैं–

(*i*) मेष (*ii*) सिंह

(*iii*) तुला (*iv*) वृश्चिक

(*v*) मीन (उ० 2.2)

5. दिवाबली और रात्रिबली राशियों के बारे में आप क्या जानते हैं?

(उ० 2.1 (ख) (*x*))

6. इस पर विचार कीजिए कि राशियों की विशेषताएं किसी ज्योतिष को फलित देने में कैसे सहायक बनती है? (उ० 2.1 (ग))

7. सिंह राशि और सूर्य की विशेषताओं को यदि एक साथ मिलाकर रखा जाए तो सिंह लग्न में उत्पन्न जातक के बारे में आपके क्या विचार होंगे? (उ० 1.2 (क), 2 (ग) (*v*))

❑❑❑

पाठ—3

ग्रहों एवं भावों के कारकत्व—भाग-1

3.1 (क) **कारक**—इसका शाब्दिक अर्थ है वह व्यक्ति जो कार्य करता है। कारक प्रत्यय को भी कहते हैं जो परिणाम के लिए उत्तरदायी तत्त्व की ओर संकेत करता है। दूसरों के द्वारा सौंपे गए काम को उनके लिए, उनकी ओर से उनकी तरह ही पूरा करने वाले को भी कारक कहते हैं। कारकत्व उस गुण या अधिकार को कहते हैं जिसे कारक को सौंपा गया है। ज्योतिषीय शब्दावली में किसी भाव के स्वामी की तरह उस भाव के कार्य को करने वाले अथवा उस भाव का फल देने वाले ग्रह को उस भाव का **कारक** कहते हैं। यहां पर प्रश्न उठता है कि भाव क्या है?

जातक के जन्म के समय पूर्वी क्षितिज में जो राशि उदय होती है उसे लग्न या प्रथम भाव माना जाता है। उसके बाद क्रमशः उदय होने वाली राशियों को द्वितीय भाव, तृतीय भाव और इसी तरह बारह भावों को तब तक नाम देते जाते हैं जब तक लग्न वाली राशि ही क्रम में दुबारा न आ जाए। वृत्त का एक सम्पूर्ण चक्कर हमें जन्म-कुंडली में एक से लेकर 12 भावों को बताता जाता है। विभिन्न राशियों में (इस जातक के लिए अब हम उन्हें विभिन्न भावों के रूप में पुकारेंगे) गोचर में भ्रमण करते हुए ग्रहों की उस समय की स्थिति भी इससे मिलती है।

उदाहरण

मान ले कि किसी जातक के जन्म के समय तुला राशि पूर्व में उदय हो रही है। वह 'तुला' राशि जातक का लग्न यानि कुण्डली का प्रथम भाव होगा। उसके पश्चात पूर्व में वृश्चिक राशि (लगभग एक से दो घन्टे के अन्तराल पर) उदय होगी वह उस कुण्डली का द्वितीय भाव, तदोपरांत तीसरी राशि धनु पूर्व में आयेगी वह उसका तीसरा भाव बनेगी, जैसे अन्य राशियां क्रम से उदय होती जाएंगी चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश और द्वादश भाव बनती जायेंगी। जैसे तुला लग्न के पीछे कन्या राशि होती है, जो सबसे बाद में उदय होगी, उसे कहेंगे कन्या राशि 'द्वादश भाव'।

नीचे कुण्डली देखें:

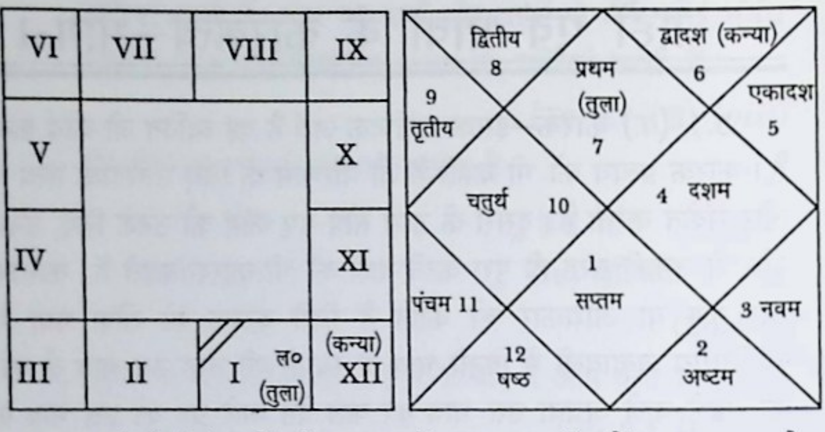

3.1 (क) (अ) ग्रहों को इन भावों का काम भी सौंपा जा चुका है। फलित के उद्देश्य से हम प्रत्येक भाव की प्रकृति, उसके स्वामी और उसके कारक का विश्लेषण करेंगे। इन तीनों बातों का अध्ययन करने के बाद हम किसी भाव के बारे में फलित कर सकेंगे। इन भावों और उनके कार्यों के बारे में अभी हम संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करेंगे। आगामी पाठों में इनका विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा।

भावों के कारकत्व

भाव	कारकत्व
प्रथम भाव	तनु भाव (किसी की शारीरिक गठन के बारे में)
द्वितीय भाव	धन भाव (धन के बारे में), वाणी
तृतीय भाव	सहज भाव, प्रक्रम भाव (भातृ भाव, छोटे भाई बहनों के बारे में)
चतुर्थ भाव	सुख भाव, बन्धु-बांधव (परिवार जन) मातृ भाव (माता, पारिवारिक जीवन के बारे में), भवन, वाहन आदि।
पंचम भाव	पुत्र भाव (बच्चों के बारे में, संतति के बारे में) विद्या, बुद्धि, अभिलाषा, कामना आदि।
षष्ठ भाव	शत्रु, अरि भाव (शत्रु, मामा) रोगस्थान (बीमारी), ऋण, साहस, सहनशक्ति।
सप्तम भाव	कलत्र भाव, (पति या पत्नी भाव) जीवन साथी, व्यापार में साझी।
अष्टम भाव	आयु भाव, रंध्र, पैतृक संपत्ति।

नवम भाव	धर्म, पितृ भाव (धर्म, पिता), भाग्य
दशम भाव	कर्म भाव (पेशा, आजीविका, कर्म)
एकादश भाव	लाभ भाव (लाभ, बड़ी बहिन, बड़ा भाई आदि), यश-मान
द्वादश भाव	व्यय भाव (खर्च आदि) मोक्ष स्थान तथा स्थिर सम्पत्ति पर व्यय, विदेश, जेल, हस्पताल, एफ. डी. में जमा राशि।

ग्रह इन भावों से प्राप्त परिणामों की ओर संकेत करते हैं। उदाहरण के लिए मान लो हम चतुर्थ भाव के बारे में जानना चाहते हैं। चौथा भाव माता और वाहन तथा कई अन्य वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करता है।

उदाहरणार्थ

चतुर्थ भाव, चतुर्थ भाव का स्वामी (अर्थात् लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी) हमें माता और वाहन, मकानादि, पृथ्वी, फैक्टरी, ऑफिस आदि के बारे में बताएगा। जन्म-कुंडली का विश्लेषण करते समय यदि हमें पता चलता है कि

(क) पुरानी वस्तु के बदले नई वस्तु के परिवर्तन करने का समय है अथवा (ख) चतुर्थ भाव के बुरे परिणाम का समय है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि हमें वाहन के बदलने वाला फलित देना चाहिए अथवा चतुर्थ भाव का संबंध माता से जोड़ना चाहिए। यह बुरा समय माता के लिए है अथवा वाहन के लिए हैं अथवा किसके लिए हैं। अतः एक विशिष्ट बिंदु तक पहुँचने के लिए ऋषियों ने अनेक विधियां दी हैं जैसे विभिन्न वर्गों आदि में भाव के विभाजन की विधि। इस तरह के विषयों के विश्लेषण के लिए **कारक** भी बहुत सहायक होते हैं और सही फलित तक पहुंचने में हमारी बहुत सहायता करते हैं।

चन्द्रमा हमें माता के बारे में बताता है। यदि चन्द्रमा पीड़ित है तथा चौथा भाव भी पीड़ित है, चौथे भाव का स्वामी भी पीड़ित है तो वह समय माता के लिए या जातक के अपने स्वास्थ्य के लिए बुरा समय माना जाना ठीक रहेगा।

इसी भांति यदि कोई ज्योतिषी चौथे भाव और चौथे भाव के स्वामी को पीड़ित पाता है तथा कारक **शुक्र** को पीड़ित पाता है, तब वाहन/मकान के परिवर्तन या उससे संबंधित अन्य कष्ट के बारे में फलित दिया जा सकता है।

अतः अब यह स्पष्ट हो चुका होगा कि किसी भाव अथवा उसके स्वामी द्वारा शासित घटना अथवा विषय वस्तु को उसके 'कारक' ग्रह से भी जोड़कर देख लेना चाहिए जिससे उस भाव से संबंधित सही निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके।

ग्रहों के द्वारा होने वाले कार्यों, उनके कारकत्वों और जन्मकुंडली में विभिन्न भावों के साथ उनके संबंधों का ज्ञान प्राप्त करना, उस ज्ञान के महत्त्व और उपयोगिता को देखते हुए, बहुत आवश्यक और उचित जान पड़ता है। जब तक इन तीनों तत्त्वों पर भली भांति विचार नहीं किया जाएगा। तब तक किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचना गलत अथवा अवैज्ञानिक होगा।

3.1 कारकत्व और ग्रह—ग्रहों के कारकत्व के रूप में जो काम सौंपे गए हैं, सर्वप्रथम हम उन पर विचार करेंगे—

(*i*) सूर्य

सूर्य आत्मा, अहं, स्वानुभुति, प्रभाव, यश, प्रतिष्ठा, शक्ति, स्वास्थ्य, दायाँ नेत्र, दिल, सामान्य कुशल-क्षेम, ऊर्जा, पिता, राजा, राजनीति, निष्ठा, चिकित्सा विज्ञान, गौरव, बिजली, वशीकरणीयता, सत्ता—अनुकूलता, पराक्रम, भव्यता का कारक है।

(*ii*) चन्दमा

चन्द्रमा दिल (कुछ विद्वान ज्योतिषी इसे दिल का कारक मानते हैं, कुछ नहीं मानतें), मन (चंद्रमा मनसो जायते) रुझान, भावना, समझ, निद्रा, प्रसन्नता, ख्याति, यश, चेहरे की कान्ति, माता, सत्ता की अनुकूलता, धन, यात्रा (दूर की यात्राए भी) जल-भंडार का कारक है।

(*iii*) मंगल

शक्ति, साहस, पराक्रम, इच्छाओं, विशेष गुणों, क्रोध, षड़यंत्र, बीमारियां, शत्रु, विपक्ष, विवाद, शस्त्र, सेनाध्यक्ष, युद्ध, दुर्घटनाएं, शस्त्र अथवा जलने से चोट अथवा घाव, भूमि, अचल सम्पत्ति, छोटा भाई, चाचा के लड़के आदि संवंधी, नेता, पुलिस, डॉक्टर, वैज्ञानिक, मैकेनिकल इंजीनियरिंग का कारक मंगल है।

(*iv*) बुध

बुध कारक है–बुद्धिमत्ता, वाणी, अभिव्यक्ति, चयन-क्षमता, शिक्षा, शिक्षण, गणित, डाकिया, तर्क, ज्योतिषी, लेखाकार, मैडिकल ज्ञान और व्यवसाय, लेखन, प्रकाशन, दूरभाष, डाक, व्यापार अथवा राजनीति में, मध्यवर्ती व्यक्ति का अभिनय, नृत्य, नाटक, वस्तुओं का मिश्रण, पत्तेवाले पेड़, मूल्यवान पत्थरों की परीक्षा, मामा (ननिहाल वाले), आकर्षण, मित्र।

(*v*) वृहस्पति

वृहस्पति कारक है–प्रवक्ता, शिक्षक, बुद्धिमानी, शिक्षण, शरीर की मांसलता, धार्मिक लाभ के कार्य, ईश्वर के प्रति निष्ठा, बड़े भाई, बड़ों का कारक, वरिष्ठ व्यक्तियों का कारक, पति, पवित्र स्थानों का कारक, मूर्तियों, शिक्षण में प्रवीणता, दर्शनशास्त्र, दान देना, धन, आदर, पुत्र, परोपकार, न्यायाधीश, विधि, ज्ञानी, धार्मिक प्रचारक, फलदार वृक्ष।

(*vi*) शुक्र

शुक्र कारक है–पत्नी, विवाह, सैक्स संबंधी मामलों का कारक, प्रजनन अंग, ऐन्द्रिय आनन्द (स्त्री जातक होने पर शुक्र, वृह० के साथ उसके पति के लिए सह-कारक हो सकता है) संगीत, काव्य, सुगन्ध, आभूषण, हीरे-जवाहरात, ऐश्वर्य की सभी वस्तुएं, दूसरों से और दूसरों के साथ सहयोग, फूल, फलदार वृक्ष, सौन्दर्य, गाय खरीदना और बेचना, जलीय स्थान, सफेदी, सांसारिक सुख आदि।

(*vii*) शनि

शनि कारक है–आयु, जीवन, मृत्यु, दुर्भाग्य, संकट, अनादर, बीमारी, गरीबी, आजीविका, अनैतिक और अधार्मिक व्यवहार, विदेशी भाषा और विज्ञान का शिक्षण, कृषिगत रोज़गार, व्यवसाय, खनिज पदार्थ, तेल, पृथ्वी की गहराई में से निकलने वाली वस्तुएं, सेवक-सेविकाएं, नौकरियां, चोरी, क्रूर कार्य, बहुत वृद्ध व्यक्ति, पंगुता अनादर, लोभ, लालच।

(*viii*) राहु–राहु दादा का कारक, कठोर वाणी, झूठ, जुआ, भ्रामक तर्क, गतिशीलता, यात्राएं, विजातीय, विदेशी, सांप के काटने, चोरी, दुष्टता, विधवा, त्वचा की बीमारियां, खुजली, एग्ज़िमा, शरीर में तेज़ दर्द, शरीर में अथवा उसके किसी भाग में सूजन, ज़हर, धार्मिक तीर्थ यात्रा।

(*ix*) केतु–केतु नाना का कारक, सत्यता का प्रतीक, दर्द, खपत, ज्वर, घाव, शत्रुओं को नुकसान पहुंचाना, जादू-टोना, कुत्ता, सींग वाले पशु, चित्तकबरे अथवा बहुरंगी पक्षी, मोक्ष ध्वजा, चाँदी, मोक्षादि का कारक होता है।

टिप्पणी–राहु शनि की तरह और केतु मंगल की तरह कार्य करता है।

3.2 (क) ग्रह कतिपय संबंधों और वस्तुओं के भी कारक है–

सूर्य–पिता, व्यवसाय और रोज़गार।

चन्द्रमा–मन, माता

मंगल–भाई और बहिन (सहोदर)

बुध–वाक् शक्ति, शिक्षा, भाषणपटु, ज्ञानार्जन, शिक्षण और स्वकुटुंबी व्यक्ति (माता की तरफ के जन)

वृहस्पति–धन, सन्तान लाभ, बड़े भाई और बहिन, शिक्षा, अध्यापक, प्रवक्ता, आदि।

शुक्र–पत्नी, वाहन, घर आदि।

शनि–आयु, नौकर, नौकरी आदि।

3.2 (ख) ग्रह जो भावों के कारक हैं–

भाव		कारक
प्रथम भाव	:	सूर्य
द्वितीय भाव	:	वृहस्पति, बुध*
तृतीय भाव	:	मंगल, शनि*
चतुर्थ भाव	:	चन्द्र, शुक्र*, बुध
पंचम भाव	:	वृहस्पति
षष्ठ भाव	:	मंगल, शनि, बुध*
सप्तम भाव	:	शुक्र
अष्टम भाव	:	शनि
नवम् भाव	:	वृहस्पति, सूर्य
दशम भाव	:	बुध, सूर्य, शनि, वृहस्पति, मंगल*
एकादश भाव	:	वृहस्पति
द्वादश भाव	:	शनि, शुक्र*

टिप्पणी वैद्यनाथ दीक्षित का 'जातक परिजात' और मंत्रेश्वर की 'फल दीपिका' में इन उपर्युक्त चिह्नांकित ग्रहों को उनके सामने निर्दिष्ट भावों का कारक नहीं माना गया है, किंतु अन्य विद्वानों ज्योतिषियों ने बुध को वाणी, भाषण–पटुता और शिक्षा का कारक, शनि को आयु का कारक, शुक्र को वाहन और संभोग, जीवन का कारक एवं मंगल को पराक्रम, तकनीकी शिक्षा का, प्रतियोगिता की भावना का कारक माना गया है।

प्रश्न-माला

1. धनु, कर्क, मेष और मकर राशियों की क्या विशेषताएं है? (उ० 2.3)
2. अग्नि, पृथ्वी और वायु राशियों के नाम दीजिए? फलित ज्योतिष में यह वर्गीकरण किस प्रकार सहायक सिद्ध होता है? (2.1 (ख))
3. निम्नलिखित वर्गों में राशियों को वर्गीकृत करो–
पृष्ठोदय, शीर्षोदय, स्थिर, द्विस्वभाव, जलीय? (उ० 2.3 (घ))
4. सम और विषम राशियां, शुभ ओर अशुभ राशियां, पुरुष और स्त्री राशियां कौन सी हैं? (उ० 2.1 (ख) (*iii*))
5. आयु, पति या पत्नी, और अचल सम्पत्ति, माता और पिता के कारक कौन से ग्रह हैं? (उ० 3.2 (क))
6. वृहस्पति, बुध, मंगल, शुक्र, सूर्य और चन्द्र के कारकत्व लिखिए। (उ० 3.2 (क))
7. प्रत्येक भाव के कारकत्व के बारे में लिखिए। (उ० 3.2(क))

❑❑❑

पाठ–4
ग्रहों की अवस्थाएं

हम यह जान चुके हैं कि ग्रह भचक्र में गतिशील है और वे नक्षत्रों के ऊपर से गोचर में गुजरते हैं (भचक्र को 27 नक्षत्रों में बांटा गया है) ग्रह अपनी सतत गतिशीलता के कारण कतिपय विशिष्ट स्थितियों को प्राप्त करते हैं, जिन्हें अवस्था कहा जाता है।

4.1 बालादि अवस्थाएं

किसी राशि में कोई ग्रह अंशों के आधार पर पांच स्थितियों को प्राप्त करता है–बाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत अवस्था।

विषम राशियों में से अवस्थाएं 6° प्रति अवस्था के हिसाब से आरोही क्रम में रखी जाती हैं।

सम राशियों में ये अवस्थाएं 6° प्रति अवस्था के हिसाब से अवरोही क्रम में रखी जाती है।

विषम	अवस्था	सम	परिणाम की श्रेणी
0° से 6°	बाल	24 से 30°	¼
6° से 12°	कुमार	18 से 24°	½
12° से 18°	युवा	12 से 18°	पूर्ण
18° से 24°	वृद्ध	6 से 12°	नगण्य प्रायः
24° से 30°	मृत	0 से 6°	नगण्य

4.2 (क) हम पूर्ववर्ती पाठों में (पैरा 1.3 (क)) इसका अध्ययन पहले ही कर चुके हैं कि ग्रह कब उच्च का, मूल त्रिकोण, स्वग्रही, नीच आदि का होता है। इस पाठ में उनकी पुनरावृत्ति हम पाठकों को उनका पुनःस्मरण कराने के लिए कर रहे हैं। क्योंकि ग्रहों की अवस्थाओं के फल जानने में इनका प्रयोग भी होगा।

सारिणी III
राशियाँ व ग्रहों की स्थिति

ग्रह	उच्चतम	नीचतम	मूल त्रिकोण	स्वग्रही*
1. सूर्य	मेष 10°	तुला 10°	सिंह 0 से 20°	सिंह 20° से 30°
2. चन्द्र	वृष 3°	वृश्चिक 3°	वृष 3° से 30°	कर्क 0° से 30°
3. मंगल*	मकर 28°	कर्क 28°	मेष 0 से 12°	मेष 12° से 30°
4. बुध*	कन्या 15°	मीन 15°	कन्या 15 से 20°	कन्या 20° से 30°
5. गुरु*	कर्क 5°	मकर 5°	धनु 0 से 10°	धनु 10° से 30°
6. शुक्र*	मीन 27°	कन्या 27°	तुला 0 से 15°	तुला 15° से 30°
7. शनि*	तुला 20°	मेष 20°	कुम्भ 0 से 20°	कुम्भ 20° से 30°

* स्वगृहीः 0° से 30° तक प्रत्येक ग्रह को अपनी राशि में समझना चाहिए।

4.2 (ख)

ग्रह की उच्चतम और नीचतम स्थिति के अधिकांश अंश दिए जा चुके हैं। इनकी मध्यवर्ती स्थिति में जब ग्रह उच्चतम अंशों की ओर बढता है तब उसे **'आरोही'** कहते है और जब ग्रह उच्चतम अंशों तक पहुंचकर नीचतम अंशों की ओर बढ़ने लगता है, तो उसे **'अवरोही'** कहते हैं। परम उच्च बिन्दु और परम नीच बिन्दु एक दूसरे से 180° की दूरी पर होते हैं अथवा यह भी कह सकते हैं कि उच्चतम बिन्दु से सातवीं राशि नीचतम बिन्दु की होती है और इसी तरह नीचतम बिन्दु से सातवीं राशि उच्चतम बिन्दु की होती है।

प्रत्येक ग्रह किसी विशेष राशि में महत्त्व की अवस्था को प्राप्त करता है। जैसे जब वह अपनी उच्च की राशि में होता है तो वह सर्वाधिक बलवान (अनुकूल) स्थिति को प्राप्त करता है और जब वह अपनी नीच की राशि में होता है तो सर्वाधिक कमजोर (प्रतिकूल) स्थिति को प्राप्त करता है। निम्नलिखित तालिका इस पक्ष को और अधिक स्पष्ट कर सकेगीः

* मंगल-वृश्चिक, बुध-मिथुन, गुरु-मीन, शुक्र-वृषभ तथा शनि-मकर में 0 से 30° तक स्वगृही होते हैं।

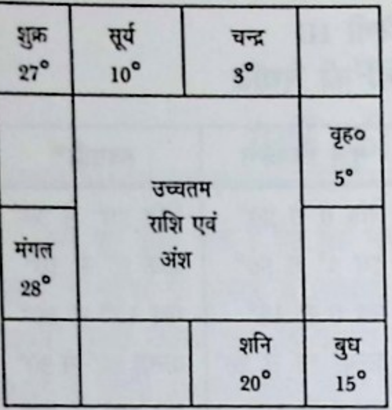

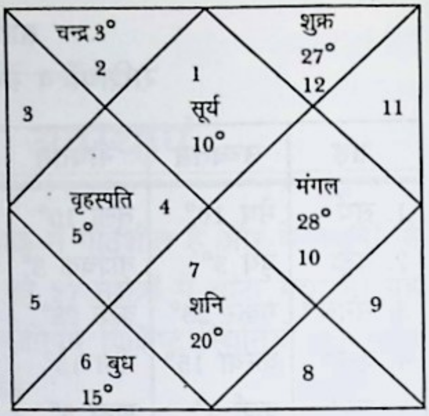

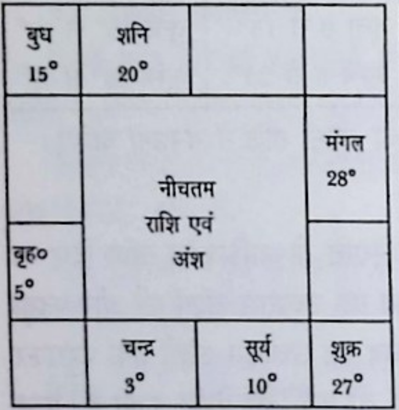

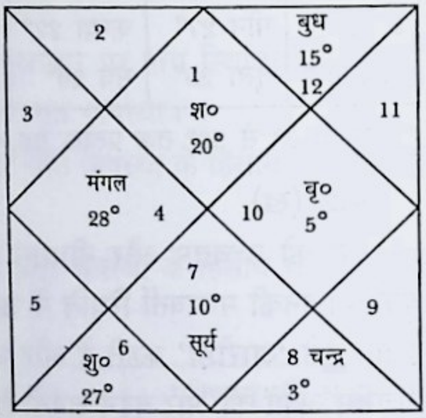

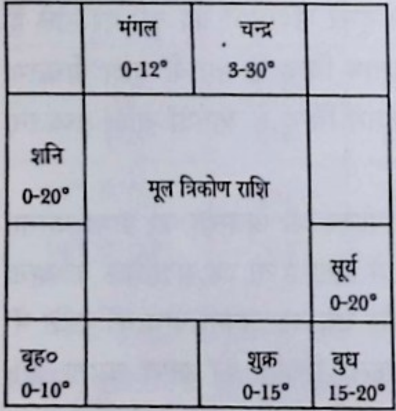

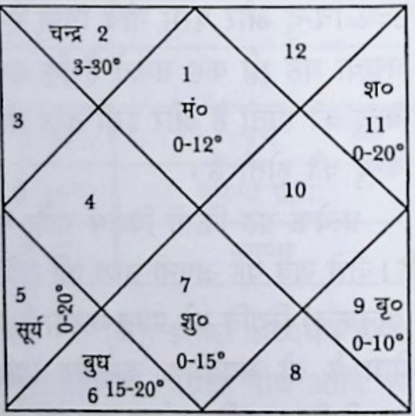

टिप्पणी—राहु और केतु नामक पातों के उच्चतम और नीचतम बिन्दु के लिए देखिए परिच्छेद 1.3 (क)

अब छात्र भली भांति समझ सकते हैं कि ग्रह अपनी उच्चतम राशि में आने पर सर्वाधिक शक्तिशाली, मूलत्रिकोण में आने पर सर्वाधिक बली और स्वग्रही होने पर बली होते हैं।

4.2 (ग) अस्त ग्रह–गोचर में जाते हुए ग्रह जब सूर्य के निकट आता है और अपना प्रकाश खो बैठता है अथवा उससे वंचित हो जाता है तब उसे अस्त होना कहते हैं। यह ग्रह की वह अवस्था है जब ग्रह अच्छे प्रभाव देने की स्थिति में नहीं होता और वह जिन भावों का स्वामी होता है उनके भी अच्छे परिणाम नहीं दे पाता है।

निम्नलिखित तालिका से ग्रह की उस अवस्था का पता चलेगा जब वह अस्त होता है–

ग्रह	मार्गी गति में अस्त सूर्य से ग्रहों की दूरी (अंशों में)	वक्री गति में अस्त सूर्य से ग्रहों की दूरी (अंशों में)
चन्द्रमा	12°	–
मंगल	17°	–
बुध	14°	12°
वृहस्पति	11°	–
शुक्र	10°	8°
शनि	16°	–

टिप्पणी–राहु और केतु केवल गणितीय बिन्दु हैं, उन्हें अस्त नहीं माना जाता। अपितु वे सूर्य का मार्ग रोकते हैं अथवा उसे ग्रहण लगाते हैं।

अस्त ग्रह के बारे में मूलभूत तथ्य यह है कि अस्त ग्रह अपनी अस्त अवधि के दौरान सूर्य के साथ उदय नहीं होता, अपितु अस्त रहता है।

4.2 (घ) ग्रहों का मैत्री संबंध-नैसर्गिक, तात्कालिक

(*i*) **नैसर्गिक मित्र**–किसी ग्रह की मूल त्रिकोण राशि से चतुर्थ, द्वितीय, द्वादश, पंचम, नवम और अष्टम (4, 2, 12, 5, 9, 8) राशियों के स्वामी

उसके मित्र होते हैं। उसकी उच्च की राशि का स्वामी तो उसका मित्र होता ही है। इन राशियों के अतिरिक्त अन्य राशियों के स्वामी अर्थात् 'मूल त्रिकोण' राशि से तृतीय, षष्ठ, एकादश, सप्तम तथा दशम (3, 6, 11, 7, 10) राशि के स्वामी उसके शत्रु होते हैं। यदि कोई ग्रह एक प्रकार की गिनती से मित्र है और दूसरी प्रकार की गणना से शत्रु बन जाता है तो उसे हम सम कहेंगे।

ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री दिखाने वाली तालिका

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
1. सूर्य	चन्द्र, मंगल, वृहस्पति	शुक्र, शनि	बुध
2. चन्द्रमा	सूर्य, बुध	–	मंगल, वृहस्पति, शुक्र, शनि
3. मंगल	सूर्य, चन्द्रमा, वृहस्पति	बुध	शुक्र, शनि
4. बुध	सूर्य, शुक्र	चन्द्रमा	मंगल, शनि, वृहस्पति
5. वृहस्पति	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
6. शुक्र	बुध, शनि	चन्द्रमा, सूर्य	मंगल, वृहस्पति,
7. शनि	बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल	वृहस्पति

विशेष ध्यानाकर्षण (ग्रहों की परस्पर संबंधी स्थिति)

ग्रह	अति मित्र	अति शत्रु	सम
मंगल + बृहस्पति बुध + शुक्र शुक्र + शनि	सूर्य + चंद्रमा सूर्य + मंगल सूर्य + बृहस्पति	सूर्य + शुक्र सूर्य + शनि	मंगल + शुक्र बृहस्पति + शनि

टिप्पणी–(क) पराशर ने कहा है–

चन्द्रस्य नारी रविचन्द्र पुत्रौ मित्रे सभाः शेषनभचराः स्युः। (3/55)

इसका अर्थ यह है कि चन्द्रमा के सूर्य और बुध मित्र हैं, शेष सब ग्रह सम हैं (सारावली में भी इसी दृष्टिकोण को दिया गया है)

(ख) राहु–	मित्र	:	वृहस्पति, शुक्र, शनि
	शत्रु	:	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल
	सम	:	बुध
केतु–	मित्र	:	मंगल, शुक्र, शनि
	शत्रु	:	सूर्य, चन्द्रमा
	सम	:	बुध, वृहस्पति

(*ii*) **तात्कालिक मैत्री**–किसी ग्रह से दूसरे, तीसरे, चौथे और दसवें ग्यारहवें और बारहवें भाव में बैठे ग्रह उसके तात्कालिक मित्र होते हैं। इनके अतिरिक्त भावों में बैठे ग्रह उसके शत्रु होते हैं (2/59)

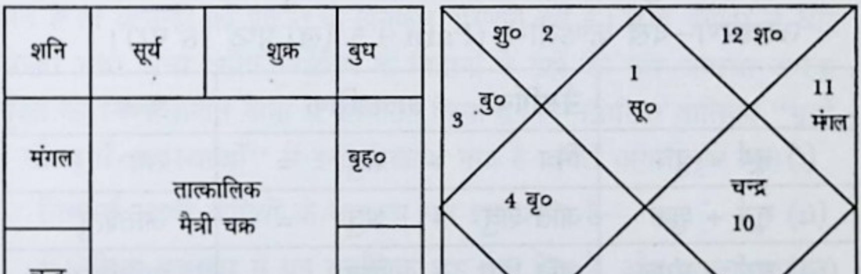

सूर्य के लिए चन्द्र, मंगल, शनि (दसवें, ग्यारहवें और बारहवें भाव में बैठे ग्रह) और शुक्र, बुध, वृहस्पति (दूसरे, तीसरे और चौथे भाव में बैठे ग्रह) उसके तात्कालिक मित्र हैं।

(*iii*) **पंचधा मैत्री**

यहां विचार किया जा रहा है कि उपरोक्त कथन (*i*) तथा (*ii*) की मित्रता को एक साथ लें तोः

नैसर्गिक मित्र		तात्कालिक मित्र		पंचधा मित्र
1. मित्र	+	मित्र	=	अधिमित्र
2. सम	+	मित्र	=	मित्र
3. शत्रु	+	मित्र	=	सम
4. शत्रु	+	शत्रु	=	अधिशत्रु
5. सम	+	शत्रु	=	शत्रु

4.2 (च) मित्रता-संबंध का प्रभाव

एक ग्रह निम्नलिखित प्रकार का फल देता है–(उपर्युक्त उल्लिखित पांच प्रकार के संबंधों में)

1. प्रमाणिक रूप से पूर्ण शुभ फल की गारंटी
2. शुभ परिणामों की प्राप्ति
3. किसी मित्र ग्रह का समय (दशा) आने तक रूकिए और प्रतीक्षा कीजिए।
4. पूर्ण अशुभ परिणामों की ओर संकेत।
5. केवल अशुभ फल (अरिष्ट)।

उदाहरण–देखें कुण्डली-1 (Para 1.5 (ख) पृष्ठ 18 पर)।

	नैसर्गिक		तात्कालिक		फल
(*i*) सूर्य + बुध	मित्र	+	शत्रु	=	सम
(*ii*) सूर्य + शुक्र	अति शत्रु	+	शत्रु	=	अतिशत्रु
(*iii*) सूर्य + मंगल	अति मित्र	+	मित्र	=	अतिमित्र
(*iv*) सूर्य + चंद्रमा	अति मित्र	+	मित्र	=	अतिमित्र
(*v*) सूर्य + गुरु	अति मित्र	+	मित्र	=	अतिमित्र
(*vi*) सूर्य + शनि	अति शत्रु	+	शत्रु	=	अतिशत्रु
(*vii*) बुध + शुक्र	अति मित्र	+	शत्रु	=	सम
(*viii*) बुध + मंगल	शत्रु	+	मित्र	=	सम
(*ix*) बुध + चंद्रमा	सम	+	मित्र	=	मित्र
(*x*) शुक्र + मंगल	सम	+	मित्र	=	मित्र
(*xi*) शुक्र + गुरु	शत्रु	+	मित्र	=	सम

देखें इस कुण्डली में 'सूर्य' शत्रु शुक्र तथा सम बुध के साथ अतिमित्र मंगल के घर में है। परन्तु शुक्र सम बुध, सूर्य अतिशत्रु तथा मित्र मंगल के साथ मंगल की राशि में हैं, शुक्र के सूर्य के साथ होने से विवाह व गृहस्थ का सुख नहीं मिला, शुक्र विवाह का कारक तथा चतुर्थेश है वह पीड़ित रहा।

4.2 (छ) उच्च का ग्रह	:	100% अच्छे प्रभाव
मूल त्रिकोण	:	80% अच्छे प्रभाव
स्वगृही	:	50% अच्छे प्रभाव
मित्र राशि	:	25% अच्छे प्रभाव
सम राशि	:	12½% अच्छे प्रभाव
नीच राशि	:	अच्छे प्रभाव—बिल्कुल नहीं
अथवा		
शत्रु राशि	:	अशुभ परिणाम अधिक मिलेंग

4.3 ग्रहों की अवस्थाओं की नौ श्रेणियां

जब ग्रह उच्च की राशि, मूल त्रिकोण राशि, स्वग्रही आदि राशियों को प्राप्त करते हैं तो वे उन्हीं की प्रकृति के अनुकूल परिणाम देते हैं। ऋषि पराशर ने और मंत्रेश्वर तथा अन्य अनेक ज्योतिष के विद्वानों ने ग्रहों की उस अवस्था अथवा प्रकृति को निम्नलिखित नामों से अभिहित किया है। निम्नलिखित तालिका **"ग्रहों के नौ वर्गों/अवस्थाओं"** में इन्हें दिखाया गया है—(देखें अगले पृष्ठ पर)

निष्कर्ष—सभी ऋषियों के सामान्य मत इस प्रकार हैं—

(*i*) **दीप्त अवस्था** में ग्रह सर्वाधिक शुभ फल देता है, और प्रसन्न, सज्जन, दयालु और स्नेही प्रकृति देता है, सुखी आरामदायक जीवन जिसमें पूर्ण आदर मिलें, धन आदि भी जातक को इस दीप्त ग्रह की दशा के समय में मिलता है। कुछ अंशों तक जन्म से ही मिलना प्रारंभ हो जाता है।

(*ii*) दीप्त से सुखित अवस्था में आने पर ग्रह की शक्ति घट जाती है। इसी प्रकार सुखित से स्वस्थ, मुदित, शान्त और शक्त भी कम होती जाती है, प्रपीड़ित (अस्त) अवस्था में जब ग्रह आता है तो वह बिल्कुल प्रभावहीन हो जाता है वहां वह 100% पाप ग्रह बन जाता है।

मानसागरी फलदीपिका तथा उत्तरकालामृत में प्रत्येक अवस्था के जो फल दिए हैं उन्हें तालिका में दर्शाया गया है।

सारिणी IV
नव ग्रहों की दीप्तादि अवस्थाऐं

संख्या	मानसागरी		फलदीपिका		उत्तराकालामृत		वृहत्त पराशर		ग्रहों की विविध अवस्थाओं में होने पर परिणाम
	ग्रहों की अवस्था का.नाम I	ग्रहों की स्थिति II	अवस्था का नाम III	ग्रह की स्थिति IV	अवस्था का नाम V	ग्रह की स्थिति VI.	अवस्था का नाम VII	ग्रह की स्थिति VIII	मानसागरी के अनुसार IX
1.	दीप्त	उच्च	प्रदीप्त (100% अच्छा)	उच्च	दीप्त	परम उच्च	दीप्त	उच्च	पराक्रम, अपरिमित धन, शत्रुओं का नाश, सदैव प्रसन्न
	–	–	सुखित (80% अच्छा)	मूल त्रिकोण	–	–	–	–	उपर्युक्त वही फल
2.	स्वस्थ	स्वग्रही	स्वस्थ (75% अच्छा)	स्वग्रही	स्तंभित अवस्था	स्वग्रही	स्वस्थ	स्वग्रही	अपना वाहन, धन, मूल्यवान रत्न, जवाहरात, राजसी महल, सेनाध्यक्ष, युद्ध में विजयी।
3.	मुद्रित	मित्र भाव	मुदित (60% अच्छा)	मित्र भाव में	मुदित	परम मित्र भाव	प्रमुदित	परममित्र भाव	धन का लाभ, बहुमूल्य हीरे जवाहरात, धार्मिक मनः वृत्ति, शत्रुओं पर विजय, स्त्रियों के लिए आभूषण।
4.	शांत	शुभ ग्रहों के वर्ग	शांत (50% अच्छा)	शुभ ग्रह के वर्ग में	शांत	मित्र भाव	शांत	मित्र राशि	शांत एवं स्थिर स्वभाव, अमात्य, बहुत से मित्र और पुत्र। विद्वान और हस्त-लिपियों का विशेषज्ञ, धार्मिक, दानी।
5.	शक्त	उदित ग्रह (ग्रह जो अस्त नहीं)	शक्त (40% अच्छा)	जब ग्रह उज्जवलता से चमकता है	–	–	–	–	कार्य करने के योग्य, सुगंध और फूलों में रुचि, विद्वान, प्रसिद्ध सज्जन व्यक्ति, प्रसन्न, दयालु दानी, शत्रु का नाश करने वाला।

6.	प्रपीड़ित	अस्त	(*i*) विकल 100% बुरा	अस्त	कुपित	अस्त	कोप	अस्त	लम्बी चलने वाली बीमारी के कारण संकट में, व्यसनी, बदनाम, असफलता का आरोप जिस पर है।
	–	–	(*ii*) सुदुखित (परम दुखी) 60% बुरा	शत्रु भाव	–	–	दुखी .	शत्रु भाव	*प्रभाव देने की स्थिति में न होकर सम्भवतः बीमारी दें।
7.	दीन	नीच राशि	अति भीत बहुत डरा हुआ 75% बुरा	नीच राशि में	–	–	दीन	सम भाव	अधिक हताश, गरीब और चिंतित राजा और शत्रुओं से डर। सामाजिक मापदंडों और कानून से परे भद्दा चेहरा अपने व्यक्तियों से दुश्मनी।
8.	विकल	पाप ग्रहों सहित	–	–	विकल	पाप ग्रहों के साथ	विकल	पाप ग्रहों के साथ युति	शक्तिहीन, नीच शत्रुओं के कारण दुखी, बुरे व्यक्तियों की संगति, दूसरों के सेवक के रूप में आदर प्राप्त
	–	–	निपीड़ित (सताया हुआ) 40% बुरा	ग्रह-युद्ध में पराजित	–	–		–	*प्रभाव देने की स्थिति में न होना
9.	खल	ग्रह-युद्ध में पराजित	खल 50% बुरा	पाप ग्रहों के वर्गों में	खल	ग्रह-युद्ध में पराजित	खल	शत्रु भाव	शत्रुओं से लड़ाई-झगड़ा, पत्नी से कष्ट, विदेश-यात्रा, निर्धन और क्रोधी, दूसरों के पैसे लेने में ध्यान।
(अ)	–	–	–	–	हीन	सम भाव में	–	–	* शक्तिहीन
(आ)	–	–	–	–	दुख	शत्रु भाव	–	–	* उदास मन-स्थिति में किसी परिणाम को देने में असमर्थ

* टिप्पणी–इनके फल हमें उपलब्ध नहीं है। इन सबसे जो निष्कर्ष निकल सके, उनपर फलित विधि/जन्मकुंडली को आंकना, भाग II के अध्यायों में विचार-विवेचन किया जाएगा। फलित में इन अवस्थाओं का विद्वान अपनी बुद्धि, अनुभव एवं जन्म कुंडली के संरुपण के अनुसार फल प्रयोग कर सकते हैं। विद्वानों ने शास्त्र में समझने के लिए संकेत दिया है।

(*iii*) सभी विद्वानों के मतों को ध्यान में रखते हुए अपने विद्यार्थियों के समक्ष निर्णायक स्थिति अपने अनुसार प्रस्तुत करता हूं। दीप्त (उच्च, मूलत्रिकोण), स्वस्थ (स्वग्रही), मुदित/प्रमुदित (मित्र/परममित्र की राशि में), शान्त (शुभ वर्गों/शुभ ग्रहों के साथ में), शक्त[5]/उदित/उज्जवल/वक्री ग्रह) आदि अवस्थाओं में ग्रह अपना पूर्ण फल देने की स्थिति में होता है। जितनी स्थिति कमजोर होगी उतना ही फल देने की सामर्थ्य कम होती जाती है। उच्च का ग्रह यदि अस्त हो, अन्य कई क्रूर ग्रहों के साथ हो तो उस ग्रह से दीप्तता का फल नहीं प्राप्त होगा। इसका थोड़ा अपने अनुभव व बुद्धि से मूल्यांकन करना होगा। अस्त ग्रह को प्रपीड़ित/कुपित/कोप/ विकल किसी नाम से जानें, दीन ग्रह को नीच राशि, विकल ग्रह को पाप ग्रहों के साथ होने, खल, ग्रह का नाम शत्रुभाव में रहने/ग्रह युद्ध में हारे आदि के कारण देदे। परन्तु भावार्थ, फलित लगाते समय अपने अनुभव व कुण्डली में गृहस्थिति का पूरा अध्ययन करने पर ही कर सकेंगे।

4.4 अन्य अवस्थाएं

(क) ऋषि पराशर ने भी अन्य अवस्थाओं का विस्तार में उल्लेख किया है। फलित-हेतु उनके परिणामों को भी ध्यान में रखना चाहिए। दुर्बल ग्रह अच्छे परिणामों को कम करते हैं और बलवान ग्रह श्रेष्ठतर परिणाम देते हैं। जैसे–

1. लज्जित	2. गर्वित	3. क्षुधित
4. त्रुशित	5. मुदित	6. शोभित

(ख) **श्यनादि अवस्थाएं**–कुछ और अवस्थाएं भी हैं जिन्हें 'श्यनादि' का नाम दिया है

1. शयन	2. उपवेशन	3. नेत्रपाणि
4. प्रकाशन	5. गमन	6. आगमन्
7. सभा	8. अगम	9. भोजन
10. नृत्यलिप्सा	11. कौतुक	12. निद्रा

इन अवस्थाओं का परिणाम सहित उनकी परिगणना का विवेचन 'ज्योतिष विशारद' के पाठ्यक्रम में किया जाएगा।

राशि चक्र जातक के जन्म-समय में लिया गया आकाश का केवल एक चित्र है। ग्रह, नक्षत्र और भचक्र की उन राशियों के साथ उनका सह-संबंध जिनमें उस विशिष्ट समय में (जन्म समय में) ग्रह गोचर में गुज़र रहे थे, जातक के भविष्य को

संचालित करते हैं। जन्म-कुंडली और कुछ नहीं है केवल हमारे पूर्व जन्म अथवा पूर्व-जन्मों के शेष कर्म फल है उनमें संचित और प्रारब्ध कर्म दोनो सम्मिलित हैं। संचित कर्मों को प्रारब्ध कर्मों के रूप में जातक वर्तमान जन्म में भोगता है अर्थात् आनन्दित होता है या कष्ट पाता है। इन कर्मों के बारे में हम जन्म-कुंडली, विभिन्न वर्गों और दशा-क्रम के सामूहिक विश्लेषण के पश्चात् ही जान सकते हैं। कुंडली में जो लाभ-हानि, लेना-देना, कर्त्तव्य-अधिकार दिखाई दे रहे हैं, वे संचित कर्म के नाम से जाने जाते हैं। **इन प्रारब्ध कर्मों को दशा-क्रम और भविष्य में आने वाले गोचर से निर्धारित किया जा सकता है।** मनुष्य योनि कर्म-योनि है इसलिए जातक को कर्म करने की स्वतंत्रता है। निष्ठापूर्ण प्रयत्नों और पुण्य कर्मों की सहायता से, मानव-मात्र की सेवा और धार्मिक कार्यों के करनेसे व्यक्ति बुरे परिणामों को कम कर सकता है। विस्तृत ज्ञान के लिए संस्थान द्वारा प्रकाशित 'सामान्य ज्योतिष' पुस्तक पढें।

इन सबके सही मूल्यांकन के लिए, राशि, ग्रहों और उनकी अवस्थाओं आदि की विशेषताओं को भली भांति समझना होगा।

4.5 वक्रीग्रह की चर्चा

सूर्य सिद्धांत में ग्रहों की चाल की चर्चा करते समय लिखा–

(*i*) चाल में अंतर होने से, भचक्र में ग्रह लगातार एक-दूसरे ग्रह से अपनी स्थिति बदलते रहते हैं। तेज गति ग्रह मन्द गति ग्रहों से आगे निकल जाते हैं। पृथ्वी से जब उनको देखते हैं तो पाँच ग्रह बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति तथा शनि उलटे चलते दिखाई देते हैं। इस ही को "वक्र गति" कहते हैं। सूर्य व चंद्रमा कभी वक्र नहीं होते।

सूर्य सिद्धांत में (श्लोक 12, 13, अध्याय-2) में इनकी 8 श्रेणी बताई गई हैं–

(*i*) वक्र

(*ii*) अनुवक्र

(*iii*) कुटिल

(यह वक्र गति की चाल हैं। जब ग्रह पिछली राशि में प्रवेश करता दिखाई देता है, कुटिल में ग्रह 'स्थिर' हो जाता है।)

(*iv*) मन्द (धीमी) (*v*) मन्दतर (अधिक धीमी)
(*vi*) सम (सामान्य) (*vii*) शीघ्रतर (अधिक तेज)
(*viii*) शीघ्र (तेज)

प्राशर जी ने (अध्याय 43, श्लोक 33) में इसकी व्याख्या थोड़ी सी बदली है। वहाँ कहा है–

(*i*) वक्र	(*ii*) अनुवक्र
(*iii*) विकला	(*iv*) मन्द
(*v*) मन्दतरा	(*vi*) सम
(*vii*) चर	(*viii*) अति चरा

भावार्थ रत्नाकर में रामानुजाचार्य के विचार से सूर्य से ग्रहों की स्थिति के आधार पर ग्रहों की चाल का संबंध बताया–

	चाल
दूसरी राशि	शीघ्र गति
तीसरी राशि	सामान्य
चतुर्थ राशि	मन्द
पंचम व षष्ठ	वक्र
सप्तम व अष्टम	अति वक्र (इसमें पिछली राशि तक भी चला जाता है।)
नवम व दशम	कुटिल (स्थिर)
एकादश व द्वादश	अति शीघ्र

अधिक जानकारी के लिए लेखक की पुस्तक **"जन्मपत्री का चित्रण एवं गतिशील संरुपण"** देखें।

प्रश्न माला

1. ग्रहीय विविध अवस्थाओं की व्याख्या कीजिए। फलित ज्योतिष में ये किस प्रकार उपयोगी सिद्ध होगी। (उ० 4.3)
2. किसी विशिष्ट भाव के बल अथवा दुर्बलता के निर्धारण के लिए हमें किन-किन वातों पर विचार करना होगा। (उ० 3.2 (व) 3.1 (क) 2.3, 4.1, 4.2, 4.3))

3. ग्रह के उच्चाभिलाषी और नीचाभिलाषी होने से आप क्या समझते हैं? क्या किसी ग्रह के परिणाम को इस संदर्भ में जानना महत्त्वपूर्ण होगा? (उ० 1.5 (ग))
4. भाव, भाव-स्वामी और उस भाव के कारक के बीच संबंध स्थापित करने के बारे में आप क्या समझते हैं? (उ० 3.5 (क) (अ) (आ))
5. ग्रहों के बल के बारे में आप क्या जानते हैं? और वह बल कैसे मापा जाता है? (देखें पुस्तक 'षडबल व भाव बल)
6. ग्रहों के बीच मैत्री संबंध को स्पष्ट करिए। यह मैत्री संबंध किसी ग्रह की अवस्था (स्थिति) को कैसे प्रभावित करता है? (पैरा 4)

❑❑❑

पाठ–5

ग्रहों और भावों के कारकत्व–भाग-2

ज्योतिष एक परा-विज्ञान है। कुंडली के सत्यापन के परिक्षण के बहुत से साधन हैं जिनके माध्यम से किसी फलित को देने से पूर्व किसी व्यक्ति के जीवन से संबंधित तथ्यों की जांच की जा सकती है। हमने भचक्र की 12 राशियों और उनके स्वामी, 27 नक्षत्रों और उनके स्वामियों, राशियों ओर ग्रहों की विशेषताओं, ग्रहों के परमोच्च बिन्दु और नीच बिन्दु आदि और उनकी अवस्थाओं उनके परस्पर संबंधों (मित्रता/शत्रुता) एवं अवस्थाओं व 12 भावों और उनके कार्यों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर ली है। ग्रहों के बारह भावों में होने से क्या प्रभाव होता है और जातक को क्या फल प्राप्त होता है उसके लिए देखें "नव ग्रह द्वादश भाव" लेखक द्वारा संपादित।

ये ग्रह विशिष्ट भावों के परिणाम देने के साथ-साथ उन कारकत्वों से संबंधित परिणाम भी देते हैं जो उन्हें सौंपे गए हैं। देखे अध्याय 3

उदाहरण–नौवां भाव पिता के बारे में बताता है। नौंवा भाव, नौंवे भाव का स्वामी और नौंवे भाव का कारक पिता का प्रतिनिधित्व करते हैं। जातक के पिता के स्तर के बारे में जानने के लिए इन तीनों बिंदुओं पर विचार करना होगा।

कारकत्वः

(1) चर कारक–आत्म कारक आदि

(2) स्थिर कारक

(3) कारक ग्रह और भाव के अनुसार कारक

(4) बारह भावों के कारक

(5) भावों से कारक (विशेष कारक)

(6) योग कारक ग्रह

5.1. चर कारक–आत्मकारकादि

सात ग्रहों (सूर्य से लेकर शनि तक) में से जो ग्रह किसी राशि में अधिकतम अंशों को पार कर लेता है अथवा जिस ग्रह के अधिकतम अंश होते हैं (जितनी राशियां ग्रह ने पार कर ली हैं, उन्हें छोड़कर केवल अंश-कला को लेना है) उसे आत्मकारक कहते हैं।

अन्य सभी कारकों में **आत्मकारक** प्रधान कारक है। जिसे लग्न मान कर भी कुण्डली का अध्ययन करते हैं। जातक के सभी क्रियाकलापों पर उसका पूरा नियंत्रण होता है। यदि आत्मकारक प्रतिकूल है तो अन्य कारक अपना पूर्ण शुभ फल नहीं दे सकते हैं।

यदि आत्मकारक अनुकूल है तो अन्य कारक अपने अशुभ प्रभावों से आत्मकारक के द्वारा होने वाले कार्यों की सिद्धि को असफलता में नहीं बदल सकते।

(क) आत्मकारक से अगला ग्रह आमात्यकारक है।

(ख) आमात्यकारक से अगला ग्रह भातृकारक है।

(ग) भातृकारक से अगला ग्रह मातृकारक है।

(घ) मातृकारक से अगला ग्रह पुत्रकारक है।

(च) पुत्रकारक से अगला ग्रह ज्ञातिकारक है।

(छ) ज्ञातिकारक से अगला ग्रह दाराकारक है।

नोट—सबसे अधिक अंशों वाले से निम्नोत्तर क्रम में देखना है।

टिप्पणी—(*i*) जब दो ग्रहों के भोगांश एक समान होंगे तो उस समानता की स्थिति में राहु को भी कारक मान लेंगे। राहु के मामले में उस विशिष्ट राशि में राहु के भोगांश को 30 में से घटाना होगा। सात ग्रहों—सूर्य से शनि तक—में राहु को भी परिगणित किया जाता है।

(*ii*) उपरोक्त (*i*) निर्णय पर अनेक विवादास्पद और अनसुलझे विषय-बिन्दु अभी शेष हैं।

5.2 (क) यदि दो भोगांश बराबर हैं तो उस स्थिति में दोनो ग्रह उस विशिष्ट कारकत्व के अधिकारी बन जाएंगे, तब आखिरी ग्रह को कौन सा कारकत्व दें, यह प्रश्न उठेगा, ऐसी स्थिति में स्थिर कारक का ही विचार किया जायेगा। जैसे विवाह के स्थिर कारक शुक्र को विवाह के मामले पर विचार करते समय **दारा कारक** मान लेना होगा।

5.2 (ख) स्थिर कारक—इस कारक का निर्णय करते समय भोगांश को नहीं लिया जाता। ग्रहों को कतिपय कारकत्वों के स्थिर प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

ग्रह	कारकत्व
1. सूर्य/शुक्र*	इनमें से जो भी बली हो, उसे पिता का कारक मानते हैं सूर्य दाहिना नेत्र है।
2. चन्द्र/मंगल*	इनमें से जो बली हो, उसे माता का कारक मानेंगे। चन्द्रमा, बायां नेत्र तथा माता का कारक है।
3. मंगल	बहिन, पत्नी का भाई, छोटा भाई, और विशेष स्थिति में माता।
4. बुध	माता की तरफ के संबंधी। गोद लिया बच्चा।
5. वृहस्पति	पुत्र, दादा, पति, बड़े भाई के बेटे (पितामहः पतिपुत्रौ गुरुमुखा देव जीनीयत्)
6. शुक्र	पति (शुक्रात पतिः)
7. शनि	बेटे, (विशेष स्थितियों में) (पुत्रः शनैश्चरात्)
8. केतु	सास-ससुर, नाना, दादी। (विप्रान्तेवासिनः पत्नी पितरौ स्वशुरौ तथा माता महादयश्चिन्तया)
9. राहु	दादा, नानी

*नोटः *दिन के जन्म में सूर्य-पिता, शुक्र-माता रात्री जन्म में शनि-पिता, चंद्रमा माता, रात्री में जन्म हो तो सूर्य चाचा (पिता की ओर के संबंधी। शुक्र-मौसी, दिन के जन्म हो तो शनि चाचा तथा चंद्रमा-मौसी।*

5.3 कारक से भाव तथा कारक ग्रह

सूर्य से नौंवा–पिता (पितृकारक)

मंगल से तीसरा–भाई (भातृकारक)

चन्द्रमा से चतुर्थ–माता (मातृकारक)

बुध से छठा–मामा (मातुल कारक)

वृहस्पति से पांचवा–पुत्र (पुत्रकारक)

शुक्र से सातवां–पत्नी (स्त्रीकारक)

शनि से आठवां–मृत्यु (मृत्युकारक)

5.4 बारह भावों के लिए कारक (भाव–प्रतीक अथवा भाव–कारकत्व)

	कारक	भाव
1.	सूर्य	प्रथम भाव (निजी व्यक्ति, आत्मा, शरीर गठन आदि)
2.	वृहस्पति	II भाव (कुटुम्ब, धन संबंधी विषय आदि)
3.	मंगल	III भाव (पराक्रम, भाई-बहिन आदि)
4.	चन्द्रमा	IV भाव (माता)
5.	वृहस्पति	V भाव (सन्तान)
6.	मंगल	VI भाव (शत्रु)
7.	शुक्र	VII भाव (पत्नी, मानसिक प्रसन्नता)
8.	शनि	VIII भाव (आयु)
9.	वृहस्पति	IX भाव (धर्म, भाग्य आदि)
10.	बुध	X भाव (कर्म आदि)
11.	वृहस्पति	XI भाव (बड़े भाई और बहिन)
12.	शनि	XII भाव (व्यय भाव)

उपर्युक्त प्रतीकों के अतिरिक्त (ऋषि पराशर द्वारा विवेचित) प्रत्येक भाव अनेक अन्य क्षेत्रों का भी प्रतीक है। कुछ विशिष्ट प्रतीक इस प्रकार हैं–

उदाहरण–

चौथा भाव–वाहन के लिए शुक्र आदि

नौवां भाव–सूर्य-पिता के लिए

12वां भाव–केतु मोक्ष के लिए

5वां भाव–बृहस्पति संतान व शिक्षा आदि के लिए

5.5 भावों के लिए कारक (विशेष कारक)

I भाव–आत्मा और निजी व्यक्तित्व का द्योतक, आत्मकारक

II भाव–वाणी व धन का द्योतक

XI भाव–यश, मान व बड़े भाई अथवा बहिन

III भाव–छोटे भाई अथवा बहिन, मित्र

V भाव–पुत्र, संतान

VII भाव–पति-पत्नि, समाज में पद/स्तर

नोट–पांचवे भाव में स्थित ग्रहों को भी स्त्री कारक माना जाता है।

जन्म-कुंडली का विस्तृत अध्ययन करने के लिए उपर्युक्त कारक बहुत उपयोगी रहते हैं।

5.6. योग कारक

जो ग्रह स्वयं केन्द्र का स्वामी होने के साथ-साथ त्रिकोण का भी स्वामी हो। वह ग्रह उस कुण्डली के लिए **योग कारक** होता हैं जैसे मंगल कर्क तथा सिंह लग्नों के लिए शनि तुला तथा वृष लग्नों के लिए, शुक्र मकर तथा कुंभ लग्नों के लिए।

योगकारक ग्रह–ऋषि पराशर कह गए हैं कि कुछ ग्रहों को किसी जन्म-कुंडली में उनकी स्थिति के कारण ही अर्थात् वे जिस भाव में बैठे हैं उसके कारण ही शुभ मान लिया जाता है।

(*i*) यदि ग्रह उच्च का है, स्वग्रही है, मित्र भाव में है और एक दूसरे से केन्द्र में भी है (1, 4, 7, 10 में है) तो वह **योग** बनाता है (**विशेष शुभ** होता है)

(क) यदि ग्रह दशम भाव में होता है–बहुत शुभ होता है।

(ख) यदि ग्रह 1, 4, 7 भाव में होता है–शुभ होता है।

(ii) लग्न से भी यदि केन्द्र में है और एक दूसरे से भी यदि केन्द्र में है तो बहुत शुभ हो जाता है।

कोई जातक यदि ऐसे ग्रह-संयोजनों को लेकर जन्म लेता है, तो चाहे उसने साधारण परिवार में जन्म लिया हो, वह अवश्य ही उन्नति के शिखर पर पहुंचेगा। यदि शाही परिवार में जन्म लिया हो तो व्यक्ति निश्चय ही राजा बनेगा।

परवर्ती अध्याय में जब योग और कारकों का प्रयोगात्मक विवेचन किया जाएगा तब इस पहलू पर भी विस्तृत विवेचन किया जाएगा।

उदाहरण I कुण्डली I (पृष्ठ 17, पैरा 1.5 (ख)) में सूर्य की स्थिति देखें

(i) सूर्य की अवस्थिति

(ii) मंगल (पंचमेश तथा दशमेश) नवम भाव में बैठा है।

उदाहरण डा० बी. वी. रमन की कुण्डली नं. II

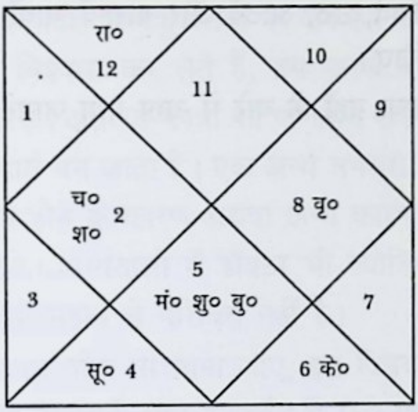

चं. (सम), शु. (शत्रु), श., बृ., मं., बु. मित्र राशियों में होकर केन्द्र में अवस्थित हैं। वृहस्पति दशम भाव में मित्र राशि में है। यह सभी एक दूसरे से तथा लग्न से भी केन्द्र में है। चंद्रमा तथा शुक्र के अलावा सभी ग्रह मित्र की राशि में है। चंद्रमा के लिए शुक्र 'सम' है परन्तु शुक्र चंद्रमा को शत्रु मानता है। सूर्य तथा शुक्र अति शत्रु हैं। यहाँ तीन ग्रहों चंद्रमा, शुक्र, तथा सूर्य में परस्पर राशि परिवर्तन है, इसलिए शत्रुता का प्रभाव कम होगा और शुभता प्राप्त होगी। साधरण ब्राह्मण परिवार में जातक का जन्म हुआ। ग्रहों की केन्द्र स्थिति के कारण देश का विश्वविख्यात व्यक्ति बना। वृहस्पति, शनि तथा बुध की दशा में उन्नति करता गया और विश्व विख्यात हुआ व धनादि से सम्पन्न रहा। (पैरा 5.6 (*i*) (*ii*))

प्रश्न-माला

1. कारकत्व से आप क्या समझते है? चर कारकों की गणना कैसे की जाएगी? (पैरा 5.1)
2. कौन से ग्रह निम्नलिखित के लिए स्थिर कारक हैं— (5.2)

(क) पिता (च) दादी

(ख) माता (छ) पत्नी

(ग) दादा (ज़) बेटा

(घ) नाना (झ) पति

3. कारक ग्रहों और भावों के लिए कारकों की गणना कैसे की जाती है? (उ० 5.3)

4. चौथे, पांचवे, छठे, आठवें और बारहवें भावों के लिए कारक के नाम दीजिए। (उ० 5.5)

5. योग कारक ग्रहों के बारे में आप क्या जानते हैं? (उ० 5.6)

□□□

पाठ—6

जन्म-समय-शोधन के सिद्धान्त

6.1 (क) अधिकांश जन्मकुंडलियों पर जब हम उनकी प्रामाणिकता को बिना जांचे-परखे विश्वास कर लेते हैं, तब उनके बारे में फलित देने में असफलता मिलती है। अतः जन्मपत्री की गणितीय परिगणना की प्रमाणिकता को जांचना अनिवार्य बन जाता है। एक अन्य समस्या यह है कि माता-पिता घड़ियां उपलब्ध न होने के कारण अथवा अन्य कारणों से सही जन्म-समय नोट नहीं कर पाते। अस्पतालों में डॉक्टर भी ज्योतिषीय उद्देश्यों के लिए सही जन्म-समय के महत्व से परिचित नहीं है।

सही जन्म-समय कौन सा माना जाए, इस विषय में पर्याप्त विवाद है (*i*) बच्चे के शरीर के किसी भाग के दर्शन से (*ii*) बच्चे के शरीर के पृथ्वी (अथवा मेज़) को स्पर्श करने से अथवा (*iii*) बच्चे के प्रथम बार रोने से। नर्सें तथा डॉक्टर जो कि बच्चे के जन्म के समय माँ के पास होते हैं उन्हें प्राथमिक चिंता बच्चे के सुरक्षित जन्म के बारे में अधिक होती है और अनेक बार इसी कारण वे बच्चे के जन्म का समय गलत नोट कर लेते हैं।

सही क्षण का महत्व जबकि इतना अधिक है, तब भी हम कोई ऐसा सुनिश्चित और शाश्वत नियम नहीं बना सकते जिससे इस सही क्षण का पता लग सके। विद्वान ज्योतिषियों की यह मान्यता रही है कि सही जन्म समय वह है जबकि **ऑवननाल** काटकर बच्चे को मां से अलग किया जाता है क्योंकि यही वह समय होता है जब बच्चे का शरीर मां से पृथक् होकर स्वतंत्र अस्तित्व का रूप लेता है। उससे पूर्व तक तो बच्चा मां की सहायता से ही सब कुछ प्राप्त कर रहा होता था। अब बच्चे का शरीर पूर्ण रूप से कार्य करना प्रारम्भ करता है और बच्चा अपनी पहली सांस लेता है। बच्चे के प्रथम बार रोने के समय को भी लिया जा सकता है। अनेक मामलों में बच्चा बहुत घंटों तक रोता ही नहीं है। ऐसी स्थिति में समस्या फिर उत्पन्न हो जाती है।

6.1 (ख) ऋषि वराहमिहिर कह गए हैं कि जन्मकुंडली में जो ग्रहों की स्थिति है और गर्भधारण के समय जो ग्रहों की स्थिति थी उनमें निकट का गहरा संबंध होता है।

मां के गर्भधारण के समय से लेकर बच्चे के जन्म लेने तक की प्रक्रिया को जो विविध ग्रह-योग संचालित करते हैं, उनमें **गर्भाधान आदि के श्रोत के रूप में चन्द्रमा का महत्व सिद्ध हो चुका है।** अतः गर्भाधान के समय में और जन्म समय में लग्न और चन्द्रमा के समंजन द्वारा जन्म-समय में संशोधन करना संभव है।

ऋषि वराहमिहिर 'वृहत्त जातक' में निम्नलिखित मत व्यक्त करते हैं–

गर्भाधान के समय में चन्द्रमा जिस राशि में है उस राशि के द्वादशांश को विशेष रूप से निकालिए। इस द्वादशांश की संख्या अथवा यह द्वादशांश किस राशि में पड़ता है उसको नोट कीजिए। तत्पश्चात् इस राशि से गणना आरम्भ करके उतनी संख्या तक आगे गिनते जाइए जितनी संख्या द्वादशांश की राशि की है (गर्भधान के समय चंद्रमा का द्वादशांश) प्रसव के महीने में चन्द्रमा गोचर में जब उस राशि पर से गुज़रेगा तब उन दिनों में बच्चे का जन्म हो सकता है।

उदाहरण–माना कि चन्द्रमा 7 वीं राशि में 10°25 का है। अर्थात् चन्द्रमा तुला में है। उसका द्वादशांश 5वां हुआ, अर्थात् वह तुला से 5वां गिनने पर कुम्भ में पड़ा। द्वादशांश की संख्या 5 हुई अतः कुम्भ से पांचवी राशि गिनिए, वह मिथुन हुई। अतः बच्चे का (जन्म) प्रसव उस महीने में हो सकता है जबकि चन्द्रमा मिथुन पर से (कुम्भ से पांचवी राशि) गोचर में गुजरेगा।

6.1 (ग) डॉ. बी. बी. रमण के अनुसार–"ज्योतिष की यह शाखा (जन्म-शुद्धि अथवा जन्म-संशोधन) किसी नौसिखिए अथवा अकुशल व्यक्ति की समझ-क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आती। और *जन्म-समय में संशोधन घोषित जीवन-घटनाओं को ध्यान में रखकर इस क्षेत्र में दक्ष व्यक्ति द्वारा ही किया जा सकता है।"*

6.1 (घ) इन्द्रागांधी और राजीव गांधी के मामले में इन दो जन्म कुंडलियों के लग्न के बारे में विद्वान ज्योतिषियों के बीच विवाद था। इन्द्रागांधी के मामले में ज्योतिषीय आलेखों में उनकी जन्म-कुंडली के लग्न को कर्क अथवा सिंह लग्न मानकर विवेचन किया गया था। वर्ष 1982 तक कर्क लग्न और सिंह लग्न दोनों के आधार पर फलित दिए जाते रहे। अक्तूबर 1984 में उनकी मृत्यु हो गई किंतु ज्योतिषी उनके सही लग्न के विषय पर समझौता नहीं कर पाए। राजीव गांधी की जन्मकुंडली के मामले में भी यही स्थिति रही। हम केवल इतना कहेंगे कि सही जन्म-समय निश्चित करना किसी ज्योतिषी के सम्मुख सबसे कठिन कार्य हैं, किंतु एक अनुभवी एवं कुशल ज्योतिषी, व्यक्ति के जीवन की भूतकाल की घटनाओं के आधार पर जन्म-समय को संशोधित कर सकता है।

6.2 ज्योतिष–प्रवीण के छात्रों के लिए सैद्धान्तिक विवेचन-हेतु हम उन कुछ नियमों की चर्चा करेंगे जिन्हें कि विद्वान ज्योतिषियों ने सामान्यतया स्वीकार किया है।

जन्म-नक्षत्र का पता लगना–जन्म समय (घटी-पल में परिवर्तित करके) को 4 से गुणा करो और गुणनफल को 9 से भाग दो। जो शेष बचे उतनी संख्या तक केतु नक्षत्र (अश्विनी, मघा अथवा मूल) से गिनती आरम्भ करके गिनो जो आएगा वह जन्म-नक्षत्र होगा।

उदाहरण 1–

(क) **जन्म-विवरण (गणना के लिए साधन)**

जन्म-तिथि–19.9.1931 **सूर्योदय**–6 घंटे 12 मिनट

जन्म-समय–3.30 प्रातः **सूर्यास्त**–18 घंटे 19 मिनट

(भारतीय मानक समय)

जन्म-स्थान–दिल्ली

जन्म-नक्षत्र–(कुंडली के अनुसार)=मूल प्रथम पाद

(ख) सूर्योदय से जन्म समय तक व्यतीत हुए घंटों की संख्या = 21 घंटे 18 मिनट

(ग) समय का अन्तर जो 'ख' में है वह घटी, विघटी में परिवर्तित होकर = 53 घटी 15 विघटी अथवा 3195 विघटी

(घ) अब जन्म नक्षत्र की गणना करेंगे–3195 × 4÷9 = 1420/9 शेष = 0

इसका अर्थ है कुछ थोड़े से संशोधन की आवश्यकता हैं क्योंकि शेष 1 आना चाहिए था (मूल नक्षत्र)

हम यदि (-) दो विघटी की शुद्धी करते हैं तो 3193 (3195–2) विघटी रह जाती है, तब स्थिति इस प्रकार होगी–

3193 × 4÷9 = 12772÷9 = 1419 1/9

शेष 1 बचा अर्थात् मूल नक्षत्र हुआ अतः शुद्ध समय 53 घटी और 13 विघटी हुआ।

उदाहरण II–

(क) जन्म-विवरण सूर्योदय–5 घंटे 27 मिनट

(गणना के लिए साधन)

जन्म-तिथि–10.6.1933 **सूर्यास्त**–19 घंटे 13 मिनट

जन्म-समय–9.11 प्रातः **सूर्य का भोगांश**–1 राशि 25°53

(भारतीय मानक समय)

जन्म-स्थान–दिल्ली

जन्म-नक्षत्र–(कुंडली के अनुसार) : पूर्व फाल्गुनी चौथा चरण

(ख) सूर्योदय से जन्म समय तक जितने घंटे बीत गए : = 3 घंटे 44 मिनट

(ग) समय-अन्तर को विघटी में परिवर्तित करके = 9 घटी 20 विघटी अथवा 560 विघटी

(घ) अब नक्षत्र की गणना करें तो : 560 × 4÷9 = 248 8/9

इस परिगणना के अनुसार गलत परिणाम आता है। अतः जन्म समय में कुछ संशोधन करने की आवश्यकता है जैसा कि हमने पिछले उदाहरण में किया है। सही नक्षत्र लाने के लिए शेष 2 बचना चाहिए, 8 नहीं (मघा से गिनती आरम्भ करने पर पूर्व फाल्गुनी की संख्या 2 आती है) हम यदि (+) 3 विघटी 560 में शुद्धी करते हैं तो 563 (560+3) विघटी शुद्ध समय के रूप में आ जाता है और तब स्थिति इस प्रकार होगी

563 × 4÷9 = 2252÷9 = 250 2/9

शेष बचता है = 2

मघा से गिनने पर दूसरा नक्षत्र पूर्वफाल्गुनी आता है। अतः शुद्ध समय हुआ = 9 घटी 23 विघटी

अन उपर्युक्त दो उदाहरणों में हमने देखा कि जन्म-समय में अल्प संशोधन की आवश्यकता थी। प्रथम उदाहरण में समय को 2 विघटी अर्थात् 2 सैकेन्ड घटाया गया जिससे सही जन्म आ गया। दूसरे उदाहरण में समय को थोड़ा सा बढ़ाया गया जिससे सही जन्म-समय आ गया। यह दोनों जातकों का जन्म घर में हुआ, तथा परिवार ज्योतिष की महत्ता को जानता था। इसलिए समय का विशेष ध्यान रखा गया था। फिर भी 2 सैकेन्ड का अन्तर आता है।

6.3 जन्म-लग्न निकालना—इन उपर्युक्त उदाहरणों में सही जन्म-समय निकाल लेने के पश्चात् दूसरी विधि को लागू किया जाएगा। आइए देखिए इस विधि से क्या परिणाम निकालेंगे। दूसरी विधि द्वारा हम लग्न की परीक्षा करेंगे। जैसा कि हम जानते हैं कि लग्न ओर कुछ नहीं है केवल जन्म-समय में पूर्वी क्षितिज में भचक्र की जो राशि उदय हो रही होती है, वही लग्न है। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि में स्थित है, वही राशि पूर्व में उदय होती है। सूर्य के द्वारा पार किया गया भाग (राशि का भोगांश/सूर्य स्पष्ट) अन्य राशियों के उदय होने के पश्चात सबसे आखिरी में उदय होगा। सूर्य जिस राशि के जिस भोगांश में स्थित होता है, सूर्योदय के समय उस राशि का वही भोगांश-बिन्दु पूर्व में उदय होता है। उसके पश्चात् 2-2 घंटे अंतराल से एक के पश्चात् एक राशि बारी-बारी से पूर्व में तब तक उदय होती रहती है, जब तक अगला सूर्योदय न आ जाए। सूर्योदय से एकदम पहले सूर्य राशि में जितने अंश तक चल चुका होता है, उसी अंश पर सूर्योदय के समय उदय होता है और सूर्य जिस राशि में प्रातः उदय होता है, उसके ठीक सामने वाली राशि संध्या-समय उदय होती है। सूर्य उदय की राशि से चौथी राशि दोपहर को उदय होती है, सूर्य उदय की राशि से 10वीं राशि मध्य रात्रि को पूर्व में उदय होती है और इसी प्रकार क्रम चलता रहता है। यह स्पष्ट है कि किसी

जन्म-कुंडली का लग्न पूर्णतया सूर्य की स्थिति से जुड़ा हुआ होता है। निम्नलिखित उदाहरणों के अध्ययन से यह और भी स्पष्ट हो जाएगा। आपके रिकॉर्ड में जो जन्म-कुंडलियां हों (सही जन्म-समय और सही ग्रहीय स्थितियों वाली कुंडलियां) उनपर इस विधि (फार्मुले) को परखा जा सकता है।

उदाहरण 1–(उदाहरण 6.2 में दिए गए जन्म-विवरण को ध्यान में रखिए)

(क) (*i*) सूर्य का भोगांश = 5 राशि 2°7' या 5 राशि 2.12°

(*ii*) सूर्योदय से जितनी घटियां बीत गई = 53 घटी या 13 विघटी (उदाहरण में संशोधित किया गया समय) अथवा 53.22

(ख) 'क' (*ii*) भाग में जितनी घटी है उन्हें 6 से गुणा करो............ (*ii*) = 53.22° × 6 = 319.32°

(ग) उसमें सूर्य का भोगांश जोड़ों (राशि को छोडकर) = 319.32° + 2.12° = 321.44°

(घ) गुणनफल को 30 से भाग दो (चूंकि प्रत्येक राशि 30° की होती है) = 321.44 ÷ 30 = 10' 21.44/30

(त) भागफल में एक जोड़ो = 10 + 1 = 11

(थ) सूर्य की राशि (कन्या) से गिनने पर लग्न हुआ = 11 + 5 = 16 – 12 = 4 = कर्क राशि (कन्या से 11वीं राशि यह सही है क्योंकि जातक का लग्न कर्क है 26°45'

उदाहरण **II**–

(क) सूर्य की स्थिति = 1 राशि 25°53' या/राशि 25.9°

सूर्योदय से जितनी घटी बीत गई = 9 घटी 23 विघटी अथवा 9.38°

(ख) भाग 'क' की घटी-संख्या को 6 से गुणा करो

= 9.38 × 6 = 56.3°

(ग) उसमें सूर्य के भोगांश जोड़ो (राशि को छोड़कर)

$= 56.3 + 25.9 = 82.2$

(घ) जो आए उसे 30 से भाग दो $= 82.2 \div 30 = 2\ 22/30$

(त) भागफल में 1 जोड़ो $= 2 + 1 = 3$

(थ) सूर्य की राशि से गिनना आरम्भ करो अर्थात् वृष से गिनो तो लग्न कर्क आया, वृष राशि से तीसरी राशि कर्क आई।

इस विधि को लागू करके हमने इस जातक का लग्न कर्क निकाला जो कि हमारे पास उपलब्ध जन्मकुंडली के अनुसार सही है।

6.4 जन्म-समय संशोधन–उपर्युक्त विचार-विवेचन जन्म-समय को शुद्ध करने के लिए था। हम लग्न की शुद्धता की परीक्षा भी कर सकते हैं, वह भी जन्म-समय की शुद्धता ही कहलाएगी। किसी भी ज्योतिषी को जातक के बारे में कोई भविष्यवाणी करने से पहले इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को अवश्य करना होगा। लग्न को शुद्ध करने की भी एक से अधिक विधियां हैं। **महर्षि पराशर** के, अनुसार, जब तक किसी लग्न का परीक्षण **'प्राणपद विधि' 'गुलिक** अथवा **मांदी** द्वारा न कर लिया जाए, तब तक उसे शुद्ध न माना जाए।

सर्वप्रथम हम कुछ सामान्य विधियों पर विचार करेंगे–

विद्वान सष्ठिदास (प्राचीन ज्योतिषी) के मत में (*i*) लग्न उस राशि में पड़ेगा जिसमें चन्द्र स्थित है अथवा (*ii*) चन्द्र-राशि की स्थिति से वह पांचवां अथवा नौवां होगा अथवा (*iii*) चन्द्र राशि से चन्द्र राशि स्वामी पांचवां अथवा नौवां होगा। कुछ कुंडलियों पर इन सिद्धान्तों की परीक्षा की गई है।

ये सिद्धान्त हैं–

(क) चन्द्र राशि और लग्न-राशि एक ही हैं।

(ख) लग्न चन्द्र-राशि से पांचवां या नौवां पड़ेगा।

(ग) चन्द्र-राशि का स्वामी, चन्द्र राशि से 5वां या 9वां है।

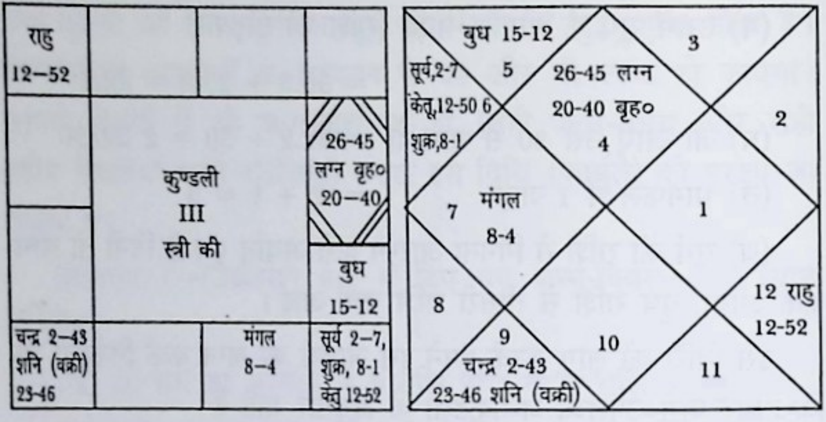

स्थिति I–

यहां लग्न का स्वामी चन्द्रमा स्वयं है। चन्द्र राशि का स्वामी लग्न में है और लग्न का स्वामी चन्द्र-राशि स्वामी की राशि में है।

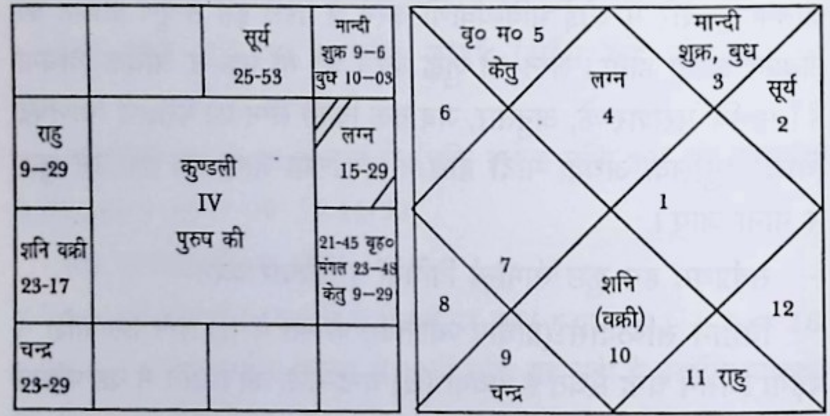

स्थिति II लग्न चन्द्र-राशि से आठवां है और चन्द्रमा लग्न से छठे में है। किन्तु चन्द्र-राशि स्वामी चन्द्र-राशि से 9वें में हैं। चन्द्रमा, चन्द्र-राशि-स्वामी से 5वें हैं।

6.5 (*i*) कोई व्यक्ति यदि **दिन के प्रथम अर्ध भाग में** जन्मा है तो सूर्य के साथ जुड़े नक्षत्र (सूर्य के नक्षत्र) से सातवां नक्षत्र गिनो। लग्न उस राशि में पड़ेगा जिसका संकेत उस नक्षत्र से मिल रहा होगा।

(*ii*) कोई व्यक्ति यदि दिन के दूसरे अर्धभाग में जन्मा है तो सूर्य के नक्षत्र से 12वां नक्षत्र गिनो। इस नक्षत्र द्वारा संकेतित राशि ही उसका लग्न होगी।

(*iii*) किसी जातक का जन्म यदि रात्रि के प्रथम अर्धभाग में हुआ हो तो सूर्य के नक्षत्र से 17वां नक्षत्र उसका लग्न होगा।

(*iv*) किसी जातक का जन्म यदि रात्रि के दूसरे अर्धभाग में हुआ हो तो सूर्य के नक्षत्र से 24वें नक्षत्र में उसका लग्न होगा।

अन्य विद्वानों का मत

(*v*) कोई व्यक्ति यदि सूर्यास्त से पूर्व और दोपहर के पश्चात् उत्पन्न हुआ हो तो सूर्य के नक्षत्र से 12वां नक्षत्र लग्न की ओर संकेत करेगा।

(*vi*) किसी जातक का जन्म यदि मध्यरात्रि के अन्दर हुआ हो तो सूर्य के नक्षत्र से 19वां नक्षत्र और यदि मध्यरात्रि के पश्चात् हुआ हो तो 24वां नक्षत्र लग्न की ओर संकेत करेगा।

परिक्षण—प्रथम कुण्डली (स्त्री की)

नियम (*iv*) किसी जातक का जन्म यदि रात्रि के दूसरे अर्धभाग में हुआ तो सूर्य के नक्षत्र से 24वें नक्षत्र में उसका लग्न होगा।

इस जातक का जन्म के समय का सूर्य उ० फा० (12वें) नक्षत्र में है इसलिए इससे 24 वां नक्षत्र 24 + 12 = 36–27 = 9 वां नक्षत्र अशलेशा हुआ जो कर्क राशि में पड़ता है। जातक का लग्न कर्क ही है।

द्वितीय कुण्डली—

जातक का जन्म दिन के प्रथम अर्धभाग का है सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में है जो कि पांचवा है। इस से 7 वां नक्षत्र 7 + 5 = 12 वां यानि उ० फाल्गुनी हुआ जो सिंह राशि में पड़ता है। परन्तु जातक का लग्न कर्क हैं। इसलिए नियम नहीं लगता।

नोटः इस जातक के पिता जन्म समय पर विशेष ध्यान देते थे क्योंकि उन्हें ज्योतिष का ज्ञान तथा इस पर विश्वास था। इसलिए कर्क लग्न ठीक है। अन्य प्रकार से भी कुण्डली ठीक प्रतीत होती है। जातक की राशि धनु है। हो सकता है लग्न व राशि में से कोई एक को देखना हो पाठक परिक्षण करें।

6.6 अन्य विधि

राहु, सूर्य तथा लग्न से जातक के लिंग का ज्ञान राहु जिस राशि में स्थित है उसकी संख्या, लग्न राशि की संख्या और सूर्य की संख्या (जो कि सदैव एक होगी), तीनों को जोड़कर जो संख्या आएगी उसमें तीन जोड़ेंगे और फिर उसे सात से भाग देंगे–

यदि शेष राशि सम होगी–तो स्त्री की कुंडली

यदि शेष राशि विषम होगी–तो पुरुष की कुंडली

उदाहरण **I**–	राहु की राशि संख्या	= 12
	लग्न संख्या	= 4
	सूर्य संख्या	= 1
	तीनों संख्याओं का जोड़	= 17
	3 जोड़कर संख्या बनी	= 17 + 3 = 20
	7 से भाग दिया	= 20 ÷ 7 = 2 6/7 = शेष = 6
	शेष सम संख्या है	= स्त्री की कुंडली
दूसरी कुण्डली–		
	राहु की राशि संख्या	= 11
	लग्न की राशि संख्या	= 04
	सूर्य की संख्या	= 01
	3 जोड़कर संख्या बनी	= 16 + 3 = 19
	7 से भाग दिया	= 19 ÷ 7 = 2 5/7 = शेष = 5
	शेष संख्या विषम है	= पुरुष की कुंडली
महात्मा गांधी की कुण्डली (7.1 में)		
	राहु राशि संख्या	= 4
	लग्न राशि संख्या	= 7
	सूर्य की संख्या	= 1
	अतिरिक्त संख्या	= 3
	कुल	= 15 ÷ 7

शेष = 1 विषम

लिंग = पुरुष

राम कृष्ण परमहंस (8.11 में)

राहु राशि = 8

लग्न राशि = 11

सूर्य = 1

अतिरिक्त = 3

कुल $= 23 \div 7 = 3\frac{2}{7}$

= 2 (सम)

इसलिए नियम नहीं लगा, हो सकता कुण्डली का लग्न ठीक न हो।

6.7. जातक को देखकर लग्न का पता लगाना

यहां पर लग्न जिस राशि में पड़ता है, उस राशि की विशेषताओं पर बल दिया गया है। बाह्य शारीरिक बनावट लग्न की राशि अथवा चन्द्र राशि पर निर्भर करेगी।

(क) अग्नि अथवा वायु राशि वाले जातक शायद ही कभी मोटे होंगे।

(ख) यदि लग्न पृथ्वी अथवा जल राशियों में पड़ता है तो जातक भारी शरीर का अथवा मोटा हो सकता है। वृहस्पति, शुक्र और चन्द्र नामक जलीय ग्रहों की यदि लग्न में स्थिति तथा दृष्टि, युति (सिदृयु) में से कोई संबंध बनता है तो यह मोटापे का कारण हो सकता है।

(ग) लग्न अथवा चन्द्रमा पर यदि राहु की दृष्टि हो तो इसका परिणाम यह होगा कि जातक का शरीर देखने में दुबला-पतला और शुष्क होगा और त्वचा में आकर्षण नहीं होगा।

(घ) यदि लग्न अथवा चन्द्रमा पर मंगल का प्रभाव होगा तो जातक का शरीर सुगठित और मजबूत होगा।

(च) यदि शुक्र का प्रभाव होगा तो घुंघराले बाल, सुन्दर आंखे, चमक और आकर्षण आदि होगा।

(छ) यदि शनि लग्न अथवा चन्द्रमा से स्थिति, दृष्टि व युति (सिदृयु) संबंध बनाता है तो जातक मोटा नहीं होगा और उसके बाल अधिक होंगे।

(त) लग्न में सूर्य होने से शरीर मज़बूत होगा गंजा सिर होगा, शाही चाल होगी।

(थ) चन्द्रमा का प्रभाव शरीर में कोमलता देगा, सुन्दर चेहरा होगा, घुंघराले बाल होंगे और बड़ी-बड़ी सुन्दर आंखे होंगी।

(द) बुध का प्रभाव है तो मध्यम कद देगा, कोमल शरीर और हरित त्वचा देगा। **गुलिक** अथवा **मांदी** और **प्राणपद** आदि का भी इसके लिए प्रयोग करते हैं, इन को ज्योतिष-विशारद में ही अथवा शास्त्र का पूर्ण अध्ययन करने के पश्चात् ही भली भांति समझा जा सकता है, इसलिए इन पर यहां विचार-विमर्श नहीं किया गया है।

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचित विधियां कुछ ऐसी विधियां हैं जिनका प्रयोग लग्न के निर्धारण और नक्षत्र शुद्धि के लिए किया गया है। जन्म-समय का संशोधन करने में इससे हमें सहायता मिलती है।

6.8. सबसे अधिक वैज्ञानिक व विश्वसनीय विधि

सर्वोत्तम विधि जिसके ऊपर हम निर्भर कर सकते है वह है जातक के बीते जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को जान ले तथा सप्तवर्ग बनाएं, महादशा, अर्न्तदशा, प्रत्यंतर दशा की परिगणना करें और उस पूर्व घटना के समय की, गोचर की भी स्थिति की कुण्डली बना लें। प्रत्येक घटना को हमें निम्नलिखत तीन तत्त्वों के आधार पर परखना है—(*i*) **जन्म-कुंडली में उस तरह की घटना की स्थिति का होना (प्रारब्ध) (*ii*) दशा आदि के अनुसार उसका इस समय में फलीभूत होना (*iii*) गोचर की सहायता से घटना का समय जानना।** यह सब केवल तब ही किया जा सकता है जबकि ज्योतिषीय सिद्धान्तों की भली भाँति जानकारी हो और उन सिद्धान्तों को लागू करने का ज्ञान भी हो। छात्रों को इस विषय का शिक्षण किसी अनुभवी विद्वान ज्योतिषी से लेना होगा और उसके शिष्यत्व अथवा निर्देशन में ही अनुभव लाभ करना होगा, तभी जन्म-समय में संशोधन करना संभव हो पाएगा।

इस विषय का अध्ययन करने के लिए डॉ. रमन ने हमें पुस्तकों की एक बड़ी संख्या प्रदान की है। इस दैवी विज्ञान के विकास के लिए उनकी अमूल्य सेवाओं ने आगामी पीढ़ी को उनका चिर-ऋणी बना दिया है। ऐसा मेरे गुरुदेव श्री के. एन. राव ने सिखाया है। श्री के. एन. राव (आइ. ए. ए. एस., रिटायर्ड) ने अपने ज्ञानवर्धक आलेखों और पुस्तकों के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन किया है जिससे हम ज्योतिषीय सिद्धान्तों का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से करें। उन्होंने सदैव इस बात पर बल दिया है कि जातक के जीवन की भूतकालीन घटनाओं के आधार पर जन्म-कुंडली को सर्वप्रथम शुद्ध करना चाहिए, जब तक बीती हुई घटनाओं के आधार पर जन्म कुण्डली की सत्यता प्रमाणित नहीं होती, तब तक किसी भी आगामी घटना की भविष्यवाणी नहीं करनी चाहिए। यदि जन्म-समय आदि में किसी शुद्धि की आवश्यकता जान पड़े तो वह अवश्य कर लेनी चाहिए। उनका कथन है–

"हमें ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ना चाहिए।"

शोध-छात्रों को दस या बीस उदाहरणों के माध्यम से इस विषय को भली-भांति समझाया जा सकता है, किंतु यहां हमें केवल उपर्युक्त सिद्धान्तों को भली भांति स्मरण करना होगा और समझना होगा।

पाठकों, विशेषतया विद्यार्थियों के लिए मैं बता रहा हूँ, अपनी प्रशंसा के लिए नहीं। मैंने गुरु मुख से शिक्षा कम ली। परन्तु मैंने उनका सानिध्य बहुत किया। नौकरी के बाद सायंकाल उनके घर जाना। उस समय कम्पयूटर नहीं थे। कुण्डली हाथ से ही बनानी होती थी। मैं उनकी सेवा में बैठकर कुण्डली बना-बनाकर देता था वह आने वाले जातक का भविष्य बताते थे। कुछ समय तक वह मेरे सामने ही बताते थे, उसका लाभ यह था कि मैं रात्रि में घर जाकर सोचता था किस दशा व गोचर के आधार पर कुण्डली में विद्यमान ग्रह स्थिति पर वह फलित कैसे किया। एक दिन मैंने ज्ञान को जाँचने के लिए गुरुजी की आज्ञा से एक सज्जन की कुण्डली पर उनसे उनकी जीवन में हुई घटनाओं को पूछा तो उन्होंने सब कुछ ठीक बताया। गुरु जी को शायद लगा कि मैं उस चर्चा का लाभ उठा रहा हूँ तो उन्होंने कुण्डली बनवाने के बाद अलग कमरे में ले जाकर बताना शुरु कर दिया।

मेरा नुकसान हो गया। परन्तु मैं वहाँ वर्षों बैठकर कुण्डली बनाकर देता रहा।

यहाँ तक कि पूज्य श्री सीता रमैया जी जो ईष्ट ऑफ कैलाश में रहते थे। मैं उनके पास प्रतिदिन प्रातः जाता था और कुण्डली बनाकर उनके रजिस्टर में उतार कर उन्हें पढ़कर सुनाता था। वह सूरदास थे तो उनको कुण्डली सुना दी जाती थी। परन्तु वह भी जातक को अकेले में फलित देते थे। वह एक दिन में तीन कुण्डली ही देखते थे। मैं उन बनाने वाली कुण्डलियों का ब्यौरा घर ले आता था। अगले दिन प्रातः जाकर उनके रजिस्टर में लिखकर उनको सुना देता था। उनका मस्तिष्क कम्पयूटर था। नक्षत्र, चरण तथा वर्ग वह ग्रह के अंश बताते ही बोल देते थे और नाम से कुण्डली उस व्यक्ति की उन्हें याद आ जाती थी।

कहने का तात्पर्य है कि ज्योतिष गुरु मुख विद्या है और अनुभव से ही प्राप्त होती है। गुरु कृपा तथा भगवान की दया दोनों ही विद्यार्थी को चाहिए। सदैव विद्यार्थी बने रहो तथा जिज्ञासु रहो।

प्रश्न-माला

1. संशय की स्थिति में आप जन्म-समय में शुद्धि किन-किन विधियों से करेंगे। किसी भी कुंडली के आधार पर उनको लागू करके दिखाओ।
2. जन्म कुंडलियों के निर्माण के लिए जन्म का कौन सा समय लिया जाता है? क्या जन्म-समय को शुद्ध करना संभव है?

❑❑❑

पाठ—7

दशा और अन्तर्दशा की परिगणनाएं

7.1 अब तक आप सीख चुके हैं कि जन्म-कुंडली कैसे बनायी जाती है। नक्षत्र और उनके स्वामी, ग्रहों, राशियों, भावों आदि के बारे में भी आप जान चुके हैं। इस पृष्ठभूमि के साथ छात्र जन्म-कुंडली का विवेचन इस प्रकार कर सकते हैं—

भोगांश—

लग्न	=	193° 14	शुक्र	=	205° 53
सूर्य	=	168° 22	शनि	=	229° 57
चन्द्र	=	120° 10	राहु	=	103° 36
मंगल	=	207° 39	केतु	=	283° 36
बुध	=	193° 09			
वृहस्पति	=	30° 25			

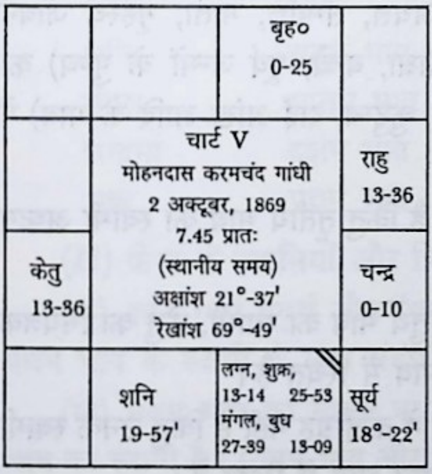

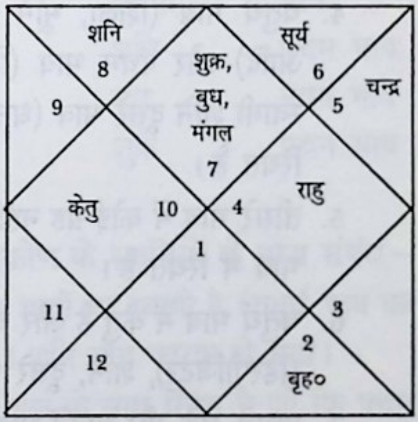

टिप्पणी—डॉ बी. बी. रमण की 'उल्लेखनीय जन्म-कुंडलियां' नामक पुस्तक से यह जन्म-कुंडली ली गई है।

जन्म-कुंडली विश्लेषण—लग्न स्वामी शुक्र लग्न में स्थित है। दूसरे भाव का स्वामी मंगल लग्न में स्थित है। तीसरे भाव का स्वामी बृहस्पति

अष्टम भाव में स्थित हैं, चतुर्थ भाव और पंचम भाव का स्वामी शनि द्वितीय भाव में स्थित है। छठे भाव का स्वामी वृहस्पति अष्टम भाव में स्थित है। सप्तम भाव का स्वामी मंगल लग्न में स्थित है। अष्टम भाव का स्वामी शुक्र लग्न में स्थित है। नवम भाव का स्वामी बुध लग्न में स्थित है। दशम भाव का स्वामी चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव का स्वामी सूर्य बारहवें भाव में स्थित है और बारहवें भाव का स्वामी बुध लग्न में स्थित है।

सामान्य विश्लेषण

1. लग्न और आठवें भाव का स्वामी शुक्र लग्न में स्थित है जो कि उसकी अपनी राशि है।
2. दूसरे भाव का स्वामी (धन स्थान का स्वामी) और सातवें भाव (कलत्र भाव) का स्वामी मंगल लग्न में स्थित है।
3. बुध नवें भाव (धर्म तथा भाग्य स्थान) का स्वामी और बारहवें भाव (व्यय भाव, शैय्या सुख, विदेश यात्रा, मोक्ष आदि का भाव) का भी स्वामी लग्न में स्थित है।
4. चतुर्थ भाव (शिक्षा, भूमि अचल, सम्पत्ति, माता, गृहस्थ जीवन आदि) और पंचम भाव (शिक्षा, बच्चे, पूर्व जन्मों के पुण्य) का स्वामी शनि दूसरे भाव (धन, कुटुम्ब, दाईं आंख आदि के भाव) में स्थित है।
5. तीसरे भाव में कोई ग्रह नहीं है किंतु तृतीय भाव का स्वामी अष्टम भाव में स्थित है।
6. चतुर्थ भाव में केतु है और चतुर्थ भाव का स्वामी, केतु का नियंत्रक (डिस्पोजिटर), शनि, दूसरे भाव में स्थित है।
7. पांचवे, छठे और सातवें भाव में कोई ग्रह नहीं है किंतु उनके स्वामी क्रमशः दूसरे, आठवें और लग्न भाव में स्थित हैं।
8. तीसरे और छठे भाव का स्वामी वृहस्पति अष्टम भाव में स्थित हैं अथवा यह भी कह सकते हैं कि अष्टम भाव में वृहस्पति है जो कि तीसरे और छठे भाव का स्वामी है। वृहस्पति का नियंत्रक शुक्र लग्न भाव में (अपनी राशि में) तुला राशि में स्थित हैं।

9. नवम भाव रिक्त है (धर्म भाव, पिता, आदि का भाव)
10. दशम भाव में राहू है और राहु का नियंत्रक चन्द्रमा एकादश भाव (लाभ स्थान, लाभ आदि का भाव) में स्थित है किन्तु नवम भाव का स्वामी बुध लग्न भाव में है।
11. एकादश भाव में दशम भाव का स्वामी चन्द्रमा स्थित है तथा उसका नियंत्रक सूर्य द्वादश भाव में स्थित है।
12. द्वादश भाव में एकादश भाव का स्वामी सूर्य स्थित है और द्वादश भाव का स्वामी बुध लग्न में स्थित है।

समीक्षा

(*i*) **केन्द्र स्थान + त्रिकोण स्थान के स्वामी**

केन्द्र स्थान

स्वामी	भाव
शनि	चतुर्थ भाव
मंगल	सप्तम भाव
चन्द्रमा	दशम भाव
शुक्र	प्रथम भाव

त्रिकोण स्थान

स्वामी	भाव
शनि	पंचम भाव
बुध	नवम भाव
शुक्र	प्रथम भाव

(*ii*) केन्द्र के स्वामियों और त्रिकोण के स्वामियों के मध्य संबंध–

(क) शनि स्वयं चतुर्थ और पंचम भावों का स्वामी है (चतुर्थ भाव का पंचम भाव के स्वामी के साथ संबंध)। शनि योग कारक हो गया।

(ख) नवम भाव का स्वामी बुध शुक्र के साथ स्थित है जो कि प्रथम भाव का स्वामी है। (नवम भाव और प्रथम भाव के स्वामियों या कहें लग्नेश तथा नवमेश (भाग्येश) का संबंध)।

(ग) बुध का मंगल के साथ संबंध जो कि सप्तम भाव का स्वामी है (नवम भाव और सप्तम भाव के स्वामियों का संबंध)

(घ) शुक्र और मंगल का संबंध (प्रथम और सप्तम भाव के स्वामियों का संबंध)

7.2 (क) उपर्युक्त योगों से यह पता चल जाता है कि केन्द्र और त्रिकोण के स्वामियों के मध्य कुछ संबंध है। केन्द्र विष्णु स्थान हैं और त्रिकोण लक्ष्मी स्थान है इसका अर्थ यह है कि इन दोनों का योग विष्णु और लक्ष्मी (लक्ष्मी-नारायण) दोनों की कृपा का आश्वासन देता है। यदि दोनों की कृपा एक साथ मिल जाए तो कोई भी व्यक्ति बहुत भाग्यशाली कहा जाएगा। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि जन्म-कुंडली बहुत बली है।

(ख) लहड़ी अयनांश के अनुसार महात्मा गांधीजी की जन्म कुण्डली निम्नलिखित बनती है:

जन्मांग चक्र

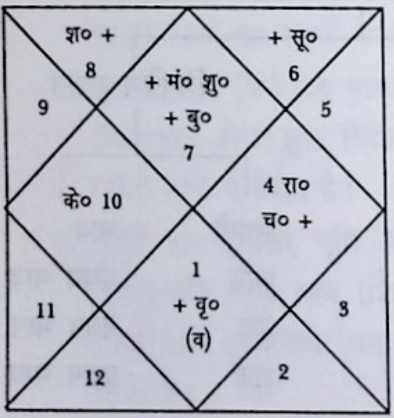

नवांश चक्र

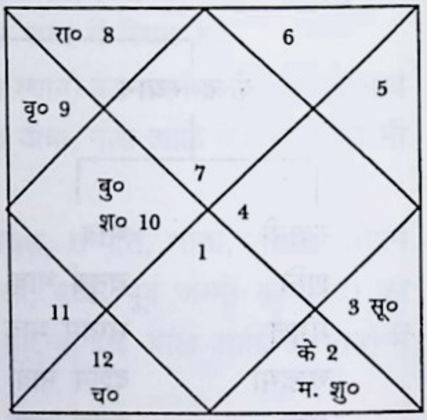

होरा चक्र

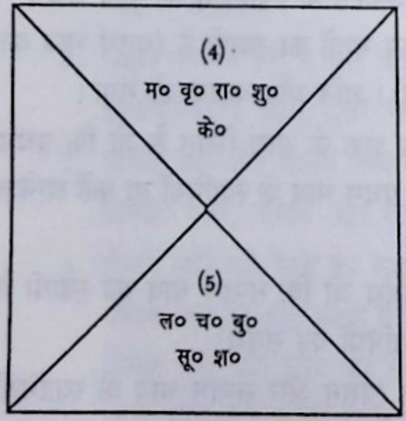

द्रेष्कोण

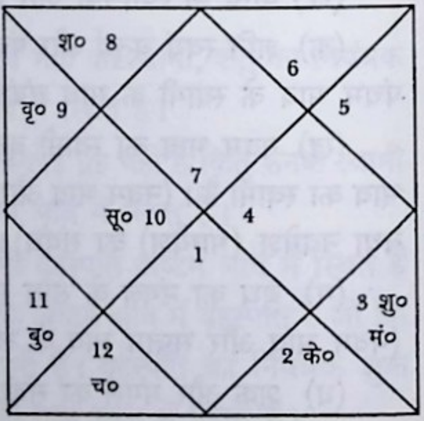

ग्रह स्पष्ट

ग्रह	अक्षांश	ग्रह	अक्षांश
लग्न	180°25'	वृ०	28°08'
सू०	166°53'	शु०	204°23'
च०	117°46'	श०	230°21'
मं०	206°24'	रा०	103°40'
बु०	191°44'	के०	283°40'

होरा वर्ग = लग्नेश मित्र राशि में और बुध भी मित्र के होरा में है।

जन्म कुण्डली का विवेचन

(*i*) शुक्र लग्नेश होकर लग्न में बैठा है, केन्द्र में होने के कारण **'मालव्य'** योग बन रहा है। इस योग में उत्पन्न जातक शान्त, सहनशील, स्वस्थ शरीर वाला, विद्वान, प्रसन्न चित वाला पत्नि व पुत्र सुख पाने वाला, प्रसिद्ध तथा वाहनादि का सुख पाने वाला होता है।

(*ii*) चंद्रमा के दोनों ओर कोई ग्रह न होने के कारण **'केम द्रुम योग'** बन रहा है। कोई ग्रह चंद्रमा के साथ व लग्न से त्रिकोण में नहीं है। परन्तु चंद्रमा लग्न से केन्द्र में है, इसलिए इस **योग का भंग हो जाता है। लग्न व चंद्रमा से केन्द्र में ग्रह होने के कारण भी यह योग भंग हो जाता है।**

(*iii*) सूर्य से द्वितीय में ग्रह हैं (चंद्रमा को छोड़ कर) इसलिए **'वैशी योग'** बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक-सत्यवादी, प्रसन्न, समदृष्टा, अधिक धनवान नहीं, बलवान स्मृति, प्रिय, पवित्र व प्रभावशाली वाणी वाला सात्विक गुणों से युक्त, तथा अकर्मण्य होता है।

शुक्र सूर्य से द्वितीय भाव में जातक को प्रसिद्धी, साहस कलाकारी देता है। **बुध** वाणी में मिठास देता है, सुन्दर शरीर तथा प्रभावी वक्ता होता है। **मंगल** का वहां होना उसके साहस तथा बहादुरी के कारण जातक को प्रसिद्ध करवाता है।

लग्न के दोनों ओर क्रूर ग्रह हैं एक ओर सूर्य दूसरी ओर शनि। शुक्र तथा बुध दोनों लग्न से आगे (अंशों में) हैं, मंगल उनसे भी आगे है। क्रूर ग्रहों के मध्य होते हुए भी लग्न पर सौम्य ग्रहों का प्रभाव है। ऐसी स्थिति में मिश्रित फल प्राप्त होता है। अशुभ कर्तरी के कारण गरीबी, अपवित्रता, उदासी, पत्नि विहीन, किसी न किसी प्रकार की कमी व संतान हीनता आदि प्राप्त हो अथवा वह सन्यासी बने।

जातक के पास सभी प्रकार के सुख व गुण होते हुए भी संयासी बनकर सबका त्याग कर दिया और स्वतंत्रता संग्राम में लग गये।

(*iv*) गज केसरी योग

गुरु व चंद्रमा का एक दूसरे से केंद्र में होने से बनता है। यहां गुरु चंद्रमा से दशम में हैं। यह योग जातक को अधिकार प्राप्त करवाता है, प्रभावी भाषण कर्ता, अति सम्मानित होता है। शत्रु हन्ता होता है, तीव्र बुद्धिमान, अपने स्वभाव और प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण प्रसिद्धी को प्राप्त होता है।

(*v*) अमल योग

गुरु के चंद्रमा से दशम में होने के कारण यह योग बनता है। जो जातक को भूमि, संतान, धन सम्पदा, प्रसिद्धी तथा सत्यवादी बनाता है।

(*vi*) लक्ष्मी योग

नवमेश बुध तथा लग्नेश शुक्र दोनों लग्न में बैठे हैं। उसकी पत्नि अच्छे स्वभाव वाली होगी, जातक विद्वान होगा और वह अपने व्यक्तियों का ध्यान रखता है। निरोगी काया, वाहन सुख, राजा के समान, भूमि का स्वामी तथा राज योग का सुख भोगने वाला होगा।

(*vii*) लग्नाधि योग

यदि लग्न से 6, 7 तथा 8 वें भाव में ग्रह हों तो यह योग बनता है।

इस कुण्डली में सब से सौम्य ग्रह गुरु सप्तम भाव में बैठा है और चंद्रमा से भी दशम में है। जातक जनता में पूज्य होकर अधिकार रखेगा, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा, बहुत से लोगों की देखरेख करेगा व स्थिर सम्पत्तिवान होगा।

(*viii*) **चामर योग**

यदि लग्न में सौम्य ग्रह हो या लग्न को देखते हों, लग्नेश पर दृष्टि हो, (अस्त न हो) और शुभ स्थान में अवस्थित हों)

इस कुण्डली में शुक्र व बुध दो सौम्य ग्रह लग्न में अवस्थित हैं, लग्नेश शुक्र भी लग्न में हैं परन्तु मंगल एक क्रूर ग्रह भी है। (जो अच्छा नहीं है) सबसे सौम्य ग्रह बृहस्पति दृष्टि दे रहा है। जातक पूर्णिमा के चन्द्र की भांति सुन्दर तथा सज्जन था। शुक्ल पक्ष के चंद्रमा की भांति उन्नति धनवान, प्रसिद्ध, दीर्घ आयु और जनता के हृदयों पर राज करने वाला था।

(*ix*) **भाग्य योग**

नवमेश बुध अपने मित्र के साथ मित्र की राशि के होकर लग्न में अवस्थित हैं और सप्तमेश व द्वितीयेश मंगल महाराज के साथ बैठे हैं। ऐसा जातक समाज में सम्मान प्राप्त करता है, पालकी में बैठकर दूसरों के कंधों पर सवार होकर यात्रा करता है और उसके आगे बैंड बाजा चलता है।

(*x*) **फलदीपिका के अनुसार यदि तीन या अधिक ग्रह स्वग्रही हो** या उच्च के हों, जातक यदि राज्य परिवार में जन्मा हो तो राजा होता है। यदि साधारण परिवार में जन्म ले तो राजा के समान पद प्राप्त करेगा।

इस कुण्डली में चंद्रमा स्वग्रही, शुक्र स्वग्रही, केवल दो ग्रह स्वग्रही है, इसीलिए जातक को संत पुरुष व राजाओं जैसा सम्मान प्राप्त होगा।

(*xi*) **अन्यमत**

यदि सभी ग्रह शुभ स्थानों में, सिवाय (6, 8 तथा 12) त्रिक स्थानों में, वक्री और अस्त न हों, तो जातक राजा बनता है।

इस कुण्डली में कोई भी ग्रह छठे तथा आठवें भाव में नहीं है परन्तु सूर्य द्वादश भाव में (लहड़ी के अयनांश से), सब से सौम्य ग्रह गुरु वक्री है। यदि इसी अवस्था में अधिक ग्रह हों या नवांश में अच्छी स्थिति में हों। इस कुण्डली में लग्नेश शुक्र लग्न में नवमेश बुध के साथ है, लग्न वर्गोत्तम हैं, बृहस्पति मित्र राशि में तथा स्वनवांश में है, सूर्य देव मित्र राशि व मित्र नवांश में है तथा बुध भी मित्र राशि व मित्र नवांश में है।

जातक बहुत अच्छी व सम्मानित स्थिति, राजसिक सम्मानित, सुख सम्पदा से युक्त ओर ताज पहनने वाला होता है।

(*xii*) **यदि लग्न वर्गोत्तम होता है** और चंद्रमा भी वर्गोत्तम (यहां चंद्रमा वर्गोत्तम नहीं है), **कोई चार ग्रह, चंद्रमा के सिवाय, लग्न पर दृष्टि डालते हों**, जातक छोटे परिवार में भी जन्म लेने पर राजा बनता है।

इस जातक ने राजा के समान सभी सुख व सम्मान भोगे।

(*xiii*) चंद्रमा D/1 में अपनी राशि में है, मित्र के नवांश में है तथा स्व द्रेष्काण में है, इसलिए उत्तम वर्गों (श्रेष्ठ है) मे है, जातक सुन्दर शरीर वाला, भूमिपति होगा, ऐसा सभी इस जातक के साथ है।

मरणोपराँत भी जातक को आधिपत्य खूब मिला है। समाधि के रुप में।

7.3 हमें यहां पर पूर्ववर्ती पाठों से प्राप्त किए ज्ञान के आधार पर जन्मकुंडली का विश्लेषण मात्र करना सीखना है।

इस अभ्यास को करने के पश्चात् हम जातक के भविष्य में घटने वाली घटनाओं के बारे में जानने में समर्थ हो पाएंगे। यही नहीं संचित कर्मों के रूप में पूर्व जन्मों के एकत्रित हुए कर्म फलों के बारे में भी जान पाएंगे। संचित कर्मों में से कुछ कर्मो का सुखद भोग या दुखद भोग, हम प्रारब्ध के रूप में, वर्तमान जन्म में करते हैं। यहां यह प्रश्न उठता है कि प्रारब्ध कर्म कौन से होते हैं और वर्तमान जन्म में उनके परिणाम कब प्रतिफलित होंगे। इस प्रश्न का उत्तर ज्ञात करने के लिए महान् ऋषियों ने अनेक विधियाँ अथवा साधन

खोज निकाले हैं, उनमें से एक महान प्रणाली दशा-प्रणाली है (काल-प्रणाली)। इन दशा-अवधियों को पुनः अन्तर्दशा-अवधियों में विभक्त कर दिया जाता है।

7.4. दशा परिचय

महर्षि पराशर ने ग्रहों की निम्नलिखित दशा-अवधियां दी हैं–

विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, षोडसोत्तरी, पंचोत्तरी, शताब्दिका, चतुरशीतिसमा, कालचक्र, चर, स्थिर, केन्द्र, ब्रह्मग्रह, मंडूक, योगार्धा, शूल, दृग, राशि, पंचस्वर, योगिनी, नैसर्गिक, पिंड, संध्या, अष्टकवर्ण, पाचक, तारादशा आदि।

ज्योतिष के विद्यार्थियों की जानकारी के लिए विभिन्न दशाओं के नाम दिये गए हैं परन्तु *विंशोत्तरी दशा सर्वाधिक प्रचलित दशा रही है इसलिए हम उसी पर विचार करेंगे। ऋषि पराशर ने भी इसकी प्रशंसा निम्नलिखित प्रकार से की है।*

"दशाबहुविधास्तासु मुख्या विंशोत्तरी मता"

अन्य सभी दशाओं में विंशोत्तरी दशा ही सामान्य जनता के लिए सर्वाधिक उपयुक्त दशा है।

ज्योतिष की हिन्दू प्रणाली में दशाओं की जो संकल्पना चली आ रही है उसके अनुसार ग्रह अपना प्रभाव (अच्छा या बुरा) अपनी गौरवपूर्ण स्थिति अथवा अगौरवपूर्ण स्थिति के अनुसार अपनी महादशा अथवा अन्तर्दशा अथवा प्रत्यंतरदशा में देते हैं।

7.5 ऋषि ने पुनः एक स्थान पर कहा है–

विंशोत्तरशंत पूर्णमायुः पूर्वमुदाहृतम्।

कलौ विंशोत्तरी तस्माद् दशा मुख्या द्विजोत्तम।।

कलियुग में मानव की औसत जीवन-अवधि सामान्यतया 120 वर्ष ली जाती है। इसीलिए विंशोत्तरी दशा जिसके कुल 120 वर्ष ही हैं। सभी दशाओं में सर्वाधिक उपयुक्त दशा और सभी दशाओं में श्रेष्ठ समझी जाती है। **नक्षत्र स्वामी को ही दशानाथ कहते हैं।** प्रत्येक ग्रह अपना-अपना दशा का समय रखता है। यदि हम कृतिका से गणना आरम्भ करते हैं तो दशाओं के स्वामी और उनके नक्षत्र निम्नलिखित होंगे–

सारिणी–नक्षत्र-स्वामी तथा उनकी दशावधि

दशा-स्वामी नक्षत्र स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र संख्या	दशा-अवधि (वर्षों में)
सूर्य	कृतिका, उत्तर फाल्गुनी, उत्तराषाढ़	3,12,21	6
चन्द्र	रोहिणी, हस्त, श्रावण	4,13,22	10
मंगल	मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा	5,14,23	7
राहु	आर्द्रा, स्वाति और शतमिषा	6, 15, 24	18
वृहस्पति	पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वभद्रा पद	7,16,25	16
शनि	पुष्यामि, अनुराधा और उत्तराभद्रा पद	8,17,26	19
बुध	अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती	9,18,27	17
केतु	मघा, मूल, अश्विनी	10,19,1	7
शुक्र	पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा और भरणी	11,20,2	20
	कुल वर्ष	—	120

7.6 भुक्त एवं भोग्य दशा

हम यह पढ़ चुके हैं कि चन्द्रमा इन नक्षत्रों के (जिनकी संख्या 27 है) ऊपर से गोचर में मोटे तौर पर एक घंटा 48 मिनट प्रति डिग्री (4½ घटी) की दर से मार्ग तय करता हुआ गुज़रता है। जन्म-समय में भोग्य दशा की परिगणना करने के लिए नक्षत्रों को जितनी कुल अवधि प्राप्त होती है उसमें से नक्षत्रों की जितनी डिग्री को चन्द्रमा पार कर चुका होता है (भुक्त) उसे छोड़ दिया जाता है और जितनी डिग्री शेष रह जाती है जिन्हें चन्द्रमा को अभी पार करना होता है (भोग्य) केवल उन्हें ही परिगणित किया जाता है।

दशामानं भयातघ्नं भभोगेन हृतं फलम्।

दशाया भुक्तवर्षाद्य भोग्यं मानाद् विशोधितम्।

भोग्य दशा की परिगणना करना (जन्म-समय में जो दशा चल रही हो उसकी शेष अवधि)

दशा–अवधि को (जन्म-समय में चन्द्रमा जिस नक्षत्र में अवस्थित हो, उस नक्षत्र के स्वामी ग्रह की महादशा अवधि) चन्द्रमा जिस जन्म नक्षत्र में हो उसकी जितनी अवधि बीत चुकी हो, उससे गुणा करो और जन्म-नक्षत्र

में चन्द्रमा की अवस्थिति की कुल अवधि से भाग करो। वर्ष, मास, दिनों आदि में जो संख्या आएगी वह महादशा की 'भुक्त दशा' होगी।

महादशा की (उस ग्रह की दशा जो जन्म-नक्षत्र का स्वामी है) कुल अवधि में से जब इस उपर्युक्त संख्या को घटाया जाएगा तब भोग्य दशा की वह शेष संख्या आ जाएगी जिसे जन्म-समय में जातक भोगना आरम्भ करता है।

7.7 परिगणना की शास्त्रीय विधि

उदाहरण—मान लीजिए कि जन्म के समय चन्द्रमा मृगशिरा नक्षत्र में था जिसका स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र की जितनी अवधि बीत चुकी है वह 56 घटी 55 पल है (अर्थात् 3415 पल) मृगशिरा नक्षत्र की कुल अवधि (मृगशिरा नक्षत्र को पार करने में चन्द्रमा जितना समय लेता है) 59 घटी और 31 पल (अर्थात् 3751 पल) है।

3415 × 7 ÷ 3571

(बीती अवधि का कुल समय × मंगल ग्रह के कुल वर्ष ÷ मृगशिरा नक्षत्र को पार करने में चन्द्रमा द्वारा लिया जाने वाला कुल समय)

= 23905 ÷ 3571

6 वर्ष-8 महीने-9 दिन-54 घटी-47 पल 'भुक्त दशा' है

मंगल ग्रह के कुल समय 7 वर्ष में से यदि इस संख्या को घटाएंगे तो हमें निम्नलिखित संख्या प्राप्त होगी–

		वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
मंगल महादशा का कुल समय	–	7	0	0	0	0
भुक्त दशा	–	6	8	9	54	47
भोग्य दशा	–	0	3	14	5	13

अतः 3 महीने 14 दिन 5 घटी 13 पल जन्म-समय में प्राप्त मंगल दशा की शेष अवधि (भोग्य दशा) होगी।

यह विधि पंचांग पर आधारित है ओर इसे परम्परागत (अथवा शास्त्रीय) विधि के नाम से जाना जाता है।

7.8 आधुनिक विधि–जन्म के समय महादशा की शेष अवधि की परिगणना के लिए आजकल अनुसंधानकत्ताओं ने अनेक सरल विधियों को खोज निकाला है। इसके लिए हमें जन्म-राशि तथा चन्द्रमा के भोगांश को जानने की आवश्यकता होती है।

पूर्ववर्ती पाठों में हम पढ़ चुके हैं कि 27 नक्षत्र (कुल 360 डिग्री को मिलाकर) होते हैं, प्रत्येक नक्षत्र का मान 13 डिग्री 20 मिनट होता है और उसमें चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण का मान 3 डिग्री 20 मिनट होता है। 2¼ नक्षत्रों के ऐसे 9 चरणों (प्रत्येक चरण 3 डिग्री 20 मिनट का) को मिलाकर 30 डिग्री की एक राशि बनती है। नक्षत्र और राशि-चक्र दोनों का आरम्भिक बिन्दु मेष (भचक्र के प्रथम बिन्दु) की जीरो डिग्री से आरम्भ होता है।

टिप्पणी–कृप्या तालिका को देखिए

तालिका **I** विंशोत्तरी दशा में नक्षत्रों के विभाजन को आरम्भ करना

क्रम	नक्षत्र का नाम	भोगांश (शुरू होने के) राशि	डिग्री	मिनट	नक्षत्र-स्वामी	अवधि (वर्षों में)
1.	अश्विनी	0	00	00	केतु	7
2.	भरणी	0	13	20	शुक्र	20
3.	कृत्तिका	0	26	40	सूर्य	6
4.	रोहिणी	1	10	00	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	1	23	20	मंगल	7
6.	आर्द्रा	2	06	40	राहु	18
7.	पुनर्वसु	2	20	00	वृहस्पति	16
8.	पुष्या	3	03	20	शनि	19
9.	अश्लेषा	3	16	40	बुध	17
10.	मघा	4	00	00	केतु	7
11.	पूर्व फाल्गुनी	4	13	20	शुक्र	20
12.	उत्तर फाल्गुनी	4	26	40	सूर्य	6
13.	हस्त	5	10	00	चन्द्र	10
14.	चित्रा	5	23	20	मंगल	7

क्रम	नक्षत्र का नाम	भोगांश (शुरू होने के) राशि	डिग्री	मिनट	नक्षत्र-स्वामी	अवधि (वर्षों में)
15.	स्वाति	6	06	40	राहु	18
16.	विशाखा	6	20	00	वृहस्पति	16
17.	अनुराधा	7	03	20	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	7	16	40	बुध	17
19.	मूल	8	00	00	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	8	13	20	शुक्र	20
21.	उत्तराषाढ़ा	8	26	40	सूर्य	6
22.	श्रावण	9	10	00	चन्द्र	10
23.	धनिष्ठा	9	23	20	मंगल	7
24.	शतमिषा	10	06	40	राहु	18
25.	पूर्वभाद्रपद	10	20	00	वृहस्पति	16
26.	उत्तर भाद्रपद	11	03	20	शनि	19
27.	रेवती	11	16	40	बुध	17

तालिका **II:** चन्द्रमा के भोगांश द्वारा विंशोत्तरी दशा की शेष अवधि

चन्द्रमा का	चन्द्रमा-मेष सिंह, धनु में (अग्नि राशि में)	चन्द्रमा-वृष कन्या, मकर में पृथ्वी राशि	चन्द्र-मिथुन तुला, कुम्भ में वायु राशि	चन्द्र-कर्क वृश्चिक, मीन में जल राशि
भोगांश	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन
0.00	केतु 7-0-0	सूर्य 4-6-0	मंगल 3-6-0	वृह० 4-0-0
0 20	6-9-27	4-4-6	3-3-27	3-7-6
0-40	6-7-24	4-2-12	3-1-24	3-2-12
1.00	6-5-21	4-0-18	2-11-21	2-9-18
1.20	6-3-18	3-10-24	2-9-18	2-4-24
1.40	6-1-15	3-9-0	2-7-15	2-0-0
2.00	5-11-12	3-7-6	2-5-12	1-7-6
2.20	5-9-9	3-5-12	2-3-9	1-2-12

चन्द्रमा का	चन्द्रमा-मेष सिंह, धनु में (अग्नि राशि में)	चन्द्रमा-वृष कन्या, मकर में पृथ्वी राशि	चन्द्र-मिथुन तुला, कुम्भ में वायु राशि	चन्द्र-कर्क वृश्चिक, मीन में जल राशि
भोगांश	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन
2.40	5-7-6	3-3-18	2-1-6	0-9-18
3.00	5-5-3	3-1-24	1-11-3	0-4-24
3.20	5-3-0	3-0-0	1-9-0	शनि19-0-0
3-40	5-0-27	2-10-6	1-6-27	18-6-9
4.00	4-10-24	2-8-12	1-4-24	18-0-18
4.20	4-8-21	2-6-18	1-2-21	17-6-27
4-40	4-6-18	2-4-24	1-0-18	17-1-6
5-00	4-4-15	2-3-0	0-10-15	16-7-15
5-20	4-2-12	2-1-6	0-8-12	16-1-24
5-40	4-0-9	1-11-12	0-6-9	15-8-3
6.00	3-10-6	1-9-18	0-4-6	15-2-12
6-20	3-8-3	1-7-24	0-2-3	14-8-21
6-40	3-6-0	1-6-0	राहु 18-0-0	14-3-0
7.00	3-3-27	1-4-6	17-6-18	13-9-9
7.20	3-1-24	1-2-12	17-1-6	13-3-18
7.40	2-11-21	1-0-18	16-7-24	12-9-27
8.00	2-9-18	0-10-24	16-2-12	12-4-6
8.20	2-7-15	0-9-0	15-9-0	11-10-15
8.40	2-5-12	0-7-6	15-3-18	11-4-24
9.00	2-3-9	0-5-12	14-10-6	10-11-3
9.20	2-1-6	0-3-18	14-4-24	10-5-12
9.40	1-11-3	0-1-24	13-11-12	9-11-21
10-0	1-9-0	चं. 10-0-0	13-6-0	9-6-0
10-20	1-6-27	9-9-0	13-0-18	9-0-9
10-40	1-4-24	9-6-0	12-7-6	8-6-18
11-0	1-2-21	9-3-0	12-1-24	8-0-27
11-20	1-0-18	9-0-0	11-8-12	7-7-6
11-40	0-10-15	8-9-0	11-3-0	7-1-15

चन्द्रमा का	चन्द्रमा-मेष सिंह, धनु में (अग्नि राशि में)	चन्द्रमा-वृष कन्या, मकर में पृथ्वी राशि	चन्द्र-मिथुन तुला, कुम्भ में वायु राशि	चन्द्र-कर्क वृश्चिक, मीन में जल राशि
भोगांश	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन
12-0	0-8-12	8-6-0	10-9-18	6-7-24
12-20	0-6-9	8-3-0	10-4-6	6-2-3
12-40	0-4-6	8-0-0	9-10-24	5-8-12
13-0	0-2-3	7-9-0	9-5-12	5-2-21
13-20	शुक्र 20-0-0	7-6-0	9-0-0	4-9-0
13-40	19-6-0	7-3-0	8-6-18	4-3-9
14-0	19-0-0	7-0-0	8-1-16	3-9-18
14-20	18-6-0	6-9-0	7-7-24	3-3-27
14-40	18-0-0	6-6-0	7-2-12	2-10-6
15-0	17-6-0	6-3-0	6-9-0	2-4-15
15-20	17-0-0	6-0-0	6-3-18	1-10-24
15-40	16-6-0	5-9-0	5-10-6	1-5-3
16-0	16-0-0	5-6-0	5-4-24	0-11-12
16-20	15-6-0	5-3-0	4-11-12	0-5-21
16-40	15-0-0	5-0-0	4-6-0	बुध 17-0-0
17-0	14-6-0	4-9-0	4-0-18	16-6-27
17-20	14-0-0	4-6-0	3-7-6	16-1-24
17-40	13-6-0	4-3-0	3-1-24	15-8-21
18-0	13-0-0	4-0-0	2-8-12	15-3-18
18-20	12-6-0	3-9-0	2-3-0	14-10-15
18-40	12-0-0	3-6-0	1-9-18	14-5-12
19-0	11-6-0	3-3-0	1-4-6	14-0-9
19-20	11-0-0	3-0-0	0-10-24	13-7-6
19-40	10-6-0	2-9-0	0-5-12	13-2-3
20-0	10-00	2-6-0	वृहस्पति 16-0-0	12-9-0
20-20	9-6-0	2-3-0	15-7-6	12-3-27
20-40	9-0-0	2-0-0	15-2-12	11-10-24

चन्द्रमा का	चन्द्रमा-मेष सिंह, धनु में (अग्नि राशि में)	चन्द्रमा-वृष कन्या, मकर में पृथ्वी राशि	चन्द्र-मिथुन तुला, कुम्भ में वायु राशि	चन्द्र-कर्क वृश्चिक, मीन में जल राशि
भोगांश	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन	वर्ष-मास-दिन
21-0	8-6-0	1-9-0	14-9-18	11-5-21
21-20	8-0-0	1-6-0	14-4-24	11-0-18
21-40	7-6-0	1-3-0	14-0-0	10-7-15
22-0	7-0-0	1-0-0	13-7-6	10-2-12
22-20	6-6-0	0-9-0	13-2-12	9-9-9
22-40	6-0-0	0-6-0	12-9-18	9-4-6
23-0	5-6-0	0-3-0	12-4-24	8-11-3
23-20	5-0-0	मंगल 7-0-0	12-0-0	8-6-0
23-40	4-6-0	6-9-27	11-7-6	8-0-27
24-0	4-0-0	6-7-24	11-2-12	7-7-24
24-20	3-6-0	6-5-21	10-9-18	7-2-21
24-40	3-0-0	6-3-18	10-4-24	6-9-18
25-0	2-6-0	6-1-15	10-0-0	6-4-15
25-20	2-0-0	5-11-12	9-7-6	5-11-12
25-40	1-6-0	5-9-9	9-2-12	5-6-9
26-0	1-0-0	5-7-6	8-9-18	5-1-6
26-20	0-6-0	5-5-3	8-4-24	4-8-3
26-40	सूर्य 6-0-0	5-3-0	8-0-0	4-3-0
27-0	5-10-6	5-0-27	7-7-6	3-9-27
27-20	5-8-12	4-10-24	7-2-12	3-4-24
27-40	5-6-18	4-8-21	6-9-18	2-11-21
28-0	5-4-24	4-6-18	6-4-24	2-6-18
28-20	5-3-0	4-4-15	6-0-0	2-1-15
28-40	5-1-6	4-2-12	5-7-6	1-8-12
29-0	4-11-12	4-0-9	5-2-12	1-3-9
29-20	4-9-18	3-10-6	4-9-18	0-10-6
29-40	4-7-24	3-8-3	4-4-24	0-5-3
30-0	4-6-0	3-6-0	4-0-0	0-0-0

तालिका III ग्रहों की दशा के लिए अनुपातिक भाग/चन्द्र-भोगांश के मिनटों की बढ़ोत्तरी के साथ, दशा-शेष में से निम्नलिखित को घटाया जाएगा।

मिनट	केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चन्द्रमा 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		बृहस्पति 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
	m	*d*	*m*	*d*	*m*	*d*	*m*	*d*	*m*	*d*	*m*	*d*	*m*	*d*	*m*	*d*	*m*	*d*
1	0	3	0	9	0	3	0	5	0	3	0	8	0	7	0	9	0	8
2	0	6	0	18	0	5	0	9	0	6	0	16	0	14	0	17	0	15
3	0	9	0	27	0	8	0	14	0	9	0	24	0	22	0	26	0	23
4	0	13	1	6	0	11	0	18	0	13	1	2	0	29	1	4	1	1
5	0	16	1	15	0	14	0	23	0	16	1	11	1	6	1	13	1	8
6	0	19	1	24	0	16	0	27	0	19	1	19	1	13	1	21	1	16
7	0	22	2	3	0	19	1	2	0	22	1	27	1	20	2	0	1	24
8	0	25	2	12	0	22	1	6	0	25	2	5	1	28	2	8	2	1
9	0	28	2	21	0	24	1	11	0	28	2	13	2	5	2	17	2	9
10	1	1	3	0	0	27	1	15	1	1	2	21	2	12	2	26	2	17
15	1	17	4	15	1	11	2	8	1	17	4	2	3	18	4	8	3	25
20	2	3	6	0	1	24	3	0	2	3	5	12	4	24	5	21	5	3

निम्नलिखित उदाहरण के माध्यम से आधुनिक विधि को अच्छे ढंग से समझा जा सकता है।

उदाहरण–दिए गए समय और तिथि में चन्द्रमा के भोगांश की परिगणना करो। परिच्छेद 7.1 में महात्मा गांधी की जन्म-कुंडली को आइए देखें–

–चन्द्र भोगांश 120°10' अथवा 4.0°10' अथवा सिंह 0°10' है।

तालिका II को देखिए–सिंह राशि के कॉलम में 0°-0 के सामने देखिए, केतु की शेष दशा 7 वर्ष 0 मास 0 दिन है।

तालिका III को देखिए–केतु के कॉलम के नीचे 10 मिनट के आगे देखिए हमें वहां 1 मास 1 दिन लिखा मिलेगा 17 वर्ष में से इसे घटाइए। घटाकर आएगा–6 वर्ष 10 महीने 29 दिन। जन्म-समय में केतु की महादशा के इतने ही वर्ष भोग्य होंगे।

7.9 दशा के प्रभाव

ऋषि पराशर ने कहा है–

दशाओं के दो प्रकार के प्रभाव होते हैं–

(1) सामान्य–ग्रहों की प्रकृतिगत स्वाभाविक विशेषताएं सामान्य प्रभाव उत्पन्न करती है।

(2) जिस भाव का स्वामी होता है, उस भाव का फल देता है।

(3) विशिष्ट–ग्रह जिस राशि में अवस्थित होते हैं, जिस ग्रह के साथ अवस्थित होते हैं और जिस ग्रह से दृष्ट होते हैं, उसके स्वामी जैसा प्रभाव भी देते हैं।

इन तीनों स्थितियों को याद करने के लिए श्री के.एन. राव द्वारा निर्मित फार्मूला (P.A.C.) हमारी सहायता करेगा।

(P) पी = Posted अवस्थिति/युति (A) ए = Aspected दृष्टि (C) सी = Conjuncted युति

अतः विशिष्ट प्रभावों के लिए पी ए सी (सिदृयु) को याद रखना होगा।

वर्तमान सन्दर्भ में हम कह सकते हैं कि फलित-हेतु दशाओं का प्रयोग करना बहुत आवश्यक है।

कल्पना कीजिए–श्रीमान 'ए' के पास 10,000 ₹ का प्रोनोट है और उसे किसी को 8000 ₹ की अदायगी भी करनी है। वह तब तक द्विविधा में रहेगा जब तक वह यह नहीं जानता कि ऋण की अदायगी से पूर्व की तिथि में प्रोनोट का पैसा मिल जाएगा। यदि पहले पैसा मिल जाएगा तो उसकी स्थिति सुरक्षित रहेगी। प्रोनोट के ऊपर जो पैसा मिलने की तिथि लिखी हुई है, वही उसकी सहायता कर सकती है, और किसी तरह की सहायता काम नहीं आ सकती।

दशा, पैसा मिलने की तिथि को बताने का काम करती है। अतः हम चन्द्रमा के सही अंशों की परिगणना करते हैं ओर उससे जन्म-समय में विंशोत्तरी महादशा की जो शेष अवधि चल रही हो, उसकी परिगणना करते हैं।

7.10 अन्तर्दशा की परिगणना (महादशा की उप-अवधि)

परिगणनाओं की एक से अधिक विधियां प्रचलित हैं। उनमें से एक निम्नलिखित है–

जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, वह महादशा कुल जितने वर्ष की होती है उस संख्या को, उस ग्रह की अन्तर्दशा की वर्ष-संख्या से गुणा करो जिस ग्रह की अन्तर्दशा तुम्हें जाननी हो। गुणनफल को 10 से भाग दो, भागफल महीने होंगे तथा जो शेष बचेगा उसे 3 से गुणा करने पर दिन आ जाएंगे।

उदाहरण—वृहस्पति की महादशा = 16 वर्ष। वृहस्पति की महादशा में पहली अन्तर्दशा वृहस्पति की ही होंगी, दूसरी शनि की होगी, तीसरी बुध की होगी ओर इसी प्रकार आगे गिनती करते जाएंगे। (महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यंतरदशा की गणना का क्रम एक ही है)

बृहस्पति—16 × 16 = 256 ÷ 10 = 25 महीने 18 दिन अथवा 2 वर्ष 1 महीना 18 दिन

शनि—16 × 19 = 304 ÷ 10 = 30 महीने 12 दिन अथवा 2 वर्ष 6 महीने 12 दिन।

अन्य अन्तर्दशाएं भी इसी प्रकार निकाली जाएंगी।

7.11 प्रत्यंतर दशाऐं (उप-उप अवधि)

प्रत्यंतर दशा का पता लगने के लिए हम इसी ऊपर वाले ढंग का प्रयोग करेंगे। वृहस्पति की महादशा में वृहस्पति की अन्तर्दशा = 2 वर्ष 1 महीना 18 दिन

वृह० की प्रत्यंतर दशा = 16÷120 × 2 वर्ष – 1 मास – 18 दिन
अथवा 25 महीने 18 दिन
= 768/120 × 16
= 6.4 × 16
= 102.4 दिन
= 3 महीने 12 दिन 9.6 घंटे

शनि— = 6.4÷19 = 121.6
= 4 महीने 1 दिन 14.4 घंटे

और इसी प्रकार अन्य ग्रहों की प्रत्यंतर दशा की परिगणना की जाएगी।

एक अन्य सरल विधि निम्नलिखित है—

वृह० की महादशा में वृ० की अन्तर्दशा में वृ० की प्रत्यंतर दशा = 16×16×16÷40 = 512/5 दिन = 3 महीने 12 दिन 9 घंटे 36 मिनट।

वृह० की महादशा में वृ० की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा = 16×16×19÷40 = 608/5 दिन = 4 महीने 1 दिन 14 घंटे 24 मिनट।

छात्र किसी भी विधि का प्रयोग कर सकते हैं जिसे वे उपर्युक्त विधियों

में से सरल और सही समझें। प्रत्यंतर दशा से घटाकर यदि हम सूक्ष्म दशा निकालना चाहें तो भी हम इन्हीं विधियों का प्रयोग करके दिनों और घंटों में सूक्ष्म दशा की गणना कर सकते हैं। हम और अधिक सूक्ष्म में जाना चाहें तो इन्हीं विधियों द्वारा घंटों और मिनटों में भी दशा की गणना कर सकते हैं। इससे अभिप्राय यह है कि किसी विशिष्ट क्षण में कौनसे ग्रह की अतिसूक्ष्म दशा चल रही है, वह शुभ होगी या अशुभ होगी, यह गणना द्वारा जाना जा सकता है और उस समय में किसी विशिष्ट कार्य को करने का क्या परिणाम होगा, यह भी जाना जा सकता है।

7.12 महादशा हमें वह कुल-समय बताती है जो किसी ग्रह को दिया गया होता है। अन्तर्दशा इस समय को कम से कम 3) महीने और अधिक 3 वर्ष 4 महीने तक ले आती है। प्रत्यंतर दशा इस अवधि को घटाकर कम से कम 5 दिन 9.6 घंटे (सूर्य/सूर्य/सूर्य) तक और अधिक से अधिक 6 महीने तक की घटने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिल जाती है। इस प्रत्यंतर दशा को पुनः सूक्ष्म दशा में बांटा जा सकता है और सूक्ष्म दशा को पुनः अतिसूक्ष्म (प्राण) दशा में बांटा जा सकता है। इन सबकी परिगणना की विधि एक ही है।

परवर्ती पाठों में इस दृष्टि से जो विस्तृत अध्ययन किया जाएगा, वह अध्ययन जातक की दैनिक जिन्दगी में दशा-प्रणाली के प्रभावों पर प्रकाश डालेगा।

❑❑❑

पाठ–8
लग्न-राशियों के परिणाम

भचक्र की 12 राशियों, उनकी प्रकृति और विशेषताओं, लग्न राशि की परिगणना और राशि कुंडली तथा नवाँश कुंडली आदि को बनाने की प्रक्रिया को जानने के पश्चात् जातक के बाह्य शरीर पर इन राशियों के प्रभावों को समझना आसान हो गया है। लग्न क्या है? जातक का लग्न उनकी शारीरिक बनावट अथवा बाह्य आकृति का प्रतिनिधित्व करता है। यह जन्म–कुंडली का प्रथम भाव होता है। यही वह बिन्दु होता है जहाँ से अन्य भावों की गिनती आरम्भ की जाती है। जातक के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अन्य भावों का और अन्य भावों में अवस्थित ग्रहों के प्रभावों का मूल्यांकन इस प्रथम भाव के संदर्भ में ही किया जाता है। लग्न में जो राशि हो उसके और उसमें (लग्न में) अवस्थित ग्रहों के प्रभावों अथवा विशेषताओं के मध्य यदि हम कोई संबंध स्थापित कर सकने की स्थिति में हो तो लग्न–शोधन जातक की बाह्य शारीरिक आकृति, नैन–नक्श आदि को देखकर करना सरल हो जाता है।

हम जन्म–समय, जन्म–नक्षत्र और लग्न में शोधन करने के बारे में भी पहले ही पढ़ चुके हैं। इस अध्ययन से भी जन्म–समय के संशोधन करने में सहायता मिलेगी। पूर्ववर्ती अध्यायों में ग्रहों और उनकी प्रकृति आदि के बारे में विचार–विवेचन किया जा चुका है। विभिन्न राशियों में जिन ग्रहों का आधिपत्य है, यदि उन ग्रहों की राशियों में लग्न पड़ता है तो उन ग्रहों का प्रभाव भी लग्न पर अवश्य पड़ेगा।

लग्न वह प्रथम बिन्दु है जहां से कुंडली का विश्लेषण और उसके बल का मूल्यांकन करना आरम्भ किया जाता है। किसी भी ज्योतिषी को फलित देने से पूर्व राशि के प्रभाव, उसके स्वामी के प्रभाव तथा लग्न जिस नवांश में पड़ता है उसके प्रभाव को ध्यान में रखना चाहिए और लग्न के सही होने का भी निश्चय कर लेना चाहिए।

भचक्र की 12 राशियों में लग्न होने का प्रभाव निम्नलिखित होगा–

8.1 मेष

चर, अग्नि तत्त्व तथा विषम राशि, पृष्ठोदया, पुरुष लिंग, क्षत्रीय वर्ण, पूर्व दिशा राशि स्वामी मंगल होता है।

वह सदैव सक्रिय रहेगा और सदैव इधर–उधर घूमता रहेगा। लम्बे समय तक लगातार किसी एक स्थान पर रहने में उसे कठिनाई अनुभव होगी। कुछ समय के पश्चात् उसे परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव होगी अथवा लगातार काम करने पर उसे कुछ देर रुकने की आवश्यकता अनुभव होगी। उसमें कुछ सीमा तक स्वतंत्र चिन्तन–शक्ति होगी और वह एक सक्षम व्यक्तित्व होगा। वह साहसी, स्पष्टवक्ता, आवेगशील, आक्रामक प्रवृत्ति वाला और छोटी–छोटी बातों पर चिढ़ने वाला होता है। उसका मध्यम कद, दुर्बल शरीर, लम्बी गर्दन (सारस जैसी गर्दन) मज़बूत और विकसित हड्डियां, सघन भौएं आदि विशेषताएं होती है।

प्रायः उनमें ईर्ष्या चरम सीमा पर पाई जाती है और वे बनावटी बात करने में प्रवीण होते है। उनमें अधीरता, सैक्स संबंधी बीमारियों, बवासीर आदि की शिकायतें पाई जाती है। वह सोचते हैं कि दूसरों पर सत्ता का प्रयोग करने के लिए ही उनका जन्म हुआ है। निम्नलिखित जन्म कुंडली को देखिए–

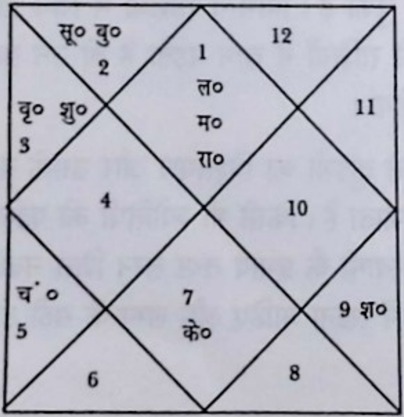

कुण्डली-VI श्री जौर्ज फरनान्डिस
3 जून 1930, मंगलौर

8.2 वृष

भूमि तत्त्व, स्थिर तथा सम राशि, पृष्ठोदया स्त्रीलिंग, राशि स्वामी शुक्र, वर्ण वैश्य, दक्षिण दिशा।

इस लग्न में उत्पन्न हुआ जातक मध्यम कद का (गोल-मटोल) होगा। उसका चौड़ा और सुदृढ़ मस्तक, आकर्षक नाक, गाल और होंठ होंगे। मोटी और गठी हुई गर्दन होगी। काले बाल होंगे, श्याम वर्ण होगा। वह खेती संबंधी कार्यों में संलग्न होगा। युवा स्त्रियों की संगति का इच्छुक होगा। वह त्यागशील और क्षमाशील प्रकृति का होगा। उसकी कमर चेहरे तथा दोनों बगलों में चिन्ह होंगे, तिल या मस्सा होगा। यदि जातक स्त्री है तो सुन्दर और आकर्षक होगी।

वे लेखक, प्रकाशक, पत्रकार, सत्यप्रेमी के रूप में प्रसिद्धि पाते हैं और अपनी भावनाओं से कभी बंधे नहीं रहते। वे व्यापारिक प्रवृत्ति के होते हैं। प्रायः नर्वस होने की शिकायतों से ग्रस्त रहते हैं। उनकी स्मरण-शक्ति और कल्पना-शक्ति कभी उन्हें धोखा नहीं देगी। उत्कट भावपूर्ण प्रकृति व भोगी होने के कारण वे अपनी वृद्धावस्था में प्रायः यौन रोगों के शिकार हो जाते हैं। किन्तु यदि वे आत्म-संयम की आदत डाल लेंगे और आनन्द-प्राप्ति के साधनों का परिष्कार कर लेंगे तो ऐसा नहीं होगा।

कुण्डली-VII श्री के. करुनाकरण 5-7-1918, 4-30 बजे, त्रिवैन्द्रम (तीरुवंथापुरम)

8.3 मिथुन

वायु तत्त्व, द्विस्वभाव, शूद्र वर्ण विषम, पुरुष लिंग, उभयोदय पश्चिम दिशा राशि स्वामी बुध हैं।

जब लग्न मिथुन होगा तो जातक की काली आंखें और घुंघराले बाल होंगे। स्त्रियों की संगति में वह आनन्दित रहेगा। उसकी मोटी गर्दन, उन्नत नाक होगी। उसके अनेक मित्र होंगे। वह घर में रहना अधिक पसंद करेगा।

प्रायः औसत से अधिक ऊंचाई और सुन्दर ढांचे में ढला शरीर होगा। उसके लम्बे पतले हाथ, उभरी हुई नाक होगी। वह तेज़ तेज़ चलता होगा और सुस्पष्ट शब्दों में बोलता होगा। वह चुस्त होगा, चालाक होगा, द्विविधा ग्रस्त मन वाला होगा, गणितज्ञ, मैकेनिक होगा। किसी भी विषय में प्रवीणता प्राप्त किए बिना सभी विषयों में जानकारी रखता होगा।

अचानक बीमार पड़ जाता होगा, दूसरे लिंग के साथ संगति करने की रुचि रखता होगा। उसके लिए जरूरी है कि वह आत्म–संयम की आदत डाले। वह कभी धोखा और कपट भी कर सकता है।

(बी.वी. रमन की 'उल्लेखनीय जन्मकुंडलियां' के पृष्ठ 129 को देखिए।)

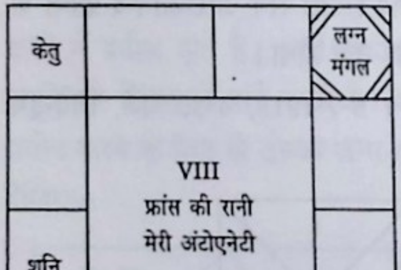

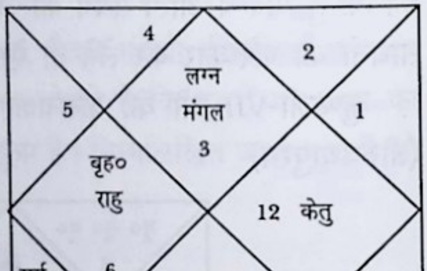

फ्रांस की रानी दानी, स्वांग भरने की आदत लिए हुए थी। वह जीवन–शक्ति से भरपूर, घमंडी थी। उसकी भवें घनी थी। उसके बाल हल्के लाल–भूरे रंग के थे। वह सदैव द्विविधा से ग्रस्त रहती थी। षड़यंत्रों और अनिश्चित्ता के मध्य रहती थी। 1774 में उसके जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना घटी (राहु/चन्द्र दशा में) उस समय बोरबोस की राजगद्दी

षड़यंत्र और राजनीतिक संकट की विरासत के साथ लुईस् पन्द्रहवें के उत्तराधिकारियों और युवा एनटोएनेटी को हस्तांतरित हुई। वह विधवा हुई। उसे सर्वाधिक दर्दनाक मृत्यु प्राप्त हुई।

8.4 कर्क

चर राशि, जलीय राशि, पृष्ठोदया सम, स्त्रीलिंग, ब्राह्मण वर्ण, राशि स्वामी चन्द्र है दिशा-उत्तर।

जातक प्रायः छोटे कद का होगा। मोटी गर्दन, मैत्री भाव की प्रकृति, मोटी कमर, श्वेत वर्ण, तेज़ चाल, कमजोर ढांचा आदि। उसमें पुनर्लाभ प्राप्त करने की शक्ति कम होगी, किंतु बाद की उम्र में अधिक शक्तिशाली बन जाता है। बहुत साहसी होता है, जल का शौकीन होता है, प्रतिभावान होता है, उसके पुत्रों की संख्या कम होती है, अपने परिवार से घनिष्ठ रूप से जुड़ा होता है, अत्याधिक भावुक होता है, जन–सेवा या समाज–सेवा में उसकी रुचि हो सकती है, उसके प्रेम–प्रसंग होते हैं। अपनी श्रेष्ठ वाक् शक्ति, सेवा प्रवृत्ति और कुशलता के कारण वह समाज में ख्याति प्राप्त करता है। उसका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं होता।

जिन व्यक्तियों ने कर्क लग्न में जन्म लिया, वे है–श्री गौतम बुद्ध, श्री आदि शंकराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, चंगेज खान, श्री थियागराज, श्रीमती इन्दिरा गाँधी आदि।

8.5 सिंह

स्थिर राशि, विषम, पुरुष लिंग, अग्नि राशि, शीर्षोदया क्षत्रीय वर्ण स्वामी सूर्य होता है।

जातक की हड्डियां पूर्ण विकसित होती हैं उसके चौड़े कन्धे होते हैं, गोल अथवा अंडाकार बड़ा सिर होता है, बाह्मकृति सेना नायक की प्रतीत होती है, कम बोलता है, पतली कमर होती है, प्रचुर बाल होते हैं, गुलाबी अथवा लालिमायुक्त वर्ण होता है। भवें ऐसी होती है कि शाही और भव्य बाह्माकृति बनाती हैं। सुदृढ़ और बड़ी चिबुक (Chin) होती है, तेजस्वी बाह्यकृति होती है।

वह हेकड़ीबाज़ होगा, शक्तिशाली होगा। शौर्यपूर्ण, मज़बूत इरादे वाला और अपनी माता का आज्ञाकारी होगा। वनों और पहाड़ियों में घूमने का

शौकिन होगा, स्वतंत्र चिन्तन करने वाला होगा, साहित्य प्रेमी होगा, दार्शनिक ज्ञान युक्त होगा।

गुरू नानक क्षत्रिय परिवार में जन्मे, रहस्यमयी चित्तवृत्ति, गम्भीर, गहन और सर्वतोमुखी विज्ञता, और प्रभावी वाक्पटुता वाले व्यक्ति थे। उन्होंने अपने स्कूल के प्राध्यापक और माता पिता को अपने विलक्षण कार्यों, कथनों और स्वतंत्र विचारों की प्रासंगिक लहरों से आश्चर्यचकित कर दिया था।

राजीव गाँधी शिवाजी और अरविन्द घोष का जन्म भी सिंह लग्न में हुआ था।

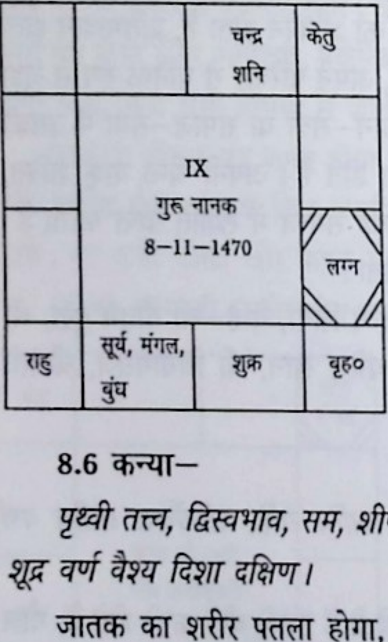

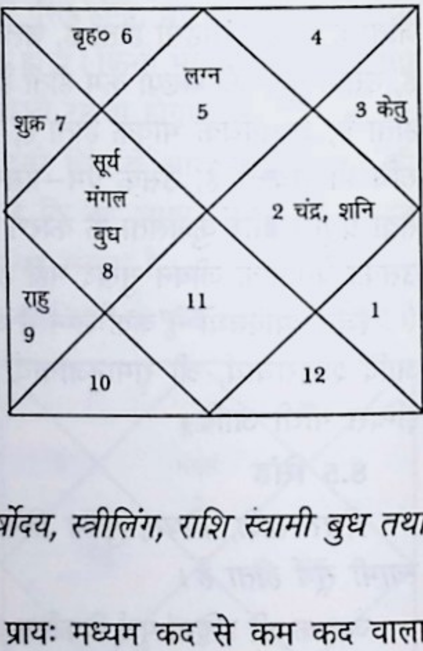

8.6 कन्या–

पृथ्वी तत्त्व, द्विस्वभाव, सम, शीर्षोदय, स्त्रीलिंग, राशि स्वामी बुध तथा शूद्र वर्ण वैश्य दिशा दक्षिण।

जातक का शरीर पतला होगा, प्रायः मध्यम कद से कम कद वाला होगा, काले बाल और काली आंखें होगी। घुमावदार और घनी भवें होगी, बोलने में मृदु होगा, तेज़ चलता होगा प्रायः अपनी वास्तविक आयु से अधिक युवा दिखाई देता होगा, उसके कंधे झुके हुए होंगे।

वह सत्यवादी होगा और कोमल शब्दों में बोलता होगा, शास्त्रों का ज्ञाता होगा। दूसरे लोगों के घरों और धन का लाभ उठाता होगा, उसके पुत्र बहुत कम होंगे। वह प्रतिभावान होगा, वह मध्यम कद वाला होगा और कला तथा साहित्य में अपनी रुचि प्रकट करता होगा, भावुक होगा, और क्षणिक संवेगों

में बह जाता होगा। वह लेखक होगा, भौतिक और रसायनिक विज्ञान में रुचि रखता है, विनम्र स्वभाव वाला होगा, विचारशील, सोच—समझ कर धन खर्च करता होगा और कभी-कभी अतिरिक्त सावधानी बरतने के कारण अनिश्चित स्थिति में होता होगा। पर प्रायः वह नियमनिष्ठ होगा। यद्यपि वह नर्वस होगा किंतु आत्मविश्वासी दिखाई देता होगा। केवल एक नज़र में वे वस्तुओं को परख सकते हैं। वे बड़े दार्शनिक लेखक होंगे। वे कभी-कभी नर्वस-ब्रेकडाउन के शिकार बन सकते हैं और उन्हें लकवा हो सकता है। ऐसा तब होगा जब उनकी राशि पीड़ित होगी। वैवाहिक संबंधों में वे भाग्यशाली होंगे।

जेसिस क्राइस्ट, हेरी ट्रयुमैन (राष्ट्रपति) राम विलास पासवान, पी.वी. नरसिंहमा राव का जन्म इसी लग्न में हुआ था।

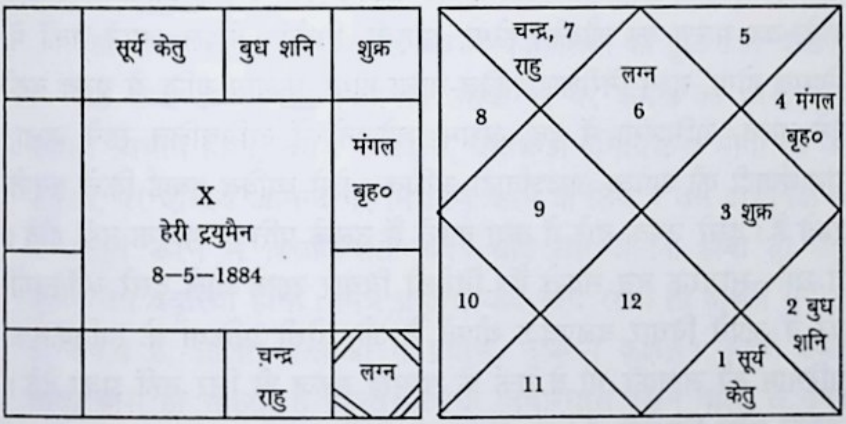

(डॉ. बी.वी. रमन की 'उल्लेखनीय जन्मकुंडलियां' के पृष्ठ 37,275 और 346 देखिए)

8.7 तुला—

चर राशि, वायु राशि, विषम, शीर्षोदय, दिशा पश्चिम, पुल्लिंग, शूद्र वर्ण, राशि स्वामी शुक्र है। लम्बा, सामान्यतया लम्बोत्तरा चेहरा, घुंघराले बाल, कमज़ोर शरीर, असमान अंग, सुकोमल त्वचा, सुन्दर आंखे, शारीरिक सौन्दर्य, सत्यवादी, मध्यम आयु में कुछ गंजापन, पतला छरहरा शरीर, लम्बा कद, श्वेत वर्ण, चमकीली आंखे।

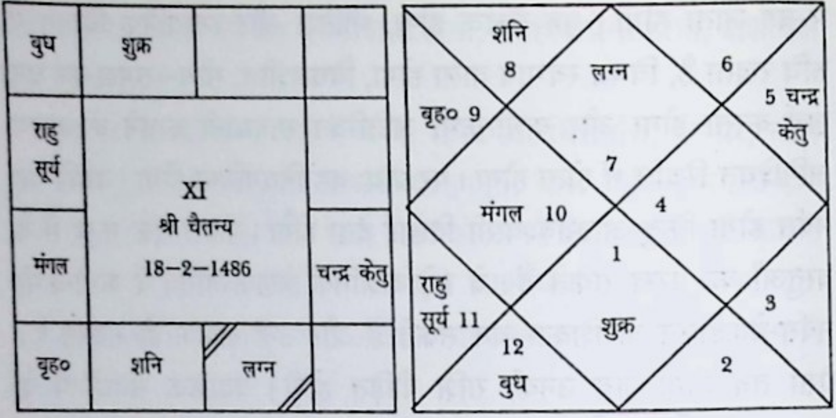

(डॉ. बी.वी रमन की 'उल्लेखनीय जन्मकुंडलियां' के पृष्ठ 79 को देखिए।)

वह ईश्वर और ब्राह्मणों का आदर करेगा, चुस्त होगा, उसके बच्चे कम होंगे, वह भ्रमण का शौकीन होगा, साहसी, निर्दयी, केवल अपने तर्कों में निष्पक्ष होगा, सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति वाला होगा, कुशाग्र बुद्धि से युक्त तर्क देने वाला, अभिशंसा में दृढ़, अधम प्रयोजनों में अविचलित रहने वाला, यथार्थवादी की अपेक्षा आदर्शवादी अधिक। ऐसे व्यक्ति हवाई किले बनाते रहते हैं। दूसरे उनके बारे में क्या कहते हैं उसके प्रति वे भावुक नहीं होते। वे धर्म–सुधारक बन सकते हैं। विरोधी विचार रखने वाले दूसरे व्यक्तियों पर वे अपने विचार बलपूर्वक थोपते हैं और ऐसी प्रक्रिया के हानिकारक परिणाम को जानकर भी वे तर्क के सम्मुख सहज ही सिर नहीं झुका देते। उनकी घरेलू जिन्दगी में प्रायः तनाव रहता है।

वे व्यक्ति जिनका तुला लग्न में जन्म हुआ–अकबर महान, हैदर अली, नरसिंह भारती, श्री रमन महर्षि, हैदराबाद का निज़ाम, अडोल्फ हिटलर, श्री के.एन.राव थे।

8.8 वृश्चिक

स्थिर राशि, जलीय राशि, शीर्षोदय सम, स्त्रीलिंग, वर्ण ब्राह्मण, राशि स्वामी मंगल दिशा उत्तर है।

इस जातक का मध्यम कद होगा और शरीर पर्याप्त संतुलित होगा, चौड़े अंग होंगे, मांसल शरीर होगा, भयरहित आंखे होगी, चौड़ा चेहरा, छोटी नाक,

गोल उदर, लम्बी उंगलियां, हृष्ट–पुष्ट शरीर, पर जातक की अपनी भूलों और लापरवाही के कारण स्वास्थ्य की हानि। छोटे, घने और घुंघराले बाल, घुटने और जांध गोलाकार होंगे।

<table>
<tr><td>चन्द्र</td><td></td><td></td><td>राहु
वृह०</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2" rowspan="2">XII
चित्तरंजन
दास
5–11–1870</td><td></td></tr>
<tr><td></td><td>मंगल</td></tr>
<tr><td>केतु
शनि</td><td>लग्न</td><td>शुक्र
बुध सूर्य</td><td></td></tr>
</table>

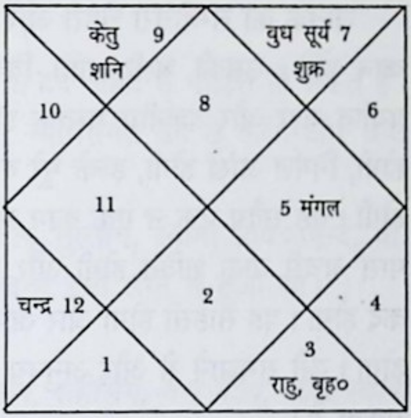

(डा. रमन की पुस्तक उल्लेखनीय जन्मकुंडलियां का पृष्ठ 231 देखिए।)

वह राजा से सम्मानित होगा। उसके पैर पर कमल का चिन्ह होगा, कोमल स्वभाव होगा, चंचल मनोवृत्ति, यथार्थ में इन्द्रियजन्य भोगों की ओर झुकाव, पर ऐन्द्रिय आनन्द पर नियंत्रण करने के लिए वे उसे दार्शनिक रूप में प्रस्तुत करने में हिचकिचाते नहीं। यदि स्त्री जातक होगी तो उसमें पुरुषोचित प्रवृत्यियां होगी। मित्र प्रवृत्ति, यदि रुचि रखेंगे तो कुशल संगीतज्ञ हो सकते हैं, ललित कलाओं में प्रवीण, नृत्य में कुशल। उनकी स्वतंत्र विचारधारा हो सकती है किन्तु विरोधी विचारधारा रखने वालों से उनका संघर्ष नहीं होगा। वे मूक और परिष्कृत रुचि वाले होते हैं और प्रत्येक शब्द को तौलकर बोलते हैं। वे लेखक होते हैं। उन्हें अपनी प्रतिभा पर भरोसा होता है। स्वभावगत भिन्नता के कारण अथवा साथी के प्रजनन अंगों की बीमारी के कारण, पीड़ित होने के कारण उनका वैवाहिक जीवन बहुत सुखद नहीं भी हो सकता है।

चितरंजन दास के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति जिनका वृश्चिक लग्न में जन्म हुआ, वे हैं—बारहवें पोप पियस, बेनितो मुसोलिनी, कस्तूरी श्रीनिवासन, श्री राम कृष्ण हेगडे।

8.9 धनु

द्विस्वभाव राशि, विषम, दिशा पूर्व, पृष्ठोदय, पुल्लिंग, वर्ण क्षत्रीय राशि स्वामी वृहस्पति है।

जातक का लम्बोत्तरा चेहरा और लम्बी गर्दन होगी, बड़ी नाक और बड़े कान होंगे। उसकी भली भांति विकसित और सुन्दर बाह्माकृति होगी। पर्याप्त बड़ा और दर्शनीय मस्तक होगा, प्रायः लम्बा होगा, ऊंची आवाज़ होगी, निर्मल आंखें होंगी, हल्के भूरे बाल, लालिमा लिए हुए वर्ण, मोटी जांधे होगी। वह सदैव एक न एक काम में अपने को व्यस्त रखता होगा। उसके पास अच्छी वाक् शक्ति होगी और उसकी प्रकृति त्यागशील होगी। छोटा कद होगा। वह साहसी होगा और अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकता होगा। उसे समझाने से और अनुनय एवं विनय से अपने पक्ष में किया जा सकता है।

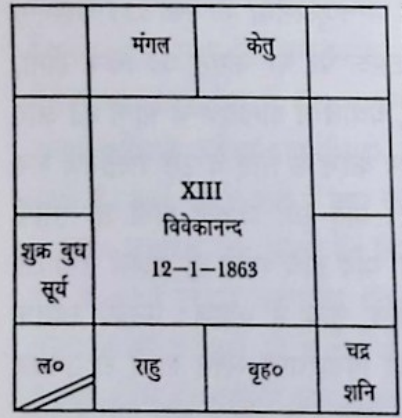

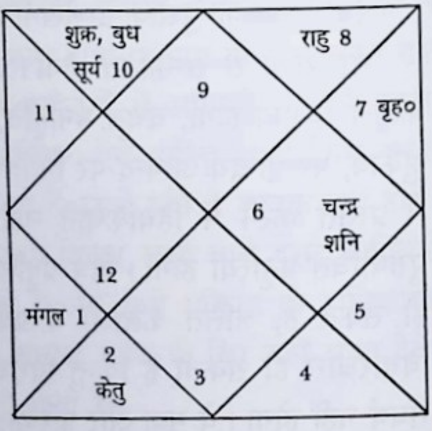

(डा० बी.वी. रमन की पुस्तक उल्लेखनीय जन्मकुंडलियां का पृष्ठ 192 देखिए।)

इस राशि का शासक वृहस्पति है और इस लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों का शरीर का झुकाव मांसलता और शांत स्वभाव की ओर होता है। वे एक तरह से कुछ रूढ़िवादी और कभी-कभी व्यापारिक मनोवृत्ति के होते हैं। उनका आकर्षण गूढ़ विषयों के दर्शन और विज्ञान के अध्ययन की ओर होगा और उन्हें उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होगी। बाह्य दिखावे से उन्हें घृणा होती है। वे भगवान से डरते हैं, ईमानदार होते हैं, विनम्र होते हैं और

कपट से मुक्त होते हैं। अपने खाने पीने की आदतों पर वे अपना नियंत्रण रखते हैं। वे प्रतिभावान होते हैं। उनकी आदतें मिलनसारी की होती है, उनका हृदय निष्कपट होता है और दूसरों के दिल को जीतने की क्षमता रखते हैं।

वे फेफड़ों की बीमारी से, गठिया के दर्द आदि से पीड़ित हो सकते हैं। वे अपनी शक्ति का प्रयोग दृढ़ता और न्यायसंगत ढंग से करेंगे और भ्रष्ट प्रभावों के सामने कभी झुकेंगे नहीं।

एम्परर नीरो, स्वामी विद्यारण्य, टीपू सुल्तान, स्वामी विवेकानन्द, वी. डी. सावरकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म इसी लग्न में हुआ था।

8.10 मकर

पृथ्वी तत्त्व, चर राशि, पृष्ठोदय सम, स्त्रीलिंग, वर्ण वैश्य, राशि स्वामी शनि दिशा दक्षिण है।

जातक का शरीर दुर्बल होगा, पतला चेहरा होगा, हिरण जैसा प्रतीत होता होगा। काले रूखे बाल, एक उभरी हुई उन्नत नाक होगी। सिर पर घने बाल होंगे, लम्बे हाथ होंगे, लम्बी टांगे होंगी। नीचे के अंग कमज़ोर होंगे।

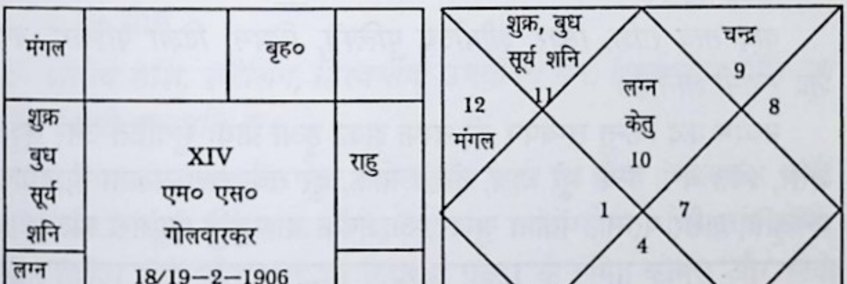

(डॉ. बी.वी रमन की 'उल्लेखनीय जन्मकुंडलियां' का पृष्ठ 377 देखिए)

उसमें शक्ति एवं क्षमता होगी, किन्तु आलसी प्रकृति होगी, लम्बा कद होगा, लालिमा लिए हुए भूरा रंग होगा, लम्बे-लम्बे दांत होंगे और मांसल होंठ होंगे।

वह वृद्ध स्त्रियों के साथ अवैध प्रकार का संबंध स्थापित करेगा। वह धार्मिक आडम्बर रचता होगा वह घूमने का बहुत शौकिन होगा, भाग्यशाली होगा, बेशर्म होगा। वह विभिन्न परिस्थितियों एवं वातावरण में स्वयं को ढालने में दक्ष होगा।

उसे वायु संबंधी बीमारियां होगी।

वे जीवन में बहुत बड़े महत्त्वाकांक्षी होंगे और आर्थिक संकट-काल में भी अपने पैसों को ठीक ढंग से उपयोग में नहीं ला पाते अर्थात् वे खुल कर धन व्यय करते हैं। वे विनम्र होते हैं, उदार होते हैं और व्यापारिक मामलों में भद्रता का व्यवहार करते हैं।

वे लगन और मज़बूत इरादों के लिए प्रसिद्ध होते हैं। उनमें सहानुभूति दयालुता, साहित्य में, विज्ञान और शिक्षा में रुचि होती है, लोकोपकारक होते हैं, प्रतिशोध की भावना होती है, भगवान् से डरते हैं और विनयशील होते हैं। यदि नवां भाव अच्छी प्रकार बली है तो वे दार्शनिक मनोवृत्ति के हो सकते हैं अथवा सामाजिक जागरूकता विकसित कर सकते हैं।

मकर लग्न में जिनका जन्म हुआ वे हैं—हरबर्ट जार्जवैलस्, एडवर्ड ड्यूक ऑ विंडसर माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर।

8.11 कुंभ

वायु तत्व राशि, स्थिर, शीर्षोदय पुल्लिंग, विषम, दिशा पश्चिम, वर्ण शूद्र स्वामी शनि है।

मध्यम कद किन्तु लम्बेपन की तरफ झुका हुआ प्रायः सुगठित और सुदृढ़ शरीर, श्वेत वर्ण, हल्के भूरे बाल, तीखी नाक, दूर तक चल सकता हैं, दयालु मनोवृत्ति, शरीर पतला, पर्याप्त सुन्दर, आकर्षक बाह्यकृति, मांसल होंठ।

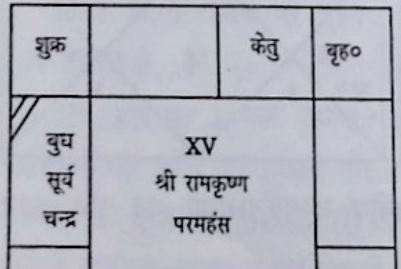

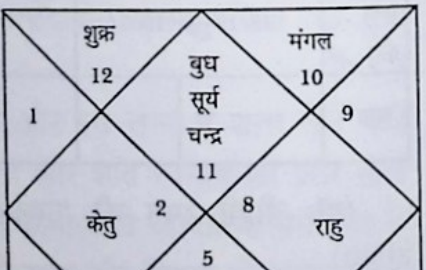

(डॉ. बी.वी रमन की उल्लेखनीय जन्मकुंडलियां का पृष्ठ 160 पृष्ठ 49, 97, 140, 149 और 401 को देखिए)

वह पाप कार्य छिपाकर कर सकता है। उसके पास धन कम होगा, उसकी आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील रहेगी, वह लालची होगा और दूसरे लोगों के पैसों के प्रयोग का इच्छुक रहेगा। दूसरों को आघात पहुँचाने में कुशल होगा, इत्र का शौकिन होगा, अत्याधिक प्रतिभावान होगा और दूसरों को अपना मित्र बहुत जल्दी बना लेता होगा, हृदय निर्मल होगा, सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहेगा। वे लेखक के रूप में, अच्छे वक्ता के रूप में चमकते हैं। वे चरित्र की अच्छी परख रखते हैं और उनमें अन्तर्ज्ञान होता है। उनमें प्रबन्धनीय शक्ति का अभाव होता है। अपने परिवार के प्रति निष्ठावान होते हैं।

वे उदरशूल की पीड़ा से ग्रस्त हो सकते हैं और बीमारियों के विरुद्ध अपनी सुरक्षा के लिए उन्हें विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। वे कुशाग्र बुद्धि होते हैं। जिनके भी सम्पर्क में वे आते हैं उन्हें परख लेते हैं।

कुंभ लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति थे—पैगम्बर मुहम्मद, औरंगज़ेब, अब्राहम लिंकन, कार्ल मार्क्स, डॉ० बी.वी. रमन।

8.12 मीन

जलीय राशि, स्त्रीलिंग, द्विस्वभाव, उभयोदय सम, दिशा उत्तर राशि वर्ण विप्र स्वामी वृहस्पति है।

जातक की बाह्यकृति गोल मटोल और फूली हुई होगी। गोलाकार कन्धे होंगे, अच्छी फूली हुई नाक होगी, आकर्षक आंखें होगी, चौड़ी तोंद होगी, ओठ विशेष होंगे और दांत भी विशिष्ट प्रकार के होंगे। कोमल और हल्के रेशमी बाल होंगे, सुन्दर शरीर होगा, श्वेत वर्ण होगा, मज़बूत शरीर होगा। प्रायः लम्बापन लिए हुए शरीर होगा।

वह विद्वान होगा, दयालु होगा, अपनी पत्नी और भाग्य के साथ संतुष्ट होगा। समुद्र से प्राप्त वस्तुओं को विक्रय करने से उसे आर्थिक लाभ होगा। वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर पाएगा। वह अपनी विचार—शैली तक ही सीमित रहेगा और किसी विषय पर अपरिपक्व निष्कर्षों को निकालने का उत्तरदायी होगा। वह भगवान से डरेगा, अंधविश्वासी होगा,

धार्मिक वृत्ति का होगा और परंपरावादी सिद्धान्तों के पालन में कटिबद्ध रहेगा। वह अपने परंपरावादी सिद्धान्तों को नहीं छोड़ सकता, चाहे और कुछ भी इसके लिए उसे छोड़ना पड़े। वह दूसरे व्यक्तियों पर अपने अधिकार का प्रयोग करने का सदैव इच्छुक रहेगा। वह सदैव तनावग्रस्त रहेगा और इतिहास का शौकीन, पौराणिक विख्यात स्थानों पर घूमने का शौकीन होगा। उसमें आत्मविश्वास की कमी होगी। *जिनका जन्म मीन लग्न में हुआ वे थे—रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डी. आइजनआवर (डा. रमन द्वारा लिखित पुस्तक **उल्लेखनीय जन्मकुंडलियों** के पृष्ठ 189, 258 और 323 देखिए)*

8.13 भचक्र की विभिन्न राशियों में लग्न पड़ने पर क्या प्रभाव हो सकता है इसका परीक्षण और विश्लेषण हम कर चुके हैं। इस विश्लेषण से हम जातक की मूलभूत विशेषताओं की एक झलक पा सकते हैं। कोई विशिष्ट लग्न किसी विशिष्ट राशि में पड़ता है और उसी राशि में चन्द्रमा भी अवस्थित है तो उस विशिष्ट लग्न से उत्पन्न होने वाले प्रभावों के बारे में जो वर्णन-विश्लेषण किया गया है वह अवश्य ही सही सिद्ध होगा। अतः जातक के बारे में जानने के लिए जन्म-लग्न और **चन्द्र लग्न** (चन्द्रमा जिस राशि में है) दोनों को देखना आवश्यक है। लग्न और चन्द्रमा जिस राशि में स्थित हैं उसकी परीक्षा से जातक के कद, चेहरे, आंखे, चरित्र, झुकाव, प्रतिभा, विद्वता, बीमारियों की संभावनाओं आदि के बारे में जानकारी मिल सकती है किन्तु इसकी पुनः पुष्टि नवांश कुंडली से होगी कि उसमें चन्द्रमा तथा लग्न स्वामी कौन सी राशि में अवस्थित है।

यहाँ हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि उपर्युक्त जानकारी लग्न की सही राशि तक पहुँचने में सहायक बन सकती है। लग्न की विविध राशियों में अभिव्यक्त शारीरिक बनावट की सहायता से तथा अन्य विशेषताओं की सहायता से जातक की शारीरिक बनावट, प्रकृति तथा कार्यों की तुलना करके हम उसके लग्न को सही कर सकते हैं। 'शारीरिक बनावट' के बारे में जो जानकारी दी गई हैं उन्हें शब्दशः लागू नहीं करना चाहिए। हम लग्न को तब तक निश्चित नहीं कर सकते जब तक हम जन्मकुंडली में विद्यमान लग्न पर अन्य विविध प्रभावों को बुद्धिमानी पूर्वक विचारकर निश्चित नहीं कर लेते (विभिन्न भावों में अवस्थित ग्रहों का लग्न पर, लग्न स्वामी पर तथा चन्द्रमा पर, चन्द्रमा की राशि पर प्रभाव आदि।) ❑❑❑

खण्ड–द्वितीय

पाठ-9

ग्रहों की दृष्टियां

9.1 हम राशियों और ग्रहों की मूलभूत विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। भचक्र में ग्रहों की गति की क्षमता के द्वारा ग्रहों की बली या निर्बल अवस्थाओं का पता चलता है कि वे उच्च की राशि में है या नीच राशि में, या मित्र राशि में या स्वग्रही हैं या शत्रु राशि में हैं या वक्री गति में हैं या त्वरित गति में हैं आदि। यही ग्रहों की (*i*) प्रदीप्त, सुखित, स्वस्थ, मुदित और शांत अवस्था है तो परिणाम बहुत अच्छा होगा। (*ii*) विकल, निपीड़ित (जैसे ग्रह-युद्ध में पराजित अवस्था) खल, अतिभीत, क्षुधित आदि अवस्था है, तो परिणाम अच्छा नहीं होगा।

अन्य ग्रहों के संबंध का प्रभाव

9.2 ग्रहों का संबंध यदि अन्य ग्रहों से हो जाता है तो उपर्युक्त प्रभावों में संशोधन आ जाता है। ग्रहों के बीच संबंध अथवा युति अथवा सम्पर्क निम्नलिखित कारणों से हो सकता है–

(अ) उनकी अवस्थिति के कारण–

(*i*) उसी भाव में हो अथवा संयुति हो

(*ii*) एक दूसरे के नक्षत्र में होने पर

(*iii*) भाव विनिमय होने पर

(आ) एक दूसरे पर दृष्टि डालने के कारण–

(*i*) एक ग्रह दूसरे ग्रह को देख रहा हो।

(2) एक ग्रह दूसरे ग्रह को देख रहा हो और दूसरा ग्रह भी उस ग्रह को देख रहा हो (परस्पर दृष्टि-विनिमय)।

उपर्युक्त 'अ' भाग तो आसानी से समझ में आता है क्योंकि हम यह जान चुके हैं कि ग्रह कुछ भावों और नक्षत्रों के स्वामी होते हैं। (आ) भाग

को बताना अभी शेष है। अब हम 'दृष्टियों' के बारे में विचार करेंगे। शुभ ग्रह की दृष्टि जिस ग्रह या जिस भाव पर पड़ती है, वह उस ग्रह और भाव के अच्छे परिणाम में वृद्धि करती है। अशुभ ग्रहों की दृष्टि जिस ग्रह और जिस भाव पर पड़ती है वह उनके अच्छे प्रभावों में कमी लाती है।

उदाहरण–

(क) **सूर्य पर वृहस्पति की दृष्टि**–वृहस्पति सर्वाधिक शुभ ग्रह माना जाता है। अतः वृहस्पति की दृष्टि श्रेष्ठ तथा कल्याणकारी है। यह सूर्य द्वारा मिलने वाले श्रेष्ठ प्रभावों में वृद्धि करेगा अथवा सूर्य द्वारा मिलने वाले अशुभ प्रभावों में कमी लाएगा।

(ख) **सूर्य पर शनि की दृष्टि**–इस मामले में–

(*i*) सूर्य द्वारा मिलने वाले शुभ प्रभावों में शनि कमी लाएगा।

(*ii*) सूर्य द्वारा मिलने वाले अशुभ प्रभावों के परिणाम में वृद्धि करेगा।

टिप्पणी–उपर्युक्त उदाहरण ग्रहों की शुभ अथवा अशुभ दृष्टियों के प्रभाव की व्याख्या मात्र करने के लिए दिए गए हैं।

किसी ग्रह पर अन्य ग्रहों की दृष्टियों का प्रभाव पड़ने पर क्या अंतिम परिणाम हो सकता है इसका निर्णय करने के लिए अनेक अन्य मूल्यवान तत्त्वों पर भी विचार करना पड़ता है, उपर्युक्त उदाहरण देते समय हमने उन तत्त्वों का ध्यान अभी नहीं रखा है।

9.3 ग्रहों की दृष्टि का प्रमुख प्रभाव किसी ग्रह के परिणामों के फलीभूत होने पर भी पड़ता है। दृष्टियों की गणना एक राशि से दूसरी राशि तक की जाती है। वे निम्नलिखित के अनुसार अच्छी या बुरी है–

(*i*) *देखने वाले ग्रह का देखे जाने वाले ग्रह के साथ क्या संबंध है, उसके अनुसार।*

(*ii*) *जो ग्रह देख रहा है उस ग्रह की प्रकृति शुभ है अथवा अशुभ उसके अनुसार।*

महर्षि पराशर–उनके अनुसार प्रत्येक ग्रह जहाँ बैठा है उससे सातवें भाव पर उसकी पूर्ण दृष्टि होती है। (उदाहरण–मंगल मेष में है तो वह तुला राशि पर पूर्ण दृष्टि डालेगा, मेष जिसमें मंगल अवस्थित है उससे सातवां भाव तुला राशि का पड़ता है।)

9.4 विशेष दृष्टि—तीन ग्रहों की सातवें भाव पर पूर्ण दृष्टि के अतिरिक्त कुछ अन्य भावों पर भी पूर्ण दृष्टि पड़ती है। यह दृष्टियां हैं–

(*i*) **मंगल** *की* ***सातवें भाव*** *पर दृष्टि के अतिरिक्त* ***चतुर्थ*** *और* ***अष्टम*** *भाव पर भी पूर्ण दृष्टि पड़ती है।*

(*ii*) **वृहस्पति** *की सातवीं दृष्टि के अतिरिक्त* **पांचवी** *और* ***नवीं*** *दृष्टि भी होती है।*

(*iii*) **शनि** *की* ***सातवीं*** *दृष्टि के अतिरिक्त* ***तीसरी*** *और* ***दसवीं*** *दृष्टि भी होती है।*

इन ग्रहों की अन्य ग्रहों की तुलना में दो अतिरिक्त दृष्टियां होती हैं, उन्हें भी पूर्ण दृष्टियां माना जाता है।

9.5 राहु और केतु–

(अ) राहु और केतु के मामले में सातवीं दृष्टि का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि दोनों एक दूसरे के ऊपर सातवीं दृष्टि डालते हैं और एक दूसरे से सातवें भाव पर स्थित होते हैं। अतः उनकी स्थिति से 1 और 7 की अक्ष सदैव बनता है। वे जिन दोनों भावों में स्थित होते हैं उन दोनों भाव पर उनके अक्ष का प्रभाव रहता है। एकमात्र अन्तर उनकी स्थिति का हो सकता है, उसकी व्याख्या निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है–

राहु यदि मिथुन में स्थित है तो केतु राहु से एकदम 180° की दूरी पर विपरीत दिशा में स्वतः ही धनु राशि में स्थित होगा। अतः दोनों मिथुन और धनु इन दोनों राशियों को प्रभावित कर रहे हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि राहु धनु पर सातवीं दृष्टि डाल रहा है और केतु मिथुन पर सातवीं दृष्टि डाल रहा है, किन्तु इस वर्णन से कोई लाभ नहीं होगा और इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है।

उनकी स्थिति के कारण अंतर है–

(क) राहु मिथुन में अपनी उच्च राशि में गिना जाएगा। राहु का बुध की राशि में होने से जो प्रभाव होगा केतु के बुध की राशि में होने से केतु का वह प्रभाव नहीं होगा। मिथुन में राहु के होने से और मिथुन में केतु के होने से दोनों की स्थिति में अन्तर पड़ेगा। केतु के बुध की राशि में होने पर बुद्धि में प्रखरता आयेगी राहु के होने से प्रखरता कम होगी, बुध को संग दोष होता है।

(ख) केतु यदि मिथुन में अवस्थित है तो अक्ष तो वही होगा अर्थात् मिथुन और धनु दोनों प्रभावित होंगे, किंतु केतु की मिथुन में स्थिति उसकी नीच राशि में स्थिति है। केतु का बुध (बुध-प्रतिभा) पर प्रभाव राहु के बुध पर प्रभाव से श्रेष्ठतर होगा।

नोट—राहु और केतु की उच्च की राशि के संबंध में विचारों में भिन्नता मिलती है। राहु यदि वृष राशि में है तो भी वह उच्च का माना जाता है, केतु वृश्चिक राशि में उच्च का माना जाता है। हम दोनों तरह से अध्ययन करेंगे। राहु को वृष राशि में, जो की शुक्र की राशि में यदि उच्च माना जाता है तो हमें अधिक सही परिणाम मिलते हैं।

राहु और केतु की दृष्टियों के बारे में भी विवाद मिलता है। डॉ. बी.वी रमन ने भी अपनी 'हिन्दू फलित ज्योतिष' नामक पुस्तक में इस बारे में कोई चर्चा नहीं की है।

कुछ विद्वान ज्योतिषी राहु की दृष्टि लेते हैं, केतु की दृष्टि नहीं लेते क्योंकि केतु को वे अन्धा ग्रह मानते हैं। *वेंकटेंशवर दैवज्ञा के अनुसार राहु और केतु की सातवें भाव पर ही केवल पूर्ण दृष्टि रहती है।*

अब भी कुछ विद्वान ज्योतिषी राहु की पांचवी, सातवीं, नवीं और बारहवीं दृष्टि को पूर्ण दृष्टि तथा चौथी, आठवीं दृष्टि को 3/4 दृष्टि एवं दसवीं तथा तीसरी दृष्टि को 1/4 दृष्टि मानते हैं।

9.6 विषय को समझने में निम्नलिखित तालिका से छात्रों को बहुत सहायता मिलेगी—(यह तालिका विद्वान लेखक श्री हरिहर मजूमदार की 'हिन्दू सांइस ऑफ द फ्यूचर' नामक पुस्तक से ली गई है)

पाद दृष्टियाँ

अपनी अवस्थिति से भावों पर

ग्रह	पूर्ण दृष्टि	3/4 दृष्टि	1/2 दृष्टि	1/4 दृष्टि
सूर्य	सातवीं	4 और 8वीं	5वीं और 9वीं	3 और 10वीं
चन्द्र	सातवीं	वही	5वीं और 9वीं	3 और 10वीं
बुध	सातवीं	वही	वही	वही
शुक्र	सातवीं	वही	वही	वही

ग्रहों की विशेष दृष्टि				
मंगल	4, 7, 8 वी	—	5वीं और 9वीं	3, 10वीं
वृह०	5, 7, 9 वी	4 और 8वीं	—	3 और 10वीं
शनि	3, 7, 10 वी	4 और 8वीं	5वीं और 9वीं	—
राहु	5, 7, 9, 12 वी	वही	—	वही

9.7 उपर्युक्त दृष्टियों के अतिरिक्त कई अन्य दृष्टियां भी होती हैं जैसे जैमिनी दृष्टि, ताजिक दृष्टि आदि, किंतु ज्योतिष के आरम्भिक छात्र इसमें न उलझ जाएं। हम ज्योतिष विशारद पाठ्यक्रम में सम्भवतः इन सब दृष्टियों को एक-एक करके लेंगे। प्रत्येक विद्या को सीखने की शीघ्रता में छात्र इन सब प्रणालियों को एक दूसरे में न मिलाएं।

नोटः हमारी मान्यता है कि राहू/केतू की दृष्टि नहीं होती।

"सहज पके सो मीठा होय"

अर्थात् वे फल जो पकने में अपना स्वाभाविक समय लेते हैं वे हमेशा मीठे होते हैं और अधिक स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। यह उक्ति यहाँ भी सही बैठती है।

9.8 प्रत्येक भाव की अवधि (सीमा)

यहाँ हमने प्रत्येक भाव को निम्नलिखित प्रकार से लिया है—

1. तीसरा भाव	से	60° से 90°
2. चौथा भाव	से	90° से 120°
3. पांचवा भाव	से	120° से 150°
4. सातवां भाव	से	180° से 210°
5. आठवां भाव	से	210° से 240°
6. नवां भाव	से	240° से 270°
7. 10 वां भाव	से	270° से 300°

नोट—दृष्टि का प्रभाव यदि डिग्री से डिग्री तक देखना हो तो यह तालिका सहायक सिद्ध होगी।

9.9 कुछ दृष्टियाँ बहुत उत्तम मानी जाती है–

(*i*) यदि कोई ग्रह अपनी राशि को सातवीं दृष्टि से अथवा अपनी विशेष दृष्टि से देखता है तो उस भाव का महत्त्व निश्चय ही बढ़ जाएगा।

(*ii*) जब शुभ ग्रह अन्य शुभ ग्रह पर दृष्टि डालें।

(*iii*) जब एक योगकारक ग्रह अन्य योगकारक ग्रह पर दृष्टि डाले।

(यहाँ 'योगकारक' ग्रह से अभिप्राय है वह ग्रह जो कि 5वें अथवा 9वें भाव का स्वामी है और उसके साथ ही 4 या 7 अथवा 10वें भाव का भी स्वामी है अर्थात एक केन्द्र भाव तथा दूसरा त्रिकोण भाव दोनों का स्वामी एक ही ग्रह हो। आगे के पाठों में इस पहलू पर विचार किया जाएगा।)

नैसर्गिक 'शुभ' और 'अशुभ' ग्रहों के प्रभाव को केवल इसलिए उपेक्षित नहीं किया जा सकता कि वे कुंडली विशेष में शुभ और अशुभ ग्रह का कार्य कर रहे हैं। अग्रवर्ती पाठ्यक्रम में छात्र 'ग्रह बल' और 'भाव बल' की गणना कैसे की जाती है, यह सीख जाएंगे। इस गणना से दृष्टि का सही अनुपात निकाला जा सकता है। यहाँ केवल यह जान लेना ही पर्याप्त होगा कि शुभ ग्रहों की दृष्टि सदैव शुभ तथा अशुभ ग्रहों की दृष्टि सदैव अनुकूल नहीं होती।

डॉ. के० एन० राव० के अनुसार वृहस्पति की दृष्टि सदैव गंगाजल (गंगा नदी का पवित्र जल) की वर्षा करती है। अर्थात् यदि किसी भाव पर वृहस्पति दृष्टि डाल रहा है और यद्यपि उस भाव का स्वामी और भाव दोनों बुरी तरह पीड़ित हैं, तब भी उस भाव के फल में कुछ अनुकूल प्रभाव जातक को अवश्य ही मिलेंगे।

9.10 पाश्चात्य ज्योतिषियों के अनुसार–(डॉ. बी.वी. रमन ने अपनी पुस्तक 'हिन्दू प्रीडिक्टिव एस्ट्रोलॉजी' में जैसा विचार-विचेचन किया है उसके अनुसार)

ग्रहों के परस्पर भोगांशीय अन्तरों से उनकी दृष्टियों को मापा जाता है। जब कोई ग्रह किसी दूसरे ग्रह से कतिपय डिग्री की दूरी पर होता है तो उसे ऐसा कहा जाता है कि वे एक दूसरे पर दृष्टि डाल रहे हैं

संबंध	स्थिति	दृष्टि का दायरा (Orbit of aspect)
युति	यदि दो आकाशीय ग्रह एक ही भोगांश पर है	8 डिग्री
विपरीत दिशा में	जब दो ग्रहों को 180° के अन्तर पर पाते हैं	8 डिग्री
त्रिकोण में	जब दो ग्रह 120° डिग्री की दूरी पर होते हैं	8 डिग्री
केन्द्र में	जब दो ग्रह 90° की दूरी पर होते हैं	8 डिग्री
तीन ग्यारह में	जब दो ग्रह 60° की दूरी पर होते है	7 डिग्री
समानान्तर में क्रांति	जब दो ग्रह एक ही क्रांति पर होते हैं इसकी गणना ग्रह और भाव के अनुसार की जा सकती है।	1 डिग्री

—दृष्टि का प्रभाव तब भी अनुभूत किया जा सकता है जब कि ग्रह एक-दूसरे से परस्पर उतनी ही निश्चित दूरी पर नहीं भी होते। (दो आकाशीय ग्रहों के मध्य में जैसे कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है) अतः दृष्टि का एक तथाकथित दायरा (जैसा कि ऊपर दिखाया गया है) ले लिया जाता है।

9.11 दृष्टि का प्रभाव (समझने के लिए, तृतीय/एकादश यानि 60° से 90° तक/300° से 330° तक परस्पर दूरी **saxtile** प्रभाव) तब से आरम्भ हो जाता है जब ग्रह एक-दूसरे से 53 डिग्री की दूरी पर होते हैं, क्रमशः यह प्रभाव बढ़ता जाता है और 60 डिग्री पर अधिकतम प्रभाव रहता है। उस बिन्दु के पश्चात् घटना आरम्भ हो जाता है और 67 डिग्री के अंतर तक घटकर शून्य रह जाता है।

दृष्टियों के कोण पर उनके अच्छे या बुरे प्रभाव की प्रकृति निर्भर करती है। जो ग्रह दृष्टि बना रहे हैं उनकी प्रकृति चाहे कैसी भी हो, विपरीत दिशा की दृष्टि (180 डिग्री) और केन्द्र दृष्टि (90 डिग्री) को सदैव अशुभ दृष्टि कहा गया है चाहे ग्रहों का नैसर्गिक स्वभाव कुछ भी हो। तीन-ग्यारह दृष्टि (60 डिग्री) और त्रिकोण-दृष्टि (120 डिग्री) सदैव शुभ होती है।

9.12 वैदिक ज्योतिष में दृष्टियां ग्रहों की प्रकृति और विशेषताओं के अनुसार शुभ और अशुभ होती हैं। सर्वाधिक शुभ ग्रह बृहस्पति की दृष्टि सदैव शुभ होती है। यदि कुंडली में वह शुभ स्थानों का अधिपति है तो शुभ प्रभाव और भी निश्चित हो जाएंगे। यदि बृहस्पति मेष राशि में बैठ कर तुला राशि पर दृष्टि डालता है जो कि उसकी सातवीं राशि है, सातवीं दृष्टि है, पाश्चात्य ज्योतिषियों के अनुसार वह अशुभ होती है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार यह एकदम गलत धारणा है और विद्वान ज्योतिषियों के द्वारा अनुभूत परिणामों के संदर्भ में भी गलत है।

व्यावहारिक अनुभवों के द्वारा परिणाम निकालना सदैव अच्छा होगा। पर हम यहां वैदिक प्रणाली पर ही ध्यान केन्द्रित करेंगे।

9.13. श्री चैतन्य महाप्रभु (कुंडली सं XI, पृष्ठ 102) की जन्म-कुंडली पुनः दी गई है पृष्ठ 117 पर XI-B पर विचार करके हम विषय को समझें।

(क) ग्रहों के मध्य संबंध–

(*i*) बुध बृहस्पति की राशि में

(*ii*) शुक्र मंगल की राशि में

(*iii*) मंगल शनि की राशि में

(*iv*) शनि मंगल की राशि में

(*v*) शनि और मंगल का राशि-विनियम

(*vi*) सूर्य शनि की राशि में

(*vii*) चन्द्रमा सूर्य की राशि में

(*viii*) सूर्य और राहु एक साथ कुंभ राशि में बैठे हैं या युति हैं।

(*ix*) केतु और चन्द्रमा की युति अथवा एक साथ अवस्थिति सिंह राशि में।

(*x*) गुरु स्व तथा मूलत्रिकोण राशि में।

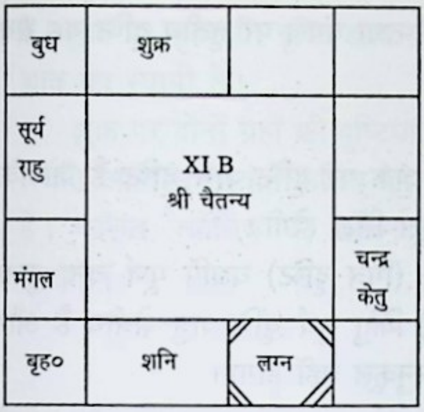

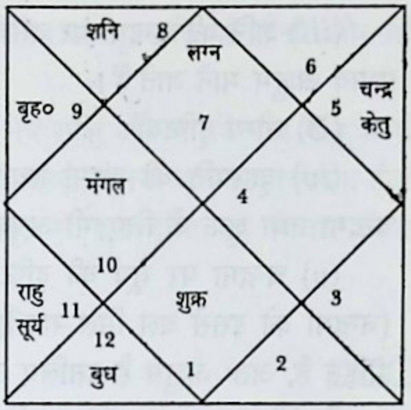

आइए अब उपरोक्त कुण्डली पर हम दृष्टियों के बारे में विचार करें–

(ख) दृष्टि–

I. चंद्रमा पर

(*i*) सूर्य चन्द्रमा पर दृष्टि डाल रहा है, तथा स्वराशि पर (सातवीं दृष्टि)

(*ii*) मंगल चन्द्रमा को आठवीं दृष्टि से देख रहा है।

(*iii*) वृह० चन्द्रमा पर नौवीं दृष्टि डाल रहा है।

(*iv*) शनि की चन्द्र पर दसवीं दृष्टि

II. शुक्र पर

(अ) मंगल की शुक्र पर चौथी दृष्टि

(आ) वृहस्पति की शुक्र पर पांचवी दृष्टि

III. मंगल पर

(*i*) शनि की मंगल पर तीसरी दृष्टि

IV. लग्न पर

(*i*) शुक्र की लग्न पर सप्तम दृष्टि

V. बुध द्वादश भाव, स्वराशि पर दृष्टि डाल रहा है।

9.14 दृष्टियों का प्रयोग तथा विचार

आइए अब दृष्टियों तथा युति के प्रभावों के बारे में विचार करें–

(A) क्रूर दृष्टियाँ

(*i*) चन्द्रमा की केतु से युति

(*ii*) मंगल की चन्द्रमा और शुक्र पर दृष्टि

(*iii*) शनि की चन्द्रमा पर दसवीं तथा मंगल पर तृतीय दृष्टि यह सब प्रभाव अशुभ माने जाते हैं।

(B) सौम्य दृष्टियाँ

(*iv*) वृहस्पति की चंद्रमा तथा शुक्र पर दृष्टि शुभ दृष्टि है जो कि चन्द्रमा तथा शुक्र के लिए भी अनुकूल सिद्ध होगी।

(*v*) चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि, (मित्र दृष्टि) यद्यपि पूर्ण चन्द्र हुआ (चन्द्रमा को इससे बल मिल रहा है) किंतु सूर्य चूंकि शत्रु क्षेत्रीय है और पीड़ित है, अतः अशुभ है इसलिए अनुकूल नहीं होगा।

नैसर्गिक पापग्रह शनि यद्यपि शनि तुला लग्न में चौथे और पांचवे भाव का स्वामी होने के कारण योगकारक ग्रह है, चन्द्रमा पर अशुभ दृष्टि डाल रहा है। दृष्टि अशुभ है। जो चन्द्रमा को पीड़ित कर रही है।

नैसर्गिक शुभ ग्रह वृहस्पति तीसरे और छठे भाव का स्वामी होने के कारण (आधिपत्य के कारण) अशुभ है, किंतु नैसर्गिक शुभ ग्रह होने के कारण चन्द्रमा (दसवें भाव का स्वामी और माता का कारक चन्द्रमा) को बचाव तथा शक्ति दे रहा है।

शनि अति शुभ व अनुकूल ग्रह है, जो कि जातक के जीवन में महत्त्वपूर्ण प्रभाव देगा। शनि को बल केन्द्र व त्रिकोण (अथवा चतुर्थेश व पंचमेश) का स्वामी होने व साथ ही मंगल (द्वितीयेश) के साथ शनि (चतुर्थेश) का स्थान परिवर्तन भी शनि को बलवान वह महत्त्वपूर्ण ग्रह बना रहा है। शनि ने द्वितीय, चतुर्थ, अष्टम तथा एकादश भावों को भी अपने अधिकार में ले लिया है।

9.15. PAC ('पी' का अर्थ है 'स्थिति', 'ए' का अर्थ है 'दृष्टि', 'सी' का अर्थ है 'युति'।) एक ऐसा फॉर्मूला है जिसमें ग्रहों के प्रभाव को हम मूल्यांकित कर सकते हैं और फलित करने के लिए यह सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होता है। इसे हिन्दी में सिदृयु भी कहते हैं।

उदाहरण–शुक्र, सातवें भाव का कारक, सातवें भाव में अवस्थित। शुक्र लग्न और आठवें भाव का स्वामी होकर सातवें भाव में अवस्थित है। मंगल जो कि सातवें और द्वितीय भाव का स्वामी है, शुक्र पर दृष्टि डाल रहा

है। शुक्र पर वृहस्पति दृष्टि डाल रहा है। वह वृहस्पति जो तीसरे और छठे भाव का स्वामी है।

शुक्र पर दोनों ग्रहों की दृष्टियां, मेष राशि और सातवें भाव में शुक्र की स्थिति आदि सभी बातें फलित देने से पहले जाननी अत्यंत आवश्यक होती हैं। फलित ज्योतिष के अग्रिम पाठ में इस दृष्टि पर विचार किया जाएगा।

— इति —

❑❑❑

बालस्तावत् क्रीड़ासक्त स्तरूणस्ताव् तरूणीसक्तः।
वृद्धस्ताव-च्चिन्ता-सक्तः-परे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्तः।।

(भज गोविन्दम—श्री शंकराचार्य)

बालपन खेल में, युवा भोग में एवं वृद्धावस्था चिन्ता में व्यतीत होती है। परन्तु परमात्मा के चिन्तन की उत्कंठा किस के हृदय में नहीं उठती है।

पाठ-10

राशियों के लिए मुख्य ग्रह

10.1 वैदिक ज्योतिष में ग्रह और राशियाँ पृथ्वी पर रहने वाले जीवों पर अलग-अलग तथा संयुक्त रूप से प्रभाव डालती हैं। इन प्रभावों को मानव जाति तथा फसलों, वर्षा, ऋतु भूकम्प, राष्ट्र के राजनैतिक वातावरण आदि पर भी देखा गया है।

दृष्टांत

आकाशीय ग्रह स्थिति मार्च/अप्रैल 2013 पर ध्यान दें।

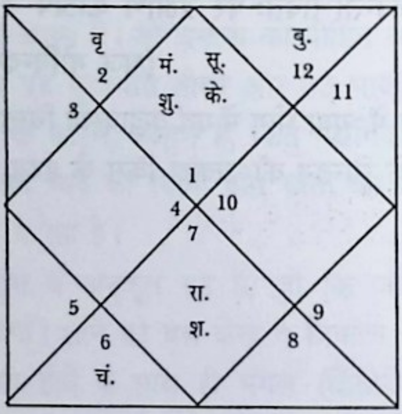

25-4-2013 के दिन की

काल पुरुष का सप्रम भाव व सप्तमेश शुक्र जो स्त्री कारक हैं बुरी तरह पीड़ित हैं। तुला राशि व उसका स्वामी शुक्र नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती है। समाचार पत्र पिछले काफी दिनों से जब से शनि व राहू तुला में आए हैं और ''दामिनी काण्ड'' हुआ लगातार नारी-जाति पर होने वाले अत्याचारों की बात प्रकाशित कर रहे हैं। कहीं यौन शोषण तो कहीं लूट व डकैती की घटना हो रही है। इसी समय पर पृथ्वी पर भूकंप भी आए हैं।

ग्रहों और राशियों में उनकी स्थिति के आधार पर इन प्रभावों का निर्धारण किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि ग्रह की स्थिति या किसी

राशि में ग्रह के गोचर का अपना विचित्र प्रभाव होता है। ग्रहों, राशियों की विशेषताओं पर पहले ही काफी विचार किया जा चुका है। पाठ 12 में विभिन्न राशियों में ग्रहों के प्रभावों पर विचार किया जाएगा।

इस पाठ में उन ग्रहों के बारे में विचार किया जाएगा जिनका विभिन्न लग्नों के संदर्भ में अपना अपना महत्त्व है। डॉ० बी. वी. रमन ने अपनी 'हिन्दू फलित ज्योतिष' नामक पुस्तक में उन्हें मुख्य ग्रह (Key Planet) कहा है।

भावों का सामान्य निर्धारण

केन्द्र स्थान

10.2. जन्म कुण्डली में लग्न केन्द्र बिन्दू होता है। अन्य बारह भाव लग्न से अपनी स्थिति के अनुसार अपना प्रभाव देते हैं (*i*) 90° से 120°, 180° से 210° और 270° से 300° की दूरी पर लग्न से क्रमशः 4, 7 और 10वें भावों को **'केन्द्र स्थान'** कहा जाता है।

त्रिकोण स्थान

(*ii*) 120° से 150° तथा 240° से 270° की दूरी पर क्रमशः 5 और 9वें भावों को **'त्रिकोण स्थान'** कहा जाता है। यदि मेष लग्न हैः

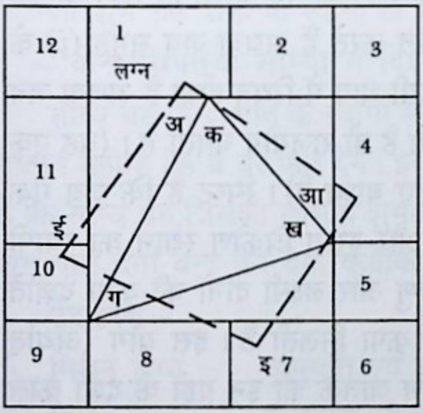

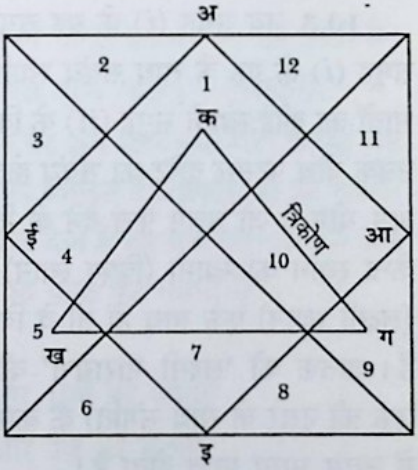

केन्द्र	(90° से 120°)	(180° से 210°)	(270° से 300°)
राशि	कर्क	तुला	मकर
भाव	4	7	10
त्रिकोण	(120° से 150°)	(240° से 270°)	
राशि	सिंह	धनु	
भाव	5	9	

इन भावों को लग्न राशि से गिना जाता है। उपरोक्त उदाहरण में हमने मेष राशि को लग्न माना है। किसी भी जन्म कुण्डली में लग्न भाव को केन्द्र तथा त्रिकोण स्थान दोनों ही माना जाता है।

केन्द्र भाव = 1, 4, 7, 10 □ अ, आ, इ, ई

त्रिकोण भाव = 1, 5, 9 △ क, ख, ग

(*i*) केन्द्र भाव को विष्णु स्थान कहा गया है।

(*ii*) त्रिकोण भाव को लक्ष्मी स्थान कहा गया है।

राजयोग

10.3 जब समूह (*i*) के ग्रह समूह (*ii*) के ग्रह या समूह (*ii*) के ग्रह समूह (*i*) के ग्रह के साथ संबंध स्थापित करते हैं अथवा जब समूह (*i*) के भावों का कोई स्वामी समूह (*ii*) के किसी भाव में स्थित होता है अथवा जब उनके बीच परस्पर दृष्टि का संबंध होता है तो राजयोग बनता है। (यह एक शुभ योग है जो उत्तम फल देने के लिए बाध्य है)। स्पष्ट है कि जब एक केन्द्र स्थान का स्वामी (विष्णु स्थान) और दूसरा त्रिकोण स्थान का स्वामी (लक्ष्मी स्थान) एक साथ हों तो वे विष्णु और लक्ष्मी दोनों की कृपा दर्शाते हैं। जातक को **'लक्ष्मी नारायण'** की कृपा मिलती है। इस योग (अर्थात् एक की दूसरे के साथ संगति) के कारण जातक को इन ग्रहों के दशा काल में उत्तम भाग्य प्राप्त होता है।

योगकारक

10.4. जब कोई ग्रह केन्द्र और त्रिकोण दोनों स्थानों का स्वामी होता है। (भावों के दोहरे स्वामित्व के कारण) वह अपने आप में योगकारक बन जाता है। इस परिस्थिति में राजयोग बनाने के लिए अन्य ग्रह की युति आवश्यक नहीं है।

उदाहरण–

(क) वृभष लग्न – शनि 9 और 10वें भावों का स्वामी

(ख) तुला लग्न – शनि 4 और 5वें भावों का स्वामी

(ग) कर्क लग्न – मंगल 5 और 10वें भावों का स्वामी

(घ) सिंह लग्न – मंगल 4 और 9वें भावों का स्वामी

(ङ) मकर लग्न – शुक्र 5 और 10वें भावों का स्वामी

(च) कुंभ लग्न – शुक्र 4 और 9वें भावों का स्वामी

ये छः लग्न अन्य लग्नों से उत्तम है। अन्य लग्नों को यह लाभ प्राप्त नहीं है। इसी प्रकार शनि, मंगल तथा शुक्र इन तीन ग्रहों को ही यह वरदान है कि वह **योग कारक** बन सकते हैं, अन्य ग्रह नहीं।

10.5. केन्द्राधिपत्य दोष

जो शुभ ग्रह केन्द्र के स्वामी हों उनमें केन्द्राधिपत्य दोष आ जाता है।

"केन्द्राधिपतयः सौम्या न दिशन्ति शुभं फलम्" (पराशर)

सौम्य ग्रह केन्द्र भाव के स्वामी होने पर शुभ फल नहीं देते। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वे बुरे फल देंगे। इसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि सौम्य ग्रह जिसका स्वभाव शुभ फल देना है वह सम बन जाता है और शुभ फल देना बन्द कर देगा क्योंकि वह केन्द्र का स्वामी है।

उदाहरण–

मिथुन लग्न	वृहस्पति 7वें और 10वें का स्वामी
कन्या लग्न	वृहस्पति 4थे और 7वें का स्वामी
धनु लग्न	बुध 7वें और 10वें का स्वामी
मीन लग्न	बुध 4थे और 7वें का स्वामी

"क्रूरा नैवाऽशुभं कुर्युः शुभदाश्च त्रिकोणपा" (पराशर)

क्रूर ग्रह केन्द्र के स्वामी होकर अशुभ फल नहीं देते हैं। सौम्य और क्रूर ग्रह त्रिकोण के स्वामी होकर हमेशा ही शुभ फल देते हैं।

चूंकि लग्न भाव केन्द्र और त्रिकोण दोनों ही है, लग्नेश हमेशा ही शुभ फल देता है।

"लग्नं केन्द्र त्रिकोणत्वाद विशेषेण शुभ प्रदम्'

पैरा 10.4 में यह पहले ही स्पष्ट कर दिया गया है कि जो ग्रह केन्द्र और त्रिकोण दोनों के स्वामी होते हैं, वे **योगकारक** *बन जाते हैं और शुभ फल देने लगते हैं। अतः जब लग्न का स्वामी केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी होता है, तब लग्न स्वामी के दशाकाल में जातक को शुभ फल प्राप्त होंगे।*

टिप्पणी—1. लग्न स्वामी यदि 4, या 10वें भाव का स्वामी हो तो वह अशुभ नहीं होता।

2. क्रूर ग्रह केन्द्र का स्वामी होकर भी शुभ या अशुभ नहीं होता वह सम हो जाता है।

3. क्षीण चन्द्रमा केन्द्र का स्वामी होने पर सम हो जाता है।

4. दोषयुक्त कोणीय स्वामित्व अवरोही क्रम में निम्न प्रकार होता है—शुक्र, वृहस्पति, बुध, चन्द्रमा

10.6. बाधक स्थान और उनके स्वामी

किसी भी चर, स्थिर और द्विस्वाभाव लग्न से क्रमशः 11, 9 और 7वां भाव उन लग्नों के लिए बाधक स्थान होते हैं। उन भावों के स्वामी को बाधक अर्थात् बाधा डालने वाला कहा जाता है।

उदाहरण—

	लग्न	बाधक	
(*i*)	चर (एकादश)	भाव	स्वामी
	मेष	कुंभ	शनि
	कर्क	वृषभ	शुक्र
	तुला	सिंह	सूर्य
	मकर	वृश्चिक	मंगल

(ii) स्थिर (नवम्)

वृषभ	मकर	शनि
सिंह	मेष	मंगल
वृश्चिक	कर्क	चन्द्रमा
कुंभ	तुला	शुक्र

(iii) द्विस्वभाव (सप्तम्)

मिथुन	धनु	वृहस्पति
कन्या	मीन	वृहस्पति
धनु	मिथुन	बुध
मीन	कन्या	बुध

10.7 त्रिषड्याधिपति—*3, 6 व 11वें भावों के स्वामी*

"त्रिषड्यधिपाः सर्वे ग्रहाः पापफलाः स्मृताः"

जो ग्रह 3रे, 6ठे या 11वें भाव का स्वामी होता है वह बुरा प्रभाव देता है। क्रूर व सौम्य दोनों ही बुरे फल देते हैं इनमें एकादशेश सब से बली होता है। दूसरे और तीसरे स्थान पर क्रमशः षष्ठेश और तृतीयेश हैं।

10.8. द्वादश, द्वितीय तथा अष्टम भावाधिपति (सम भाव)

(*i*) *12वें, 2रे और 8वें भावों के स्वामियों के अच्छे या बुरे फल उनकी संगति पर निर्भर करते है।* वे जिन भावों में स्थित होते हैं उन भावों के फल देते हैं या जिन ग्रहों से युक्त होते है उनका फल देते हैं। इनमें अष्टमेश सबसे बली होता है। दूसरे और तीसरे स्थान पर क्रमशः द्वादशेश तथा द्वितीयेश है। कुछ पुस्तकों में यह क्रम द्वितीयेश, अष्टमेश तथा द्वादशेश लिखा है। इस प्रकार यह आरोही क्रम 2रा, 8वा और 12वा बनता है।

(*ii*) अष्टम भाव नवम् भाव से द्वादश (व्यय, टूट-फूट, या मूल्यह्रास का भाव) होता है, जो भाग्य के लिए खराब होता है अर्थात् अष्टम भाव शुभ भाव नहीं है। अतः यह अशुभ भाव बन गया।

(*iii*) (क) यदि कोई ग्रह अष्टमेश होता है और वह त्रिशड्याधिपति (3रे, 6ठे या 11वें का स्वामी भी है) तो वह अशुभ हो जाता है। यह निम्नलिखित स्थिति में संभव है।

(*iii*) (ख) विभिन्न लग्नों के अशुभ स्वामी (ग्रह)

लग्न	ग्रह	भावाधिपति
वृषभ	गुरु	8, 11
कन्या	मंगल	8, 3
वृश्चिक	बुध	8, 11
मीन	शुक्र	8, 3

अष्टमेश की विशिष्टता

नोट : षष्ठेश तथा अष्ठमेश कोई ग्रह नहीं हो सकता।

(*iv*) यदि अष्टमेश त्रिकोण (1, 5, 9) का स्वामी भी है तो वह शुभ हो जाता है और उसकी महादशा, अन्तर्दशा काल में उससे शुभ फल की आशा की जा सकती है। (सम + त्रिकोण = त्रिकोण)

लग्न	ग्रह	भावाधिपति
मेष	मंगल	1, 8
मिथुन	शनि	8, 9
सिंह	गुरु	8, 5
तुला	शुक्र	1, 8
कुभ	बुध	8, 5

(D) न रन्ध्रेशत्वदोषस्तु सूर्याचन्द्रमसोर्भवेत्।

टिप्पणी–(क) सूर्य तथा चन्द्रमा अष्टमाधिपत्य दोष से मुक्त है।

(ख) **अष्टम भाव** द्वितीय से सप्तम, चतुर्थ भाव से पंचम भाव, पंचम भाव से चतुर्थ, सप्तम भाव से द्वितीय, इस प्रकार शुभ फल प्रदाता होता है। इसलिए यह सम भाव है।

परिभाषा–

10.9. राशियों का समूह (श्रेणियाँ)

(*i*) अपचय स्थान	1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 12
(*ii*) उपचय स्थान	3, 6, 10, 11
(*iii*) पण्फर	2, 5, 8, 11
(*iv*) अपोक्लिम	3, 6, 9, 12

10.10. विभिन्न लग्नों के लिए मुख्य ग्रह

केन्द्र और त्रिकोण स्वामियों का आपस में संबंध हो तो बहुत ही शुभ योग बनता है जिससे जातक को प्रसिद्धि, पदवी, धन, सफलता आदि मिलती है। इस प्रकार के योगों के प्रभाव पर "विशेष योग" अध्याय 13 तथा अनुबद्ध V में विचार किया जाएगा। इस पाठ में प्रत्येक लग्न के लिए अच्छे या बुरे ग्रहों को समझने के लिए विद्यार्थियों को तैयार करने का प्रयास किया जाएगा। प्रत्येक राशि के लिए मुख्य ग्रहों पर विचार करने से पूर्व यह समझना आवश्यक है कि ग्रहों के अच्छे या बुरे प्रभावों की गहनता और उनके योग फलों को उनके स्थानाधिपत्य ही नियंत्रित करते हैं।

मुख्य ग्रहों के बारे में राशि वार विचार

सारिणी

राशि	अशुभ	शुभ	मारक	राजयोग/ योगकारक	अभ्युक्ति
1. मेष	शनि, बुध, शुक्र	वृहस्पति सूर्य मंगल	शनि बुध	वृहस्पति + सूर्य	शुक्र मारक है। पर वह जातक को मृत्यु नहीं देगा।
2. वृषभ	वृहस्पति शुक्र चन्द्रमा	शनि सूर्य बुध	वृहस्पति शुक्र चन्द्रमा मंगल	–शनि	मंगल मारक बनता है।
3. मिथुन	मंगल वृहस्पति सूर्य	शुक्र बुध	मंगल वृहस्पति	शुभ भावों में स्थित शुक्र और बुध	शुभ भाव में शनि के साथ शुक्र अति उत्तम है। चन्द्रमा मारक है किन्तु जातक को मृत्यु नहीं देगा।

राशि	अशुभ	शुभ	मारक	राजयोग/ योगकारक	अभ्युक्ति
4. कर्क	शुक्र बुध शनि	वृहस्पति मंगल चन्द्रमा	शुक्र बुध शनि सूर्य	मंगल शुभ भावों में मंगल और गु० 1, 5, 9, 10 भावों में मं० गुरु या चं० का साथ होना अति उत्तम है –मंगल।	सूर्य मारक है किंतु जातक को मृत्यु नहीं देगा
5. सिंह	शनि शुक्र बुध	मंगल सूर्य वृहस्पति	बुध और अन्य बुरे ग्रह शनि, चन्द्रमा	मंगल वृहस्पति + –मंगल	गुरु और शुक्र के योग से राजयोग नहीं बनता है। शनि मारक है किन्तु जातक को नहीं मारेगा।
6. कन्या	मंगल चन्द्रमा वृहस्पति	शुक्र बुध	मंगल, शुक्र चन्द्रमा और गुरु मारकत्व प्राप्त होने पर मृत्यु दे सकते हैं	बुध + शुक्र	मारक होने पर भी सूर्य जातक को मृत्यु नहीं देता अपनी संयुक्ति के अनुसार प्रभाव देता है।
7. तुला	गुरु मंगल सूर्य	शनि बुध	मंगल, गुरु शुक्र	शनि बुध + शनि, शुक्र चन्द्रमा + बुध/ शनि	शुक्र सम है। गुरु तथा अन्य अशुभ ग्रह अपनी संयुक्ति के अनुसार मृत्यु देते हैं।
8. वृश्चिक	बुध शुक्र शनि	गुरु चन्द्रमा	बुध और अन्य अशुभ ग्रह	सूर्य चन्द्रमा	वृहस्पति मृत्यु नहीं देता। मंगल सम है।

राशि	अशुभ	शुभ	मारक	राजयोग/योगकारक	अभ्युक्ति
9. धनु	शुक्र शनि बुध	मंगल सूर्य	शुक्र शनि	सूर्य + बुध मंगल + गुरु सूर्य + मंगल	शनि मृत्यु नहीं देता। गुरु सम है
10. मकर	मंगल गुरु चन्द्रमा	शुक्र बुध	मंगल गुरु	–शुक्र शुक्र + बुध	सूर्य सम है। शनि स्वयं मृत्यु नहीं देता।
11. कुंभ	गुरु चन्द्रमा मंगल	शनि शुक्र	गुरु सूर्य मंगल	–शुक्र मंगल+ शुक्र	बुध सम है।
12. मीन	शनि शुक्र बुध सूर्य	चन्द्रमा मंगल	बुध शुक्र शनि	मंगल, मंगल + गुरु मंगल + चन्द्रमा	मंगल मृत्यु नहीं देता जब तक उसे सहयोग न मिले। या प्रेरित न हो।

10.11 उपरोक्त सारणी से किसी लग्न विशेष के लिए ग्रहों के कार्य प्रभाव का पता लगाने में सहायता मिलेगी।

'मुख्य ग्रह' (Key Planets) का अर्थ कुण्डली के रहस्य के ताले को खोलने वाला उपकरण भी है। भविष्यवाणी करने के लिए ज्योतिषी को चाहिए कि वह जन्म कुण्डली में संवेदनशील बिन्दु का पता लगाए जहाँ से भविष्य को खोला जा सकता है अर्थात् भविष्य में होने वाली घटनाओं को जानना संभव हो सकता है। मुख्य ग्रहों से जन्म कुण्डली का बलाबल पता लगाने में सहायता मिलती है। उपरोक्त सारणी के अतिरिक्त प्रत्येक राशि में पड़ने वाले लग्न तथा ग्रहों के संबंध में विवरण/समालोचना नीचे दी जाती है।

10.12 मेष

मंगल प्रथम एवं आठवीं राशियों का स्वामी है। मंगल की मूल त्रिकोण राशि मेष है। मंगल भावों/ग्रहों के शुभ फल में वृद्धि कारक होगा। वृहस्पति (नवमेश) तथा द्वादशेश (सम) भाव का स्वामी होने के कारण शुभ है। यदि

बृहस्पति और शनि (दसमेश तथा एकादशेश) दोनों एक साथ हों तो शुभ फल नहीं देंगे (ग्यारहवां भाव शनि का मूलत्रिकोण भाव है तथा त्रिषडाय होने के कारण, चर लग्न के लिए 11वां बाधक स्थान है) अशुभ है, वृहस्पति यदि पीड़ित हो तो बुरा फल देता है। शनि यदि पीड़ित हो तो मृत्यु देता है। शुक्र निश्चित ही मारक है **(शुक्रः साक्षान्निहन्ता)**। शुक्र द्वितीयेश (सम) सप्तमेश (मारक) होने के कारण अशुभ है। 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। सौम्य ग्रह शुभ फल न देकर सम हो जाता है। परन्तु द्वितीयेश तथा सप्तमेश होकर मारक है। चन्द्रमा मिश्रित फलदायक है। सूर्य पंचमेश है इसलिए शुभ है।

10.13 वृषभ

सूर्य और शनि शुभ है। बुध भी शुभ है किन्तु कुछ सीमा तक। वृहस्पति को बुरा तथा मारक माना गया है क्योंकि वह दोनों (अष्टम-सम, एकादश-त्रिषडाय) ही अशुभ भावों के स्वामी है। तृतीयेश चन्द्रमा, शुक्र (लग्नेश तथा षष्ठेश) षष्ठेश होने के कारण (शुक्र की मूल त्रिकोण राशि तुला षष्ठ भाव का स्वामी होने के कारण) मारक ग्रह है। सूर्य तथा शनि शुभ है जबकि सूर्य केवल केन्द्र का स्वामी है। केन्द्र के स्वामी क्रूर ग्रह अशुभ फल नहीं देते और यदि वह केन्द्र तथा त्रिकोण दोनों का स्वामी हो तो वह शुभ बन जाता है। यहाँ पर सूर्य केवल एक भाव का स्वामी सम है संभवतः इसी कारण महर्षि पराशर ने कहा है कि **"शुभौ शनि दिवाकरौ"**। बुध द्वितीयेश (मारक स्थान) है और पंचमेश (योगकारक भाव) है। परंतु उसे कुछ सीमा तक अच्छा (अल्प शुभ प्रदः) माना गया है। यदि बुध शनि तथा सूर्य की युति में हो तो वह प्रभावकारी उत्तम फल देता है। किन्तु अकेला हो तो वह शुभ नहीं हो सकता है। मंगल सप्तमेश तथा द्वादशेश होने के कारण मारक माना जाता है क्योंकि सप्तम मारक स्थान है तथा 12वां मूलत्रिकोण राशि है (सम भाव)। चन्द्रमा भी मारक बन जाता है यदि वह अन्य मारक ग्रह से संबंधित हो।

10.14 मिथुन

वृहस्पति (सप्तमेश और दशमेश) और शनि (अष्टमेश तथा नवमेश) यदि दोनों एक साथ हो तो शुभ फल की आशा नहीं की जाती (जबकि ये

नवमेश और दशमेश हैं)। शनि अष्टमेश है और वृहस्पति की मूलत्रिकोण राशि सप्तम है जो द्विस्वभाव लग्न के लिए बाधक स्थान है। (शुभ ग्रह यदि केन्द्र के स्वामी हों तो शुभ फल नहीं देते क्योंकि इस स्थिति में केन्द्राधिपत्य दोष लगता है)। शुक्र (पंचमेश तथा द्वादशेश) शुभ माना गया है, क्योंकि द्वादश भाव (सम) तथा पंचम भाव शुक्र की मूल त्रिकोण राशि शुभ है। देखें पैरा 10.8 (*iv*) (ख) इस लग्न के लिए चन्द्रमा प्रधान मारक होता है (शशि मुख्यनिहन्ता) जो उसकी युति पर निर्भर करता है।

10.15 कर्क

मंगल, वृहस्पति और चन्द्रमा शुभ हैं। शनि और सूर्य मारक हैं किन्तु वे अपनी युति के अनुसार फल देते हैं। इसका अर्थ है शनि (सप्तमेश और अष्टमेश) तथा सूर्य (द्वितीयेश) मारक हैं किन्तु वे स्वतन्त्र रूप से प्रभाव नहीं देते बल्कि अन्य ग्रहों के साथ संबंध के अनुसार अच्छा या बुरा फल देते हैं। शुक्र केन्द्राधिपति (चौथा भाव तुला मूल त्रिकोण राशि है) होने के कारण शुभ नहीं है। वह एकादशेश भी है (जो चर लग्न के लिए बाधक स्थान होता है)। शुक्र अशुभ फल देने के लिए अशुभ ग्रह का दोहरा कार्य करेगा। षष्ठेश (मूल त्रिकोण राशि) होने के बावजूद वृहस्पति को भी शुभ माना गया है। संभवतः इस कारण से कि अत्यधिक शुभ नवम् है और वृहस्पति चन्द्रमा का निकटतम मित्र है, जातक को शुभ फल प्राप्त होता है। बुध द्वादशेश (सम) तृतीयेश (त्रिषडायेश) होने के कारण अशुभ माना गया है। लग्नेश को शत्रु मानता है।

10.16 सिंह

मंगल, वृहस्पति और सूर्य शुभ ग्रह हैं। शनि और चन्द्रमा मारक हैं (वे अपनी युति के अनुसार फल देते हैं)। शनि बुरा है क्योंकि वह षष्ठेश और सप्तमेश है तथा लग्न स्वामी का शत्रु है। बुध द्वितीयेश (मूल त्रिकोण राशि) तथा एकादशेश और शुक्र तृतीयेश (मूल त्रिकोण राशि) और दसमेश (केन्द्राधिपत्य दोष) के कारण अशुभ है।

10.17 कन्या

मंगल, वृहस्पति और चन्द्रमा अशुभ हैं। बुध और शुक्र शुभ हैं। शुक्र मारक भी है (मारकोऽपि कविः)। सूर्य अपनी संयुक्ति के आधार पर प्रभाव देगा (**सूर्य साहचर्य फलप्रदः**)। क्योंकि शनि पंचमेश है और लग्नेश का मित्र है अतः उत्तम फल देगा (परंतु पराशर ने यहाँ पर शनि के बारे में कुछ नहीं कहा है और शनि तथा शुक्र की युक्ति के अतिरिक्त मिथुन लग्न के बारे में भी कुछ नहीं कहा है)। शनि षष्ठेश, छठा भाव मूल त्रिकोण राशि भी है, इस कारण कुछ कठिनाई आ सकती है अष्टमेश होने के कारण मंगल मृत्यु भी दे सकता है।

10.18 तुला

शनि तथा बुध को शुभ माना जाता है (क्योंकि वह लग्नेश के मित्र हैं)। मंगल मारक है। मंगल दूसरे और सातवें भावों का स्वामी है और सूर्य ग्यारहवें भाव (चर लग्न के लिए बाधक स्थान) का स्वामी है। (रूकावट डालने वाला ग्रह है) अतः यह अशुभ है। वृहस्पति तृतीयेश तथा षष्ठेश होकर अशुभ है। यह लग्न स्वामी का शत्रु भी है (वृहस्पति के लिए शुक्र शत्रु है)।

10.19 वृश्चिक

शुक्र, बुध और शनि अशुभ हैं। वृहस्पति और चन्द्रमा शुभ हैं। शुक्र, बुध और अन्य अशुभ ग्रह जातक को मृत्यु देते हैं। इस लग्न के लिए मंगल सम है (तुला लग्न के लिए जैसा कि शुक्र है)। मंगल लग्न स्वामी होने के कारण शुभ है किन्तु वह षष्ठेश है जो उसकी मूलत्रिकोण राशि है (अशुभ)।

10.20 धनु

मंगल और सूर्य शुभ हैं। बुध और सूर्य योग बनाने में सक्षम हैं। शनि मारक होते हुए मृत्यु नहीं देता। बृहस्पति सम है। शुक्र में मारक शक्ति है क्योंकि वह षष्ठेश और एकादशेश है तथा लग्न स्वामी का शत्रु होकर इस लग्न के लिए अति अशुभ है। शनि द्वितीयेश (सम) और तृतीयेश (त्रिषडाय) होने के कारण मारक है। यदि शुक्र शनि के साथ युक्त हो तो वह मारक बन जाता है। बुध सातवें तथा दसवें भावों का स्वामी है (दो केन्द्र) दसवें में

मूल त्रिकोण राशि पड़ती है। इसलिए अशुभ है यदि बुध की युति सूर्य (नवमेश) या मंगल (पंचमेश) दोनों से हो जो इस लग्न के लिए शुभ हैं तो शुभ फल देता है। चन्द्रमा और बृहस्पति की युति अति उत्तम फल देती हैं (जब गुरु और चन्द्रमा एक साथ हों तो इससे गजकेसरी योग बनता है जिस पर पाठ 13 में विचार किया जाएगा।

10.21 मकर

शुक्र और बुध शुभ हैं। शनि लग्न स्वामी होने के कारण स्वयं का मारक नहीं होगा (मन्दः स्वयं न हन्ताः)। मंगल तथा अन्य पाप ग्रह मृत्यु दे सकते हैं (हन्ति घापाः कुजादयाः)। सूर्य सम है। चतुर्थेश मंगल (मूल त्रिकोण) और एकादशेश (बाधक स्थान) विपरीत फल देता है। बृहस्पति तीसरे भाव का स्वामी और द्वादशेश (मूलत्रिकोण), अतः विपरीत फल देता है। चन्द्रमा सप्तम (मारक स्थान) का स्वामी है। संभवतः इसी कारण महर्षि पराशर ने कहा है "कुजजीवेन्दवः पापाः"। एक मात्र शुक्र ऐसा ग्रह है जो योगकारक है क्योंकि यह पंचमेश और दशमेश है।

10.22 कुंभ

बृहस्पति, चन्द्रमा और मंगल अशुभ हैं। शुक्र और शनि शुभ हैं। एकमात्र शुक्र बली राजयोग कारक है (क्योंकि वह चतुर्थेश और नवमेश है)। बृहस्पति, सूर्य और मंगल मृत्यु दे सकते हैं। बुध सम है (मिश्रित फल दे सकता है) लग्नेश का मित्र तथा पंचमेश (त्रिकोणेश) तथा अष्टमेश (सम) है। बृहस्पति (द्वितीयेश और एकादशेश) चन्द्रमा (षष्ठेश) और मंगल (तृतीयेश और दशमेश) होकर अशुभ हैं।

10.23 मीन

गुरु या चन्द्रमा के साथ मंगल राजयोग कारक है। चन्द्रमा और मंगल शुभ हैं। मंगल बली ग्रह है। मंगल मारक भी है किन्तु त्रिकोण (9 वां) भाव का स्वामी होने के कारण स्वयं नहीं मार सकता। जब तक अन्य मारक शनि या बुध से प्रेरित न हो तब तक मंगल स्वयं नहीं मारता। सूर्य, शुक्र तथा बुध अशुभ हैं। शनि 11वें और 12वें (दोनों अशुभ) भावों के स्वामी है। शुक्र भी तीसरे तथा आठवें दोनों अशुभ भावों का स्वामी है। छठे भाव का स्वामी होने के कारण सूर्य भी अशुभ ग्रह है।

अभ्यास

1. मुख्य ग्रह (की प्लानेट) से आप क्या समझते हैं, स्पष्ट करें?
2. केन्द्राधिपत्य दोष को पारिभाषित करें।
3. चर, स्थिर तथा द्विस्वभाव राशि वाले स्थानों के लिए रूकावट डालने वाले कौन-कौन ग्रह हैं।
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें–

   (क) त्रिशड्याधिपति

   (ख) 8वें और 12वें भावों के स्वामी

   (ग) केन्द्र तथा त्रिकोण के स्वामियों के कार्य।

❑❑❑

पाठ-11
आयुर्दया और मारक

11.1 दोनों विषय पर अलग-अलग विचार किया जाएगा। ग्रहों, उनकी विशेषताओं, स्वामित्व और अवस्था एवं उनकी विशेषताओं तथा कारकत्व आदि के बारे में हम पहले ही अध्ययन कर चुके हैं। जन्म-समय में संशोधन या सत्यापन, दशा की गणना, ग्रहों की दृष्टि विभिन्न राशियों में पड़े लग्न के प्रभावों को पहले स्पष्ट किया जा चुका है। संबंधित भावों मुख्यतः अष्टम भाव के महत्त्वपूर्ण कारकत्व जिसे आयु स्थान कहा जाता है और दूसरे तथा सातवें भाव जिन्हें मारक स्थान कहा जाता है। जब कभी हम आयु और मारक की बात करते हैं तो हमारा ध्यान 8, 2 और 7 वें भावों पर जाता है।

11.2 आयुर्दया–

साधु पृष्ट त्वयाविप्र ! जनानां च हितेच्छया।
कथयाभ्यायुषो ज्ञानं दुर्ज्ञेयं यत् सुरैरपि।।

ऊपर के श्लोक में महर्षि पराशर जातक की आयु के बारे में कहते हैं, जो देवताओं के लिए भी कठिन है, परन्तु मानव जाति का लाभ हो इसलिए इसकी चर्चा की है। कुछ विद्वान ज्योतिषी आयु के लिए योगों और अन्य प्रचलित दशा कालों की प्रशंसा करते हैं। वे कहते हैं कि इसके बिना मुनि भी आयु की भविष्यवाणी करने में असमर्थ हैं (सर्वार्थ चिंतामणि)।

टिप्पणी–इस विषय पर ज्योतिष विशारद में पूर्ण रूप से चर्चा की जाएगी जहाँ आयु के लिए गणित वाला भाग लिया जाएगा। यहाँ पर अन्यथा चर्चा पूरी होगी जो ज्योतिष प्रवीण के पाठ्यक्रम के अनुरूप होगा।

11.3 जातक के प्रथम बारह वर्षों का महत्त्व

किसी जन्मकुण्डली का विश्लेषण करने के बाद परन्तु फलित करने से पहले, आयु का निर्णय करना आवश्यक होता है। किसी जातक के जन्म के बाद भविष्यवाणी करने से पूर्व उसकी आयु देखनी चाहिए। ऐसा कहा जाता है कि मानव जाति के मामलें में बारह वर्ष के भीतर बच्चें की आयु का निर्धारण कठिन (निषेध) है। इस 12 वर्ष की अवधि को तीन समूहों में बांटा गया है–

1. प्रथम चार वर्ष-मां के पूर्व जन्म के पुण्य/पापों पर आधारित होता है।

2. दूसरा चार वर्ष-पिता के पूर्व जन्म के पुण्य/पापों पर आधारित होता है।

3. तीसरा चार वर्ष-जातक के स्वयं के पूर्व जन्म के पुण्यों/पापों पर आधारित होता है।

आद्दे चतुष्के जननी कृताद्दैर्मध्मे पित्रार्जित पाप संघै।
बालस्तदन्त्या सु चतुः शरत्सु स्वकीय दोषै समुपैति नाशम्।।

(फल दीपिका)

11.4 संतान भाव का फल या पिछले जीवन के कर्मों के फल

पांचवा भाव संतान भाव तथा पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों का भाव होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व कर्मों और संतति तथा नवम् भाव, धर्म भाव एवं पितृ भावों के बीच संबंध है (ऐसा कहा जा सकता है कि यह पूर्वजों का द्योतक है क्योंकि लग्न नवम् से पंचम है अर्थात पंचम् भाव लग्न है)। जब तक जातक को अपने पूर्वजों और पिता के प्रति स्नेह न हो तब तक उसे पुत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यदि सन्तान भाव पर बुरा प्रभाव हो तो केवल प्रार्थना, दान आदि से इसे ठीक किया जा सकता है (जो नवम् भाव का द्योतक है)। पैरा 11.3 के मामले में पिता को मंत्र का उच्चारण करके और हवन में घी डालकर पूजा करके समुचित धार्मिक संस्कार करना चाहिए।

11.5 (*i*) बालारिष्ट (शैशव में मृत्यु)

बालारिष्ट (बाल्यकाल में मृत्यु)–किसी व्यक्ति की आठ वर्ष तक की आयु को **बालारिष्ट** कहा जाता है। 8 से 20 वर्ष की अवधि को **योगारिष्ट** कहा जाता है। दोनों ही योग बच्चे के लिए खराब होते हैं। ज्योतिषी को नवजात शिशु की जन्म कुण्डली को इस विचार से देखना चाहिए कि कुण्डली में निम्नलिखित बुरे योग तो नहीं हैं:

11.5 (*ii*) जन्म लग्न से 6/8/12 वें स्थान में चंद्रमा को यदि क्रूर ग्रह देखते हों, वह बालक अल्पायु होता है। यदि उस ही चंद्रमा को शुभ ग्रह देखते हों बालक की आयु 8 वर्ष जाने। शनि अथवा शुभ ग्रह 6/8/12 में हो या वक्री तथा क्रूर ग्रहों से हृष्ट भी हो, लग्न में कोई ग्रह शुभ न हो, तो

बालक की आयु एक मास जाने। यदि लग्न से पाँच स्थानों में सूर्य, मंगल और शनि—यह तीनों हो, उस बालक की माता सहित मृत्यु तथा भाई को भी हानि होने की संभावना।

जिसके दसम स्थान में शनि, छठे स्थान में चंद्रमा और सांतवें स्थान में मंगल हो, उस बालक की माता सहित मृत्यु भय।

जिसके लग्न में शनि, आठवें में चंद्रमा हो, गुरु तीसरे स्थान में हो, उस बालक की शीघ्र मृत्यु भय।

जन्म लग्न से 12वें स्थान में कोई भी ग्रह शुभ करने वाला नहीं होता, परन्तु सूर्य, चंद्रमा, शुक्र तथा राहू ये विशेषकर कष्टकारक होते हैं। इनकी दृष्टि भी शुभ नहीं होती। जिसका लग्न बारहवें तथा छठे, आठवें, दूसरे ग्रह पड़े हो तथा लग्न अशुभ कर्तरी में हो, शीघ्र मृत्यु भय।

11.5 (*iii*) अरिष्ट भंग योग

(*i*) बुध, बृहस्पति तथा शुक्र इनमें से एक भी केन्द्र में हो।

(*ii*) बृहस्पति बलवान लग्न में हो।

(*iii*) बली लग्नेश केन्द्र में हो।

(*iv*) शुक्ल पक्ष की रात्रि का जन्म हो, लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, या

(*v*) कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो।

उपरोक्त पाँच योगों में से एक भी योग पड़ जाये तो उपरोक्त अरिष्टों का योग भंग हो जाता है।

11.5 (*iv*) माता-पिता को कष्ट

सूर्य से (पिता के लिए) तथा चंद्रमा से (माता के लिए) के साथ क्रूर ग्रह बैठे हों (4, 6, 8 स्थान में) अथवा (2/12) अशुभ कर्तरी में हों तो उस बालक के माता-पिता को कष्ट जानें।

(*v*) दिन मृत्यु—जब निम्नलिखित नक्षत्रों में जन्म दिन का हो—

धनिष्ठा और हस्त का प्रथम चरण
विशाखा और आर्द्रा का दूसरा चरण
उत्तराभाद्रपद और अश्लेषा का तीसरा चरण
भरणी और मूल का चौथा चरण

(*vi*) **दिन रोग–जब निम्नलिखित नक्षत्रों में जन्म दिन का हो–**

अश्लेषा और उत्तराभाद्रपद का पहला चरण

भरणी और मूल का दूसरा चरण

उत्तराफाल्गुन और श्रावण का तीसरा चरण

स्वाति और मृगशिरा का चौथा चरण

टिप्पणी–यदि जन्म रात्रि का हो तो ये दोनों दोष नहीं लगते।

अनुबद्ध I में सारणी देखें

(*vii*) विष घटी काल

प्रत्येक नक्षत्र की कुछ अवधि को विष घटी कहा जाता है और इसे घातक माना जाता है। वे निम्नलिखित है–

नक्षत्र	घटी	अंश	नक्षत्र	घटी	अंश
अश्विनी	51 से 54	20°-45.6′	भरणी	25 से 28	10.11.2
कृतिका	31 से 34	12°-37.6′	रोहिणी	41 से 44	16.41.6
मृगशिरा	15 से 18	6°-7.26′	आर्द्रा	22 से 25	08.58
पुनर्वसु	31 से 34	12°-37.6′	पुष्य	21 से 24	08.33.6
अश्लेषा	33 से 36	13°.26.4′	मघा	31 से 34	12.37.6
पूर्वाफाल्गुन	21 से 24	8°.33.6′	उत्तराफाल्गुन	19 से 22	07.44.8
हस्त	22 से 25	8°.58	चित्रा	21 से 24	08.33.6
स्वाति	15 से 18	6.7.2	विशाखा	15 से 18	06.7.2
अनुराधा	11 से 14	4.29.6	ज्येष्ठ	15 से 18	06.7.2
मूल	57 से 60	11.36	पूर्वाषाढ़	25 से 28	10.11.2
उत्तराषाढ़	21 से 24	8.33.6	श्रावण	11 से 34	04.29.6
धनिष्ठा	11 से 14	4.29.6	शतमिषा	19 से 22	07.44.8
पूर्वाभाद्रपद	17 से 20	6.56	उत्तराभाद्रपद	25 से 28	10.11.2
रेवती	31 से 34	12.37.6	—	—	—

(*viii*) गण्डमूल

यदि जन्म नीचे लिखे नक्षत्रों में हो–

1. पुष्य, पूर्वाषाढ़ और चित्रा का पहला चरण
   पिता के लिए खतरे का सूचक।
2. पुष्य, पूर्वाषाढ़ और चित्रा का दूसरा चरण
   मां के लिए खतरे का सूचक।
3. पुष्य, पूर्वाषाढ़ और चित्रा का तीसरा चरण
   बच्चे के लिए कष्टदायक।
4. पुष्य पूर्वाषाढ़ और चित्रा का चौथा चरण
   मामा के लिए कष्टदायक।

मूल, ज्येष्ठा, रेवती अश्विनी व श्लेषा, मघा इन 6 नक्षत्रों में उत्पन्न बालक को विविध प्रकार के अरिष्ट दोष व्याप्त होते हैं। इत्तमें भी नीचे दिए गए विशेष गण्ड कारक होते है मूल ज्येष्ठा व श्लेषा विशेषतया गण्ड कारक होते है। अनुबद्ध II देखें

गण्डमूल सारणी

(*ix*)	(क)	मूल	पहला चरण	पिता के लिए खतरा
		अश्लेषा	चौथा चरण	
	(ख)	मूल	दूसरा चरण	मां के लिए खतरा
		अश्लेषा	तीसरा चरण	
	(ग)	मूल	तीसरा चरण	परिवार वंश के लिए खतरा
		अश्लेषा	द्वितीय	धन नाश
	(घ)	मूल	चौथा चरण	धन और समृद्धि देने वाला
		अश्लेषा	पहला चरण	शुभ

यदि लग्न भाव में शुभ ग्रह हों और चन्द्रमा के साथ कोई अशुभ ग्रह न हो तो उपरोक्त कुप्रभाव कम हो सकते हैं तथा शुभ प्रभाव बढ़ सकते हैं।

अनुबद्ध II को भी देखें ॰

ज्योतिष तत्वानुसार अश्विनी, रेवती, मघा 'उपगण्ड' नक्षत्र हैं। अश्विनी, मघा मूल की शुरू की पाँच घड़ियाँ व रेवती, ज्येष्ठा अश्लेषा की अंतिम पाँच घड़िया गण्ड कहलाती हैं। मूल व अश्लेषा का दिन में, मघा का रात्रि

में, एवं अश्विनी, रेवती का दोनों संध्या कालों में विशेष प्रभाव होता है। सामान्यता अश्विनी का प्रथम चरण, मघा के पहले दो चरण तथा रेवती का अन्तिम चरण अनिष्ट कारक होते है।

गण्डान्त फल

(x) (क) गण्डान्त (संधि) का कार्य

यदि राशि के संधि काल में बच्चे का जन्म होता है और राशि पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो या शुभ ग्रह की युति न हो तो जन्म से तुरंत बाद बच्चे की मृत्यु हो जाती है। इन संधियों के संवेदनशील बिन्दुओं को गण्डान्त कहा जाता है।

(क) कर्क और सिंह

कर्क का अंतिम नवांश और सिंह का प्रथम नवांश

(ख) वृश्चिक और धनु

वृश्चिक का अंतिम नवांश और धनु का प्रथम नवांश

(ग) मीन और मेष

मीन का अंतिम नवांश और मेष का प्रथम नवांश।

यदि ऊपर दी गई स्थिति में जन्म होता है और लग्न व चंद्रमा पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो तो बच्चा सूर्योदय नहीं देखता। यदि ऐसा न हो तो बच्चा जीवित रहता है और राजा के समान हो जाता है।

(ख) अश्विनी-प्रथम चरण, अश्लेषा—चतुर्थ चरण, मघा—प्रथम चरण ज्येष्ठ-चतुर्थ चरण, मूल—प्रथम चरण और रेवती—चतुर्थ चरण को गण्डमूल नक्षत्र कहा जाता है।

(xi) बालारिष्ट की अवधारणा में चन्द्रमा का महत्त्व

यहाँ पर ग्रहों के बुरे योगों पर विचार किया जाता है विशेषकर चन्द्रमा पर जिसके कारण **बालारिष्ट** योग बनता है। भावों के फलों की भविष्यवाणी करने से पूर्व लग्न कुण्डली और चन्द्र राशि का सावधानी पूर्वक विश्लेषण करना चाहिए। **बालारिष्ट योग** और जीवन काल के अवधारण के लिए बुरे प्रभावों और आयु के तथ्यों की जाँच के मामले में चन्द्रमा मुख्य ग्रह होता है।

1. यदि चन्द्रमा लग्न से 6, 8 या 12वें भाव में हो और अशुभग्रहों के प्रभाव में हो तो बच्चे की मृत्यु शीघ्र हो जाती है।

2. यदि शुभ ग्रह वक्री होकर 6, 8 या 12वें भाव में हो और अशुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो बच्चे की मृत्यु एक महीने के भीतर हो जाती है।

जन्म के समय चन्द्रमा दुःस्थान में यदि शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु नहीं देता बल्कि 8वें वर्ष के अन्त में मृत्यु देता है।

यहाँ पर इस बात पर जोर दिया जाता है कि चन्द्र लग्न भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण होता है। चन्द्रमा की स्थिति, चन्द्रमा से 8वें और तीसरे भावों की स्थिति, और चंद्रमा से केन्द्र की स्थिति से बुरे प्रभावों की गहनता निर्धारित करने में समान रूप से सहायता मिलती है। यदि इस प्रकार के बच्चे को मोती या चन्द्रमा के पत्थर का लाकेट व रूद्राक्ष गले में पहना दिया जाए और माता पिता द्वारा महामृत्युंजय मंत्र का जप भी किया जाए तो बच्चे की आयु में वृद्धि हो सकती है।

(*xii*) मृत्यु भागों के माध्यम से निर्णय

यदि चन्द्रमा किसी राशि में विघातक अंश (मृत्यु भाग) पर स्थित हो और साथ ही वह राशि (चन्द्र राशि) 8वें भाव में या केन्द्र स्थान में हो तो बच्चा अगला सूर्योदय नहीं देख पाएगा। प्रत्येक राशि से चन्द्रमा और लग्न के लिए मृत्यु भाग नीचे दिया जाता है।

	(फलदीपिका)	(फलदीपिक)
राशि	चन्द्रमा के लिए	लग्न के लिए
मेष	26°	8°
वृषभ	12°	9°
मिथुन	13°	22°
कर्क	25°	22°
सिंह	24°	25°
कन्या	11°	14°
तुला	26°	4°
वृश्चिक	14°	23°
धनु	13°	18°
मकर	25°	20°
कुंभ	5°	21°
मीन	12°	10°

मुहुर्त/जन्म के समय चंद्रमा के शुभाशुभ अंश

राशि		जातक परिजात		फलदीपिका		अन्य ग्रंथों में ग्रहों के मृत्यु भाग								
	प्रदेश	शुभ	अशुभ (मृत्यु)	अशुभ	लं०	सू०	मं०	बु०	वृ०	शु०	श०	रा०	के०	मा०
मेष	पाटल	21वां	8वां	26	8	20	19	15	19	28	10	14	8	23
वृष	कर्नाट	14वां	5वां	12	9	9	28	4	29	15	4	13	18	24
मिथुन	चर	18वां	22वां	13	22	12	25	13	21	14	7	12	20	11
कर्क	चोल	08वां	22वां	25	22	6	23	12	27	17	9	11	10	12
सिंह	पांडु	19वां	21वां	24	25	8	29	8	6	19	12	24	21	13
कथा	केरल	9परं	1ला.	11	2	24	28	18	4	13	16	23	22	14
तुला	कोल्लस	24	4	26	4	16	14	20	13	4	3	22	23	8
वृश्चिक	मलय	11	23	14	23	17	21	10	10	6	18	21	24	18
धनु	सैन्धव	23	18	13	18	22	2	21	17	27	28	10	11	20
मकर	उत्तर पांचाल	14	20वां	25	20	2	15	22	11	12	14	20	12	10
कुंभ	यवन	19वां	20वां	5	21	3	11	7	15	29	13	18	21	24
मीन	कौशल	9	10	5	10	23	6	5	28	19	15	8	14	22

(*xiii*) अन्य ग्रहों व लग्न के शुभाशुभ अंश

सूर्यादि ग्रहों के उपग्रह–(1) सूर्य (काल) (2) चंद्रमा (परिधि) (3) मंगल (धूम) (4) बुध (अर्धयाम) (5) बृहस्पति (यमघंट) (6) शुक्र (कोदण्ड) (7) शनि (गुलिक) (8) राहु (पात) (9) केतू (उपकेतू)।

पुष्करांश (Pushkaransha)–मुहूर्तदर्पण–ग्रहयादि 21, 14, 24, 7, 21, 14, 24, 7, 21, 14, 24 तथा 7 अंशों पर हो तब वह पुष्करांश में होता है।

विद्यामाधवियम–7वां तथा **9वां** नवांश अग्नि तत्त्व का, **5वां,** तीसरा–पृथ्वी तत्त्व का, छठा तथा आठवां–वायु का, 1ला, तीसरा–जल राशि का।

नोट–इनमें तीन नवांश वर्गोत्तम होंगे जैसे वृष 5वां कर्क का पहला तथा धनु का 9वां।

निर्णय में सावधानी

11.6 *पैरा 11.5 में दिए गए योग सामान्य रूप से चेतावनी के मुद्दे हैं जिन्हें बच्चे की जन्मकुण्डली में देखा जाना है। यदि केन्द्र में शुभग्रह हों और लग्न तथा चन्द्रमा के साथ शुभ ग्रह युक्त हो या उनकी दृष्टि हो तो ऊपर दिए गए अशुभ प्रभाव कम हो जाते हैं या समाप्त हो जाते हैं।*

11.7 बालारिष्ट के महत्त्वपूर्ण योग

महर्षियों ने बालारिष्ट के अनेक योग बताए हैं यहाँ सभी पर विचार नहीं किया जा रहा है। विद्यार्थियों के ज्ञान के लिए कुछ योगों पर नीचे विचार किया जा रहा है–

(1) अष्टम भाव में मंगल और शनि के साथ राहु। इस प्रकार की कुण्डली के जातक की दुर्घटना होगी, जातक के हाथ या पैर को क्षति पहुँचेगी।

(2) सूर्य सप्तम या अष्टम में तीन क्रूर ग्रहों के मध्य हो, गुरु या शुक्र सूर्य के साथ न हों ना ही सूर्य के साथ किसी प्रकार का संबंध हो तो बच्चे की मृत्यु जानवर से होती है।

(3) शत्रुभाव में बुध किसी ग्रह से दृष्ट या युक्त और छठे या आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जलीय पशु से खतरा।

(4) लग्न से 8वें भाव में चन्द्रमा के साथ मंगल हो और अष्टमेश शत्रु हो-सांप के काटने से बच्चे की मृत्यु।

(5) छठे भाव में बृहस्पति और बुध (यदि शत्रु राशि में हो)—बच्चे पर शत्रु का आक्रमण हो।

(6) (क) सूर्य अष्टम में, चन्द्रमा छठे में और शनि द्वादश भाव में हो।

(ख) सूर्य अष्टम में, शनि द्वादश में। इन दोनों (क) तथा (ख) स्थितियों में बच्चा नेत्रहीन होगा।

(ग) सूर्य शत्रु राशि में मंगल और चन्द्रमा के साथ हो और शुक्र से दृष्ट न हो-जातक एक आंख खो देता है।

(7) लग्न में मंगल, चौथे में राहु/दृष्टि और द्वितीय या द्वादश में शनि-बच्चा केवल 8 महीने तक जीवित रहता है।

(8) 12वें भाव में सूर्य के साथ मंगल, शनि तथा लग्न में चन्द्रमा अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो, बच्चे की पेट में प्रसूति से पहले मृत्यु हो।

(9) लग्न में चन्द्रमा, मंगल और शनि, 9 में सूर्य, लग्न पर भी गुरु की दृष्टि न हो-बच्चा 8 महीने तक जीवित रहता है। (ऊपर 7 पर लिखा फल)

(10) अष्टम में अशुभ ग्रह, छठे में चन्द्रमा, लग्न से गुरु और शुक्र का किसी प्रकार संबंध न हो-बच्चा एक वर्ष तक जीवित रह सकता है।

(11) तीसरे में सूर्य और मंगल, अष्टम में शनि लग्न पर गुरु या शुक्र की शुभ दृष्टि न हो-बच्चा एक महीने के भीतर मर जाता है।

(12) यदि निम्नलिखित योगों में लग्न पर शुभ प्रभाव न हो तो एक वर्ष के भीतर बच्चे की मृत्यु हो जाती है—

(क) लग्न में अशुभ ग्रह से दृष्ट मंगल हो। अथवा

(ख) अशुभ ग्रह से दृष्ट शनि और मंगल सप्तम में हो।

(ग) अशुभ ग्रहों से दृष्ट सूर्य और मंगल अष्टम में हो या

(घ) शनि और मंगल 6 या 8वें भाव में हो।

(13) यदि 6 या 8वें भाव में कर्क राशि हो और अष्टम भाव में बुध चन्द्रमा से दृष्ट हो तो बच्चे की मृत्यु 4 वर्षों के भीतर हो जाती है।

(14) यदि अष्टम भाव में मेष या वृश्चिक राशि हो अर्थात् कन्या या मेष लग्न हो और बृहस्पति पर सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और शनि की दृष्टि

हो और शुक्र का कोई संबंध न हो तो बच्चा तीन वर्षों तक जीवित रहता है।

(15) यदि षष्ठ या अष्टम या द्वादश भाव में कर्क या सिंह राशि हो शुक्र से युक्त हो तथा सभी अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो बच्चा 6 वर्षों तक जीवित रहता है।

(16) यदि शनि, लग्न में अवस्थित क्रूर ग्रहों से संबंधित हो और उस शनि पर कोई शुभ दृष्टि न हो तो बच्चा 16 वर्ष तक जीवित रहता है।

(17) यदि मेष और वृश्चिक राशि लग्न से षष्ठ या अष्टम में हो या केन्द्र में हो और शनि (वक्री) हो मंगल से दृष्ट हो, तो दो वर्ष के भीतर बच्चे की मृत्यु हो जाती है।

(18) राहु अरिष्ट–

(क) लग्न में सिंह, वृश्चिक या कुंभ राशि हो तथा लग्न में राहु तीन अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो।

(ख) राहु और बुध एक साथ अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो।

सात वर्ष के भीतर बच्चे की मृत्यु हो जाती है।

(19) लग्न या केन्द्र या 8वें में अशुभ ग्रहों के साथ क्षीण चन्द्रमा हो तो शीघ्र बच्चे की मृत्यु हो जाती है।

(20) लग्न से सातवें भाव में चन्द्रमा के नवांश में स्थित मंगल, पंचम में सूर्य और शनि। ऐसी स्थिति में जब चन्द्रमा जन्म नक्षत्र से सातवें नक्षत्र में प्रवेश करता है या जब चंद्रमा 23वें नक्षत्र पर से तृतीय बार गुजरे तो बुरा समय आता है।

(21) मंगल नवांश कुण्डली में ऐसी राशि में स्थित हो जो जन्म कुण्डली में लग्न राशि हो और मंगल की बृहस्पति पर दृष्टि न हो

या

चन्द्रमा लग्न से पंचम् में मंगल के नवांश में हो, तथा बृहस्पति से दृष्ट न हो तो मृत्यु का संकेत मिलता है।

(22) राहु और मंगल अष्टम में हो तो सांप के काटने या विष से मृत्यु हो।

(23) चंद्रमा क्रूर ग्रहों के साथ केंद्र में हो और जब लग्न चन्द्र होरा में हो और जन्म संध्या काल (गण्डान्त) अर्थात् सूर्यास्त से 1 घंटा 12 मिनट (3 डंडा/ घंटी) पूर्व (संध्याकाल ही) तो जातक के जीवन को खतरा होता है।

11.8 बालारिष्ट भंग होने के योग

इस प्रकार के योगों में जिस बच्चे का जन्म होता है उसे सभी प्रकार के रोगों से पीड़ित होना पड़ता है किन्तु इसके बावजूद जीवित रहता है। शुभ ग्रहों की कतिपय स्थिति तथा चन्द्रमा की बलवान स्थिति के कारण बालारिष्ट योग समाप्त हो जाता है। बालारिष्ट को समाप्त करने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण योग नीचे दिए जा रहे है–

(1) लग्न में बली बृहस्पति

(2) लग्न और लग्नेश की बली स्थिति तथा उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि।

(3) शुभ राशि में पुर्णिमा के चन्द्रमा पर शुभ दृष्टि होने से बालारिष्ट योग को निर्बल बनाता है।

(4) बुध, शुक्र गुरु की बलवान स्थिति से बालारिष्ट समाप्त हो जाता है।

(5) यदि पूर्णिमा का चन्द्रमा शुभ कर्तरी में हो तो बच्चे पर शीघ्र खतरा नहीं आता है।

(6) लग्न पर पूर्णिमा के चन्द्रमा की दृष्टि हो और गुरु केन्द्र में हो तो बच्चे की आयु बढ़ जाती है।

(7) शुक्र से दृष्ट उच्च का चन्द्रमा या चन्द्र राशि का स्वामी लग्न में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो वह बच्चे को शीघ्र मृत्यु से बचाता है।

(8) यदि चन्द्रमा अष्टम में हो तो बच्चे को खतरा नहीं होता, यदि बुध, गुरु या शुक्र के द्रेष्कोण में स्थित हो।

(9) यदि चन्द्रमा आठवें या छठे भाव में हो और बच्चे का जन्म पूर्णिमा का हो तो वह बुरे प्रभावों से बच्चे को बचाता है।

(10) यदि अशुभ ग्रह शुभ ग्रहों के षड्वर्ग में हों और शुभ नवांश में स्थित हों तो बालारिष्ट समाप्त हो जाता है।

निष्कर्ष–यदि लग्न, लग्नेश बली हो और पूर्णिमा का चन्द्रमा (पीडित न हो) शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो तो बच्चे को सुरक्षित रखता है। जन्म समय भोग्य दशा से भी इस अरिष्ट की स्थिति का संकेत मिलता है।

जन्म तिथि = 26 फरवरी 1983 समय 23 घण्टे स्थान दिल्ली

शु० म०			रा०
सूर्य	XVI 26-2-1983 23 घण्टे दिल्ली		
बु०			चंद्रमा
केतु	गुरु	लग्न शनि (व)	

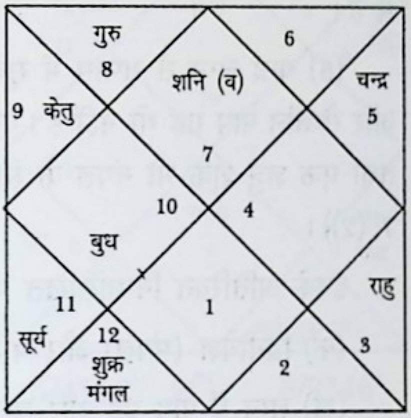

लग्न	6/16°27	मंगल	11/7°38′	शुक्र	11/10°58
सूर्य	10/13°56	बुध	9/23°0′	शनि (व)	6/10°40′
चन्द्रमा	4/4°56	गुरु	7/15°56′	राहु	2/8°22′
				केतु	8/8°22′

कुण्डली **XVI**—यह असामयिक प्रसव का मामला है। (Premature Delivery) जातक की मृत्यु 4 मार्च, 1983 को केतु की महादशा, मंगल की अन्तर्दशा, गुरु की प्रत्यन्तर्दशा में हो गई।

सिद्धांत की प्रयुक्ति—

(1) वक्री शनि लग्न में (अशुभ ग्रहों के साथ नहीं) किन्तु अशुभ ग्रहों से दृष्ट है, इस पर कोई शुभ दृष्टि नहीं है (देखें पैरा 11.7 (16)।

(2) मेष या वृश्चिक लग्न से केन्द्र में है और शनि (व) मंगल से दृष्ट है (देखें पैरा 11.7 (17)।

यह पहले ही बताया जा चुका है कि लग्न, लग्नेश तथा चन्द्रमा पीड़ित नहीं होना चाहिए। यद्यपि लग्नेश उच्च का है किन्तु छठे भाव में पीड़ित है और एक वक्री क्रूर ग्रह लग्न में है।

(3) जन्म गण्डान्त में हुआ है (सिंह का आरंभ) (देखें पैरा 11.5 (*vi*))

(4) राहु और बुध एक साथ क्रूर ग्रह से दृष्ट है (देखें पैरा 11.7 (18 ख)। राहु मंगल और शनि (वक्री शनि कन्या से प्रभावित कर रहा है)

से दृष्ट है। बुध पर अुशभ दृष्टि नहीं है परंतु बुध दो क्रूर ग्रहों के मध्य में है।

(5) चन्द्र लग्न से सप्तम में सूर्य (न कि लग्न से सप्तम) जिसके एक ओर से तीन पाप ग्रह भी नहीं हैं। एक और मंगल तथा दूसरी ओर बुध है। तथा एक शत्रु शुक्र भी मंगल के साथ दूसरी ओर स्थित है (देखें पैरा 11. 7 (2))।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित भी देखें–

(क) द्वितीयेश (मंगल) और षष्टेश (गुरु) का स्थान परिवर्तन।

(ख) लग्न में पाप ग्रह और चन्द्रमा पाप ग्रह से दृष्ट, कोई शुभ दृष्टि नहीं, बच्चे की शीघ्र मृत्यु हो गई।

(ग) मंगल भी चन्द्रमा से अष्टम में है।

(घ) अष्टम से अष्टम तृतीय भी केतू व शनि से पीड़ित है।

इस मामले में बच्चे का जन्म केतु (अशुभ) की महादशा मंगल (द्वितीयेश और सप्तमेश होकर षष्ठ भाव में स्थित होने के कारण मारक और लग्न तथा लग्नेश को पीड़ित कर रहा है) की अन्तर्दशा तथा गुरु (तृतीयेश तथा षष्ठेश) अशुभ भावों का स्वामी होकर दूसरे भाव (मारक स्थान) में स्थित होकर दूसरे मारक के साथ स्थान परिवर्तन किया है। अतः यह स्पष्ट है कि उपरोक्त बालारिष्ट योग होने के साथ अतिरिक्त दशा काल भी अनुरूप नहीं था।

कुण्डली XVII

9 अक्टूबर, 1983 को बच्चे के पिता दुर्घटनाग्रस्त हुए, सिर में चोट आई और कुछ दिनों तक डाक्टरी उपचार होता रहा। उसी दिन पुत्र के जन्म पर हवन संस्कार हो रहा था।

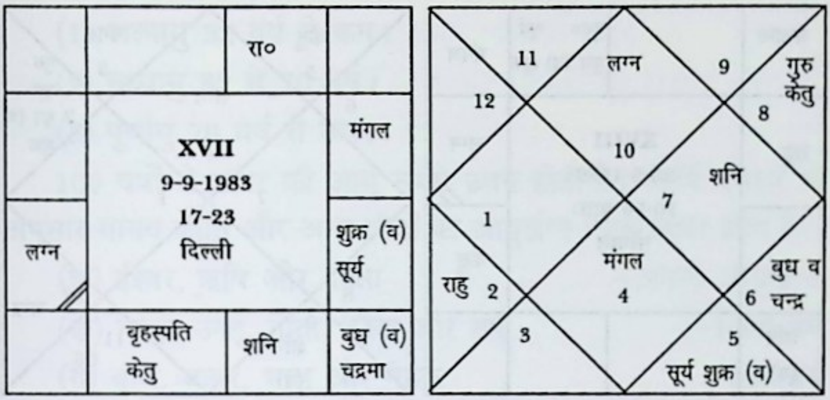

लग्न	9/29°44′	बुध (व)	5/4°46	शनि	6/7°46′
सूर्य	4/22°8′	गुरु	7/10°0′	राहु	1/27°19′
चन्द्रमा	5/25°40′	शुक्र (व)	4/0°24′	केतु	7/27°19′
मंगल	3/23°24′				

मंगल की शेष दशा 5 वर्ष 9 महीने 4 दिन

देखें पैरा 11.5 (*iv*) (क) जहाँ यह कहा गया है कि यदि चित्रा के प्रथम चरण में बच्चे का जन्म होता है तो पिता पर खतरा हो। इस मामले में पिता सौभाग्य से बच गए। जातक के पिता कुछ दिनों बाद स्वस्थ हो गए थे।

कुण्डली XVIII

(1) बच्चे के गुदाद्वार नहीं था।

(2) नली डालने के लिए छोटा आपरेशन हुआ।

(3) अपच के कारण 19 जून, 89 को अस्पताल में भर्ती किया गया। गलत इन्जेक्शन के कारण समस्या उत्पन्न हो गई।

(4) पुनः 14 अप्रैल, 1990 को अस्पताल में भर्ती किया गया और 17 अप्रैल, 1990 को आपरेशन हुआ।

(5) पेट में कुछ बीमारी के कारण पुनः 1 मई, 1990 को ऑपरेशन हुआ। पैरा 11.7 में दिए गए बालारिष्ट के कुछ सिद्धांतों की प्रयुक्ति को समझाने का यहाँ पर प्रयास किया गया है।

(क) देखें पैरा 11.7 (*i*) वक्री शनि से दृष्ट राहु अष्टम में। अष्टमेश शनि पर मंगल की दृष्टि।

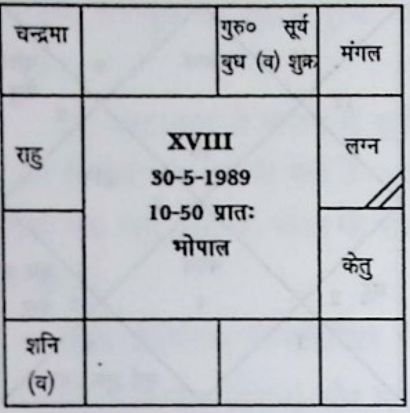

लग्न	3/26°21′	मंगल	2/25°29′	शुक्र	1/29°32′
सूर्य	1/15°4′	बुध (व)	1/5°46′	शनि (व)	8/19°11′
चन्द्र	11/12°17′	गुरु	1/22°27′	राहु	10/5°48′
				केतु	4/5°48′

(ख) देखें पैरा 11.7 (12) (घ)–मंगल से दृष्ट शनि छठे भाव में, मंगल 12वें भाव में, लग्न पर कोई शुभ दृष्टि नहीं।

(ग) देखें पैरा 11.7 (19), लग्न, अष्टम या केन्द्र में पाप ग्रहों से दृष्ट क्षीण चन्द्रमा। यहाँ चन्द्रमा क्षीण है। पाप राहु लग्न से अष्टम में हैं। चन्द्रमा से केन्द्र में दो पाप ग्रह हैं।

बालारिष्ट रद्द करने के योग भी है–

(क) लग्न, लग्नेश चन्द्रमा अच्छी स्थिति में है, कोई पाप दृष्टि नहीं है–11.8 (2)।

(ख) शुक्र स्वराशि में है–11.8(4)। बुध मित्र सूर्य के साथ मित्र राशि में है।

(ग) बृहस्पति और बुध शुक्र की राशि में उत्तम फल का द्योतक है–11.8(4)) परन्तु सूर्य से पीड़ित है इसलिए बलवान स्थिति नहीं है। लेकिन बृहस्पति मित्र चन्द्रमा के नवांश में है।

11.9 आयुर्खण्ड का बटवारा

पैरा 11.5 में 8 वर्षों तक बालारिष्ट और योगारिष्ट 20 वर्षों तक का उल्लेख किया गया है जबकि मानव जाति का आयुर्खण्ड 120 वर्षों तक माना जाता है। इस अवधि को तीन खण्डों में बांटा गया है

(1) अल्पायु 32 वर्ष से कम।

(2) मध्यायु 32 से 70 वर्ष।

(3) पूर्णायु 70 वर्ष से ऊपर।

100 वर्षों से ऊपर की आयु सबसे उत्तम होती है। महर्षि पराशर के अनुसार मानव जाति और अन्य जीवों का आयुर्खण्ड निम्न प्रकार होता है–

(क) ईश्वर, ऋषि और देवता	–अनन्त आयुर्खण्ड
(ख) गरुड़, उल्लू, तोता, कौवा और सर्प	–1000 वर्ष
(ग) बाज, बन्दर, भालू और मेढ़क	–300 वर्ष
(घ) असुर का पूरा आयुर्खण्ड	–120 वर्ष
(ङ) मानव जाति	–100 वर्ष
(च) घोड़ा	–32 वर्ष
(छ) गधे और ऊंट	–25 वर्ष
(ज) बैल और भैंस	–24 वर्ष
(झ) मोर	–20 वर्ष
(ञ) बकरे और भेड़	–16 वर्ष
(ट) बतख	–14 वर्ष
(ठ) कोयल, कुत्ता और हँस	–12 वर्ष
(ड) मुर्गी	8 वर्ष
(ढ) पक्षी आदि	7 वर्ष

11.10 आयु काल की गणना की अनेक पद्धतियाँ है। इस पर ज्योतिष विशारद के पाठ्यक्रम में विस्तृत विचार किया जाएगा। अनुमान के लिए गणना की तीन मुख्य पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं–

(क) **अंशायु**–जब सूर्य और चन्द्रमा की तुलना में लग्नेश बली हो तो लग्न और ग्रहों द्वारा दी गई अवधि जातक की आयु होती है।

(ख) **पिण्डायु**–(इसे ग्रहदत्तायुर्दया भी कहा जाता है अर्थात् सभी ग्रहों द्वारा दी गई अवधि।

(ग) **नैसर्गायुः**–(सभी ग्रहों को आवंटित वर्ष)

टिप्पणी–इन पद्धतियों पर यहाँ पर विचार नहीं किया जाएगा।

11.11 आयुर्दया के लिए जन्मकुण्डली का विश्लेषण

जन्मकुण्डली में ग्रहों की स्थिति के विश्लेषण से सामान्यतः यह पता लग जाता है जातक अल्प या मध्यम या पूर्ण आयुर्खण्ड का है। **पूर्णायुर्खण्ड के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखी जाती हैं।**

(1) यदि निम्नलिखित बातें उत्तम स्थिति में हों और बली हों–

(क) लग्न, लग्नेश और कारक (चन्द्रमा)।

(ख) अष्टम भाव और अष्टमेश।

(ग) तीसरा भाव और तृतीयेश।

(घ) शनि, आयुष्कारक पूर्णायु का संकेत देता है।

(2) 3, 6 और 11वें में पाप ग्रह।

(3) लग्न में गुरु और चन्द्रमा।

(4) ग्यारहवें भाव में लग्नेश और चन्द्रस्थ राशि स्वामी।

(5) कर्क लग्न, गुरु और चन्द्रमा लग्न में, शुक्र और बुध केन्द्र में अन्य ग्रह 3, 6 और 11वें में, जातक की आयु असीमित होती है।

(6) केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह और अशुभ ग्रह 3, 6 और 11वें भाव में। अष्टमेश शुभ ग्रह होना चाहिए– जातक दीर्घायु होता है।

(7) यदि त्रिकोण में शुभ ग्रह और लग्नेश और शुभ ग्रहों बृहस्पति से युक्त या दृष्ट हो तो जातक की पूर्णायु होती है।

(8) बृहस्पति और शुक्र से युक्त या दृष्ट लग्नेश केन्द्र में हो तो पूर्णायु होती है।

(9) उच्च के तीन ग्रह (लग्नेश और अष्टमेश सहित) और अष्टम भाव पाप ग्रह से मुक्त, पूर्णायु।

(10) बली लग्नेश, उच्च के ग्रह वर्गों में स्वराशि या मित्रराशि में, पूर्णायु।

(11) यदि शनि या लग्नेश किसी उच्च के ग्रह से युक्त हो, पूर्णायु।

(12) 3, 6 और 11वें में पाप ग्रह और केन्द्र में शुभ ग्रह

अथवा

6, 7 और 8वें में शुभ ग्रह और 3 तथा 11वें में अशुभ ग्रह (आयु के लिए उत्तम है और बाधाएँ भी दूर हो जाती है)।

(13) यदि अष्टमेश सूर्य का मित्र हो और 6 तथा 12वें में पाप ग्रह हो और लग्नेश केन्द्र में हो तो, पूर्णायु।

(14) अष्टम में पाप ग्रह और दसमेश उच्च का, पूर्णायु।

(15) लग्न द्विस्वभाव राशि में हो, केन्द्र में दो पाप ग्रह हो तथा लग्नेश बली हो, पूर्णायु।

11.12 आयुर्खण्ड का पता लगाना (पराशरी पद्धति)

महर्षि पराशर ने **लग्नेश, अष्टमेश, शनि, चन्द्रमा जन्म लग्न, होरा लग्न** के आधार पर आयुर्खण्ड (अल्प, मध्यम या पूर्ण) का पता लगाने के लिए एक पद्धति का उल्लेख किया है। इन छः को तीन समूहों (प्रत्येक में दो) में रखा जाता है।

(क) (*i*) लग्नेश और अष्टमेश

(*ii*) शनि और चन्द्रमा

(*iii*) जन्म लग्न और होरा लग्न

(ख) चर स्थिर और **द्विस्वभाव** राशियों को क्रमशः **पूर्ण,** अल्प और **मध्यम** आयु की श्रेणी में रखा जाता है।

(ग) (*i*) यदि एक समूह का कोई एक खण्ड चर राशि में हो और दूसरा स्थिर राशि में तो, मध्यम

(*ii*) यदि दोनों ही सदस्य चर राशि में हों तो, पूर्णायु

(*iii*) यदि किसी ग्रुप से कोई एक सदस्य स्थिर राशि में हों और दूसरा द्विस्वभाव राशि में तो, पूर्णायु

(*iv*) यदि दोनों ही स्थिर राशि में हो, अल्पायु

(*v*) यदि दोनों ही द्विस्वभाव राशि में हो, मध्यम आयु

टिप्पणी—होरा लग्न की गणना

सूर्योदय काल से जन्म समय तक अंतर (घंटों और मिनटों में) निकाल लें। घंटे को राशि और शेष को मिनट मानकर 2 का भाग दें। सम लग्न में भागफल को लग्न के भोगांश में जोड़ें और विषम लग्न में सूर्य के भोगांश

में। इसमें होरा लग्न का निर्धारण होगा। होरा लग्न की विस्तृत गणना के लिए पैरा 11.16 देखें।

सिद्धांत की सारणीबद्ध प्रयुक्ति

	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	आयुर्दयाखण्ड
	पूर्ण	अल्प	मध्यम	
(*i*)	लग्नेश, अष्टमेश	–	–	पूर्ण
	–	लग्नेश, अष्टमेश	–	अल्प
	–	–	लग्नेश, अष्टमेश	मध्यम
(*ii*)	शनि, चन्द्रमा	–	–	पूर्ण
	–	शनि, चन्द्रमा	–	अल्प
	–	–	शनि, चन्द्रमा	मध्यम
(*iii*)	जन्म लग्न, होरा लग्न	–	–	पूर्ण
	–	जन्म, लग्न, होरा लग्न	–	अल्प
	–	–	जन्म लग्न, होरा लग्न	मध्यम
(*iv*)	लग्नेश	अष्टमेश	–	मध्यम
	–	लग्नेश	अष्टमेश	पूर्ण
	लग्नेश	–	अष्टमेश	अल्प
(*v*)	शनि	चन्द्रमा	–	मध्यम
	–	शनि	चन्द्रमा	पूर्ण
	शनि	–	चन्द्रमा	अल्प
(*vi*)	जन्म लग्न	होरा लग्न	–	मध्यम
	होरा लग्न	–	जन्म लग्न	अल्प
	–	जन्म लग्न	होरा लग्न	पूर्ण

11.13 ऊपर के तीन समूहों में से (पैरा 11.12 (क) (*i*) (*ii*) (*iii*)) यदि उनका परिणाम (11–12 ख और ग) तथा दी गई ऊपर सारणी के फल एक ही हैं तो (क) आयुर्खण्ड तदनुसार पूर्ण, मध्यम तथा अल्प होगा।

(ख) यदि एक में अंतर है और दो में एक ही स्थिति है तो दो समूहों द्वारा दिया गया फल लै, *भिन्न-भिन्न हो-जन्म लग्न और होरा लग्न की आयु सही मानी जाए।*

(घ) यदि जन्म का चन्द्रमा लग्न में हो या 7 में या लग्नेश हो तो शनि के समूह द्वारा दिया गया आयुर्खण्ड सही माना जाए।

11.14 तीन आयुर्खण्ड

इन तीन आयुर्खण्ड अल्प, मध्यम और पूर्ण को पुनः निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है—

अल्प = अल्प, मध्यम, पूर्ण

मध्यम = अल्प, मध्यम, पूर्ण

पूर्ण = अल्प, मध्यम, पूर्ण।

इस प्रकार कुल आयुर्खण्ड को 9 खण्डों में बांटा जाता है। सर्वप्रथम विश्लेषण करते समय तीन मुख्य समूहों के अनुसार जातक के आयुर्खण्ड का निर्धारण किया जाता है। यदि पैरा 11.11 (1) में दिया गया योग जन्म कुण्डली में विद्यमान हो तो जातक उस आयुर्खण्ड की पूरी अवधि तक जीवित रहेगा।

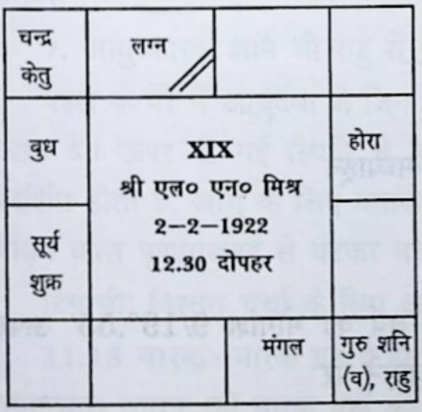

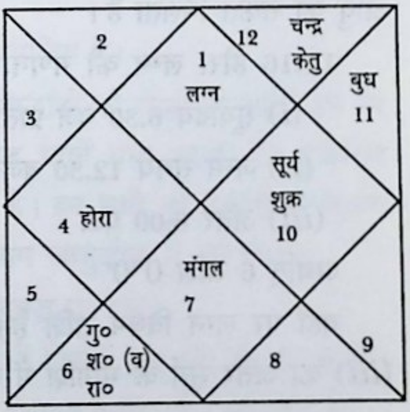

लग्न	0/12°25′	मंगल	6/28°40′	शुक्र	9/18°16′
सूर्य	9/19°55′	बुध	10/6°38′	शनि (व)	5/14°22′
चन्द्रमा	11/17°20′	गुरु	5/26°6′	राहु	5/19°14′
		केतु	11/19°14		

11.15 निम्नलिखित उदाहरण से यह स्पष्ट होगा–

बुध की महादशा शेष 16 वर्ष 1 महीने 24 दिन

मृत्यु की तारीख 2. 1.1975 (चन्द्र/गुरु/बुध में)

मृत्यु का कारण–विस्फोट

आयुर्खण्ड	पूर्ण	अल्प	मध्य	फल–
राशि	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	
सिद्धांत–(*i*)	लग्नेश			
	अष्टमेश	–	–	पूर्ण
(*ii*)			शनि	
			चन्द्रमा	मध्य
(*iii*)	जन्म लग्न			
	होरा लग्न			पूर्ण

उपरोक्त जन्म कुण्डली में लग्न और अष्टमेश एक ही ग्रह है। इसलिए छोड़ना होगा। अन्य दो मामलों में फल में अंतर है। अतः अंतिम समूह द्वारा दिया गया फल, लग्न और होरा को सही माना जाएगा। जातक की पूर्ण आयु का संकेत मिलता है।

11.16 होरा लग्न की गणना–

(*i*) सूर्योदय 6.30 बजे प्रातः

(*ii*) जन्म समय 12.30 बजे मध्याह्न

(*iii*) अंतर 6.00 घंटा

अर्थात् 6 राशि $0^\circ 0'$

यहाँ पर लग्न विषम राशि है। सूर्य का भोगांश $9/19^\circ.55'$ ऊपर (*iii*) का अंतर सूर्य के भोगांश में जोड़ने पर

$9.19^\circ 55' + 6.0^\circ 0' = 15.19^\circ 55$ या $3.19^\circ 55'$

होरा लग्न कर्क $19^\circ 55'$

जातक की मृत्यु 53 वर्ष की आयु में हुई जो मध्यम आयुर्खण्ड में आता है।

11.17 आयुर्दया का विश्लेषण–

1. लग्न पर केवल अशुभ ग्रह की दृष्टि है। मंगल लग्नेश है। मंगल की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए शुभ है। क्योंकि अपने भाव पर स्वामी की शुभ दृष्टि भी माना जाएगा।

2. चन्द्रमा 12वें भाव में केतु के साथ है और उस पर शनि की दृष्टि है।

3. लग्नेश मंगल 7वें भाव में शनि (व) से दृष्ट है (वक्री होने के कारण शनि सिंह से भी प्रभावित करता है)।

4. *चन्द्रमा से अष्टम में अशुभ ग्रह है (अर्थात् मंगल जो दुर्घटना से मृत्यु देता है)।*

5. सिवाए शुक्र (द्वितीयेश व सप्तमेश (मारक)) के जन्म लग्न से केन्द्र में कोई शुभ ग्रह नहीं है और वह भी अस्त है।

6. चन्द्रमा से भी यही स्थिति है। केवल लग्नेश (चन्द्रस्थ राशि स्वामी) बृहस्पति केन्द्र में है जो शनि, तथा राहु से बुरी तरह प्रभावित है और अशुभ ग्रहों के बीच है। बृहस्पति मंगल के नक्षत्र में है और मंगल बृहस्पति के नक्षत्र में है।

7. आयुष्कारक शनि भी राहु से प्रभावित है।

पहले के पैरे में आयुर्दया के जिन सिद्धांतों की चर्चा की गई है उन पर ध्यान दें। ऊपर दी गई स्थिति से मूल भावों तथा स्वामी पर दुष्प्रभाव प्रदर्शित होता है, आयु के लिए घातक है। इन सभी बुरे प्रभावों के कारण जीवन काल पूर्णायुर्खण्ड से घटकर मध्यम आयुर्खण्ड में आ गया।

टिप्पणीः विस्तृत चर्चा के लिए अनुबद्ध III देखें।

11.18 मारक–मारक ग्रह वे होते हैं जिनमें मृत्यु देने की क्षमता हो। सामान्यतः जातक की मारक ग्रहों की दशा/अन्तर्दशा में मृत्यु होती है।

मारक शब्द से ही ऐसा पता लगता है कि हम उन ग्रहों के बारे में बातचीत करने जा रहे हैं जो मृत्यु या महान कष्ट देने वाले हैं। इस विषय को भली भांति समझने के लिए विद्यार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य ग्रहों वाले

अध्याय को पढ़े जहाँ पर इन ग्रहों को सारणीबद्ध किया गया है। (पैरा 10.10 से 10.23 तक)

आयु के लिए हम अष्टम (आयुस्थान) तथा तृतीय (अष्टम से अष्टम) भावों का विचार करते हैं। मारक ग्रह आयु में कटौती करते हैं अथवा आत्मा द्वारा शरीर परिवर्तन अथवा विदेश यात्रा। इसका अर्थ व्यय/विदेश यात्रा है जो आयुर्खण्ड में कटौती देते हैं। व्यय/हानि के लिए 12वें भाव को व्यय भाव कहा जाता है। तथा मोक्ष स्थान/आत्मा का शरीर से स्वतंत्र होना। इस प्रकार आठवें से बारहवाँ भाव **सप्तम भाव** हुआ तथा तीसरे से 12वां **दूसरा भाव** हुआ। इस प्रकार जन्म लग्न से दूसरे तथा सातवें भाव मृत्यु भाव हुए और इन भावों के स्वामी मारक हुए। आइए इन पर एक-एक करके विचार करें।

नोटः जब किसी की मृत्यु होती है तो कहते हैं कि "स्वर्गवास" हो गया।

11.19 मारक शक्ति–

(*i*) दूसरे और सातवें में से सप्तम की तुलना में दूसरा अधिक बलि मारक होता है।

(*ii*) दूसरे भाव को धन भाव या वाणी भाव के रूप में लोग अधिक महत्त्व देते हैं। धन तभी लाभप्रद होता है जब स्वास्थ और जीवन दोनों हो अन्यथा धन होते हुए भी डॉक्टर पौष्टिक भोजन लेने से मना करता है। यदि धन को भी **"विष्णु"** का आर्शीवाद प्राप्त हो अर्थात् लक्ष्मीनारायण की कृपा (केन्द्र और त्रिकोण का योग) दोनों का धन स्थान पर प्रभाव शुभ होता है। यही बात सप्तम भाव पर भी लागू है, यदि वैवाहिक जीवन सुखमय हो तब वह व्यक्ति भाग्यशाली होता है। यह सप्तमेश और सप्तम भाव के बलाबल पर निर्भर करता है अन्यथा यह फल मारक का होगा। यह भी सप्तमेश और सप्तम भाव के कारण होता है।

(*iii*) दूसरे तथा सातवें भावों के स्वामी, इन भावों में अशुभ ग्रहों की स्थिति, द्वितीयेश तथा सप्तमेश आदि के साथ युक्त क्रूर ग्रह में सभी मारक बन जाने हैं।

(*iv*) द्वादशेश से संबंधित शुभ ग्रह की दशा भी मृत्यु/कष्ट देने के लिए सक्षम होता है।

(*v*) बली अशुभ ग्रह की दशा में मृत्यु हो सकती है।

(*vi*) अष्टमेश अपनी दशा में जातक को मृत्यु दे सकता है।

(*vii*) 12वां भाव लग्न से 12वां होता है। अतः यह भी वही फल देता है (अर्थात् शरीर का नाश) (भौतिक शरीर लग्न, प्रथम भाव से देखा जाता है)।

(*viii*) 12वें भाव को मोक्ष स्थान भी कहा जाता है (वर्तमान जीवन की समाप्ति का भाव)

11.20 आरोही क्रम से मारक निम्न प्रकार है–

(*i*) 12वा, 3रा, 8वा, 7वा और 2रा भाव

(*ii*) छठे भाव में स्थित ग्रह और षष्ठेश तथा एकादशेश को भी द्वितीय श्रेणी का मारक माना जाता है।

(*iii*) 5, 9, 10वें भावों के स्वामी तथा उनमें स्थित ग्रह और लग्न भी तीसरी श्रेणी के मारक होते हैं।

11.21 ग्रहावधि के कार्य–जब तक जीवन का अंत न आया हो तब तक द्वितीयेश तथा सप्तमेश की दशा मारक दशा नहीं होती। द्वितीयेश धन दे सकता है और सप्तमेश शादी करने में सक्षम होता है (यदि शादी योग्य उम्र हो)। यह भाव उन्नति व समाज में पदोन्नति भी देता है। यदि इन मारक स्थानों के स्वामी की दशा हो, या अशुभ ग्रह की दशा हो और आयु सभी शेष हो तो जातक की मृत्यु नहीं हो सकती है, किंतु उसे कठिन परिस्थितियों या रोग या दुर्घटना, मरण या मरण तुल्य कष्ट का सामना करना पड़ेगा।

11.22 दशा/अन्तर्दशा के प्रभाव (*i*) अशुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा मृत्यु नहीं देती किन्तु अशुभ ग्रह की अन्तर्दशा (भले ही दशा नाथ से संबंधित न हो) मृत्यु देने में सक्षम है। इसका अर्थ यह है कि जब कोई शुभ ग्रह किसी अशुभ ग्रह से युति करे तो अशुभ ग्रह अपनी महादशा काल में उस शुभ ग्रह की अन्र्तदशा काल में मृत्यु नहीं देता है।

लेकिन वही अशुभ ग्रह किसी अन्य अशुभ ग्रह की अन्तर्दशा में (भले ही वह अशुभ ग्रह, महादशानाथ के साथ युक्त न हो) मृत्यु देता है।

(*ii*) लग्न व चंद्रमा से अष्टम भाव से उद्भूत प्रभावों या अष्टमेश के नवांश राशि के बुरे प्रभावों के कारण आयु खतरे की भविष्यवाणी की जा सकती है।

11.23 महादशा/अंतर्दशा/प्रत्यन्तर्दशा का प्रयोग

पैरा 11.15 में दिए गए उदाहरण में जातक चन्द्रमा की महादशा, वृहस्पति की अन्तर्दशा और बुध की प्रत्यन्तर दशा में दुर्घटनाग्रस्त हुआ।

1. चन्द्रमा चतुर्थेश होकर केतु के साथ 12वें भाव में स्थित है तथा शनि (दशमेश और एकादशेश) और बृहस्पति (नवमेश और द्वादशेश से दृष्ट है) चन्द्रमा को मारक बल है। चन्द्रमा अष्टमेश के नवांशेश बुध के नक्षत्र में है जो छठे भाव का स्वामी है और चंद्रमा से सप्तमेश है। मंगल चन्द्रमा से अष्टम में है। (दुर्घटना का योग)

2. बृहस्पति द्वादशेश होकर छठे भाव में स्थित है और शनि तथा राहु से प्रभावित है। चन्द्रमा बृहस्पति की राशि में है और बृहस्पति (नियंत्रक) चन्द्रमा से सप्तम भाव में शनि के साथ स्थित है जो 12वें भाव का स्वामी है। बृहस्पति द्वादशेश होकर छठे भाव में स्थित है और लग्नेश से 12वें में स्थित होकर मारक बल प्राप्त कर रहा है।

3. तृतीयेश और षष्ठेश बुध 11वें भाव में मंगल के नक्षत्र में स्थित है। बुध लग्नेश मंगल से 12वें भाव का स्वामी है।

चन्द्रमा से सप्तम भाव का स्वामी होकर बुध 12वें में स्थित है और द्वादशेश शनि के साथ राशि परिवर्तिन में है। षष्ठेश तथा एकादशेश का स्थान परिवर्तन है प्रथम तथा *महादशानाथ तथा अन्तर्दशानाथ से प्रत्यन्तर दशानाथ की स्थिति भी देखी जानी है।* बृहस्पति चन्द्रमा से सप्तम भाव में है। बुध वृहस्पति से छठे में है तथा चन्द्रमा से 12वें में है। यह स्थिति पुनः जातक के लिए खराब है। इस प्रकार बुध भी मारक बनता है। व्यावहारिक दृष्टि से इस विषय को गोचर के साथ भली भांति समझा जा सकता है जिससे किसी घटना के घटित होने के समय का पता लगाया जा सकता है। नीचे दिए गए उदाहरण को देखें।

गोचर दिनाँक 2-1-1975

जिस दिन श्री एल. एन. मिश्रा जी की मृत्यु विस्फोट में हुई।

गोचर

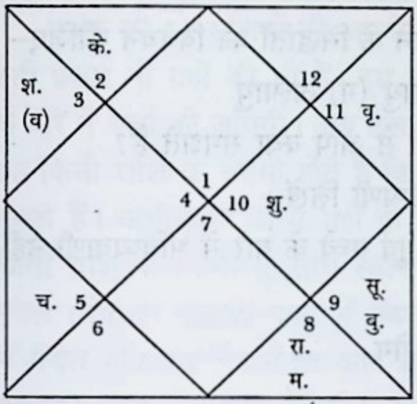

जन्म कुण्डली

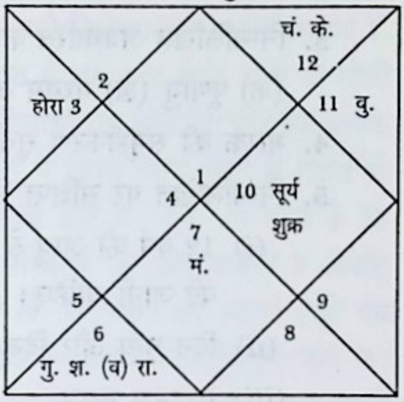

दशा चं./वृ./बु. की थी

(*i*) चंद्रमा की राशि से छठे गोचर का चंद्रमा

(*ii*) लग्न से अष्टम भाव में राहू तथा मंगल

(*iii*) जन्म कालीन सूर्य से गोचर का सूर्य बारहवें

(*iv*) जन्म कालीन लग्नेश मंगल से गोचर का मंगल राहू के साथ दूसरे भाव में

(*v*) गोचर का बृहस्पति नीच स्थान से निकलकर शनि तथा मंगल से पीड़ित है; जो अंतरदशा नाथ है।

चंद्रमा गोचर में; जो महादशा नाथ है निर्बल है क्योंकि कृष्ण पक्ष का है तथा शनि से पीड़ित है। उससे चतुर्थ स्थान में मंगल तथा राहू हैं।

बुध गोचर में (जो प्रत्यंतर दशा नाथ है) शनि से पीड़ित है, सूर्य के साथ शत्रु बृहस्पति की राशि में है। तीनों दशा नाथ गोचर में पीड़ित है। चंद्रमा से बृहस्पति सप्तम में (मारकेश बना)।

दशा व गोचर भी दुर्घटना का संकेत दे रहे हैं। लग्न से अष्टम पीड़ित, लग्नेश मंगल से द्वितीय में मंगल राहू का गोचर, जन्म राशि पर गोचर के शनि की दशम दृष्टि, द्वितीय भाव में केतू तथा राहू-मंगल गोचर में घटना का इशारा कर रहे हैं।

अभ्यास

1. आप आयु का निर्धारण किस प्रकार करेंगे।
2. मारक का अवधारण किस प्रकार किया जाता है।
3. निम्नलिखित अवधारित करने के सिद्धांतों का विवेचन कीजिए–
   (क) पूर्णायु (ख) मध्यम आयु (ग) अल्पायु
4. मारक की समूहीकरण सूची से आप क्या समझते हैं?
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें–
   (*i*) 12 वर्ष की आयु से पूर्व बच्चे के बारे में भविष्यवाणी नहीं की जानी चाहिए।
   (*ii*) दिन मृत्यु और दिन रोग
   (*iii*) गण्डमूल नक्षत्र
   (*iv*) गण्डान्त (राशियान्त)
6. बालारिष्ट के महत्त्वपूर्ण योग लिखें।
7. अल्पायु, योगारिष्ट और बालारिरूट से आप क्या समझते हैं।
8. क्या ज्योतिष के आधार पर जातक की मृत्यु की भविष्यवाणी की जा साकती है? उदाहरण दें।

❑❑❑

पाठ—12
ग्रह—विभिन्न राशियों में

भचक्र की 12 राशियों की अपनी-अपनी विशेषताएं तथा विविधताएं हैं, इसी प्रकार नौ ग्रहों की भी हैं। इस पाठ में ग्रह तथा राशि दोनों के योगों के बारे में चर्चा की जाएगी। अब तक विद्यार्थी यह जान गए होंगे कि प्रत्येक ग्रह किसी राशि के स्वामी होते हैं किन्तु वे किसी अन्य राशि में स्थित हो सकते हैं। कभी-कभी अन्य ग्रहों के साथ होते हैं। ऐसा भी होता है कि किसी राशि के स्वामी के साथ स्थान परिवर्तन का योग बनाता है अर्थात् *मंगल (मेष का स्वामी) मकर में स्थित हो और मकर का स्वामी शनि मेष में स्थित हो।* यहां पर मंगल और शनि के बीच राशि-परिवर्तन योग है। मंगल उच्च का है और शनि नीच का। शनि की दशम् दृष्टि मंगल पर है और मंगल की चतुर्थ दृष्टि शनि पर। ये दोनों ही ग्रह आपस में निकट संबंध बना रहे है। इस प्रकार के योग की प्रतिक्रिया भी होगी। नीले और पीले रंग को मिलाने पर हरा रंग बनता है। इसी प्रकार यदि कोई ग्रह किसी राशि में स्थित हो तो दोनों विशेषताओं को मिलाकर कुछ फल उत्पन्न होता है। इस प्रकार के मिश्रण के प्रभाव को समझना होता है क्योंकि फलित ज्योतिष के लिए यह अति आवश्यक है।

12.1 सूर्य—

(*i*) सूर्य मेष में—

(*i*) जातक साहसी, बुद्धिमान, सक्रिय, भूस्वामी, गांव या नगर का स्वामी, समाज का कल्याण करने वाला, प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। कफ संबंधी रोग, रक्त आदि से संबंधित विकार तथा मजबूत शरीर वाला होता है। वह कला में प्रवीण, युद्ध का शौकीन, घुमक्कड़, कर्त्तव्यपरायण तथा जोखिम भरा कार्य करने वाला होता है। वह शास्त्रों का ज्ञाता और उस पर टीका करने वाला होता है।

(*ii*) इस राशि में सूर्य उच्च का होता है जिससे वह अक्सर घूमने का शौकीन होता है। सूर्य इस राशि से पंचम का स्वामी है। जातक में ताप की

अधिकता होगी। अतः वह शक्तिमान, सूर्य के स्वभाव के अनुसार शासन करने वाला और मंगल (मेष का स्वामी) सेनापति के समान आदेश देने वाला होता है। जातक को विरासत में आकर्षक प्रभावशाली व्यक्तित्व मिलता है। वह राजसी तथा कमाण्ड करने वाला, चिड़चिड़ा एवं संवेदनशील होता है। मेष में सूर्य, डॉक्टर, जहर से चिकित्सा करने वाला चिकित्सक आदि बनाता है। जातक अधीनस्थता स्वीकार नहीं करता। मेष भचक्र की पहली राशि है अतः सिर का द्योतक है। सूर्य आत्मा और सिर का भी द्योतक है। जातक में शासन करने की प्रवृत्ति होती है तथा वह शासक की स्थिति में प्रसन्न रहता है। यह राजनैतिक महत्वाकांक्षी के लिए उत्तम स्थिति है।

कुण्डली X तथा XXXV देखें।

(2) सूर्य वृषभ में–

(*i*) जातक मुख और आंख के रोग से पीड़ित रह सकता है। उसका शरीर क्षीण, सुन्दर होता है। बांझ औरत से घृणा करता है। सुगंधी, सजावट की वस्तुओं, बिस्तर-सुख, सुंदर, पोशाक, मित्रमण्डली का शौकीन होगा। जातक जल से भय करने वाला, पशु रखने तथा उससे लाभ कमाने वाला होगा। जातक संगीत, स्वादिष्ट व सरल पेय पदार्थ का शौकीन तथा सामाजिक व्यक्ति होगा। ऐसा व्यक्ति सुगंधी आदि का व्यापार करता है। वह आत्म विश्वासी और बुद्धिमान होगा।

(*ii*) सूर्य और शुक्र आपस में शत्रु है। वृषभ में सूर्य (यहां से चौथे भाव का स्वामी) की स्थिति उसके लिए उत्तम स्थिति नहीं है। चूंकि सूर्य आत्मा है अतः इस राशि का प्रभाव उस पर रहेगा। जहां तक तत्त्वों का संबंध है, सूर्य अग्नि प्रकृति वाली राशि का स्वामी होकर पृथ्वी तत्त्व में स्थित होने के कारण कोई समस्या नहीं है। ऊपर (*i*) में दिया गया प्रभाव होगा क्योंकि ऋषियों द्वारा ऐसा ही बताया गया है कि जातक उन सभी चीज़ों को प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहेगा। उन्हें प्राप्त कर सकता है, परंतु पूरा प्रभाव नहीं होगा क्योंकि उन्हें प्राप्त करने के लिए उसके पास न तो समय होगा और न ही धन। देखें कुण्डली VI

(3) सूर्य-मिथुन में–

(*i*) जातक विद्वान, गणितज्ञ, वाद-विवाद में निपुण, भाषण देने में सक्षम, प्रसिद्ध विद्वान, विनम्र, ज्योतिषी, खगोल शास्त्री, शास्त्रों का ज्ञाता, व्याकरणाचार्य, अपनी नीतियों के लिए प्रसिद्ध होगा, उत्तम आचरण वाला तथा दो माताओं वाला होगा।

(*ii*) सूर्य बुध का मित्र है किन्तु बुध सूर्य के लिए सम है। मिथुन से सूर्य तीसरे भाव का स्वामी है। सूर्य और बुध के योग को 'बुध–आदित्य योग' कहा जाता है जो अक्सर ही बनता रहता है। इसका अर्थ है कि जातक काफी विद्वान, सभी कार्यों में दक्ष, प्रसिद्ध, स्वाभिमानी होगा, उसके पास जीवन के सभी सुख होंगे। एक मूर्ख के पास बादशाहत हो सकती है किन्तु वह जीवन भर उसका आनन्द नहीं उठा सकता। केवल होशियार और शक्तिशाली व्यक्ति ही शासन कर सकता है। राजसी ग्रह सूर्य बुद्धिमान की राशि में है। पुनः वायु (मित्र तत्व) राशि बुद्धि का द्योतक है। जातक सांसारिक अनुभवों से प्राप्त ज्ञान में निपुण होगा। देखें कुण्डली VII.

(4) सूर्य कर्क में–

(i) जातक के मस्तिष्क में स्थिरता नहीं होती। वह अपनी राजसी गुणों के लिए प्रसिद्ध होता है तथा अपने ही लोगों से घृणा करता है। पत्नी की ओर से वह दुर्भाग्यशाली होता है। जातक क्रूर स्वभाव वाला, पिता की आज्ञा न मानने वाला, कलियुग के प्रभावों से परिपूर्ण होगा। जातक धनी, क्रूर, अकर्मण्य, अप्रसन्न, निपुण ज्योतिषी, भूगोलशास्त्री और वैज्ञानिक, यात्रा करने वाला तथा स्वतन्त्र स्वभाव का होता है और वह रोगी कफ, पित्त रोग से परेशान रहेगा।

(*ii*) तापीय ग्रह सूर्य जलीय राशि में स्थित होकर कर्क राशि से दूसरे भाव का स्वामी है, जो धन के लिए अति उत्तम है, किन्तु स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। यदि सूर्य और चन्द्रमा निकट हों तो चन्द्रमा क्षीण हो जाता है जो स्वास्थ्य का कारक होता है। इस कारण रोग होता है। सूर्य इस राशि में अपनी शुभता तथा ऊर्जा खो देता है। देखें कुण्डली XXIX.

(5) सूर्य सिंह में–

(*i*) जातक स्थिर मस्तिष्क वाला, दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी और साहसी, उत्साही, पराक्रमी, अपनी क्षमता तथा अच्छे गुणों के लिए प्रसिद्ध, सुन्दर आकृति, राजाओं से सम्मानित, दूसरों की मदद करने वाला तथा संतुष्ट करने वाला हो। वह बलवान, क्रूर, स्वतंत्र, संगठित करने की क्षमता वाला तथा प्रचार करने की योग्यता वाला होगा। वह अपने शत्रुओं का नाश करता है तथा जंगलों, पहाड़ों एवं किलों में विचरण करता है। जातक राजा, प्रचुर धन वाला तथा प्रसिद्ध होगा।

(*ii*) यहां पर स्वामी अपनी ही राशि में है। अतः सूर्य बली है। इस प्रकार अच्छा प्रभाव होगा, स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। स्थिर राशि में बली ग्रह स्थिर स्वभाव देता है। जातक महान आत्मा वाला होता है। देखें कुण्डली XXXVI.

(6) सूर्य कन्या में–

(*i*) जातक को राजा या सरकार से धन प्राप्त होता है, मधुर भाषी, दूसरों के गाने को दोहराने वाला, पशुओं को पराजित करने वाला हो। वह वेदों, संगीत, गणित में निपुण तथा साहित्य में रुचि रखने वाला, विद्वान, लेखक अच्छी स्मृति वाला, विनम्र और मधुर भाषी, कलाकार, कवि और अनेक भाषाओं का ज्ञाता होगा।

(*ii*) सूर्य और बुध के कारण 'बुध-आदित्य' योग बनता है ठीक वैसे ही जैसे मिथुन में बनता है। किन्तु यहां पर स्थिति उत्तम है क्योंकि यह बुध की उच्च राशि और मूलत्रिकोण राशि है। कन्या में बुध अधिक बली होता है। मिथुन में सूर्य अपनी उच्च राशि के निकट था, पर इस राशि में सूर्य अपने नीच बिन्दु के निकट है और इस राशि से 12वें भाव का स्वामी भी है। सूर्य निर्बल है। यह पृथ्वी राशि है। इस राशि की विशेषताएं अधिक उजागर होंगी अर्थात् गणितज्ञ, लेखन कार्य, प्रबुद्ध, मधुर भाषी, कलाकार, कवि, दयालु आदि। देखें कुण्डली के. एन. राव XXX, महात्मा गाँधी V.

(7) सूर्य तुला में–

(*i*) शराबी, अनैतिक, अन्य स्त्रियों के साथ संबंध बनाने वाला, दुष्ट, स्पष्ट, शराब बनाने वाला, राजा से भयभीत, झगडालू, विरोध करने वाला,

उलझन पैदा करने वाला, गन्दा, दरिद्र दूसरों के लिए काम करने वाला, मेलजोल बढ़ाने वाला, दुष्ट हो। वह उदासीन रहने वाला, विनाश करने वाला तथा अधिक व्यय करने वाला होगा।

(*ii*) यहां पर भी स्थिति वही है जो वृषभ में है अर्थात् सूर्य शुक्र की राशि में है। सूर्य और शुक्र शत्रु हैं। वृषभ में सूर्य अपनी उच्च राशि के निकट होता है किन्तु इस राशि में सूर्य अपनी नीच राशि में होता है। इस राशि में सूर्य का बल समाप्त हो जाता है। आत्मकारक सूर्य पूर्णतः निर्बल है अतः उसकी नैतिकता समाप्त हो जाती है तथा वह तुला की विशेषताओं के अधीन हो जाता है। सूर्य तुला में 10° (राहू के नक्षत्र में) पर कुण्डली में विद्यमान अन्य योगों को समाप्त कर देता है। वृषभ पृथ्वी तत्त्व राशि है किन्तु तुला वायु तत्त्व राशि है। अतः सूर्य की गंभीरता समाप्त हो जाती है और जातक हवाई महल बनाता है। जातक बुद्धिमान हो सकता है किन्तु जनता में छवि बनाने में रुचि रहीं रखेगा। देखें कुण्डली VIII, XII.

(8) सूर्य वृश्चिक में—

(*i*) जातक कंजूस, झगडालू, अति क्रोधी होगा। वह विष, अग्नि, हथियार, चोरों से भयभीत होगा। वह माता पिता का विरोध करने वाला, वैदिक मार्ग से दूर, मिथ्यावादी होगा तथा जीवन में प्रगति करने में असमर्थ होगा। वह चिड़चिड़ा, अशिष्ट, क्रूर हठधर्मी, सिद्धांत रहित, दुष्ट आदि होगा। उसमें सैनिक क्षमता हो सकती है, किन्तु यह युद्ध या शल्य कौशल में सक्षम नहीं हो सकता। उसकी अपनी पत्नी नीच होगी या अपनी पत्नी को खो देगा।

(*ii*) यहां पर सूर्य अपने मित्र की राशि में है। स्थिति वही हो सकती है जो मेष में है। मेष अग्नि राशि है और यह जलीय राशि है जो अग्नि ग्रह के लिए शत्रु राशि है। मेष राशि से प्राप्त मंगल और सूर्य के उत्तम गुण यहां नहीं प्राप्त हो सकते क्योंकि मेष सूर्य की उच्च राशि है। और यहां सूर्य अपने नीच राशि के निकट है। परंतु सूर्य इस राशि से 10वें भाव का स्वामी है। जातक में सैनिक योग्यता और शल्य कौशल के गुण हो सकते हैं। अन्यथा सभी बुरे फल होंगे अर्थात् झगड़ालू, पत्नी के कारण उत्पीड़न, हथियार, अग्नि, विष, नेत्र रोग आदि होंगे। देखें इन्दिरा गाँधी की कुण्डली XXIII.

(9) सूर्य धनु में–

(*i*) वह सुन्दर और गठीला शरीर वाला, बलवान होगा। बुद्धिमान, मेधावी, माता-पिता और बड़ों का आदर करने वाला, संबंधियों की सहायता करने वाला होगा। वह हमेशा ही सीखने और शिक्षा में रुचि रखने वाला, शांत वातावरण पसंद करने वाला होगा। वह विश्वासी सभी से आदर पाने वाला, प्रसन्नचित्त, लोकप्रिय, धर्म संगीत, राजा का प्रिय, हथियारों का प्रशिक्षण देने में निपुण, सम्मानित और शांत प्रिय होगा।

(*ii*) अग्नि राशि जो द्विस्वभाव (अध्यात्म) राशि तथा बृहस्पति (ज्ञान) की राशि है, में अग्नि ग्रह। ऐसी परिस्थिति में सूर्य (आत्मा) को निश्चय ही उत्तम फल होगा जैसा कि ऊपर बताया गया है। यद्यपि सूर्य अपनी नीच राशि के निकट है, परन्तु अब (आरोही) उच्च राशि की ओर अग्रसर है। देखें. कुण्डली XXVI.

(10) सूर्य मकर में–

(*i*) ऐसा जातक नीच विचार वाला, हठधर्मी, अशिक्षित, कंजूस, अप्रसन्न, सक्रिय और कृतज्ञ होगा। वह नीच स्त्रियों में रुचि रखने वाला, लालची, डरपोक, संबंधियों से दूर, चिड़चिड़ा, घुमक्कड़ होगा और अपने संबंधियों से विवाद में सब कुछ खो देगा। ऐसा जातक, मजाकिया होता है। उसे अपने शत्रुओं, विरोधियों और यहां तक की अपने ही लोगों के लिए यात्रा करनी पड़ती है। धनी होता है किन्तु धन का उपभोग करने की स्थिति में नहीं होता। वह भोजन का लोलुप होगा।

(*ii*) यहां सूर्य शत्रु राशि में है। पृथ्वी राशि में है। इस राशि के लिए सूर्य अष्टम का स्वामी है। सूर्य की महत्ता पूरी तरह प्रदर्शित नहीं होगी। स्थिति ठीक उसी प्रकार होगी जो नीच जाति के शत्रु के घर में किसी व्यक्ति का होता है। सूर्य और शनि के योग से जीवन अस्त व्यस्त विशेषकर स्वास्थ्य और परिवार की ओर से संताप हो जाता है। देखें कुण्डली देखें कुण्डली XIII, XX.

(11) सूर्य कुंभ में–

(*i*) जातक बलवान और साहसी होगा और क्रोध करने वाला होगा। प्रत्यक्षतः दुष्ट, सामाजिक कार्य में व्यस्त रहेगा। प्रत्यक्षतः बहुत रुचि लेने

वाला किन्तु ईमानदार और सुहृद्भाव वाला होगा। उस व्यक्ति का आशय स्पष्ट नहीं भी हो सकता है। वह अन्य गृहिणी के माध्यम से भाग्यशाली होगा किन्तु दयनीय तथा थोड़ा धन वाला होगा। उसके पास सहानुभूति नाम की कोई चीज़ नहीं होगी और दूसरों को कष्ट पहुंचाकर प्रसन्न होगा। हृदय रोग से पीड़ित हो सकता है। जातक निर्धन, अप्रसन्न, दुर्भाग्यशाली, असफल और हठधर्मी होगा।

(*ii*) सामान्यतः स्थिति वही रहती है जो मकर में है। यहां पर सूर्य शत्रु की राशि में है जिसका स्वामी शनि है। शनि भागीदारी वाले भाव (सप्तम) का स्वामी होता है। सूर्य यहां पर सप्तम अपनी राशि से (पाताल) निर्बली होता है। सूर्य पश्चिम दिशा में अस्त होता है (सप्तम पश्चिम है)। यहां पर सूर्य अपनी राशि से सप्तम में है। कुंभ के गुण प्रबल होंगे, सूर्य निर्बल होगा। किन्तु सूर्य एक राजसी ग्रह है अतः इसमें बदले की भावना दुष्टता झगडालू स्वभाव होगा। वह संतुष्ट नहीं होगा और सदा ही अप्रसन्न रहेगा। धन और शादी के मामले में वह प्रसन्न नहीं होगा। देखें कुण्डली XI, XIV, XV.

(12) सूर्य मीन में–

(*i*) जातक चतुर और मोती के कारोबार से धन अर्जित करने वाला होगा। वह खरीद बिक्री का व्यापार करता है। वह बुद्धिमान, धार्मिक, शांतिप्रिय, मित्रवत् स्त्रियों में रुचि लेने वाला, प्रसन्न, विद्वान, धन और प्रसिद्धि के लिए समर्पण की भावना रखने वाला स्त्रियों का प्रिय होगा। उसे अच्छी पत्नी, पुत्र और नौकर मिलेंगे। वह समुद्र/नदी (पार) से होकर धन अर्जित कर सकता है।

(*ii*) यहां पर सूर्य अति उत्तम स्थिति में होता है। ऐसा कहा जाता है कि जातक को सभी प्रकार के सुख, धन और प्रसिद्धि आदि की प्राप्ति होती है। जब किसी जातक को धन, बुद्धि और प्रसिद्धि की प्राप्ति होती है तो इसका अर्थ यह है कि उसे **लक्ष्मी** और **नारायण** दोनों की ही कृपा प्राप्त है। मीन (भगवान विष्णु का कमलपद) का मतलब ईश्वर के समक्ष पूर्ण समर्पण क्योंकि भगवान विष्णु के चरण में आत्मा (सूर्य) का वास होता हैं यदि ऐसा है तो ऊपर (*i*) में जो कुछ बताया गया है वही होगा।

12.2 चन्द्रमा

(1) चन्द्रमा मेष में–

(*i*) जातक का शरीर सुनहरा कमजोर पैर वाला, कुरूप नाखून, कम बाल और गोल आंखों वाला होगा। उसके पास पर्याप्त धन, बच्चों (साथ जन्में) से वंचित रहेगा। स्थिर धन होने के कारण प्रसिद्ध होगा। अच्छे लोगों की संगति नहीं होगी। वह यात्रा तथा स्त्रियों का शौकीन होगा। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा, शीघ्र निर्णय लेने वाला तथा उस पर काम करने वाला, उत्साही, सम्मानित, समृद्ध, अभिमानी, हठी, सिर भूरा, सम्मानित, उद्यमी, अच्छी स्थिति, महत्वाकांक्षी होगा। यदि चन्द्रमा पीड़ित हो तो जल से भय होगा। वह परेशान और अस्थिर रहेगा। वह जलीय स्थानों से भयभीत रहेगा। स्त्रियों से पराजित होगा।

(*ii*) चन्द्रमा इस स्थान से चतुर्थेश है। मंगल चन्द्रमा का मित्र है और चन्द्रमा मंगल के लिए सम है। चन्द्रमा उच्च बिन्दु के निकट होता है। यह चर राशि है, चन्द्रमा स्वभाव से लचीला, चंचल परेशान आदि होता है। चूंकि मेष अग्नि राशि है और स्वामी मंगल है, जातक का स्वभाव उष्ण और आदेशात्मक होगा। चन्द्रमा मन है। इसी कारण इस योग का फल, अभिमानी, शीघ्र निर्णय लेने वाला और उस पर काम करने वाला, अपने सम्मान को बनाए रखने वाला, आदेशात्मक स्वभाव वाला और उच्च स्थिति प्राप्त करने वाला, परेशान रहने वाला होगा। मंगल की राशि में चन्द्रमा फोड़ा आदि दे सकता है। यदि वह मंगल से दृष्ट या युक्त हो तो दुर्घटना (जल से भय) हो सकती है।

(2) चन्द्रमा वृषभ में–

(*i*) जातक की जांघ और कूल्हा बड़े, सुन्दर चाल, बैल की आंखों के समान आंखे, कफ से प्रभावित होगा। जातक गंभीर, शांत बुद्धिमान, सुन्दर कार्य करने में निपुण, खुले दिल वाला, दान करने वाला प्रसिद्ध, तीव्र बुद्धिवाला, अधिक पुत्रियों वाला, कामुक, भावुक, आमोदी, अपने प्रयासों से परिस्थिति और सुख प्राप्त करने वाला, धार्मिक कार्य करने वाला होगा। वह प्रभावी और अच्छे बुरे में भेद करने वाला, मध्यम आयु में खुश, धनी, शांत, सम्मानित, परिवर्तनशील दिमाग वाला होगा। इस प्रकार का जातक अधिक

खाने वाला और स्त्रियों से प्रभावित होने वाला कामुक होगा। जातक की अपनी पहचान होगी (शरीर पर काला दाग आदि)।

(*ii*) यह चन्द्रमा की उच्च राशि, पृथ्वी तत्त्व राशि है। चन्द्रमा जलीय ग्रह है (पृथ्वी और जलीय राशि मित्र होते है)। यदि चन्द्रमा क्षीण न हो या अमावस्या का न हो तो ऊपर (*i*) में वर्णित सभी अच्छे फल होंगे। चन्द्रमा (मानस) में शुक्र के सभी गुण होंगे। यदि चन्द्रमा पीड़ित हो तो जातक नीच काम करेगा, अधर्मी और असामाजिक क्रियाकलाप में रत रहेगा। वह घमण्डी और स्वंय तक सीमित रहेगा। यद्यपि अपनी बुद्धि के कारण समाज में स्थिति बना लेगा, निर्बल (पीड़ित, दग्ध या क्षीण) होने के कारण षड्यंत्र आदि जैसे कार्यों में लगा रहेगा। बली चन्द्रमा सभी प्रकार का शुभ फल देगा। वृषभ का चन्द्रमा माता-पिता के लिए अच्छा है जैसा कि हमने भगवान कृष्ण के मामले में देखा है। देखें कुण्डली XXIX, VII.

(3) चन्द्रमा मिथुन में–

(*i*) जातक की नाक बड़ी और आंखें काली होगी। उसके बाल घुंघराले, ऊंची नाक, आयु लम्बी होगी। अपने कार्यों के लिए लोग जातक को प्यार करेंगे, धार्मिक मामलों में रुचि रखने वाला, स्त्रियों का प्रिय, यौन सुख भोगने वाला, अपने विनम्र स्वभाव के लिए प्रसिद्ध तथा जनता से आदर पाने वाला होगा। वह विद्वान, हस्तलेख में निुपण, कला में निपुण, कवि, वक्ता, संगीत का शौकीन तथा चतुर होगा। उसकी हथेली पर मछली का निशान होगा।

(*ii*) चन्द्रमा बुध के साथ मित्रवत् संबंध रखता है किन्तु बुध उसे शत्रु मानता है (एक पौराणिक कथा है–चन्द्रमा संत बृहस्पति का शरीर, मुख और आकार बनाकर बृहस्पति की पत्नी तारा के साथ संभोग किया और इस प्रकार बुध का जन्म हुआ था।) यह वायु राशि है और चन्द्रमा जलीय ग्रह है (पुनः शत्रु)। चन्द्रमा और बुध यदि अच्छी स्थिति में बली हो तो वाक् चातुर्य, चतुर आदि होने का संकेत मिलता है। इन गुणों के कारण जातक में वाक्पटुता, ज्ञान की कमी नहीं होती और समाज में उसकी अपनी स्थिति होती है। उसे आदर भी प्राप्त होता है। चन्द्रमा (मानस) चंचल है और स्वभाव से बुध भी चंचल है अतः जातक चतुर स्फूर्तिमान होता है। देखें कुण्डली I.

(4) चन्द्रमा कर्क में–

(*i*) जातक के शरीर में अधिक बाल और गर्दन लम्बी होगी। जातक चतुर, भाग्यशाली, उत्साही, शक्तिशाली, आकर्षक, दयालु, भावुक और उतावला, अलाभकर (व्यर्थ) यात्रा करने वाला, दूसरों से सुनकर सीखने वाला और उस कला में निपुणता प्राप्त करने वाला, ज्योतिष में ज्ञानी होगा। वह बलवान तथा निर्मल, उत्तम आचरण वाला, भावुक, कृतज्ञ, विश्वासी तथा कामुक होगा। जल में क्रीड़ा करने वाला, सुगंधी तथा फूलों का शौकीन होगा। अपने चतुर स्वभाव के कारण सफलता प्राप्त करेगा। उसके पास अधिक अचल सम्पत्ति होगी। वह वैज्ञानिक होगा। उसका कद मध्यम, दूरदर्शी, मिताहारी, मितभाषी मितव्ययी होता है। उसके अनेक मित्र होंगे, विदेश में रहेगा और मकान, कुंआ आदि के निर्माण में रुचि लेगा।

(*ii*) चन्द्रमा अपने भाव में है। यदि चन्द्रमा अप्रभावित हो और सूर्य के निकट न हो तो उत्तम फल होगा। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। चन्द्रमा रात्रि, ठंडक, शांत वातावरण का स्वामी होता है और सबको सुख और शांति प्रदान करता है। यदि चन्द्रमा अप्रभावित होता है, सबको सुख और शांति प्रदान करता है। यदि चन्द्रमा अप्रभावित हो तो जातक का स्वभाव स्पष्ट और उत्तम होता है। बृहस्पति यहां पर उच्च का होता है। चन्द्रमा क्षीण होते हए भी ऊंचा पद तथा लम्बी आयु देता है।

(5) चन्द्रमा सिंह में–

(*i*) जातक का मुखमण्डल बड़ा और छाती चौड़ी, बड़े-बड़े गाल, छोटी भूरी आंखें, मजबूत हड्डी, बिखरे हुए बाल, पेट का रोगी, दांत गिरना, राजसी व्यक्तित्व, कर्त्तव्यपरायण, साहसी स्वभाव, वक्र शरीर वाला होता है। उसे मांस पसंद है और यात्रा का शौकीन तथा जंगल, पहाड़ों में यौन संभोग चाहने वाला होता है। वह उदार स्वभाव वाला, कुलीन, अभिमानी, महत्त्वाकांक्षी होता है। मानसिक चिंता, दुष्ट, पारिवारिक उलझन, भूख और प्यास से पीड़ित, स्त्रियों से घृणा करने वाला, कम सन्तान वाला होता है तथा मां का आदर करता है।

(*ii*) यहां पर चन्द्रमा मित्र राशि में होता है, जब चन्द्रमा सूर्य के पास होता है तो वह अस्त होता है और वह क्षीण हो जाता है। यदि चन्द्रमा सूर्य

की ओर अग्रसर हो तो निर्बल हो जाता है। चन्द्रमा की चंचलता समाप्त हो जाती है किन्तु चन्द्रमा को सूर्य से प्रकाश प्राप्त होता है। सूर्य के सभी गुण चन्द्रमा में आ जाते हैं। यह स्थिर राशि है। जातक का स्वभाव स्थिर होता है और उसमें निर्णय लेने की क्षमता होती है। वह जिद्दी, दुराग्रही हो जाता है तथा उसे अपने वश में लेना कठिन होता है। देखें कुण्डली V, VI, XI, XIV.

(6) चन्द्रमा कन्या में–

(*i*) वह मोहक वर्ण, लम्बे हाथों वाला़, सुन्दर दांतों और कानों वाला, बादामी आंखों वाला, लम्बे कंधों और हाथों वाला, लचीला शरीर और आकर्षक होगा। वह वाक्पटु और मृदुभाषी तथा ईमानदार, विश्वसनीय, पवित्र, सैद्धांतिक स्वभाव का तथा धर्म का उपदेशक होगा। वह स्त्रियों का शौकीन होगा। वह अति दूरदर्शी, वाद-विवाद करने वाला तथा अधिक पुत्रियों वाला होगा। वह ज्योतिष विद्या, संगीत, नृत्य में रुचि लेने वाला होगा।

(*ii*) कन्या के चन्द्रमा की स्थिति वही होती है जो मिथुन के चन्द्रमा की होती है। केवल अन्तर यह है कि कन्या का चन्द्रमा निर्बल (नीच राशि के निकट) होता है और इस राशि में बुध अपनी राशि में बली होता है। अतः चन्द्रमा इस राशि में बुध के गुणों से प्रभावित होता है। देखें कुण्डली XXXX, XIII, XXVI.

(7) चन्द्रमा तुला में–

(*i*) जातक लम्बे शरीर वाला, ऊँची नाक, बड़ी आंखों वाला, वक्र अंग वाला, रोगी शरीर, बुद्धिमान, सिद्धांत वाला, धनी, कला का शौकिन होता है। उसे स्त्रियों के कारण हानि होती है किन्तु स्त्रियों को प्यार करता है और अनेक पत्नियों वाला होता है। वह महत्त्वाकांक्षी नहीं होता, दूरदर्शी, आदर्शवादी, कृतज्ञ, विद्वानों का आदर करने वाला, धार्मिक व्यक्ति, संत और ईश्वर में विश्वास करने वाला होता हैं, बैलों और घोड़ों का व्यापारी, भू-सम्पत्ति वाला, प्रसिद्ध, अपने प्रयासों से धन अर्जित करने वाला होता है।

(*ii*) वृषभ के चन्द्रमा और तुला के चन्द्रमा में यह अंतर होता है कि (क) वृषभ पृथ्वी राशि है और तुला वायु राशि है। (ख) तुला में चन्द्रमा

अपनी नीच राशि के निकट होता है और वृषभ का चन्द्रमा उच्च का होता है (ग) शुक्र वृषभ की बजाए तुला (मूल त्रिकोण) में अधिक बली होता है (घ) तुला में शनि उच्च का होता है (ङ) तुला का चन्द्रमा यहां से दशम् का स्वामी होता है। चन्द्रमा तुला के गुणों से प्रभावित होता है किन्तु चन्द्रमा विद्वान, दयालु, आध्यात्मिक पुरुष का आदर करता है, धनी शासन करने की क्षमता वाला और आवश्यकता पड़ने पर परिस्थिति पर नियंत्रण कर लेता है। इस राशि में मानस (चन्द्रमा) संतुलित होता है और सही निर्णय लेने में सक्षम होता है यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से पीड़ित न हो। शुक्र की राशि में चन्द्रमा योनि संबंध में रुचि देता है और कला, संगीत और सुन्दरता को पसंद करता है। जातक महत्त्वकांक्षी और अपनी प्रभुता सुनने का लोलुप होता है। देखें कुण्डली XXXIX, XXX.

(8) चन्द्रमा वृश्चिक में–

(*i*) जातक का शरीर और नाक गठीला, चौड़ी छाती, बड़ी आंखें, टेढ़ी ठुड्डी और नाखुन, जांख गोल और भूरा वर्ण होता है। वह माता-पिता से दूर, आधुनिक व्यक्ति, खुला दिमाग वाला, क्रूर, बहानेबाज, शरारती, चिढ़ने वाला, अप्रसन्न, कंजूस, भद्दा, उतावला और अन्य स्त्रियों में रुचि लेने वाला होता है। जुआ और मुकदमा में धन की हानि होती है और यमराज से कष्ट पाता है।

(*ii*) वृश्चिक में चन्द्रमा नीच का होता है अतः यह चन्द्रमा की निर्बल स्थिति होती है। वह पाप राशि में भी होता है। झगड़ालू स्वभाव स्पष्टता, आधुनिक और आदेश करने की प्रवृत्ति होती है। मेष में चन्द्रमा और वृश्चिक के चन्द्रमा में अंतर यह होता है कि (क) मेष का मंगल मूलत्रिकोण का होता है। (ख) मेष का चन्द्रमा अपनी उच्च राशि से निकट होता है। (ग) चन्द्रमा वृश्चिक से नवम् भाव का स्वामी होता है जो वृश्चिक में नीच का है। (घ) इस राशि में कोई भी ग्रह उच्च का नहीं होता। अतः इस राशि की विशेषताएं पूरी तरह चन्द्रमा में आ जाती है।

(9) चन्द्रमा धनु में–

(*i*) जातक का मुखमण्डल विशाल, लम्बे दांत, नाखुन और हाथ वक्र होते हैं। वह गोल आंखों वाला, विशाल हृदय वाला, चौड़ी छाती वाला, लम्बे

हाथों वाला, विशाल कंधे और गर्दन तथा मजबूत हड्डियों वाला होता है। वह ललित कला में प्रवीण, बुद्धिवाला, प्रशंसा सुनने वाला, उत्तम और मनमोहक वाणी, पत्नी तथा स्त्रियों के लिए सहायक प्रवृत्ति, अनेक बच्चों वाला, कला और साहित्य में रुचि रखने वाला, लेखक, कला और संस्कृति में निपुण, निर्मल हृदय वाला, स्पष्टवादी, धनी, कंजूस, साहसी, कृतज्ञ और सम्मानित होता है।

(*ii*) नीच राशि से निकलने के बाद चन्द्रमा प्रसन्न रहता है और यहां पर पुण्य राशि में होता है। एक मित्र है और दूसरा शत्रु है (हम पहले ही पैरा 12.2 (3) में कथा बता चुके हैं)। यह बृहस्पति की मूलत्रिकोण राशि है। चन्द्रमा में धनु की विशेषताओं का प्रवेश स्वाभाविक है। चन्द्रमा शरीर का कारक होता है और धनु में बृहस्पति की विशेषताएं होती है। अतः जातक का शरीर विशाल और कला, संस्कृति तथा शिक्षा आदि की ओर प्रवृत्ति होती है। देखें कुण्डली III, IV, XIV.

(10) चन्द्रमा मकर में–

(*i*) जातक की आंखें आकर्षक, पतली छाती, गठीला शरीर, दुर्बल शरीर, गर्दन और कान लम्बे और कुछ स्वार्थी स्वभाव होता है। वह शीघ्र समझने वाला, चतुर, चंचल, पवित्र, कवि, दयालु निर्दयी, अनैतिक, शिक्षक की पत्नी से योनि संबंध रखने वाला, नीच, ठंडक से पीड़ित, संगीत का ज्ञानी, कम क्रोध करने वाला, कामुक, सम्पत्ति एकत्र करने में पारिवारिक परम्परा बनाए रखने वाला तथा संगीत में रुचि रखने वाला होता है।

(*ii*) चन्द्रमा सम होता है किन्तु शनि के लिए चन्द्रमा शत्रु है। चन्द्रमा अपनी राशि से सप्तम में होता है अर्थात् पश्चिम (पाताल-पितृलोक)। इस राशि में मंगल उच्च का होता है। चन्द्रमा भी (आरोही) उच्चाभिलाषी (उच्च राशि की ओर अग्रसर) होता है अर्थात् नीच, असामाजिक, स्वार्थी क्रियाकलाप होंगे। यदि चन्द्रमा पर शुभ प्रभाव हो और इस राशि का स्वामी शनि भी शुभता के साथ संबंधित हो तो स्थिति में सुधार होगा और बुरे गुण अच्छे में बदल जाते हैं और जातक द्वारा प्रशंसनीय कार्य किए जाएंगे। देखें कुण्डली XXIII.

(11) चन्द्रमा कुंभ में–

(*i*) जातक का शरीर सुडौल, औसत ऊंचाई, लम्बे दांत, लम्बी नाक, गठीले हाथ और पैर, मजबूत सिर, न्यून पेट, सुन्दर आकृति, देखने में युवक होता है। वह अचानक ही प्रसन्न और दुखी महसूस करेगा। उसकी प्रवृत्ति कलात्मक, दूरदर्शी, ताकतवर, भावुक, रहस्यमय, कृतज्ञ, चिड़चिड़ा और एकांतप्रिय होता है। वह स्वयं सदाचारी नहीं भी हो सकता है किन्तु अनैतिक पुत्र होंगे। वह आलसी होगा, दूसरों के पुत्र को प्यार करेगा। अति चतुर, चालाक और विद्वान होगा। शत्रुओं से पीड़ित, मानसिक चिन्ता वाला, दुखी और दरिद्र होगा।

(*ii*) यहां पर चन्द्रमा वायुराशि में होता है जो उसकी राशि से अष्टम में है, दोनों ही तरफ से दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति है। यद्यपि वह उच्च राशि के करीब होता है, बहुत अधिक बली नहीं होता और पूरी तरह राशि की प्रवृत्तियों से प्रभावित होता है। कुंभ शनि का मूलत्रिकोण स्थान होता है और वह बहुत बली होता है। ऊपर (*i*) में वर्णित गुण मिश्रित स्वरूप में पाए जाते हैं। ऐसा बताया जाता है कि जातक अन्तर्ज्ञानी और भावुक होता है और दूसरी ओर एकान्तप्रिय शीघ्र ही दुखी होने वाला, आलसी और दूसरों के पुत्र को प्यार करेगा किन्तु अपने पुत्र से घृणा नहीं करेगा। वह अपने पुत्र की तुलना में दूसरे के पुत्र की प्रगति को गंभीरता से लेता है। एक चतुर, चालाक, बुद्धिमान, कलाकार व्यक्ति अपने पुत्र को प्यार न देकर अप्रसन्नता का वातावरण तैयार नहीं करता है। देखें कुण्डली XV, XXII.

(12) चन्द्रमा मीन में–

जातक का शरीर पूर्ण और चमकदार, लम्बी नाक, पत्नी और बच्चों में रुचि लेने वाला, शत्रुओं का विनाश करने वाला, विपरीत योनि का सेवक, अधिक स्त्रियों के साथ रहने वाला, विद्वान, साधारण, अच्छी प्रसिद्धि वाला, साहसी ललित कला में निपुण, विपक्षी लोगों को जीतने वाला, शास्त्रों का ज्ञाता, संगीत में प्रवीण, अधिक बच्चों वाला, जीवन के अंतिम चरण में धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। वह जितेन्द्रिय होगा। खुली हवा में घूमना पसंद करेगा, साफ सुथरे स्वभाव वाला, सैनिकों से भयभीत, घुमक्कड़ और राजा की सेवा करने वाला होगा।

इस राशि में चन्द्रमा अपनी उत्तम स्थिति में होता है। जैसा कि 12.1 (12) में दिया गया है। देखें कुण्डली XX, XII.

12.3 मंगल

(1) मंगल मेष में–

(*i*) जातक को सरकार से भूमि की प्राप्ति होती है। वह प्रसिद्ध धन अर्जित करने वाला, मधुर और आकर्षक वाणी वाला, कांतिवान, साहसी और सभी का प्रिय होगा। उसमें संगठन बनाने की क्षमता, साहसी और शासन करने की क्षमता होती है। वह धनी, सामाजिक, भावुक, चंचल, बलवान, घुमक्कड़, विश्वासी, प्रेरणा देने वाला, गणितज्ञ, संस्थापक, सच्चा नागरिक, स्पष्ट, सावधान, उदार, बज्र हृदय वाला और साहसी कार्य में रुचि लेने वाला होगा। वह घरेलू मामले में मितव्ययी नहीं होगा। वह सेना का मुख्य या गांव का मुखिया और दानवीर होगा। वह अनेक स्त्रियों के साथ संगति करने वाला होगा।

(*ii*) मेष में मंगल अपनी ही राशि में होता है। यह उसकी मूलत्रिकोण राशि है। अग्नि राशि में अग्नि प्रकृति का ग्रह। यहां पर राजसी ग्रह सूर्य उच्च का होता है। इस राशि की विशेषता स्वतंत्र विचारक है। शिक्षा की प्रवृत्ति और साहस वाला होगा। मंगल का स्वभाव भी ऐसा ही होता है। जिस जातक की जन्मकुण्डली में मंगल मेष राशि में होता है वह अधिक परिश्रम करने वाला, शासन करने वाला, साहसी, विद्वान, उत्तम व्यक्तित्व और सबका प्रिय होता है। एक धनी बुद्धिमान और साहसी व्यक्ति, आदर पाता है और दूसरों के प्यार का आनन्द उठाता है। देखें कुण्डली VI, XIII, XXXII.

(2) मंगल वृषभ में–

(*i*) जातक डरपोक, गंदा शरीर, भावुक, जादू और खेल कूद पसंद करने वाला, स्वार्थी, असैद्धांतिक, स्त्रियों से प्रभावित, सख्त हृदय वाला, कटु भाषी, भावुक होता है। वह पशु के समान होता है। स्त्री की पवित्रता भंग कर सकता है। अधिक खाने वाला, दूसरों पर विश्वास नहीं करने वाला, कटु वचन बोलने वाला होता है। जातक अपने घर तथा पारिवारिक वातावरण से

अप्रसन्न रहता है। वह धन का आनन्द भी नहीं उठा सकता (**गृह धनाल्पसुखं च रिपूदयं**)। उसके अनेक शत्रु होते हैं। अधिक पुत्र होने के कारण उसकी समस्याएं अनेक होती हैं। वह दूसरों के घर में रहता है तथा परिवार का नाम बदनाम करता है।

(*ii*) पृथ्वी का पुत्र (भूमिसूतो) मंगल को इस पृथ्वी राशि में प्रसन्न होना चाहिए। उत्तम फल होने चाहिए। यह भोग वाली राशि होती है। सांसारिक सुख प्राप्त करने और उसका भोग करने की इच्छा प्रबल होती है। यहां पर मंगल (अवरोही) नीच राशि की ओर अग्रसर होता है। अतः जातक अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए स्वार्थ की भावना से कटु बन जाता है और सिद्धांत का पालन नहीं करता है। उसके शत्रुओं में वृद्धि होती है। उसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा वह अप्रसन्न रहता है। यह चन्द्रमा की उच्च राशि है। मंगल का प्रभाव अग्नि में ईंधन का काम करता है। मतलब यह है कि जातक बिना विचार किए सफलता प्राप्त करने के लिए पशु जैसा आचरण करने लग जाता है। देखें कुण्डली XXXV, XXVI.

(13) मंगल मिथुन में–

(*i*) जातक वैभवशाली होगा। वह परिवार तथा बच्चों को प्यार करने में सक्षम, राजनैतिक नियमों से अवगत, विदेशों की यात्रा का शौकीन, महत्त्वाकांक्षी, कटु, शीघ्र निर्णय लेने वाला, संगीत, ललित कला में प्रवीण होता है। अन्वेषक स्वभाव का होगा। जातक सदा ही विभिन्न कलाओं को सीखने में रत रहता है, बुद्धिमान घर से बाहर रहना पसंद करता है, पुत्रों की ओर से सुखी रहता है। वह कर्त्तव्यपरायण होगा।

(*ii*) मंगल के लिए बुध शत्रु है किन्तु बुध के लिए मंगल सम है। यह अग्नि ग्रह वायु राशि है। यह द्विस्वभाव राशि है। मंगल से राशि को बल मिलता है। बुध आसानी से दूसरे ग्रहों से प्रभावित होने वाला ग्रह है। अतः इस राशि में मंगल का प्रभाव आ जाता है। नीच बिन्दु निकट (नीचाभिलाषी) होने के कारण मंगल निर्वल होता है। मिथुन की विशेषताएं प्रबल होंगी और जातक चतुर, कूटनीतिज्ञ, कला तथा शिक्षा में रुचि लेने वाला होगा। देखें कुण्डली VIII, XXXIII.

(3) मंगल कर्क में–

(*i*) डॉ. रमन ने कहा है कि जातक बुद्धिमान होगा जबकि **मानसागरी** के अनुसार जातक का दिमाग कमजोर होगा, वह दरिद्र तथा क्षीण शरीर वाला होगा। वह धनी, दुष्ट, चिड़चिड़ा, नेत्र रोगी, साहसी, निर्दयी आदि होगा। किन्तु **मानसागरी** के अनुसार जातक दूसरों के घर में रहता है। वह शांत रहता है क्योंकि वह निर्बल और कम बुद्धि वाला होता है। उसके अनेक शत्रु होंगे और किसी बलवान स्त्री के कारण वह कष्ट भोगता है। **सारावली** के अनुसार जातक रोगी, विकलांग होता है वह दूसरों के घर में रहना पसंद करता है और दूसरों के घर में खाता है। वह जलीय स्रोत से धन अर्जित करता है।

(*ii*) यहां पर मंगल निर्बल होता है। मंगल ऊर्जा होता है अतः जातक का शरीर कमजोर होता है। कमजोर शरीर में दिमाग मजबूत नहीं हो सकता। अतः सफलता नहीं मिलती। किन्तु इस राशि में बृहस्पति उच्च का होता है। इस राशि में स्थित ग्रह पर चन्द्रमा तथा बृहस्पति का प्रभाव प्रबल होगा। अतः जातक अमीर होगा। यदि मंगल का नीच भंग हो रहा हो तो जातक साहसी, बुद्धिमान होगा। यहां से मंगल पंचम तथा दशम भाव का स्वामी है अतः मस्तिष्क कमजोर, दुष्ट और निर्दयी होगा। जातक बार-बार यंत्रणा में पड़ेगा। मंगल चन्द्रमा की राशि में या चन्द्रमा मंगल की राशि में क्रोध तथा रक्तचाप देता है। देखें कुण्डली X.

(5) मंगल सिंह में–

(*i*) जातक को ज्योतिष शास्त्र, खगोल शास्त्र, गणित शास्त्र का ज्ञान होगा। वह माता-पिता को प्यार करेगा तथा बड़ों का आदर करेगा और बोधगम्य होगा। वह स्वतंत्र स्वभाव का, स्वतंत्र, विजयी, परेशान, उत्साही, दूसरों का धन तथा बच्चा हड़पने वाला होगा तथा जंगल में रहने वाला, मानसिक रूप से चिन्तित, उदार, उत्तम, सफल, परेशान रहेगा। उदर रोग से पीड़ित। अपने पुत्रों और परिवार की ओर से प्रसन्न रहेगा। कोई शत्रु नहीं होगा। अपने साहस और पारिश्रमिक स्वभाव के लिए प्रसिद्ध होगा। वह राजनीति और धर्म शास्त्र का विद्वान होगा। वह गाय के मांस का शौकीन होगा, पहली पत्नी की मृत्यु हो जाएगी, सर्प और पशुओं को मारने वाला, धर्मार्थ कार्यों से वंचित तथा हमेशा ही सक्रिय होगा।

(*ii*) मंगल अग्नि ग्रह है, अग्नि राशि में है। मंगल और सूर्य मित्र है। सूर्य मंगल की राशि में उच्च का होता है। अतः सूर्य की राशि में मंगल प्रसन्न रहता है। यहां से मंगल चौथे और नवें स्थान का स्वामी है। इस राशि में मंगल की स्थिति अति उत्तम होती है। मंगल अभी-अभी नीच राशि से निकला है। जातक में सिंह राशि और मंगल ग्रह दोनों के गुण होंगे। अतः जातक विद्वान, साहसी, विजयी होगा और शत्रुओं का विनाश करेगा या स्वयं सफल होगा। देखें कुण्डली XXXII, XXIII, XXIX.

(6) मंगल कन्या में–

(*i*) जातक आत्मविश्वासी, सम्मानित, विरले ही धनी, विद्वान, दूसरों से भिन्न, कपटी, डींग मारने वाला होता है और वैवाहिक सुख से वंचित रहता है। वह पुरुष योनि के प्रति आकर्षित होता है तथा यौन संबंध तथा संगीत का शौकीन होता है। विनम्र स्वभाव और मृदुभाषी होता है। वह भौतिकवादी और उत्सव आदि करने वाला होगा। वह अपने परिवार का ध्यान रखता है तथा उसका परिवार बड़ा होता है। वह धार्मिक उत्सव, यज्ञ आदि में रुचि रखता है, उसके पास अपनी भूमि होती है, शत्रु से भय, नहाने और शृंगार का शौकीन तथा वैभवशाली होगा।

(*ii*) मंगल बुध का शत्रु है। मंगल यहां से तीसरे और आठवें स्थान का स्वामी है। मंगल को अच्छा फल नहीं देना चाहिए। किन्तु बुध इस राशि में बली होता है अतः राशि की विशेषता प्रबल होगी। इस राशि में शुक्र नीच का होता है। अष्टम का स्वामी मंगल इस राशि का वैवाहिक जीवन अस्त व्यस्त करेगा। देखें कुण्डली VII, XXXIX.

(7) मंगल तुला में–

(*i*) जातक का शरीर लम्बा, सुडौल, गोरा होगा। वह आत्मविश्वासी, महत्त्वाकांक्षी, भौतिकवादी, सफल वक्ता, भाग्यशाली, वक्र अंग, व्यापारी, स्त्रियों से धोखा खाने वाला, दयालु, भद्र, डींग हांकने वाला होगा। वह परिवार के प्रति स्नेह रखने वाला होगा, स्वअर्जित धन वाला तथा दूरदर्शी होगा। वह अपव्ययी, विकलांग, परेशानियों से घिरा हुआ और पत्नी के कारण दुखी रहेगा। शिक्षकों तथा सम्मानित व्यक्तियों का आदर नहीं

करेगा। वह घुमक्कड़, बुरे कारोबार में रत, पहली पत्नी का नाश करने वाला, शराब का व्यापारी तथा वेश्यावृत्ति से धन अर्जित करने वाला होगा।

(*ii*) यहां से मंगल दूसरे तथा सातवें स्थान का स्वामी है। शुक्र सांसारिक उपलब्धियों की प्रवृत्ति देता है। मंगल का अपना वीरता का गुण होता है। मंगल-शुक्र के योग से महत्त्वाकांक्षी बनने की इच्छा बढ़ती है, भौतिकवादी तथा व्यापार पसंद होता है, अपने आदेशात्मक स्वभाव के कारण बड़ों का आदर कम करता है। झगड़ालू तथा दुर्घटना होने की संभावना रहती है। यदि वे अच्छे और शुभ भावों के स्वामी न हों तो यहां पर मंगल की स्थिति ठीक नहीं है अन्यथा शुभ फल होगा। मंगल और शुक्र आपस में सम हैं। मंगल अग्नि ग्रह है और यह राशि वायु राशि है। पुनः स्वभाव से मित्रवत् हैं। मंगल भोगता है, शुक्र भोग्य वस्तु है, इसलिए मंगल प्रसन्न, वैभवशाली व सुखी होता है। देखें कुण्डली V, XX, XXX.

(8) मंगल वृश्चिक में–

(*i*) जातक का कद मध्यम होता है। वह आक्रामक, अभिमानी, दंभी, चतुर, कूटनीतिज्ञ होता है। उसकी प्रत्यक्ष प्रवृत्ति, दुराग्रही, वैदिक ज्ञान में रुचि रखने वाला, कर्त्तव्य में प्रवीण होगा। उसे सेना, अग्नि, विष, चोरों के नेता से भय, युद्ध में रुचि लेने वाला, अति पापी, बड़े-बड़े अपराध करने वाला, विश्वासघाती जान से मारने वाला, किसी की मदद नहीं करने वाला, भू स्वामी, पुत्र और पत्नी वाला होगा। पत्नी और बच्चों की ओर से प्रसन्न रहने वाला होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, विजयी राजा के लिए आदर और स्नेह रखने वाला होगा। जातक व्यापार करता है।

(*ii*) यहां मंगल अपनी ही राशि में है। कहा जाता है कि यदि कोई ग्रह अपनी ही राशि में स्थित हो तो वह बली होता है और इससे उस भाव का बल बढ़ता है। मंगल यहां से छठे स्थान का भी स्वामी है। छठा भाव साहस के लिए होता है। अतः जातक आक्रामक होगा तथा शत्रुओं का सामना करने में सक्षम होगा। मंगल दुर्घटना देने वाला ग्रह होता है। अतः सेना, अग्नि, विष से भय रहता है। यहां से पंचम स्थान का स्वामी बृहस्पति होता है। अतः बच्चों से सुख। कुल मिलाकर इस राशि में मंगल की स्थिति अच्छी होती है। देखें कुण्डली IX.

(9) मंगल धनु में–

(*i*) मानसागरी के अनुसार जातक के पास अलग-अलग प्रकार की सवारियां होती है, शत्रुओं से हमेशा घिरा रहता है। उसकी पत्नी प्रिय तथा भक्त होती है।

अन्य विद्वान ज्योतिषियों के अनुसार जैसा कि डॉ. बी वी रमन द्वारा हिन्दू फलित ज्योतिष में उल्लेख हैं जातक प्रसिद्ध, मंत्री, राजनेता, मुक्त, आमोद प्रिय, कम बच्चों वाला, आन्तरिक रोगी, झगडालू, मुकदमेबाज, अनेक त्रुटियों वाला एक उत्तम नागरिक होता है।

सारावली (बहुभि क्षतैः)–जातक को अनेक घाव, कटु भाषी, हस्त कौशल, युद्ध करने वाला, रथ, हाथियों और सेना का स्वामी होता है। अति परिश्रम करने वाला, क्रोध के कारण अपना सुख गंवाने वाला होगा। वह अपने बड़ों का आदर नहीं करता।

(*ii*) मंगल बृहस्पति का मित्र है। यहां से मंगल पंचम और 12वें स्थान का स्वामी है। पंचम स्थान मंगल की मूलत्रिकोण राशि है। यह राशि (धनु) बृहस्पति का मूल त्रिकोण स्थान है। अग्नि ग्रह मंगल अग्नि राशि में है। बृहस्पति ज्ञान, बुद्धि देता है। मंगल ऊर्जा, कमाण्डरशिप देता है। यदि धनु शुभ भाव (6, 8, 12 को छोड़कर) में है तो शुभ फल की आशा की जा सकती है। यदि पीड़ित हो और अशुभ स्थिति में हो तो शत्रु पर विजय प्राप्त करने की बजाए कष्ट आदि में होगा।

(10) मंगल मकर में–

(*i*) जातक साहसी, धनी सुखी और आनन्दित, मध्यम कद का, परिश्रमी, उत्तम स्वभाव, प्रसिद्ध, सेना का प्रधान या राजा, स्वतंत्र, पवित्र, संरक्षक और विभिन्न कार्यों में रुचि रखने वाला सफल, साहसी धूर्त, सम्मानित, बहादुर और प्रभावी होगा। उसकी उत्तम पत्नी और अनेक पुत्र होंगे, बच्चों को प्यार करेगा। राजनीति में उच्च स्थान प्राप्त करेगा। वह युद्ध के मैदान में वीरता दिखाता है, पत्नी और बच्चों की ओर से सुखी, शत्रुओं वाला, सम्पदा और धन का स्वामी होता है।

(*ii*) मंगल के लिए शनि सम है, शनि के लिए मंगल शत्रु है। मंगल इस राशि में उच्च का होता है। मंगल अति बलवान होता है। यह भचक्र की

10वीं राशि है। दशम में मंगल दिग्बली होता है। यह पृथ्वी राशि है। मंगल शासक है, जातक के पास भूमि ओर सम्पदा होगी। मंगल यहां से चतुर्थ स्थान का स्वामी है। मेष (भूमि और भवन) और भूमिसूतो (पृथ्वी पुत्र)। जातक धनी, भूस्वामी, और साहसी उच्च राजनैतिक स्थिति वाला होगा। देखें कुण्डली XI, XV, XVI.

(11) मंगल कुंभ में–

(*i*) जातक निर्धन, अविश्वासी, दयनीय, स्वतंत्र, मन्दबुद्धि, वाणी में रुकावट और धन-हानि करने वाला होता है। वह कुरूप, शरीर पर बालों वाला, आवेगी, विवादग्रस्त, झगड़ालू, क्षेत्रीय भाषा का ज्ञाता, क्षमा करने वाला तथा परम्परा का पालन करने वाला होगा। उसे जल से भय होगा वह स्नेह और पवित्रता से वंचित, बूढ़े की तरह दिखने वाला, बुरी तरह मृत्यु पाने वाला, ईर्ष्यालु और अविश्वासी होगा।

जातक कटु, निर्दयी, पारिवारिक सदस्यों का विरोध करने वाला, मूर्खों और पुत्रों के कारण कष्ट पाने वाला होगा।

(*ii*) इस राशि में मंगल को वही फल देना चाहिए जो मकर में होता है क्योंकि दोनों राशियों का स्वामी शनि है। यद्यपि फल में एकरूपता होगी किन्तु अनेक अंतर होंगे। यह शनि की मूलत्रिकोण राशि है। मकर में मंगल (उच्च का) शनि से बली होता है। यहां पर शनि मंगल से बली होता है। जातक का आचरण शनि से प्रभावित होता है। मकर से पंचम और दशम स्थान का स्वामी शुक्र है। यहां पंचम स्थान का स्वामी, बुध और दशम का स्वामी मंगल है। यहां से सप्तम का स्वामी सूर्य (शनि का शत्रु) है। पारिवारिक विरोध, पुत्रों से कष्ट विवाद आदि। वह जातक निर्धन, अविश्वासी, दयनीय होगा क्योंकि उस पर शनि का प्रभाव है।

(12) मंगल मीन में–

(*i*) जातक गोरे शरीर वाला, प्रेम में कष्ट, कम बच्चे, विचार में अनिश्चितता वाला होगा। वह विश्वासी, परेशान, कामुक, मलिन, उदरशूल, अकर्मण्य होगा।

वह अभ्यस्त, क्रूर हृदय वाला, परेशान और अप्रसन्न, बड़ों और ब्राहमणों का निरादर करने वाला, परिवार से बाहर खुश रहने वाला, बुरी संगति में

रहने वाला, दूसरों की इच्छा धारण करने वाला होगा। वह रोग से ग्रस्त, बच्चों से मतभिन्नता, विदेश में रहने वाला, अपने ही संबंधियों से अपमानित, दुष्टता और धोखे में धन का नाश करने वाला, आत्मा से भयभीत तथा प्रार्थना करने वाला होगा।

(*ii*) मंगल और बृहस्पति आपस में मित्र हैं। मंगल यहां से दूसरे और नवें स्थान का स्वामी है। अग्नि ग्रह जलीय राशि में। मंगल उत्तम स्थिति में है और जातक को निर्दयी, परेशान, कामुक बनाता है। इन सभी कारणों से जातक परिवार में और परिवार से बाहर कष्ट पाता है। वह अप्रसन्न रहता है तथा अनिश्चितता महसूस करता है। देखें कुण्डली XXVI, XIV.

12.4 बुध

(1) बुध मेष में–

(*i*) जातक दुष्ट दिमाग वाला, मध्यम कद का, कुरूप, दुराचारी, दोलायमान, सामाजिक, महान, सहिष्णु, चालाक, जुए का शौकीन, प्रतिरोधी, खतरनाक संबंधों वाला, धोखेबाज, अधिक खाने वाला, झगड़ालू, निर्दयी और अधर्मी होगा। वह युद्ध का शौकीन, समझौता नहीं करने वाला, विद्वान, संगीत और नृत्य में रुचि लेने वाला, कामुक, अर्जित धन का नाश करने वाला, ऋणी, बार-बार जेल जाने वाला होगा। कभी-कभी चंचल मस्तिष्क और कभी-कभी निश्चित निर्णय लेने वाला होगा।

(*ii*) बुध के लिए मंगल सम है किन्तु मंगल के लिए बुध शत्रु है। यहां से बुध षष्ठेश तथा तृतीयेश है। बुध व्यापार, कारोबार का कारक है तथा मंगल साहस देता है। मेष अग्नि तत्त्व राशि है जिसका स्वामी मंगल है। स्वभाव में चिंतन, प्रतिबद्धता, ऋण लेना (छठा भाव कर्ज, ऋण आदि होता है) रहेगा। स्वभाव से बुध अनिश्चित होता है अतः चंचल दिमाग वाला होगा।

(2) बुध वृषभ में–

(*i*) जातक उच्च स्थान प्राप्त करेगा और सुडौल शरीर वाला होगा। वह होशियार, तार्किक, स्वतंत्र, संरक्षण करने वाला, धनी, व्यावहारिक, शिक्षित होगा। उसे अनेक संतान होंगी। प्रसिद्ध स्त्रियों से मित्रता होगी और यौन

संबंध करेगा। वह विभिन्न कलाओं में प्रवीण, कामुक स्वभाव, धनी, भाईयों तथा पुत्रों से सुख होगा। दान देने में रुचि रखेगा।

जातक प्रसिद्ध, वेदों का ज्ञाता, व्यायाम करने वाला, आभूषणों का शौकीन होगा। वह धन अर्जित करेगा, विनम्र और मृदुभाषी होगा। उसकी पत्नी पवित्र होगी, किन्तु वह यौन संतुष्टि में रत रहेगा।

(*ii*) वृषभ में बुध मित्र राशि में उत्तम स्थिति में होता है क्योंकि यहां से वह दूसरे और पांचे स्थान का स्वामी है। कन्या (मूलत्रिकोण) से बुध नवीं राशि में है। जातक वेदों और शास्त्रों का ज्ञाता होगा और अति उत्तम वक्ता होगा। वह यौन संतुष्टि में रत रहेगा किन्तु उसकी पत्नी पवित्र होगी। देखें कुण्डली X, XXXIII.

(3) बुध मिथुन में—

(*i*) जातक डींग हांकने वाला, देखने में अच्छा, मृदुभाषी, चंचल, सुसंस्कृत, युक्ति से काम लेने वाला, दो माताओं वाला, संगीतज्ञ, अकर्मण्य, अन्वेषक, शारीरिक परिश्रम करने वाला, साहित्य, कला, विज्ञान, वेद, शास्त्र आदि में रुचि लेने वाला होगा। वह कवि, विषय में प्रवीणता, उत्तम और सुन्दर कपड़ों वाला, मकान और भोजन का सुख होगा। उसे गले की बीमारी होगी। वह एक सम्मानित व्यक्ति होगा तथा अपने सुखों का त्याग करने वाला, तर्क करने वाला, स्वतंत्र विचार वाला, दो पत्नियों और अनेक पुत्रों तथा मित्रों वाला भी होगा।

(*ii*) यहां पर बुध अपनी ही राशि में है अतः सुन्दर मुखाकृति वाला, एक से अधिक विवाह करने वाला, फलित विज्ञान में समृद्धि प्राप्त करेगा। बुध व्यापार और कारोबार का कारक है, जातक की आय अनेक स्रोतों से होगी। बुध शिक्षा और वाणी का कारक होता है अतः जातक मदृभाषी, उत्तम वक्ता वेद और शास्त्रों का विद्वान आदि होगा। देखें कुण्डली VII, XXII.

(4) बुध कर्क में—

(*i*) जातक बुद्धिमान, संगीत का शौकीन, शत्रुता तथा संबंधियों का अप्रिय, चिंतन करने वाला, कूटनीतिज्ञ, लचीला, बेचैन, भावुक, धार्मिक, उपभोग करने वाला, संयमी, माता-पिता का प्रिय, संगीत और धार्मिक

कथाओं में रुचि रखने वाला, राजा के लिए प्यार, आदर, यौन शान्ति में रत, विदेश में रहने वाला, विद्वान, चंचल दिमाग, स्त्रियों से शत्रुता के कारण धन की हानि, प्रसिद्ध और सम्मानित परिवार में जन्म लेने वाला होगा।

(*ii*) बुध और चन्द्रमा के योग से जातक का स्वभाव ऐसा होगा कि विद्वान होने, सम्मानित परिवार में जन्म लेने के बावजूद वह संयम को नापंसद करेगा और संबंधियों का अप्रिय होगा। बुध चन्द्रमा से घृणा करता है और उसे शत्रु मानता है किन्तु चन्द्रमा बुध को मित्र मानता है क्योंकि वह चन्द्रमा का पुत्र है। जातक को माता-पिता का प्यार मिलेगा। उसमें दोनों को ही विशेषताएं समाविष्ट होंगी। जातक चंचल दिमाग वाला, कूटनीतिज्ञ और विद्वान होगा।

(5) बुध सिंह में–

(*i*) जातक घुमक्कड़, दुष्ट, अभिमानी, डींग मारने वाला, वक्ता, अच्छी याददास्त वाला होगा। उसके कम बच्चे होंगे, जल्दी शादी होगी, दो मां होंगी, स्त्रियों का अधिक शौकीन नहीं होगा, स्वतंत्र विचार वाला, आवेगी, लाभकर व्यवसाय, अविश्वासी, भाईयों के साथ शत्रुता, अपनी पत्नी को खुश रखने वाला, जीवन में अधिक तरक्की नहीं करने वाला, शत्रुओं के नियंत्रण में रहने वाला, धनी, निर्बल होगा।

ज्ञान कला परिहीनो लोकख्यातो नसत्यवाक्यश्च।
अल्पस्मृतिश्च धनवान सत्वविहीनः सहजहन्ता ॥
स्त्रीदुर्भगः स्वतंत्रों जघन्य कर्माबुधे भवति पुरुषः।
प्रष्योऽप्रजस्तुं सिंहे स्वकुलविरूद्धो जनाभिरामश्च ॥

(सारावली अध्याय 2 श्लोक 9-10)

वह विवेकी नहीं होगा। कुछ विद्वान ज्योतिषियों के अनुसार उसमें विवेक की कमी होगी और कला से वंचित रहेगा। वह अपनी बातों में अविश्वासी, कमजोर याददास्त वाला, धनी, सहजहन्ता होता है। पत्नी की ओर से दुर्भाग्यशाली, नीच और निर्मम कार्य करने वाला होगा। वह अपने लोगों का ही विरोध करेगा किन्तु वह दूसरों का पक्षधर होगा।

(*ii*) बुध अपने मित्र की राशि में खुश रहता है। सूर्य और बुध का योग विवेक के लिए अच्छा होता है। यह स्थिर राशि है। बुध की कमजोरी यह

है कि जिस ग्रह से युक्त होता है उसके गुणों को अपने में समेट लेता है। विवेक का स्वामी स्थिर और निर्मम राशि में जातक को अभिमानी, डींग मारने वाला, वक्ता, अच्छी याददास्त, स्वतंत्र विचारक और अविश्वासी बनाता है। देखें कुण्डली XXIX, XXXVI.

(6) बुध कन्या में–

(*i*) जातक विद्वान, सद्गुणी, वाक्पटु, स्वतंत्र भयरहित, मेधावी, सुन्दर, चिढ़ने वाला, परिष्कृत, सामाजिक, काल्पनिक शक्ति वाला, स्वनियंत्रित, कठिनाइयों का सामना करने वाला, लेखक, पुजारी, मधुभाषी, खगोल शास्त्री, गणितज्ञ, लेख और कविता का ज्ञान वाला, मशीनी कला में विद्वान, परिवार का बड़ा पुत्र, सद्गुणी लोगों से सम्मानित, स्त्रियों का प्रिय, दूसरों की सेवा करने वाला, प्रसिद्ध तर्क करने वाला, धर्मार्थ कार्य करने वाला, बलवान, सुन्दर और मोहक आंखों वाला और सुन्दर आंखों वाली स्त्रियों के साथ रहने वाला होगा।

(*ii*) इस राशि में बुध बलवान होता है। इस योग में बुध के सभी गुण और विशेषताएं देखने को मिलती है। दूसरे स्थान का स्वामी शुक्र है और 12वें का स्वामी सूर्य है। दूसरा तथा 12वां भाव आंखों का होता है। आंखें सुन्दर होंगी। शुक्र के प्रभाव से आंखें आकर्षक होती हैं। देखें कुण्डली XXX, XXXIX.

(7) बुध तुला में–

(*i*) जातक का शरीर सुन्दर, रक्तरंजित शरीर, अनुभवगम्य, शिक्षक की प्रवृत्ति, शिष्ट, दार्शनिक, विश्वासी, सामाजिक, विवेकशील, उत्सव मनाने वाला, कला के ज्ञान वाला, तर्क करने वाला, मधुर एवं सक्षम वक्ता, अधिक व्यय करने वाला, अनेक कारोबार से आय कमाने वाला, विद्वानों का आदर करने वाला, अतिथि व देवता का आदर करने वाला और विवेकी होगा। वह प्रिय, चंचल दिमाग वाला, क्रोधी और कभी-कभी शांत रहने वाला होगा। वह जन सेवा का बहाना करेगा। पवित्र स्त्रियों की संगति में रहने वाला होगा। दुष्ट स्त्रियों की संगति में धन का नाश करेगा।

(*ii*) बुध मित्र की राशि में है। तुला से नवें और 12वें स्थानों का स्वामी है। सभी प्रकार से बुध अच्छा फल देने वाला है। बुध पर तुला के प्रभाव का

अर्थ कला संगीत का ज्ञान प्राप्त करने की प्रवृत्ति। जातक धन अर्जित करेगा, सामाजिक, शिष्ट, उत्सव मनाने वाला और ब्राह्मणों, देवताओं एवं विद्वानों का आदर करने वाला होगा। देखें कुण्डली V, XII.

(8) बुध वृश्चिक में–

(*i*) जातक छोटे कद का, घुंघराले बालों वाला, प्रजनन संबंधी रोग वाला, सामान्य रूप से दुर्बल होगा। वह कंजूस, यौन शांति में रुचि लेने वाला, आलसी होने के कारण हानि, विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए पूरा पुरस्कार न पाने वाला होगा। जातक को कष्ट और दुख होगा, वह सदाचारी से घृणा करेगा, वह अविश्वासी, धर्म से वंचित, वह कंजूस हो सकता है किन्तु सदाचारी नहीं। वह दुष्ट स्त्रियों की संगति पसंद करेगा और निर्मम सजा देने का शौकीन होगा। वह नीच कार्य करेगा, ऋणी होगा, छोटे लोगों के साथ रहकर चोरी करेगा। वह साहसी और दुष्ट होगा।

(*ii*) बुध मंगल का सम है। यहां से बुध 8वें और 11वें स्थान का स्वामी है, यह शुभ नहीं है। मिथुन से छठे में बुध और कन्या से तीसरे में बुध की स्थिति अच्छी नहीं होगी है। इस प्रकार मंगल की राशि से साहस और उतावलापन इसे विरासत में मिलता है। देखें कुण्डली VIII, IX, XXIII.

(9) बुध धनु में–

(*i*) जातक लम्बे कद का, सुडौल, विद्वान, कुलीन समाज द्वारा सम्मानित, विज्ञान में रुचि लेने वाला, उतावला, अंधविश्वासी बहादुर, कूटनीतिज्ञ, दुष्ट कार्य करने में सक्षम, अधिशासी, प्रसिद्ध, उदार, वेदों और शास्त्रों का ज्ञाता, मध्यस्थता करने वाला, मंत्री, अपनी जाति का नेता या पुजारी, अति अमीर, यज्ञ व धार्मिक उपदेश में रुचि लेने वाला, वाक्पटु, धर्मार्थ, लेखन में निपुण, कला में कुशल, स्वअर्जित धन वाला होगा। दूसरों की सहायता के लिए धन खर्च करेगा।

(*ii*) बुध विवेक, बुद्धि आदि का कारक है। बुध यहां अग्नि राशि धनु में होता है (जिसका स्वामी बृहस्पति, देव गुरु है जो शिक्षा का भी कारक है)। धनु से बुध 7वें और 10वें स्थान का स्वामी है। जातक के स्वभाव पर इन दो शुभ ग्रहों का प्रभाव होगा। जातक वेद और शास्त्रों के ज्ञान के

कारण प्रसिद्ध होगा। धार्मिक उपदेशक के रूप में उसका आदर होगा। उसके कर्मों में बृहस्पति और बुध के गुणों का समावेश होगा। देखें कुण्डली XVI.

(10) बुध मकर में–

(*i*) जातक स्वार्थी, व्यापारी, मितव्ययी, छोटे कद का, चालाक, अन्वेषक, चंचल, परेशान, संदेह करने वाला, कर्ज देने वाला होगा। उसे शत्रुओं का भय होता है। उसका स्वभाव नीच और बुरा होगा। हमेशा दूसरों के लिए कार्य करता है। यद्यपि नशे की आदत होती है किन्तु विनम्र व्यवहार रखता है। वह आलसी, शत्रुओं वाला, डरपोक और गन्दा होगा।

(*ii*) यहां बुध अपने मित्र राशि में है। मकर कन्या से पंचम और मिथुन से अष्टम है। इस राशि में बुध छठे और नवे स्थान का स्वामी है। पंचम और नवम् का प्रभाव होगा (अत्युत्तम–उत्तम फल) किन्तु छठे और आठवें का संबंध होने के कारण रोग, नशा, विभिन्न दुखों से उत्पीड़न होगा। शनि और बुध के संबंध से प्रजनन शक्ति में क्षीणता, विवेक की हानि, अविश्वासी, आलसी और बुरे स्वभाव का होगा। देखें कुण्डली XIII, XXIV.

(11) बुध कुंभ में–

(*i*) जातक मध्यम कद का कमजोर शरीर वाला, डरपोक, अभिमानी, झगड़ालू, स्पष्ट, प्रसिद्ध, विद्वान, परिवार में उलझन पैदा करने वाला, दरिद्र, धन का अभाव, बलशाली, धर्म में विश्वास करने वाला, शत्रुओं से कष्ट पाने वाला, बुरी भावनाओं वाला, बुरे आचरण वाला, सत्कर्म न करने वाला होगा (सद्बुद्धि कर्म रहित)। अप्रशंसनीय कार्य करने वाला, दूसरों से अपमानित, अपनी पत्नी का शत्रु, दुर्भाग्यशाली, डरपोक, अभद्र (म्लेच्छ) तथा नपुंसक होगा।

(*ii*) शनि की राशि होने के कारण वही फल होगा जो मकर का है। मकर चर राशि है, पृथ्वी राशि है और सम राशि है। कुंभ स्थिर, वायु और विषम राशि (क्रूर) है। यहाँ बुध नीचाभीलाषी है। यह शनि की मूल त्रिकोण राशि है। बुध के लिए बुध पांचवें और आठवें स्थान जो मूलत्रिकोण राशि का स्वामी है। यहां मूल त्रिकोण राशि अष्टम में है। बुध मिथुन से नवम् में तथा कन्या से छठे में है। यहां भी पुनः पंचम् और नवम् भाव शामिल है।

किन्तु 6 व 8 दुख, उलझन, झगड़ालू स्वभाव, नीचता, बुरा स्वभाव देगा और जातक को सत्कर्मों से दूर रखेगा। पुनः बुध पर शनि का प्रभाव जातक को डरपोक, प्रजनन शक्ति में क्षीणता, गन्दा स्वभाव देगा। पंचम और नवम के प्रभाव से जातक विद्वान, सामाजिक और प्रसिद्ध होगा। यह देखा जाता है कि शनि की राशि में बुध की स्थिति शुभ नहीं है। देखें कुण्डली XIV, XV, XX.

(12) बुध मीन में–

(*i*) जातक परतंत्र, दूसरों की सेवा करने वाला, चिड़चिड़ा, अकर्मण्य, नीच दिमाग वाला, देवताओं और ब्राह्मणों का आदर करने वाला होगा। वह दूसरे के धन का रक्षक नियुक्त हो सकता है, सुन्दर स्त्रियों को देखकर खुश रहने वाला, वह पवित्रता और उत्तम आचरण का, शौकीन होगा, विदेशों में रहने वाला, निःसन्तान, निर्धन, पवित्र स्त्री वाला, विवेकी, भाग्यशाली, धार्मिक, सिलाई आदि में निपुण, शास्त्रों और ललित कला का ज्ञानी।

(*ii*) नीच राशि में बुध बिल्कुल निर्बल है, केवल अपवाद वाले मामलों में बुध उत्तम फल देता है। बुध मीन से चतुर्थ और सप्तम स्थानों का स्वामी है और मिथुन से दशम तथा कन्या से सप्तम में है। जातक नेक काम करेगा, पवित्रता पसन्द करेगा, देवताओं और ब्राह्मणों का आदर करेगा, विवेकी, भाग्यशाली तथा दूसरों के खजाने की रक्षा करेगा। बुध नीच का है अतः जातक दूसरों की सेवा करने वाला चिड़चिड़ा, आश्रित होगा, मीन जलीय, द्विस्वभाव और सम राशि है। उसमें बृहस्पति की विशेषताएं होगी। अतः जातक का धर्म में विश्वास देवताओं एवं ब्राह्मणों के प्रति आदर, पवित्रता पसन्द करने वाला और उत्तम आचरण वाला होगा। किन्तु बुध बुद्धि का कारक होता है जो नीच का है। नीच दिमाग नीच काम करेगा। सभी तरह से उत्पीड़न में रहेगा। देखें कुण्डली XI, XXXV.

12.5 बृहस्पति

(1) बृहस्पति मेष में–

(*i*) जातक बलवान, धनी, दूरदर्शी, अधिक बच्चों वाला, शिष्ट, उदार, स्थिर स्वभाव वाला, हमदर्द होगा, सुखी वैवाहिक जीवन, शांत स्वभाव,

सद्भावी, उच्च स्थिति, अनेक शत्रुओं से घिरा हुआ, धनी और सम्मानित होगा। वह किसी कार्य को कराने की स्वीकृति देने के अधिकार वाला होगा।

जातक तर्क करने वाला (वादिगुणैः सम्पन्न), अपने प्रयासों से मूल्यवान पत्थर और आभूषण प्राप्त करेगा, अनेक पुत्रों वाला, प्रसिद्ध और उत्तम व्यवसाय करेगा। उसका शरीर घायल होगा और वह निर्मम सजा देने वाला होगा।

(*ii*) यहाँ बृहस्पति मित्र राशि में अग्नि, चर और विषम राशि में होता है। इस राशि के लिए बृहस्पति नवम् और 12वें स्थान का स्वामी होता है। धनु से यह पंचम राशि तथा मीन से दूसरी राशि है। इस प्रकार 2, 5, 9 और 12वां भाव शामिल है, बृहस्पति मंगल की राशि में है। जातक के सन्तान, सुखी दाम्पत्य जीवन, उत्तम स्वास्थ्य, अपने प्रयासों से मूल्यवान् पत्थर और आभूषणों को प्राप्त करने वाला, अपने व्यवसाय में प्रसिद्ध, सजा देने की स्थिति में होगा अथवा न्यायाधीश। ये सब कछ संभव है क्योंकि बृहस्पति (धन, न्याय, ज्ञान, संतान, सुख) मंगल की राशि में है (कमाण्डिंग स्थिति, निर्मम सजा, घायल शरीर आदि) 1, 5, 9 और 2 धन के लिए अच्छा होता है। प्रसिद्धि, संतति, सुखी वैवाहिक जीवन आदि होगा। 12वें के कारण कुछ कष्ट हो सकता है। वह कमाण्डर, सेना का नायक, अनेक पत्नियों और बच्चों वाला, धार्मिक, क्षमा करने वाला, बहादुर और प्रसिद्ध होगा।

(2) बृहस्पति वृषभ में–

(*i*) जातक चौड़े शरीर वाला, ठोस स्वास्थ्य, ब्राह्मणों और देवताओं का आदर करने वाला, भाग्यशाली, गौरवशाली, अपनी पत्नी से प्यार करने वाला, सुखी वैवाहिक जीवन, सुन्दर और आकर्षक मुखाकृति, व्यवसायी, प्रचुर धन, उत्तम वस्तु और आभूषण धारण करने वाला होगा। वह अपनी वाणी तथा बुद्धि, कौशल और राजनैतिक तथा न्यायिक और विवेक के लिए प्रसिद्ध होगा। वह विनम्र होगा, अनुभवी और चिकित्सा का पूर्ण ज्ञान वाला होगा। जातक चुस्त होगा और महत्त्वपूर्ण, उदार, शिक्षित, सृजनात्मक क्षमता, स्वस्थ, सबका प्रिय, आत्मसंतुष्टि वाला होगा। वह शत्रुओं से घिरा रह सकता है और उनके साथ उचित व्यवहार कर सकता है।

(*ii*) बृहस्पति पृथ्वी, स्थिर और सम राशि में है। बृहस्पति के लिए शुक्र शत्रु है। बृहस्पति मीन से तीसरे में और धनु से छठे में होता है। वृषभ राशि के लिए बृहस्पति अष्टम और एकादश स्थान का स्वामी होता है। अन्तर्ग्रस्त भावों और दोनों ग्रहों के संबंधों को देखते हुए ऊपर (*i*) में दिए गए फल सही प्रतीत नहीं होते है किन्तु बृहस्पति धन, शिक्षा, समृद्धि आदि का कारक होता है और शुक्र शास्त्रों का ज्ञाता व सब प्रकार के सांसारिक सुख देता है। अतः जातक को आराम, धन, आभूषण, बुद्धि, कौशल वाणी आदि की प्राप्ति होगी। शुक्र बृहस्पति का आदर करता है। बृहस्पति की दृष्टि 5, 7 व 9 होती है। 5 संतान, 7 पत्नी और 9 भाग्य, प्रसिद्ध, नाम आदि। जातक अच्छे पुत्रों और सुखी वैवाहिक जीवन बिताने वाला होगा। देखें कुण्डली V, XIV, XIII, XXXV.

(3) बृहस्पति मिथुन में—

(*i*) जातक लम्बे कद का, सुडौल, आकर्षक आंखों वाला, दानशील, पवित्र ह्दय वाला, विद्वान, कूटनीतिज्ञ, भाषा वैज्ञानिक या कवि, चुस्त, प्रोत्साहन देने वाला, मृदुभाषी, स्वच्छ आदतवाला, सुन्दर व्यक्तित्व, सबके साथ मित्रवत, शिष्ट, प्रवीण, विवेकी, बड़ों और संबंधियों का आदर करने वाला, कर्त्तव्यपरायण होगा।

(*ii*) यहां बृहस्पति बुध की राशि में होता है जो द्विस्वभाव, वायु तत्त्व, विषम राशि है। इस योग में ऊपर (*i*) में वर्णित सभी अच्छे फल होंगे। यहां बृहस्पति अपनी राशि से चतुर्थ और सप्तम में होता है और मिथुन से सप्तम और दशम स्थान का स्वामी है। बृहस्पति और बुध के योग का वर्णन पहले किया जा चुका है। ऐसी स्थिति में जातक मंत्री—पद (बुध की किसी भी राशि में बृहस्पति), सुख, पत्नी, संतति को प्राप्त करता है। बराहमिहिर के अनुसार, *बुध की राशि में बृहस्पति या बृहस्पति की राशि में बुध असामान्य विवेक और बुद्धि देता है।* देखें कुण्डली XV, XII, VI, VII.

(4) बृहस्पति कर्क में—

(*i*) जातक सुन्दर, श्यामवर्ण, विद्वान, धर्मार्थ, उत्तम स्वभाव, बलवान, प्रसिद्ध, धनी, दीर्घायु पुत्रों वाला, सच्चा एवं तपस्वी, सभी से सम्मानित, अलग व्यवसाय वाला, राजा, मित्रों को प्यार करने वाला, उच्च पदासीन,

सामाजिक कार्य की प्रवृत्ति वाला, गणितज्ञ, विश्वासी, जीवन में प्रगति की योजना बनाने वाला होगा।

(*ii*) यह बृहस्पति की उच्च राशि है। यह चर, जलीय और सम राशि है। बृहस्पति और चन्द्रमा आपस में मित्र हैं। यहां से बृहस्पति छठे भाव और नवें स्थान का स्वामी है। बृहस्पति मीन से 5वें स्थान तथा धनु से आठवें स्थान पर होता है, किन्तु उच्च का होता है। संबंधित भाव 5, 9, 6 और 8 है। ऊपर बताए गए गुण बृहस्पति, चन्द्रमा के योग तथा उच्च के बृहस्पति, पंचम और नवम् राशि के कारण हैं। किन्तु 6 और 8 की स्थिति से कुछ समस्याएं हो सकती हैं जो धन से संबंधित होगी। जातक अपने बड़ों तथा ब्राह्मणों का आदर करने वाला होगा। बृहस्पति के कर्क में स्थिति के बारे में *बराहमिहिर तथा गुणकर ने बताया है कि जातक रत्नों, पुत्रों तथा पत्नी वाला धनी, सुखी और बुद्धिमान होगा।* देखें कुण्डली X, XXIV, XXX, XXXIX.

(5) बृहस्पति सिंह में–

(*i*) जातक प्रभावशाली आकृतिवाला, लम्बा, महान, बलवान शरीर, आसानी से नाराज होने वाला, उदार, खुले दिमाग वाला, साहित्यिक, सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहने वाला, पहाड़ियों में विचरण करने वाला होगा। जातक धन प्राप्त करने में सक्षम, किला, जंगल और पहाड़ों में रहने का शौकीन, दान करने वाला, मृदुभाषी, शत्रु की सम्पदा पर विजय पाने वाला, बहुत मित्रों वाला, विद्वान, धनी, प्रसिद्ध संबंधी होंगे, राजा, वीर और शत्रु के खेमों का नाश करने वाला होगा।

(*ii*) सिंह का बृहस्पति समान रूप से बली होता है। यह स्थिर, अग्नि, विषमराशि है। यहां पर बृहस्पति उच्च का फल देता है। बराहमिहिर ने कहा है कि वह वही फल देता है जो वह उच्च में देता है। सिंह का बृहस्पति नेतृत्व भी देता है। बृहस्पति और सूर्य परम मित्र है। इस राजसी राशि में बृहस्पति नाम और प्रसिद्धि देता है और जीवन में उच्च पद देता है। जातक किशोरावस्था से उन्नति करता है और जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

इस राशि से बृहस्पति पंचम तथा अष्टम स्थान का स्वामी होकर अपनी राशि से 6 व 9 में स्थित है। 6 और 8 राशि के कारण कुछ अशुभ फल हो सकते हैं।

(6) बृहस्पति कन्या में–

(*i*) जातक मध्यम कद का, महत्त्वाकांक्षी, स्वार्थी, प्रिय, भाग्यशाली होगा, उसकी पत्नी सुन्दर होगी, वह अति सहनशील, विद्वान होगा। वह फूलों, सुगंधी, उत्तम वस्त्रों का शौकीन होगा, स्वच्छ व निर्मल हृदय वाला, दान करने वाला, सुन्दर और मुख पर तेज वाला होगा। उसके भय से शत्रु हमेशा सतर्क रहेंगे। वह विवेकी, कार्य में कुशल, उपक्रमों से लाभ कमाने वाला, शास्त्रों और कला का ज्ञाता, शास्त्रों पर वाद-विवाद करने वाला होगा।

(*ii*) वह विद्वान होगा। यद्यपि बृहस्पति के लिए यह अच्छी स्थिति नहीं है किन्तु बृहस्पति और बुध के योग से जातक धनी, होशियार, प्रसिद्ध, विद्वान, स्वच्छ और सबका प्रिय होगा। बुध की राशि में बृहस्पति लगभग वहीं फल देता है जो बुध बृहस्पति की राशि में देता है। देखें कुण्डली VIII, IX, XX.

(7) बृहस्पति तुला में–

(*i*) जातक के अच्छे पुत्र होंगे, देवता और ब्राह्मणों की पूजा करने वाला, यज्ञ करने वाला, दानी, होशियार, शत्रुओं वाला होगा (जातक सुन्दर, स्वतंत्र, खुले दिमाग का, आकर्षक, मोहक व्यक्तित्व, शिष्ट, बलवान, सक्षम, अधिक क्रियाकलापों से थकने वाला, धार्मिक, सक्षम, मोहक, विद्वान, शास्त्रों का ज्ञाता, विदेश में नौकरी करने वाला, आभूषणों में रुचि रखने वाला, नृत्य और नाटक से धन कमाने वाला, अपने सहयोगी व्यापारियों में वरिष्ठ, अतिथि सत्कार करने वाला होगा।

(*ii*) वही स्थिति है जो वृषभ में बृहस्पति की है। अन्तर केवल यह है कि तुला वायु राशि, विषम राशि और चर राशि है तथा शुक्र का मूलत्रिकोण स्थान है। अतः काफी अंतर है जबकि बृहस्पति और शुक्र का संबंध वही है। जातक शीघ्र कार्य करने वाला तथा अधिक काम से थकने वाला होगा।

बृहस्पति यहां से तीसरे और छठे स्थान का स्वामी है तथा मीन से अष्टम में तथा धनु से ग्याहरवें में स्थित है, वृषभ के मामले में भी यही स्थिति है। इस प्रकार 3, 6, 8 और 11 भाव अन्तर्ग्रस्त हैं। जातक पर तुला के गुणों और विशेषताओं का प्रभाव अधिक होगा। वह सुन्दर, स्वतंत्र, खुले दिमाग का, आकर्पक, मोहक मुखाकृति वाला, धन व आभूषणों में रुचि लेने

वाला होगा। नृत्य और नाटक से धन अर्जित करेगा। बृहस्पति के प्रभाव से देवता, ब्राह्मणों, यज्ञ में रुचि लेने वाला और विद्वान होगा, अनेक उत्तम पुत्र होंगे। शत्रुवत् संबंध और 6, 8 की स्थिति के कारण उसके शत्रु होंगे तथा रूकावटें आ सकती हैं। तुला का बृहस्पति व्यापार में उच्च स्थान देगा तथा वित्तीय स्थिति ठीक रहेगी। देखें कुण्डली XIII, XXXIII.

(8) बृहस्पति वृश्चिक में–

(*i*) जातक लम्बा, नत, मनोहर, गंभीर, सुडौल, स्वार्थी, अविवेकी, कमजोर शरीर वाला, स्त्रियों की सेवा करने वाला, कामुक, परम्परागत, अभिमानी, ईर्ष्यालु, उत्सव मनाने वाला, अप्रसन्न रहेगा। वह दान देगा, धनी होगा। उसके पास अनेक गाड़ियां होंगी और वह बुद्धिमान और आभूषणों से सज्जित होगा। वह शास्त्रों में निपुण, राजा, टीकाकार (अर्थात् अपनी टिप्पणी के सूत्रों की शब्दशः व्याख्या जैसे वेद पर) होगा। जातक मंदिरों, नगरों का निर्माण करेगा, अनेक पत्नियां होंगी तथा पुत्र कम होंगे, रोग से पीड़ित, कठिनाइयों के बीच रहने वाला, उग्र, अपने कार्य में स्थिर, विवेकी और अपने कार्यों में उत्साहहीन होगा।

(*ii*) यहां मेष के समान फल होगा किन्तु यहां बृहस्पति स्थिर, सम और जलीय राशि में है। अतः कुछ अंतर होगा। यहां पर बृहस्पति दूसरे और पांचवें राशि का स्वामी है (अत्युत्तम स्थिति), यहां पर बृहस्पति मीन से नवम् में तथा धनु से 12वें में है। बृहस्पति नीच राशि की ओर अग्रसर है अतः पीड़ा देगा, रति रोग, बवासीर, गुर्दे, रक्त प्रवाह में रूकावट आदि जैसे रोग होंगे। जातक विद्वान वेद, अन्तरिक्ष विज्ञान, सर्जन, बैंकर आदि जैसे अपने पंसद के विषय में निपुण होगा तथा 2, 5 और 9 स्थिति के कारण धनी होगा। देखें कुण्डली XXIX.

(9) बृहस्पति धनु में–

(*i*) जातक एक उपदेशक, धर्म पर आचरण करने वाला, उस पर न्योछावर होने वाला होगा। वह धनी, दान करने वाला, अपने लोगों के साथ मित्रवत, दूसरों की सहायता करने वाला, शास्त्रों में रुचि रखने वाला, किसी क्षेत्र का प्रधान या मंत्री, अनेक देशों में रहने वाला, एकान्त पसंद और समाधियों पर जाने वाला होगा। उसे विरासत में काफी धन प्राप्त होगा। वह

प्रभावी, सुन्दर, उत्तम, विश्वासी, दानशील, उत्तम प्रशासक, क्षीण शरीर वाला, कलात्मक गुणों वाला, कवि, खुले दिमाग वाला, वाद-विवाद करने वाला होगा। उसके पास अनेक सवारी तथा आभूषण होंगे।

(*ii*) यहां पर बृहस्पति अपनी ही राशि में तथा मूलत्रिकोण में होता है। धनु, अग्नि तत्त्व द्विस्वभाव और विषम राशि है। ऊपर (*i*) में वर्णित सभी फल बृहस्पति के हैं अर्थात् विवेकी, शिक्षित धार्मिक प्रवृत्ति, धनी, सहायता करने वाला, दानशील, दयालु मंत्री आदि। उसके पास प्रचुर धन होगा और वित्तीय स्थिति अच्छी होगी। सहायता करने की प्रवृत्ति तथा एकान्तप्रिय होगा। देखें कुण्डली XXVI, XI, XXXVI.

(10) बृहस्पति मकर में–

(*i*) जातक युक्ति रहित, सांवला शरीर, उत्तम सोच, अपमानित आचरण, उदार, अप्रसन्न, चिढ़ने वाला, पशुवत्, ईर्ष्यालु, कमजोर और नीच दिमाग वाला, दूसरों के लिए कार्य करने वाला, निष्क्रिय, आलसी, क्रोधी, भयभीत, महत्त्वकांक्षी होगा। वह कम प्रतिभाशाली, दुखों और कठिनाइयों का अनुभव करने वाला, नीच आचरण वाला, मन्दमति होगा। अंतिम समय में दुख, गरीबी से पीड़ित, शुभता से वंचित रहने वाला, दया, शुद्धता, डरपोक, अन्य देश में रहना पसंद करेगा और अपने संबंधियों तथा धर्म के प्रति निरादर करने वाला होगा।

बराहमिहिर और गुणकर के अनुसार, मकर का बृहस्पति दरिद्रता, दुख और नीचता देता है।

(*ii*) दैवी ग्रह बृहस्पति यहां पर नीच का होता है, वह अपने शुभ फलों से वंचित रहता है। जीवन में सुखी रहने के लिए उसके पास कुछ नहीं होता। बृहस्पति यहां पर धनु से दूसरे में तथा मीन से 11वें में होता है। मकर के लिए बृहस्पति तृतीयेश तथा द्वादशेश है। संबंधित भाव 2, 11, 12 और 3 हैं। सभी अशुभ भावों में है। अतः बुरे तथा अशुभ फल होंगे।

(11) बृहस्पति कुंभ में–

(*i*) जातक विद्वान, धनी, विवादी व्यक्ति, दार्शनिक, लोकप्रिय, दयालु, हमदर्द, दूरदर्शी, मानव के गुणों वाला, चिड़चिड़ा, मनन करने वाला, स्वप्नदर्शी, दाँत और पेट का रोग, रोगी, नीच, गन्दा स्वभाव, कंजूस और पापी होगा।

वाद-विवाद ग्रस्त होगा, अभद्र, बुरे कामों में रुचि लेने वाला, अपने समूह का प्रधान, अपनी ही बोलचाल से हानि उठाने वाला (स्ववाक्यदोषेण नाशितार्थश्च), बुद्धि और विवेक से वंचित, बड़ों के बिस्तर में जाने की धृष्टता करने वाला तथा अपने शिक्षक की पत्नी के साथ सहवास करने वाला होगा।

(*ii*) यहां बृहस्पति स्थिर, वायु और विषम राशि में है। बृहस्पति नीच राशि से निकला है। किन्तु यह शनि की मूलत्रिकोण राशि है। कुंभ की विशेषताएं बृहस्पति के प्रभावों में प्रबल होगी। ***बराहमिहिर और गुणकर के अनुसार, बृहस्पति कुंभ में उतना ही शुभ होता है जितना कर्क में।***

यहां से बृहस्पति दूसरे और ग्यारहवें स्थान का स्वामी है तथा वह मीन से 12वें में तथा धनु से तीसरे में स्थित है। अन्तर्ग्रस्त राशि 2, 11, 12 और 3 है जो सभी अशुभ हैं। यह शनि की राशि है। जातक रोगी, द्वेषी, स्वभाव, धन की हानि, बड़ों तथा सम्मानित स्त्रियों के साथ यौन संबंध के कारण पीड़ित होगा। महर्षियों ने ऊपर (*i*) में वर्णित मिश्रित फल बताया है। यह बृहस्पति के कारण होगा।

(12) बृहस्पति मीन में–

(*i*) जातक सुडौल, मध्यम ऊंचाई वाला, सुन्दर मुखाकृति वाला, दो पत्नियों वाला (यदि अशुभ के साथ हो) उद्यमी, कूटनीतिज्ञ, उच्च पदासीन, राजा से धन प्राप्त करने वाला, मकान दान में देने वाला, ब्राह्मणों की आज्ञा का पालन करने वाला, भद्र पुरुष होगा। यदि कोई उसकी सेवाएं लेता है तो वह आभारी होता है। उसे शास्त्रों का पूरा ज्ञान होता है, मित्रों तथा विवेकी लोगों से आदर पाता है। वह राजा की सेवा में मुख्य या सेनाध्यक्ष होगा (उच्च पदासीन, सरकारी अधिकारी)। वह अजय, प्रशंसा योग्य, अमीर, साहसी, अभिमानी और अपनी बातों पर निश्चल रहने वाला होगा। वह अपने कार्यों में शांत रहेगा।

(*ii*) यहां बृहस्पति द्विस्वभाव, सम और जलीय राशि में है। यह उसकी अपनी राशि है। धनु में बृहस्पति बेहतर स्थिति में था (क्योंकि वह मूलत्रिकोण राशि है)। अतः मीन में अच्छे प्रभाव अधिक नहीं होंगे। चूंकि मीन द्विस्वभाव राशि है, सम और जलीय राशि है और बृहस्पति की अपनी राशि है अतः जातक में सभी शुभ और अच्छे गुण होंगें।

12.6 शुक्र–

(1) **शुक्र मेष में**–(*i*) जातक अपव्ययी, सक्रिय, परिवर्तनशील, कलात्मक, स्वप्नदर्शी, आदर्शवादी, ललित कला में प्रवीण, निरंकुश, उदासीन, चिड़चिड़ा, दूरदर्शी, अप्रसन्न, नास्तिक, आरामतलब, नीच कार्यों के कारण धन की हानि उठाने वाला होगा। उसके पास अनेक मकान, सवारियां होगीं। वह नगर का प्रधान, घुमक्कड़, सम्मानित, कवियों की संगति में रहने वाला, सबके साथ मित्रवत् होगा। उसके शत्रु नहीं होंगे।

जातक **रतौंधी रोग** से पीड़ित, शत्रुता करने वाला, दूसरों की पत्नी के साथ रहने वाला, वेश्या के पास जाने वाला, जंगलों और पहाड़ों में घूमने वाला, स्त्री के कारण जेल जाने वाला, सेना का अध्यक्ष, अविश्वासनीय तथा प्रसिद्ध होगा।

(*ii*) यहां शुक्र चर, विषम और अग्नि राशि में मंगल की राशि में हैं। शुक्र मेष से दूसरें तथा सातवें स्थान का स्वामी है और तुला से सातवें तथा वृषभ से 12वें में स्थित है। मंगल और शुक्र के योग से जातक स्त्री का शौकीन, नीच कर्मों के कारण धन की हानि, स्त्री के कारण जेल जाने वाला होगा। शुक्र की अपनी विशेषताएं और कारकत्व, ललित कला में निपुणता, मकानों और सवारियों का स्वामी, कवियों की संगति आदि है। मेष की विशेषताएं, चंचल, घुमक्कड़, आदर, जंगल और पहाड़ों में विचरण करने वाला, जनता का नेता/नगर प्रधान आदि है।

मंगल की राशि में शुक्र की स्थिति से परिवार को अपमान, यौन पिपासा को शांत करने के लिए अनैतिक साधन को अपनाना, धन की हानि उठाकर निर्धन होना (बराहमिहिर और गुणकर के अनुसार) आदि है।

मेष में शुक्र की स्थिति दृष्टि के लिए अच्छी नहीं है। जातक युवावस्था में दृष्टि खो सकता है और रतौंधी से पीड़ित होगा। यौन संबंध में जातक अपनी इच्छा की पूर्ति करने में सक्षम नहीं होगा।

शुभ/अशुभ दृष्टि या अशुभ ग्रहों के संबंध के कारण फल में अंतर हो सकता है। देखें कुण्डली XXII, XI, XXXIII.

(2) शुक्र वृषभ में–

(*i*) जातक सुडौल, सुन्दर, मोहक, फूलों व सुगन्धियों का शौकीन, कृषक, धनी, मित्रवत् और अजातशत्रु होगा। उसके अनेक पत्नियां और पुत्र होंगे (बहुकलत्रसुतोत्सव गौरवं) सम्मानित और आदर पाने वाला होगा।

वह नृत्य का शौकीन, अमोदप्रिय, प्रकृति प्रेमी, मनोहर, रत्नों वाला, सुन्दर वस्त्रों वाला होगा। उसके पास अनेक गाएं होंगी, दानवीर, संबंधियों को साथ रखने वाला, अनेक विद्याओं में निपुण, अपनी वस्तुओं से जीव की सहायता करने वाला होगा। वह प्रधान/समाज का प्रधान होगा।

(*ii*) यहां शुक्र अपनी ही राशि में होता है जो स्थिर, पृथ्वी और सम राशि है। वृषभ में शुक्र जातक को अनेक स्त्रियों के साथ संगति, सुगंधी और फूलों का शौकीन बनाता है। वह साहसी, बुद्धि से धन कमाने वाला, राजा से सम्मानित, प्रसिद्ध और अपने संबंधियों के बीच प्रसन्न रहने वाला होता है। इस राशि में शुक्र आवश्यकता की सभी घरेलू वस्तुएं तथा गृहस्वामी के आनन्द की वस्तुएं देता है। कृषि, चौपायों, डायरी, पशुपालन, चिकित्सालय आदि जैसे कार्यों से लाभ हो सकता है। दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति से समाज में आदर मिलता है। यदि किसी प्रकार के बुरे प्रभाव हों तो नेत्र रोग हो सकता है। देखें कुण्डली VII.

(3) शुक्र मिथुन में–

(*i*) **बराहमिहिर और गुणकर के अनुसार**–जातक धनी, कला में प्रवीण और राजा के आदेशों का पालन करने वाला है।

मानसागरी के अनुसार–जातक को शास्त्रों/कला और कौशल का ज्ञान होगा। सरल और प्रिय आचरण, मृदुभाषी, उत्तम भोजन का शौकीन होगा। **डा. बी. वी. रमन की पुस्तक हिन्दू फलित ज्योतिष के अनुसार** ऐसा जातक धनी, भद्र, उदार, अभिमानी, सम्मानित, भोला-भाला, ललित कला को पसंद करने वाला, विद्वान, बुद्धिमान, तार्किक, न्याय करने वाला, दो विवाह करने वाला और भौतिकवादी होगा।

संत कल्याण वर्मा के अनुसार, जातक विज्ञान और शास्त्रों में प्रसिद्ध, सुन्दर, लेखक, कवि, जनप्रिय, संगीत और नृत्य से धन कमाने वाला,

देवताओं और ब्राह्मणों का सम्मान करने वाला, अधिक मित्रों वाला और टिकाऊ मित्रता वाला होगा।

(*ii*) यहां शुक्र बुध की राशि में है। यह द्विस्वभाव, वायु और विषम राशि है। यहां शुक्र वृषभ से दूसरे तथा तुला से नवम् स्थान में होता है (दोनों ही अच्छी स्थिति हैं)। मिथुन के लिए शुक्र पंचम और द्वादश स्थान का स्वामी है (पुनः अच्छी स्थिति)। बुध की राशि में शुक्र कविता, स्त्रियों, मित्रों और लेखन के लिए रुचि जागृत करा सकता है, वैवाहिक जीवन में कठिनाई दे सकता है। जातक के पास धन होगा, शिक्षा में रुचि लेगा। सहृदय, मृदुभाषी होगा। *इस राशि में शुक्र फेफड़े तथा जोड़ों का रोग देगा तथा ऊंचाई से गिरने का खतरा रहता है।* देखें कुण्डली VI, X.

(4) शुक्र कर्क में–

(*i*) जातक सुन्दर, भावुक, डरपोक, एक से अधिक पत्नियों वाला, अभिमानी, नीच आचरण, उदास, अप्रसन्न, अनेक बच्चे, भावुक विद्वान, शुभ कार्य करने वाला, तीव्र बुद्धि, अनेक कलाओं में निपुण, अपने वाक्‌पटुता से लोगों को प्रसन्न करने वाला होगा।

वह चतुर, विवेकी, विद्वान, बलवान, विनम्र, जननेता, इच्छित खुशी और धनी, सुन्दर आकृति, स्त्रियों और शराब के कारण कष्ट पाने वाला और पारिवारिक कष्टों से दयनीय रहेगा।

(*ii*) कर्क चर (लचीला स्वभाव), जलीय (विनम्र और शांत ब्राह्मण) सम (स्त्री) राशि है। शुक्र (स्त्री, आमोद का शौकीन, सुगंधी, कला और कौशल) इस राशि में जातक को ऊपर (*i*) में वर्णित क्रियाकलापों का शौकीन बनाता है। कर्क में शुक्र जातक को डरपोक बनाता है। वह दूसरों से सहायता की भीख मांगता है। उसकी दो पत्नियों होंगी, काफी बेरूखा होगा तथा बृहत **जातक व होरा मकरन्द के अनुसार दुखों से पीड़ित रहेगा।**

यदि चन्द्रमा क्षीण हो तो शुक्र दो शादियां देगा, यदि चन्द्रमा बली हो तो विपरीत फल नहीं देगा। जातक धनी, विद्वान, प्रसन्न, प्रसिद्ध होगा। स्त्रियों, शराब और पारिवारिक मामलों के कारण कष्ट हो सकता है।

(5) शुक्र सिंह में–

(*i*) जातक की पत्नी सुन्दर होगी, स्त्रियों के माध्यम से धन कमाएगा, मार्ग निरीक्षक, दंभी, कामुक, गोरा बदन, भावुक, ईर्ष्यालु, निरंकुश, पुरुष योनि द्वारा आकर्षित, निर्णय में अपरिपक्वता, शत्रुओं से अपराजित, धनी, प्रसिद्ध, अपनी पत्नी से सुख, परिवार से कष्ट, शत्रुओं से संतोष और सहायता पाने वाला होगा।

जातक स्त्रियों का आदर करेगा और धन और आनन्द का उपभोग करेगा, संबंधियों का प्रिय, सुख के बावजूद दयनीय, दूसरों की मदद करने वाला, ब्राह्मणों, बड़ों, उपदेशकों का आदर करने वाला होगा। सिंह का शुक्र स्त्रियों के माध्यम से धन देता है। **बराहमिहिर और गुणकर के अनुसार, सुन्दर स्त्री और कम पुत्रों वाला होगा।**

(*ii*) यहां शुक्र शत्रु राशि में, स्थिर, अग्नि और विषम राशि में है। यहां पर शुक्र वृषभ से चौथे में तथा तुला से एकादश में है। सिंह के लिए शुक्र तृतीयेश और दशमेश है। सिंह को अल्पपुत्र राशि कहा जाता है, इस अग्नि राशि में शुक्र (शुक्राणु) प्रजनन शक्ति कम कर देता है। इस राशि में शुक्र दृष्टि के लिए खराब होता है और गुप्त अंग में जलन की बीमारी दे सकता है। इस राशि और राशि स्वामी का स्वभाव राजसी होता है। अतः जातक शत्रुओं को जीत सकता है। उनसे लाभ उठा सकता है परिवार में उलझन हो सकती है। विपरीत योनि का शौकीन होगा (यहां से सप्तम सूर्य की शत्रु राशि है जो उलझन देता है)। जातक धन प्राप्त करेगा और दूसरों की सहायता भी करेगा। अपरिपक्व मिजाज के कारण जातक समय–पूर्व निर्णय ले सकता है। देखें कुण्डली XXIX, XXXVI.

(6) शुक्र कन्या में–

(*i*) जातक छोटे दिमाग का, निरंकुश, दुराचारी, दुखी, अनुचित प्यार करने वाला, धनी, विद्वान, काफी अमीर, पवित्र स्थानों पर जाने वाला, कम बोलने वाला, लक्ष्मी की पूजा करने वाला होगा। वह बिल्कुल अलग रहने वाला, विनम्र स्वभाव, निपुण, दूसरों की सहायता करने वाला, मृदुभाषी, अनेक साधनों से धन कमाने वाला, नीच, खुशियों से वंचित रहने वाला, बुरी स्त्रियों के साथ रहने वाला, अधिक पुत्रियों तथा कम पुत्रों वाला, विद्वान किसी भी सभा में आदर पाने वाला होगा।

जिस जातक का शुक्र कन्या में हो वह व्यक्ति नीच कर्म करेगा, सही व्यवसाय नहीं करेगा, अपने काम से खुश नहीं रहेगा, शादी नहीं भी हो सकती है या शादी के बाद कठिनाई आ सकती है। सवारी, मकान पाने में रूकावट आती है।

(*ii*) इस राशि में शुक्र नीच का होता है। यह पृथ्वी, द्विस्वभाव और सम राशि है। यहां शुक्र तुला से 12वें में तथा वृषभ से पांचवें में होता है। शुक्र 5 में नीच (नीच स्वभाव) और 12वां यौन होता है और शुक्र दूसरे और नवें स्थान का स्वामी है (अच्छी स्थिति)। जातक मृदुभाषी, लक्ष्मी का कृपा पात्र, दूसरों की सहायता करने वाला, अनेक साधनों से धन कमाने वाला होगा। शुक्र चूंकि नीच का है और बुध की राशि में है अतः वह अनुचित संबंध बना सकता है और सुख आदि से वंचित रह सकता है। देखें कुण्डली XXXIX.

(7) शुक्र तुला में–

(*i*) तुला का शुक्र जातक को राजनेता, कवि, बुद्धिमान, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, वैवाहिक सुख, सफल विवाह, कामुक, अभिमानी, सम्मानित, अन्तर्ज्ञानी, भावुक, लम्बी यात्रा करने वाला बनाता है। जातक फूलों, सुगंधियों, रंगीन आभूषणों का शौकीन, धनी, लम्बे समय के लिए विदेश में रहने वाला, प्रसिद्ध, कवि, मेहनत से धन कमाने वाला, अपने लोगों की रक्षा करने वाला, कर्त्तव्यपरायण, देवताओं और ब्राह्मणों का आदर करने वाला, विद्वान, भाग्यशाली होता है। *वह जन्मस्थान से दूर, जाकर सफल होता है।*

(*ii*) यहां पर शुक्र अपनी ही राशि में है जो उसकी मूलत्रिकोण राशि है। इस राशि में शुक्र बली होता है, भाग्यशाली तथा सुन्दर बनाता है। इस राशि की सभी विशेषताएं जातक में पाई जाती है। वह धनी, प्रसिद्ध, सम्मानित होगा तथा देवताओं, ब्राह्मणों और विद्वानों का आदर करने वाला होगा। देखें कुण्डली V, VIII, IX, XII, XXX.

(8) शुक्र वृश्चिक में–

(*i*) जातक का शरीर बड़ा, मध्यम कद, स्वतंत्र कलात्मक, अन्यायी, अभिमानी, प्यार में असफल, निरंकुश, औसत धन वाला, झगड़ालू, प्रहार करने वाला, बदनाम, रति रोग, नशेबाज, गरीब ईर्ष्यालु, अपराधी, अधर्मी, विवादी, हाथ का काम करने वाला, भाईयों से प्रेम नहीं करने वाला,

दुर्भाग्यशाली, शत्रुओं से कष्ट पाने वाला, दुखी, अपवित्र स्त्रियों से शत्रुता रखने वाला, हत्या करने में कुशल, ऋणी, दरिद्र, अभिमानी, रतिरोगी तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला होगा।

(*ii*) यहां शुक्र स्थिर, सम और जलीय राशि में है। इस राशि का स्वामी मंगल है। मेष के शुक्र और वृश्चिक के शुक्र के फलों में एकरूपता होगी। वह चर, अग्नि तथा विषम राशि थी। मेष मंगल की मूलत्रिकोण राशि है। यहां पर स्थिति विपरीत है। यहां पर अत्यधिक अशुभ फल होगा। वृश्चिक के लिए शुक्र सप्तम और 12वें का स्वामी है। शुक्र वृषभ से सप्तम में तथा तुला से दूसरे भाव में है। इस प्रकार अन्तर्ग्रस्त राशियां 2, 7 और 12 हैं। ये सभी अशुभ भाव होते हैं। **सन्त कलयाण वर्मा, बराहमिहिर और गुणकर ने कहा है, कि शुक्र के लिए वृश्चिक अशुभ राशि है।** मुख्य अशुभ फल–वित्तीय बाधाएं (दूसरा भाव), स्त्रियों के प्रति आकर्षण (सप्तम भाव और द्वादश भाव, मंगल और शुक्र का योग) होगा। दुर्भाग्य तथा ऋणी (2 और 12), विवाहेत्तर संबंध, रतिरोग, दुख आदि।

टिप्पणी–यदि शुभ ग्रहों का प्रभाव हो, और ग्रहों की अन्य स्थिति विपरीत हो। देखें कुण्डली XXVI.

(9) शुक्र धनु में–

(*i*) जातक मध्यम ऊंचाई वाला, शक्तिशाली, सम्मानित, धनी, प्रभावशाली, उदार, स्पष्ट, प्रसन्न, घरेलू जीवन, उच्च पदासीन, दार्शनिक पत्नी, बच्चों, धन की ओर से खुश **(युवतिसूनु धनागमोत्सवं)** उत्सव मनाने वाला, मंत्री, प्रिय स्वभाव, कविता में रुचि रखने वाला, सांसारिक सुख का भोग करने वाला, विवेकी, कर्त्तव्यपरायण, धनी, सबका प्रिय, परिवार के सदस्यों के बीच सूर्य की तरह चमकने वाला होगा **(कुलाब्जसूर्यः)**। वह विद्वान, सजावट का शौकीन, गाय पालने वाला तथा धन का भोग करने वाला होगा। बृहस्पति की राशि में शुक्र जातक को सम्मान दिलाता है।

(*ii*) यहां पर शुक्र द्विस्वभाव राशि, अग्नि तत्त्व राशि, विषम राशि तथा बृहस्पति की राशि में है। बृहस्पति और शुक्र के संबंध से काफी उत्तम फल होता है जैसा कि हम बृहस्पति की स्थिति वृषभ और तुला में देख चुके हैं। इसी प्रकार धनु का शुक्र शुभ फल देने वाला है, यहां शुक्र वृषभ से अष्टम

में तथा तुला से तीसरे में स्थित है जो अति उत्तम स्थिति नहीं है। धनु के लिए भी शुक्र 6 तथा 11 का स्वामी होता है। यह भी बहुत अच्छी स्थिति नहीं है। दोनों ग्रहों के आपसी संबंध भी मित्रवत् नहीं है। संभवतः धनु और शुक्र की विशेषताओं के योग के कारण जातक धनी, सुखी वैवाहिक जीवन, उच्च पदासीन, मंत्री होगा। यह बताया गया है कि जातक अपने परिवार में सूर्य की तरह चमकेगा (कुलभूषण)। देखें कुण्डली XIII.

(10) शुक्र मकर में–

(*i*) जातक का शरीर दुर्बल, ढीठ, महत्त्वाकांक्षी, विद्वान, प्रखर, निम्न जाति की स्त्रियों का शौकीन, असैद्धांतिक, डींग मारने वाला, व्यय के भय से बूढ़ी औरतों के साथ संगति करने वाला, चिंता के कारण कमजोर, कवियों के साथ और जंगलों में रहना पसंद करने वाला होगा। अत्यधिक व्यय के कारण उसकी दशा दयनीय होगी, हृदयरोगी, मिथ्यावादी, धोखेबाज, नपुंसक, अच्छे कर्मों से वंचति, अति दुखी, मन्दबुद्धि, दूसरों का काम करने वाला तथा दुखी होगा (**दानव पूज्ये क्लेशसहो**)।

बराहमिहिर और गुणकर के अनुसार जातक भाग्यशाली, स्त्रियों से पराजित होने वाला, बुरी स्त्रियों की संगति वाला होगा।

(*ii*) यहां शुक्र मित्र की राशि, चर, सम और पृथ्वी राशि में है। शुक्र यहां से पंचम् और दशम् स्थान का स्वामी है तथा वृषभ से 9वें और तुला से 4 में स्थित है। ये सभी शुभ स्थितियां हैं, किन्तु ऋषियों द्वारा दिए गए फल उत्तम नहीं है।

शनि की राशि में शुक्र संतति देता है। वह और उसकी पत्नी दोनों ही शरीर से कमजोर होते हैं। शुक्र में शनि के गुण आ जाएंगे, वेश्यावृत्ति करेगा, दूसरों को धोखा देगा। वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होगा। दुर्भाग्यशाली होगा तथा धन कमाने में बाधाएं होगी।

5, 10, 9 और 4 (केन्द्र और त्रिकोण स्थानों) के शुभफल भी देखने को मिलेंगे। जातक जीवन में उन्नति करेगा। आधुनिक संदर्भ में शनि और शुक्र के योग से तकनीकी विषयों का ज्ञान, स्त्रियों से संबंधित कार्य, न्यून जातियों का उत्थान, राजनीति और उससे लाभ। **जैसा कि बराहमिहिर ने भी कहा है कि मकर का शुक्र जातक को भाग्यशाली तथा न्यून जाति**

की स्त्रियों में रुचि लेने वाला बनाता है। शनि-शुक्र के योग के कारण बुरे फल भी हो सकते हैं किन्तु शनि, शुक्र के अच्छे संबंध के कारण वह भाग्यशाली भी होगा। देखें कुण्डली XX, XIII, XXIV.

(11) शुक्र कुंभ में–

(*i*) कुंभ में शुक्र जातक को मध्यम कद देता है। जातक सुन्दर, सौजन्य, बुद्धिमान, डरपोक, विशुद्ध, शांत, सहायक, मानव गुणों वाला, सबका प्रिय होगा। उसके पास आभूषणों की कमी होगी तथा सुन्दर पोशाक नहीं होंगी किन्तु वह सत्कर्म करेगा (**विभलकर्म महालसता**) और आलसी होगा। वह अर्जित धन समाप्त कर देगा।

वह रोग से पीड़ित, आवेगी, सभी उद्यमों में असफल (**परयुवती गो**), अन्य स्त्रियों के पास जाने वाला, अपवित्र, बड़ों के और अपने बच्चों के साथ शत्रुता करने वाला होगा। वह अच्छे भोजन, अच्छी पोशाक से वंचित रहेगा और शारीरिक रूप से गन्दा रहने वाला होगा। शनि की राशि में शुक्र तामसी, आलसी, निष्क्रिय बनाता है।

(*ii*) शुक्र पुनः मित्र राशि में, स्थिर, विषम और वायु राशि में होता है। यहां से शुक्र चतुर्थ तथा नवम् स्थानों का स्वामी होता है। इस प्रकार यहां 4, 9, 10 व 5 भाव शामिल हैं जो सभी शुभ भाव होते हैं और उत्तम फल देना चाहिए जैसे जातक को सुन्दर, सर्वप्रिय, मानव के गुणों वाला और भाग्यशाली होना चाहिए। किन्तु मकर की तरह यहां भी शुक्र की स्थिति को शुभ नहीं बताया गया है और इस कारण अधिकतर फल बुरे.होते हैं।

स्थिति मकर के समान ही होती है। संभवतः इस कारण कि शुक्र उच्च राशि की ओर अग्रसर हो रहा है। उच्च का शुक्र (सांसारिक सुखों को भोगने की इच्छा) शनि का प्रभाव ले रहा है जो नौकर, नीच जाति, नीच कर्मों आदि का कारक होता है। इन दोनों प्रभावों के कारण जातक स्त्रियों, आमोद, आलसीपन आदि की ओर आकर्षित होता है, जिससे दुर्भाग्यशाली और रोगी होता है। देखें कुण्डली XIV, XXXVI.

(12) शुक्र मीन में–

(*i*) मीन का शुक्र जातक को युक्तिवाला, लोकप्रिय, मेधावी और शिक्षित बनाता है। वह शक्तिशाली उच्च, सम्मानित, आमोदी, सबका प्रिय,

मध्यम कद का होगा। वह राजा के समान धनी, विजयी, धन प्राप्त करने वाला तथा दान देने का शौकीन होगा।

वह शिष्ट, उदार, विवेकी, अति धनवान, शत्रुओं का नाश करने वाला, संसार में प्रसिद्ध, अत्युत्तम, दूसरों से भिन्न, राजा का प्रिय, मृदु वाणी वाला तथा बुद्धिवाला, उदार, पवित्र ढंग से धन और आदर प्राप्त करने वाला होगा। अपना वादा निभाने वाला, परिवार का पालन पोषण करने वाला तथा ज्ञानी होगा।

(*ii*) शुक्र उच्च राशि में, द्विस्वभाव (धर्म) जलीय (ब्राह्मण, विद्वान) और सम राशि (स्त्री) में है। यहां से शुक्र तीसरे और आठवें भाव (स्थान) का स्वामी (अशुभ) है तथा वृषभ से 11 में तथा तुला से 6 में है। यह स्थिति अच्छी नहीं है। अतः शुक्र अच्छी स्थिति में नहीं है। अतः शुक्र का प्रभाव बृहस्पति से कम होगा। बृहस्पति के प्रभाव से जातक विद्वान, सम्मानित, अमीर, विजयी, शिष्ट विवेकी, अत्युत्तम, राजा का प्रिय होगा। उच्च का शुक्र भी इन फलों में अपना सहयोग देता है। गुरु और शुक्र के योग तथा 3, 8, 11, 6 भावों के शामिल होने के कारण बुरे प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। जातक के आचरण पर बृहस्पति और शुक्र का मिश्रित प्रभाव होता है अर्थात् आदर के साथ धन का भोग तथा विवेक से प्रसिद्धि मिलती है। देखें कुण्डली XV.

12.7 शनि

(1) शनि मेष में—

(*i*) **मानसागरी के अनुसार** जिस जातक की कुण्डली में शनि मेष में होता है वह दुष्ट, घुमक्कड़, अविश्वासी, धोखेबाज, अनैतिक, डींग मारने वाला, झगड़ालू, उदास, दुष्ट, भ्रष्ट, गलत स्वभाव, चिड़चिड़ा होगा। वह दरिद्रता के कारण कमजोर, लोगों के साथ शत्रुता के कारण उन्नति न करने वाला, उनका विरोध करने वाला और दूसरों के लिए उत्तम विचार न रखने वाला होगा। भद्र लोगों के साथ सहानुभूति नहीं रखेगा।

संत कल्याण वर्मा के अनुसार—*यदि जन्म के समय शनि मेष में हो तो वह उसके नीच कर्मों तथा अति परिश्रमी होने के कारण दुखी होगा। वह*

धोखेबाज, संबंधियों से घृणा करने वाला, दोष लगाने वाला, बदसूरत, तुनकमिजाजी, अपने लोगों के साथ शत्रुता करने वाला, नीच कर्म करने वाला, ईर्ष्यालु, पापी होगा।

बराहमिहिर के अनुसार–*जातक बेवकूफ, घुमक्कड़, धोखेबाज, मित्ररहित होगा।*

गुणाकर *ने भी ऐसा ही बताया है और कहा है कि जातक को मां का सुख प्राप्त होगा।*

जातक अलंकार में *कहा है कि जातक दुष्ट, चिड़चिड़ा, अपने संबंधियों से अच्छा संबंध नहीं रखने वाला और अपनी शक्तिशाली बातों से आश्चर्यचकित करने वाला होगा।*

(*ii*) यहां पर शनि 10वें भाव (कर्म) का स्वामी और 11वें भाव (बड़े) का स्वामी है और नीच का है। यह चर, विषम तथा अग्नि राशि है जिसका स्वामी मंगल है। दसवीं राशि के स्वामी का नीच का होना कर्म में नीचता दर्शाता है अर्थात् उचित ढंग से कर्म न करने पर दुख होगा। जातक में मंगल और शनि दोनों के गुण होते हैं और वह मेष के प्रभाव में अधिक होता है। इस स्थिति के कारण सभी बुरे प्रभाव होंगे। जातक दरिद्रता और शत्रुता से पीड़ित रहेगा, बुरी आदतें होंगी, निष्फल प्रयास, पापी कर्म, ईर्ष्या आदि। नीच का शनि (दसमेश और एकादशेश) जीविका के उत्तम साधनों से लाभ से और इच्छा पूर्ति से वंचित रखेगा। वह वात रोग, सांस की बीमारी, बवासीर, आंख की बीमारी, बाल गिरने तथा यदा कदा ठंडक से पीड़ित रहेगा।

(2) शनि वृषभ में–

(*i*) जातक सांवला रंग, धोखा देने वाला, सफल शक्तिशाली, आधुनिक, चतुर, अधिक खाने वाला, शांत, संक्रामक रोगी, अधिक पत्नियों वाला, अपने पर विश्वास करने वाला, उदासी होगा। जातक को पत्नी से सुख प्राप्त नहीं होगा। वह पीठ पीछे शिकायत करने वालों के साथ रहेगा। कमजोर दिमाग वाला, *पुत्रों से सुख न प्राप्त करने वाला या निःसन्तान होगा।* वह धनवान, नौकर, बुरी बात करने वाला, झूठा, बूढ़ी औरतों का दिल जीतने वाला, खराब संगति में रहने वाला, स्त्रियों पर आसक्त, मूर्ख आदि होगा।

उसके अनेक काम होंगे, दृष्टि कमजोर होगी तथा खुलकर बोलने वाला नहीं होगा। वह निष्काषित स्त्रियों के साथ संबंध बना सकता है और स्त्रियों आदि से आनंद उठाता है।

(*ii*) यौन आनन्द का ग्रह शुक्र जब शनि के साथ होता है तो स्त्रियों का आसक्त बनाता है। जातक अपना तथा अपने परिवार का सुख, मान व कल्याण नष्ट कर देता है और अपने लत पूर्ति के लिए परिवार को भूल जाता है। वृषभ के लिए शनि नमवेश और दसमेश है और यहां पर मकर से 5वें में तथा कुंभ से चौथे स्थान में स्थित होता है जो सभी शुभ हैं जो उत्तम भाग्य और शुभ देगा। शनि की राशि में शुक्र का फल खराब बताया गया है। शनि का भी यहां पर वही फल होगा। यदि कुण्डली में अन्य स्थितियों के कारण जातक अपने मन पर काबू पा लेता है तो फल उत्तम होगा। देखें कुण्डली X, IX, XIX, XXXII, XXXV.

(३) शनि मिथुन में–

(*i*) मिथुन का शनि जातक को घुमक्कड़, तकनीकी तथा चिंतन करने वाला बनाता है। वह दयनीय, फूहड़, वास्तविक पतला, सूक्ष्म बुद्धि, युक्ति वाला बनाता है। जातक के बच्चे कम होंगे, रसायन तथा तकनीकी विज्ञान में रुचि लेने वाला, वैज्ञानिक, संकीर्ण बुद्धि, तार्किक व दुस्साहसी व हताश होगा।

वह शक्तिहीन हो सकता है। स्वभाव निर्मल होगा। घर से बाहर आनन्दित होगा, बड़ों से खुश नहीं रहेगा तथा प्रसन्नता व आनन्द आदि नहीं करेगा।

जातक ऋणी, जेल जाने वाला, मिथ्याभिमानी, विवाहोत्सव और प्रार्थना में भाग लेगा तथा विवेकी, छिपकर रहने वाला, दुष्ट और घूमने वाला तथा खेलकूद में भाग लेने वाला होगा। वह निर्लज्ज, निर्धन, सुखी और संतति वाला तथा तर्क और विवेक से वंचित रहेगा।

(*ii*) यहां शनि वायु, द्विस्वभाव और विषम राशि में है। शनि मिथुन से अष्टमेश और नवमेश तथा कुंभ से 5 तथा मकर से 6 में है। अतः मिश्रित फल होगा। बुध की राशि में शनि की स्थित सौहार्दपूर्ण होती है। अपनी विशेषताओं के साथ शनि में बुध के गुणों का समावेश होगा। अतः जातक खिलाड़ी, दुस्साहसी, दुष्ट, घुमक्कड़ तथा निष्फल प्रयास करने वाला होगा।

पंचम और नवम शुभ फल देगा किन्तु 6 और 8 के कारण जेल जाना पड़ सकता है, ऋणी बना सकता है, घुमक्कड़ बना सकता है और छिपकर रहेगा (जंगल में, विदेश में या जेल में या छिपकर)।

(4) शनि कर्क में–

(*i*) जातक गरीब, आमोदी, मन्द बुद्धि, आलसी, दुष्ट, अमीर, स्वार्थी, धोखेबाज, नीच कर्म करने वाला, परिश्रमी, मां के सुख से वंचित, कमजोर दांतों वाला, कम पुत्रों वाला होगा। कर्क का शनि जातक के स्वास्थ्य के लिए खराब होता है और उसके मां के लिए भी। जातक के पास धन होगा, सांसारिक सुख तथा प्रिय पत्नी होगी, बचपन में धन से वंचित, रोगी, विद्वान, मातृविहीन, मधुभाषी, कार्यों में सबसे अलग, सदा ही रोगी, दूसरों को कष्ट देने वाला, संबंधियों से शत्रुता, दुष्ट, मध्यम आयु में राजा के समान और आनन्द का भोग करेगा।

(*ii*) यहां पर शनि चर, सम और जलीय राशि में है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। चन्द्रमा मानस (मन) का कारक होता है। वह शनि की विशेषताओं से प्रेरित होगा। यहां से शनि सप्तमेश और अष्टमेश है (जो अच्छी स्थिति नहीं है) तथा मकर से 7 में तथा कुंभ से 6 में स्थित है (पुनः अच्छी स्थिति नहीं है), खराब और अशुभ फल हो सकते हैं जैसे संतान नहीं होगी, मां तथा शिक्षा से वंचित रहेगा। जातक नीच कुल में जन्म लेता है, वह मां की विरासत से वंचित रहेगा, उसके दांत पीले होंगे तथा मूर्ख होगा। कर्क नैसर्गिक भचक्र की चौथी राशि है जो मां का स्थान है। शनि से यह भाव पीड़ित होता है। देखें कुण्डली VII, XIII.

(5) शनि सिंह में–

(*i*) जातक मध्यम कद का, दुराग्रही, पृथक करने वाला। कम पुत्रों वाला, हठी, दुर्भाग्यशाली, विरोध करने वाला, कठिन परिश्रम करने वाला, लेखक बुरे विचार वाला होगा। वह झगड़ालू स्वभाव का, गन्दी आदतों वाला, सामाजिक बंधनों से दूर, पत्नी और पुत्रों से समस्याएं और लेखन का में प्रवीण होगा। जातक पठन और लेखन में रुचि लेने वाला, सदाचार से वंचित, वह दासता से जीवन निर्वाह करने वाला, नीच काम में रुचि लेने वाला, महत्त्वाकांक्षी और अनावश्यक इच्छाओं के लिए पागल, तुनकमिजाजी,

अपने लोगों से दूर, बोझ ढोने वाला, मेहनती तथा खुरदरे बदन/शरीर पर झुर्रियों वाला होगा।

(*ii*) शनि सिंह में सौहार्दपूर्ण स्थिति नहीं है। यह राशि स्थिर, विषम और अग्नि तत्त्व राशि है। यहां से शनि षष्टेश और सप्तमेश है तथा मकर से अष्टम में तथा कुंभ से सप्तम में स्थित है। यह स्थिति संतोषप्रद नहीं है। सिंह के स्वामी सूर्य के साथ शनि के शत्रुवत् संबंध के कारण जातक गुणहीन होगा। अपने लोगों से वंचित रहेगा तथा दुर्भाग्यशाली, कठिन परिश्रम करने वाला, बात-बात पर चिढ़ने वाला, अपने ही लोगों को धोखा देने वाला होगा। वह रोगी हो सकता है।

(6) शनि कन्या में–

(*i*) जातक सांवला, नीच, गरीब, झगड़ालू, अनियमित, संकीर्ण मस्तिष्क वाला, अशिष्ट, संरक्षित, जन जीवन के लिए इच्छुक, निर्बल, स्वास्थ्य वाला आदि होगा। वह अपनी शिक्षा व ध्येय में सफलता प्राप्त करने वाला नहीं होगा, कठोर, अस्थिर स्वभाव वाला, कभी निर्बल तथा कभी बलशाली होगा। जिस जातक की कुण्डली में शनि कन्या में हो वह नपुंसक होता है। हस्त कला में निपुण, भोजन के लिए दूसरों पर निर्भर, वेश्यावृत्ति में रत, कम मित्रों वाला, कला में अपूर्ण, नीच कर्मों में रत रहने वाला, उसके कई पुत्र होंगे और धनी होगा। वह दूसरों की सहायता करने वाला होगा। सतीत्व भंग करने के लिए उतारू तथा अपने कार्य के प्रति सावधान रहेगा।

(*ii*) मिथुन में शनि की स्थिति से यह स्थिति कुछ भिन्न है। यहां पर शनि जातक को संतति के लिए क्षमता देता है। जातक अपने यौन शांति के लिए अनेक स्त्रियों की संगति करेगा (यदि बुरी स्थिति में हो और कुण्डली में इसका फल बलात्कार हो)। यहां पर शनि पंचमेश (मस्तिष्क, संतति, जातक की प्रवृत्ति) और षष्ठेश (साहस, कठोर कार्य, रोग) है, जातक अस्थिर दिमाग का, झगड़ालू, जन सेवा में रुचि और नीच आचरण वाली स्त्रियों की संगति करने वाला होगा। वह कन्या राशि के कारण स्त्रियों की संगति में रहेगा। देखें कुण्डली XIII, XX, XXX.

(7) शनि तुला में–

(*i*) जातक प्रसिद्ध, संस्थाओं का संस्थापक, धनी, लम्बा, सुन्दर, युक्ति वाला, शक्तिशाली, सम्मानित, व्यय करने वाला, प्रतिद्वंदी, स्वतंत्र, अभिमानी, प्रसिद्ध, दान देने वाला, स्त्रियों की दासता करने वाला होगा। वह अपने कुल में राजा के जैसे रहता है, कामुक और महत्वाकांक्षी होगा, अधिक दान देने वाला सम्मानित, राजा से सम्मान पूर्वक लाभ पाने वाला होगा।

जातक धनी, मधुभाषी, धन कमाने वाला, विदेशों से सम्मान पाने वाला, राजा या विद्वान उसके संबंधी धन की रक्षा करेंगे, अपने मित्र मंडल में वरिष्ठ, उच्च पदासीन, सभा में भाषण देने में निपुण, दुराचारी स्त्रियों, नर्तकी, वैश्या की संगति करने वाला होगा।

(कुलटा नटी विट स्त्री रमणो)।

(*ii*) तुला में शनि जातक को प्रसिद्ध नेता और धनी (असीमित धन) सदाचारी, गांव का नेता, प्रसिद्ध और अच्छी आयु देता है। यहां पर वृषभ के शनि से स्थिति भिन्न है क्योंकि तुला में शनि उच्च का होता है। तुला शुक्र की मूल त्रिकोण राशि है। यहां पर शनि योगकारक (चौथे और पांचवें का स्वामी) है। मकर से दसम् तथा कुंभ से नवम् में है। इस प्रकार 4, 5, 9, 10 भाव शामिल हैं। अतः शुभ फल होगा। देखें कुण्डली XV, XXIV, XXVI.

(8) शनि वृश्चिक में–

(*i*) वृश्चिक का शनि जातक को अविवेकी, कठोर हृदय, साहसी, नीच, दंभी, संयमी, चरित्रहीन, उग्र, अप्रसन्न, विष से खतरा, अग्नि और हथियार से भय, अस्वस्थ आदि बनाता है। रोग और शत्रु के कारण धन की हानि तथा दुखों से घिरा रहेगा। उद्यमों में असफलता, पुत्रों से अप्रसन्नता और अन्य प्रकार के कष्ट होंगे। वह प्रतिपक्षी, दुष्ट, अहंकारी, दूसरों का धन चोरी करने वाला, उत्सवों पर बजने वाले संगीत से विमुख, दुराग्रही, अति दयनीय और विनाश तथा रोग देने वाला होगा।

(*ii*) यहां शनि स्थिर, सम और जलीय राशि में है जिसका स्वामी मंगल है। शनि वृश्चिक से तृतीयेश और चतुर्थेश है तथा मकर से 11 में तथा कुंभ से 10 में स्थित है। इस प्रकार इसमें 3, 4, 10 व 11 शामिल है जो बहुत शुभ नहीं है। शनि और मंगल की राशि की विशेषताओं के कारण जातक कठोर हृदयवाला, उग्र, अप्रसन्न, निर्धन, पापी, सुखी वातावरण से विमुख रहेगा। जातक के शरीर पर दाग होगा। लड़ाई में वह हत्या भी कर सकता है तथा कानून के दायरे में फंस सकता है। अपराध करने पर वह छिपकर जिन्दगी बिताएगा। धन का लाभ-हानि होगा। जातक क्षय रोग से पीड़ित, अपना विनाश करने वाला, आयु कम होगी। कुल मिलाकर शनि की स्थिति ठीक नहीं है। देखें कुण्डली V, XI.

(9) शनि धनु में–

(*i*) जातक उद्यमी, कलापूर्ण, चतुर, प्रसिद्ध, शांत, महत्त्वाकांक्षी, प्रत्यक्षतः उदार, पत्नी से कष्ट, शिष्ट, कर्त्तव्यपरायण बच्चें, सामान्यतः सुखी होगा। वह पुत्रों की ओर से सुखी, अति प्रसिद्ध जीवन, जीवन में सफलता के कारण संतुष्ट रहेगा।

वह उत्तम आचरण, वेदों का अर्थ बताने वाला और समझने वाला, सदाचारी बच्चों के कारण प्रसिद्ध, पारिवारिक व्यवसाय, सदाचारी, बुढापे में अति सुखी, मितभाषी, अनेक नामों से जाना जाने वाला और स्वभाव से विनम्र होगा।

(*ii*) जातक राजा के निकट, अत्युत्तम और दोषरहित वक्रत्व शक्ति, सुखी, मनपसंद पत्नी वाला, विधवाओं की सहायता करने वाला होगा। धनु भचक्र में नवीं राशि है। दसमेश और एकादशेश (कर्म, प्रवीणता, लाभ) इस राशि में शनि जातक को प्रसिद्ध और सम्मानित बनाता है। यह देखा गया है कि धनु में स्थित सभी ग्रह शुभ फल देते हैं। अतः इस राशि में शनि जातक को सुखी, अच्छा काम करने वाला बनाता है जिसके लिए वह सम्मानित होगा तथा उपाधियों से सम्मानित किया जाएगा। देखें कुण्डली VI, XII, XXX.

(10) शनि मकर में–

(*i*) जातक बुद्धिमान, स्वार्थी, लोभी, चिड़चिड़ा, संदिग्ध प्रतिबिम्ब वाला, बदला लेने वाला, दूरदर्शी, दुखी, सौहार्दपूर्ण, घरेलू जीवन में प्रशंसित, पत्नी की ओर से विरासत में धन प्राप्त करने वाला होगा। राजा के लिए प्यार और राजा से सम्मानित, सुगंधियों और फूलों आदि का शौकीन। वह वेद का ज्ञाता, सदाचारी, अनेक ललित कलाओं का ज्ञाता, अपनी जाति का प्रधान, अपनी जाति से सम्मानित, आदरणीय, प्रसिद्ध, दूसरों का आदर करने वाला और कुशलता से कार्य क़रने वाला होगा। जातक स्नान करने तथा सजावट का शौकीन होगा। वह साहसी और नम्र आचरण वाला होगा।

(*ii*) यहां पर शनि अपनी राशि, चर (चंचल), पृथ्वी (व्यावहारिक), सम (स्त्री) राशि में है। जातक नगर का प्रधान, कमजोर दृष्टि वाला, गन्दा, धनवान, अन्य स्त्रियों का आनंद लेने वाला होगा। उसकी आंखें छोटी होंगी तथा नेत्ररोग से पीड़ित होगा। चूंकि यह भचक्र की दसवीं राशि है अतः जातक अपनी जीविका में उन्नति करेगा। देखें कुण्डली VIII.

(11) शनि कुंभ में–

(*i*) जिस जातक की कुण्डली में शनि कुंभ में होगा वह व्यावहारिक, सक्षम, कूटनीतिज्ञ, मेधावी, दूरदर्शी, सुखी, विद्वान, दार्शनिक, शत्रुओं से पराजित होने वाला होगा। वह नशा करने वाला, कर्तव्य से विमुख, मित्रों में रहने वाला, शत्रुओं के सामने पीछे रहने वाला होगा।

जातक मिथ्यावादी, मशहूर, स्त्रियों और शराब का अभ्यस्त, दुष्ट, हाथ से काम करने वाला, बुरी संगति में रहने वाला, चिड़चिड़ा, ज्ञानी, बातचीत, परम्परागत विधि के विपरीत, अन्य स्त्रियों का अभ्यस्त, कटुभाषी और अनेक काम करने वाला होगा **(बहुक्रियारम्भ कृतयत्नः)**।

(*ii*) शनि अपनी राशि में मूलत्रिकोण में है। भचक्र में शनि 10 और 11वीं राशि का स्वामी है। मकर के शनि और कुंभ के शनि में कोई विशेष

अंतर नहीं है सिवाए कि कुंभ स्थिर, विषम (इसमें मंगल, राहू व गुरु के नक्षत्र होते हैं) और वायु तत्त्व राशि है जो शनि का मूलत्रिकोण स्थान है। मकर चर, सम तथा पृथ्वी तत्त्व (इसमें सूर्य, चंद्रमा तथा मंगल के नक्षत्र होते हैं) की राशि है। अतः अशुभ फल अधिक होंगे। देखें कुण्डली XIV.

(12) शनि मीन में–

(*i*) जातक चतुर, उत्साही, विनम्र, सुखी, उत्तम, विश्वासी पत्नी, धनी, दूसरों की सहायता करने वाला होगा। जातक सरल स्वभाव और सरल आचरण वाला, अपने गुणों और विवेक के लिए प्रसिद्ध, धनवान होगा। वह दान देने वाला कलाप्रिय (**प्रिययज्ञ शिल्पविद्यः**)। अपने संबंधियों और मित्रों का प्रधान, शांत, धन में वृद्धि, नीति निर्धारण में कुशल, हीरों की जांच में कुशल (**रत्नपरीक्षासु**), विवेकी, आधुनिक उच्च पदासीन होगा।

(*ii*) मीन का शनि वही फल देगा जो धनु का शनि देता है। यहां शनि द्विस्वभाव, जलीय और समराशि में 11 व 12वें भाव का स्वामी है और नीच की ओर अग्रसर हो रहा है। जातक में मीन के स्वामी बृहस्पति की विशेषताएं होंगी। शनि के साथ बृहस्पति जातक को नीति निर्धारण में कुशल बनाएगा, हीरों की जांच में सक्षम तथा तकनीकी रूप से कुशल होगा।

12.8 राहु और केतु

राहु और केतु को राशिवार नहीं लिया गया है। राहु और केतु उस राशि का फल देते हैं, जहां वे स्थित होते हैं। इस पाठ में वर्णित फलों से विद्यार्थियों को किसी राशि विशेष में ग्रह की स्थिति के प्रभाव को समझने में आसानी होगी। भविष्यवाणी में इसका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि उनकी स्थिति, दृष्टि और युति के अनुसार इनमें परिवर्तन करना होता है। भविष्यफल बताने के लिए कुण्डली का पूरा विश्लेषण आवश्यक होता है।

12.9 12 राशियों को भावों में निम्नलिखित प्रकार से चार त्रिकोणों में बांटा गया है–

त्रिकोण	राशि	भाव	तत्त्व
धर्म	मेष, सिंह और धनु	1, 5, 9	अग्नि
अर्थ	वृषभ, कन्या और मकर	2, 6, 10	पृथ्वी
काम	मिथुन, तुला और कुंभ	3, 7, 11	वायु
मोक्ष	कर्क, वृश्चिक और मीन	4, 8, 12	जल

विभिन्न भावों में स्थित ग्रह इन त्रिकोणों का भी फल देते हैं। इसी प्रकार जन्म कुण्डली का प्रथम भाव इन त्रिकोणों में से पड़ता है। तुला लग्न का उदाहरण लेकर देखते हैं–

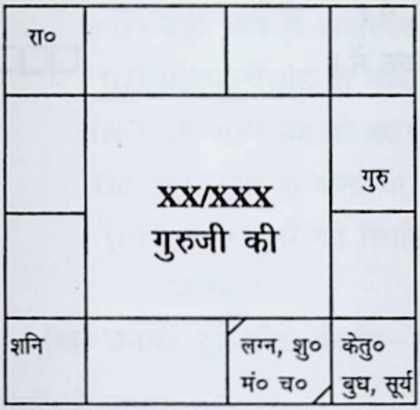

	भाव	राशि
धर्म त्रिकोण	1, 5, और 9	7, 11 और 3
अर्थ त्रिकोण	2, 6 और 10	8, 12 और 4
काम त्रिकोण	3, 7 और 11	9, 1 और 5
मोक्ष त्रिकोण	4, 8 और 12	10, 2 और 6

सभी द्विस्वभाव राशियों को आध्यात्मिक राशियाँ कहा गया है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित स्थिति में फल लिखें–

(*i*) मंगल, वृषभ और तुला में।

(*ii*) बृहस्पति, कर्क और मकर में।

(*iii*) शनि, मेष और तुला में।

(*iv*) बुध, कन्या और मीन में।

2. निम्नलिखित स्थितियों में जातक के जीवन पर क्या प्रभाव होगा?

(*i*) शनि और सूर्य तुला।

(*ii*) चन्द्रमा और शुक्र वृश्चिक में।

(*iii*) बृहस्पति और शुक्र धनु में।

3. निम्नलिखित स्थितियों में फल में क्या अंतर होगा–

(*i*) बुध मिथुन और कन्या में।

(*ii*) बृहस्पति धनु और मीन में।

(*iii*) शुक्र तुला और वृषभ में।

(*iv*) मंगल मेष और वृश्चिक में।

❑❑❑

पाठ–13

विशेष योग

13.1. ग्रहों के बीच संबंध–ज्योतिषशास्त्र में योग शब्द का अर्थ जन्म कुण्डली में भावों और अन्य ग्रहों के संबंध में ग्रह की स्थिति है, ये योग ग्रहों के आपसी संबंध के अनुसार शुभ और अशुभ फल देते हैं। ग्रहों के बीच युति या संबंध पर पहले ही पाठ 9 के पैरा 9.2 में विचार किया जा चुका है। संक्षेप में नीचे दिया जाता है–

(क) स्थिति के कारण–

(*i*) उसी भाव में अवस्थित या संयुति

(*ii*) ग्रह अन्य ग्रह के भाव में

(*iii*) ग्रह अन्य ग्रह के नक्षत्र में

(*iv*) एक दूसरे से केन्द्र या त्रिकोण में

(*v*) एक से दूसरे की स्थिति या अपने से 2, 12, 6, 7 व 8 में पड़े ग्रह।

(ख) उनकी दृष्टि के कारण–

योगों के प्रकार

13.2. इन योगों की संख्या हजारों में हैं तथा विभिन्न शास्त्रीय पुस्तकों में महर्षियों ने प्रत्येक योग का वर्णन किया है। ग्रहों के कुछ विशेष योग होते हैं जिनके फलस्वरूप जातक एक ओर उच्च राजनैतिक पद और प्रभाव, प्रचुर धन, उच्च शिक्षा प्राप्त करता है दूसरी ओर जातक दुखी, ऋणी, अनैतिक आदि बनता है। इन योगों के ज्ञान से भविष्य में घटित होने वाली बातों का सही-सही पता लगाने में सहायता मिलती है। ज्योतिष के सामान्य नियमों को लागू करके इनका विवेचन किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के योगों के नाम ये हैं–राजयोग (उच्च राजनैतिक पद या सरकार में उच्च पद प्राप्त करना), धनयोग (प्रचुर धन दर्शाने वाले योग), ज्ञान योग (वास्तविक

उच्च ज्ञान और संसार से वैराग्य के योग) और अरिष्ट योग (घातक स्वरूप दुर्भाग्य और श्रृंखला)

योगों की सूची

13.3. अपनी चर्चा को ज्योतिष प्रवीण पाठ्यक्रम तक सीमित करते हुए (भारतीय ज्योतिर्विज्ञान परिषद् मद्रास द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार) इस पाठ में निम्नलिखित योगों पर विचार करना **समीचीन होगा**–

(अ) चन्द्र संबंधी

चन्द्रमा से ग्रहों की स्थिति के कारण योग–

(*i*) सुनफा योग	जब चन्द्रमा से दूसरे भाव में कोई ग्रह हो (सूर्य को छोड़कर)
(*ii*) अनफा योग	जब चन्द्रमा से 12वें भाव में कोई ग्रह स्थित हो (सूर्य को छोड़कर)
(*iii*) दुरधरा योग	जब चन्द्रमा से दूसरे और 12वें भावों में कोई ग्रह स्थित हो (सूर्य को छोड़कर)
(*iv*) केमद्रुम योग	जब ऊपर के तीनों में से कोई भी योग न हो अर्थात् चन्द्रमा से दूसरे और 12वें भावों में कोई ग्रह न हो।
(*v*) गजकेसरी योग	जब बृहस्पति और चन्द्रमा दोनों एक राशि में हों या एक-दूसरे से केन्द्र में हों
(*vi*) चन्द्र मंगल योग	जब चन्द्रमा और मंगल दोनों सहयुक्त हों
(*vii*) चन्द्राधि योग (अधि योग)	जब चन्द्रमा से 6, 7 और 8 में शुभ ग्रह हों।
(*viii*) अमल योग	जब चन्द्रमा से दसम् में शुभ ग्रह हो।
(*ix*) गरुड़ योग	जब चन्द्रमा का नवांश स्वामी उच्च का हो और जन्म दिन के समय का हो। कुछ विद्वानों का मत है कि चन्द्रमा शुक्ल पक्ष का हो।

टिप्पणी–इस योग में नवांश का प्रयोग देखें।

(आ) सूर्य संबंधी

सूर्य से ग्रहों की स्थिति के कारण योग

(*i*) वेसि योग	जब सूर्य से दूसरे भाव में कोई ग्रह स्थित हो (चन्द्रमा को छोड़कर)।
(*ii*) वोसि योग	जब सूर्य से 12वें भाव में कोई ग्रह स्थित हो (चन्द्रमा को छोड़कर)।
(*iii*) उभयचारी योग	जब सूर्य से दूसरे तथा 12वें भावों में कोई ग्रह स्थित हो (चन्द्रमा को छोड़कर)
(*iv*) बुध आदित्य योग	जब बुध और सूर्य एक साथ हों।

टिप्पणी—राहु और केतु को छोड़ दिया गया है भले ही वे चन्द्रमा से या सूर्य से दूसरे या 12वें भाव में सुनफा, अनफा, दुरधरा, केमद्रुम, वेसि, वोसि और उभयचारी योग बना रहे हों।

(इ) लग्न संबंधी

जब लग्न से कतिपय भावों में ग्रह स्थित हों तो निम्नलिखित योग बनते हैं—

(*i*) लग्नाधि योग (अधि योग)	जब लग्न से 6, 7 व 8 में शुभ ग्रह हों।
(*ii*) अमल योग	जब लग्न से दसम् भाव में शुभ ग्रह हो।

(ई) पंचमहापुरुष योग

(*i*) रुचक योग	जब मंगल लग्न से केन्द्र में स्वराशि में हो या उच्च राशि में हो।
(*ii*) भद्र योग	जब बुध लग्न से केन्द्र में स्वराशि में हो या उच्च राशि में हो।
(*iii*) हंस योग	जब बृहस्पति लग्न से केन्द्र में, स्वराशि में या उच्च राशि में हो।
(*iv*) मालव्य योग	जब शुक्र लग्न से केन्द्र में, स्वराशि में या उच्च राशि में हो।
(*v*) सस योग	जब शनि लग्न से केन्द्र में, स्वराशि में या उच्च राशि में हो।

(उ) अन्य योग

(*i*) केदार योग	जब सभी ग्रह केवल चार भावों में स्थित हों।
(*ii*) सकट योग	जब चन्द्रमा बृहस्पति से छठे या आठवें में स्थित हो या जब सभी ग्रह प्रथम और सातवें भावों में स्थित हों।
(*iii*) महाभाग्य योग	यदि किसी पुरुष का जन्म दिन का हो और लग्न, सूर्य तथा चन्द्रमा विषम राशि में स्थित हों, इसी प्रकार यदि किसी महिला का जन्म रात का हो और लग्न, सूर्य तथा चन्द्रमा सम राशि में स्थित हों।
(*iv*) विपरीत राजयोग	यदि 6, 8 और 12वें भावों के स्वामी 6 या 8 या 12 भाव में स्थित हों तो निम्नलिखित योग बनते हैं–
(क) हर्ष	षष्टेश 8वें या 12वें भाव में हो।
(ख) सरल	अष्टमेश 6ठे या 12वें भाव में हो।
(ग) विमल	द्वादशेश 6ठे या 8वें भाव में हो।
(घ) राज योग	प्राचनीकाल में मुख्यतः राजा लोग ज्योतिष से लाभ उठाते थे। जिन योगों से राजा बलवान, धनी, विजयी आदि बनते थे उन्हें राजयोग कहा गया। आधुनिक युग में राजयोग का अर्थ जन्मकुण्डली में ग्रहों के वे योग हैं जिन से उच्च पद, धन, उच्च शिक्षा आदि प्राप्त होते हैं। मूल अर्थ में राजयोग को ऐसा योग माना जाता है जिससे जातक राजा बनता है। इसे ग्रहों के उस योग के रूप में समझा जा सकता है जिससे जातक पर ईश्वर की अनुकम्पा होती है, जिससे जातक को राजा का पद या राज समान पद या मंत्री पद या सरकार में उच्च पद या अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उच्च प्राप्त स्थिति, नाम, प्रसिद्धि, आराम, सुख, धन आदि प्राप्त होता है।

13.4. चन्द्र और सूर्य की स्थिति और उनके प्रभाव

(1) जब सूर्य से चन्द्रमा केन्द्र, पनफर या अपोक्लीम में हो तो जातक के पास धन, बुद्धि और कौशल क्रमशः न्यून, मध्यम और अत्यधिक होगा। यदि सूर्य से चन्द्रमा 1, 4, 7 और 10वें भाव में हो तो उसके पास अल्प धन होगा। **यदि सूर्य से चन्द्रमा 2, 5, 8 और 11वें भाव में हो तो जातक के पास धन मध्यम होगा और यदि सूर्य से चन्द्रमा 3, 6, 9 और 12वें भाव में हो तो धन की मात्रा अधिक होगी।**

नवांश में चन्द्रमा की स्थिति

(2) यदि *जन्म दिन के समय का* हो और चन्द्रमा अपने ही नवांश में हो या मित्र के नवांश में हो और *बृहस्पति से दृष्ट* हो तो जातक धनी और खुश रहेगा।

(3) *यदि जन्म रात्रि का हो* तो जातक को ऊपर (2) में दिए गए फल हों यदि चन्द्रमा अपने नवांश या मित्र के नवांश में हो और *शुक्र से दृष्ट हों।*

टिप्पणी—नवांश का प्रयोग देखें।

(4) यदि स्थिति विपरीत हो—चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुक्र की दृष्टि हो तो जातक अल्प धन वाला या उससे भी कम धन वाला होगा। रात के जन्म के संबंध में बृहस्पति की दृष्टि और दिन के जन्म के संबंध में शुक्र की दृष्टि से उत्तम फल नहीं होगा। यदि शुक्र तथा गुरु दोनों की दृष्टि हो तो मिश्रित फल यानि काम चलाऊ या आवश्यकता पूर्ति के लायक धन।

विवरण तथा उदाहरण

चन्द्र संबंधी योग

13.5 (1) सुनफा योग

(क) यदि चन्द्रमा से दूसरे भाव में कोई ग्रह हो (सूर्य को छोड़कर) तो सुनफा योग बनता है।

फल—जातक राजा/राजा के समान होगा, उसकी स्वअर्जित सम्पत्ति होगी, जातक अपनी बौद्धिक क्षमता के कारण सम्मानित और प्रसिद्ध होगा। वह धनी तथा प्रतिष्ठित होगा। —पराशर

वह स्वअर्जित धन के कारण धनवान होगा, वह राजा या राजा के समान होगा, काफी बुद्धिमान, प्रसिद्ध और धनी होगा। —बराहमिहिर

टिप्पणी—जब तक रुचक योगों के फल अच्छी तरह समझ नहीं लेते तब तक सुनफा, अनफा आदि के फलों की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती (मानसागरी)।

(*i*) यदि चन्द्रमा से दूसरे भाव में मंगल के कारण सुनफा योग बनता है तो जातक परिश्रमी, धनी, राजा या राजा के समान, सावधानी से बोलने, दूसरों का विरोध करने वाला, अपराध या पाप करने वाला तथा कठोर हृदय वाला होगा।

(*ii*) यदि दूसरे भाव में बुध हो तो जातक वेदों, शास्त्रों और संगीत आदि में कुशल, कवि, बुद्धिमान, दूसरों की भलाई करने वाला, रूपवान, सुन्दर होगा और धार्मिक प्रवृत्ति होगी।

(*iii*) यदि बृहस्पति के कारण सुनफा योग बनता है तो जातक अनेक विद्याओं का शिक्षक, प्रसिद्ध, राजा, बैल आदि पालने वाला और धनवान, सभी प्रकार का सुख भोगने वाला और उत्तम परिवार वाला होगा।

(*iv*) यदि शुक्र से सुनफा योग बनता है तो जातक पत्नी वाला, भूमि, मकान, पशु (हाथी, घोड़े, बैल आदि) वाला होगा। वह पराक्रमी, साहसी राजाओं से सम्मानित, सुन्दर वस्त्रों वाला, चतुर और बुद्धिमान होगा।

(*v*) यदि शनि से सुनफा योग बनता है तो जातक चतुर, गांव या नगर के लोगों से सम्मानित धनवान आदि होगा। वह अपने कार्यों में गुप्त तथा पापी स्वभाव का होगा।

(ख) यदि योगों के फल ऊपर वर्णित ढंग से शब्दशः बताएं जाएं तो वह संतोषजनक नहीं भी हो सकता है। अन्य ग्रहों की दृष्टि या अन्य ग्रहों के साथ युत्ति के कारण तथा योग बनाने वाले ग्रह के स्वामित्व आदि के आधार पर प्रत्येक योग में संशोधन किया जाता है।

कुण्डली-XXI

इस कुण्डली में चन्द्रमा बली है। यह अपनी राशि में बृहस्पति (नवमेश) से पंचम भाव से दृष्ट है। चंद्रमा निर्बल है परन्तु वह सूर्य से अभी दूर है इसलिए निर्बल नहीं यानि (दशमी तिथि का है) मंगल सिंह में है तथा

इस लग्न के लिए योगकारक है। मंगल नीच राशि से निकल गया है। बृहस्पति नवमेश पंचम भाव से चंद्रमा पर दृष्टि दे रहा है। गुरु पर मंगल योगकारक की भी दृष्टि है। विद्यार्थी निम्नलिखित के बीच अंतर देखें–

(क) योगों के लिए वर्णित सामान्य फल।

(ख) चन्द्रमा से दूसरे में विभिन्न ग्रहों की स्थिति के लिए वर्णित विशेष फल।

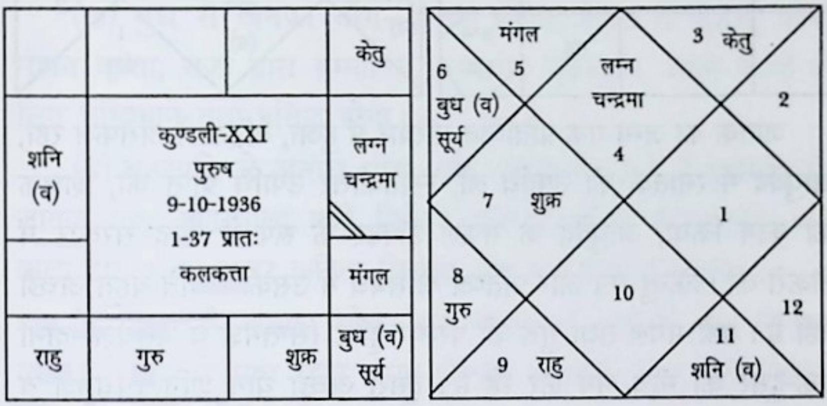

यहां पर फलों को स्पष्ट करने तथा समझने के विचार से उदाहरण दिया गया है। चन्द्रमा और मंगल की बली स्थिति के कारण योग के फल उत्तम होंगे जैसा कि ऊपर 13.5 (1) में वर्णित है। जातक का जन्म एक शिक्षित और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ, उच्च शिक्षा प्राप्त की, व्याख्याता में भर्ती हुई, बाद में रीडर बना, विदेश गया, भारत वापस आने पर प्रोफेसर बना, एक सरकारी संस्था के प्रधान बने, शिक्षित पत्नी मिली और समृद्ध परिवार के साथ सुखी हैं।

कुण्डली XXII

यहां पर चन्द्रमा उच्च राशि से निकलकर स्वराशि की ओर अग्रसर है। अतः उत्तम है। किन्तु चन्द्रमा बुध की राशि में क्षीण है, अतः निर्बल है। मंगल तृतीयेश तथा अष्टमेश है (स्थिति ठीक नहीं है) और नीच राशि में है। यह उत्तम फल नहीं देगा जैसा कि ऊपर 13.5 (1) क में वर्णित है। किन्तु यह एक निर्बल योग साबित होगा।

शनि (व)	केतु		चन्द्रमा 11-10
	कुण्डली-XXII पुरुष 22-8-1938 8.00 प्रातः दिल्ली		मंगल 26-18
गुरु (व)			सूर्य बुध (व)
		राहु	लग्न शुक्र

जातक का जन्म एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ, मैट्रिक में असफल रहा, आयुर्वेद में स्नातक की उपाधि ली, स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की, शिक्षक का काम किया, आयुर्वेद के सफल डॉक्टर के रूप में केन्द्र सरकार में नौकरी की। किन्तु धन और प्रतिष्ठा के संबंध में उसकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। यहाँ मंगल तथा गुरु की परस्पर दृष्टि (सप्तमेश व चतुर्थेश) दोनों एक-दूसरे का नीच भंग कर रहे हैं। दूसरा अच्छा योग शनि (पंचमेश व षष्ठेश) तथा शुक्र (द्वितीयेश व नवमेश) का परस्पर दृष्टि संबंध वह भी 1/7 अक्ष पर है।

इन सभी का दशा के साथ ध्यान से विचार करना अनिवार्य है।

13.5 (2) अनफा योग

(*i*) यदि चन्द्रमा से 12वें भाव में ग्रह हो (सूर्य को छोड़कर) तो अनफा योग बनता है।

फल

अनफा योग में उत्पन्न व्यक्ति राजा होगा, रोग से मुक्त, सदाचारी, प्रसिद्ध, आकर्षक और सुखी होगा। **—पराशर**

जातक बलवान, उत्तम स्वास्थ्य और मधुर विचार वाला होगा। वह प्रसिद्ध होगा तथा संसार के सभी सुखों का भोग करेगा। वह संतुष्ट, सुखी और उत्तम वस्त्रों वाला होगा। **—मन्तरेश्वर**

जातक बली, सक्षम, सुन्दर शरीर, विनम्र स्वभाव, प्रसिद्ध सांसारिक सुख भोगने वाला, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला होगा। —बराहमिहिर

(*ii*) मानसागरी के अनुसार

(क) **चन्द्रमा से 12वें में मंगल से अनफा योग**—जातक चोर, अभिनेता, अभिमानी, आत्म नियंत्रण, सम्मानित, युद्ध के मैदान में पराक्रमी, ईर्ष्यालु, जटिल स्वभाव, क्रोध से सम्पत्ति प्राप्त करने वाला होगा।

(ख) **बुध से अनफा योग**—जातक संगीत, लेखन में कुशल, कवि, महान वक्ता, राजा द्वारा सम्मानित, आकर्षक मुखाकृति, अपने कार्यों के लिए भाग्यवान तथा प्रसिद्ध होगा।

(ग) **बृहस्पति से अनफा योग**—यदि चन्द्रमा से 12 वें में बृहस्पति हो, जातक प्रखर बुद्धि वाला, बली, विवेकी, राजा से प्रसिद्धि और सम्मान पाने वाला होगा। वह सुन्दर कविता लिखेगा और ख्याति प्राप्त करेगा।

(घ) **शुक्र से अनफा योग**—यदि चन्द्रमा से 12वें में शुक्र हो, वह व्यक्ति स्त्रियों के साथ रहेगा, राजा के प्रति वफादार, गाय पालने वाला, रूपवान, सुन्दर और प्रचुर धन वाला होगा।

(ङ) **यदि शनि से अनफा योग बनता हो**—जातक के हाथ लम्बे होंगे, सुन्दर भाग्यवान, पशुओं का धनी, दुष्ट स्त्रियों की संगति, अनेक पुत्रों वाला, अनेक गुणों वाला—सदाचारी होगा।

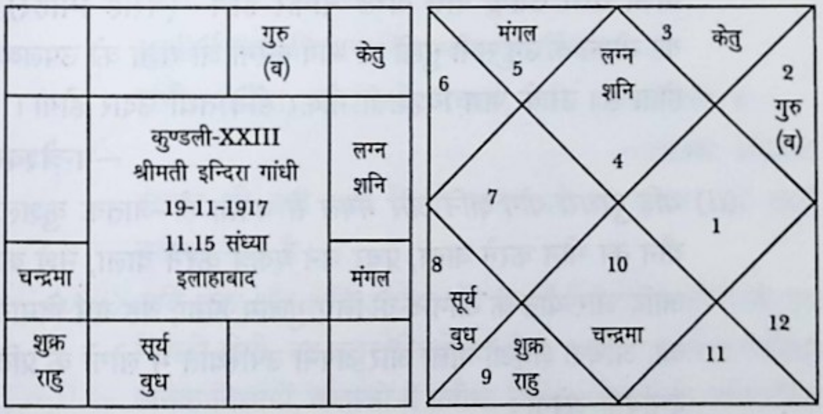

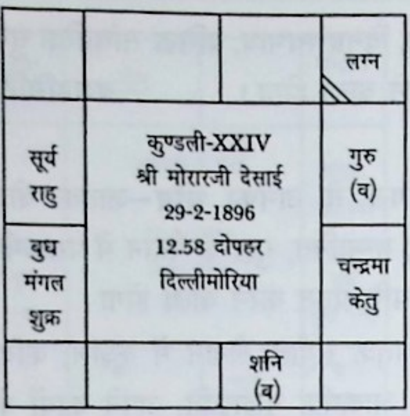

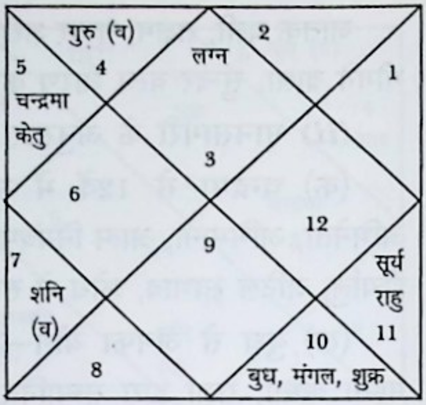

(*iii*) ऊपर कुण्डली III व IV के जातक से सभी परिचित हैं। पाठक योग को भली भांति समझ सकते हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी का शुक्र चन्द्रमा से 12वें में है तथा श्री मोरार जी देसाई का गुरु चन्द्रमा से 12वें भाव में है।

13.5 (3) दुरधरा योग

जब चन्द्रमा से दोनों ओर ग्रह हों तो दुरधरा योग बनता है। इसका अर्थ यह है कि अनफा और सुनफा दोनों ही विद्यमान हैं।

फल

(*i*) जातक आनन्द का भोग करेगा, वह दान करने वाला, धनि व्यक्ति, जन्म से ही उत्कर्ष होगा (पराशर)। वह अपनी उपलब्धियों से खुश रहने वाला, धन तथा सवारियों वाला, दान देने वाला तथा उसके पास अच्छे नौकर होंगे–(बराह मिहिर)। वह जीवन के उन सभी सुखों का भोग करेगा जो राजा को उपलब्ध होता है। उसके पास विश्वासी नौकर होंगे तथा उदार होगा।

—मन्त्रेश्वर

(*ii*) *यदि दुरधरा योग शनि और मंगल से बनता है*—जातक कुशल, यौन का भोग करने वाला, प्रचुर धन एकत्र करने वाला, नशे का आदि और यौन के आनन्द के लिए गुलाम होगा, वह गर्म दिमाग का, अधिक शत्रुओं वाला और अपनी उपस्थिति में लोगों के प्रति दुर्भावना रखेगा।

(iii) *यदि बुध और गुरु से दुरधरा योग बनता है*—जातक नियमित तथा स्थायी धर्म में विश्वास करने वाला, शास्त्रों का उत्तम ज्ञान, अपनी बातों पर नियंत्रण रखने वाला, सभी सुखों का भोग करने वाला, दानी तथा प्रसिद्ध होगा।

(iv) *जब बुध और शुक्र से यह योग बनता है*—जातक मधुभाषी, भाग्यशाली, सुन्दर शरीर वाला, योग और साधना में रुचि रखने वाला, राजा, स्वस्थ, धनी, बहादुर, साहसी और मंत्री होगा।

(v) *यदि चन्द्रमा से 2 और 12 में बुध और शनि स्थित होकर दुरधरा योग बनाते हैं*—जातक विदेशों की यात्रा करेगा, धन का गुलाम नहीं होगा, शिक्षक तथा अनेक चीजों का ज्ञान रखने वाला, अन्य द्वारा सम्मानित किन्तु वह स्वजनों का विरोध करेगा।

(vi) *यदि चन्द्रमा से 2 और 12 में बृहस्पति और शुक्र हों और दुरधरा योग बनता हो*—जातक किले का स्वामी, सहिष्णु तथा शान्त होगा, वह स्थिर, शांत दिमाग वाला होगा। राजनीति और कर्त्तव्य में कुशल, सोना तथा मूल्यवान पत्थरों आदि का स्वामी, देश भर में प्रसिद्ध और सरकारी कार्य करने वाला होगा।

(vii) *चन्द्रमा से 2 और 12 में गुरु और शनि से दुरधरा योग बनने पर*—जातक प्रसन्न चित्त, अनेक विज्ञानों में कुशल, मधुभाषी, विद्वान और कठिन से कठिन काम करने में सक्षम, अधिक पुत्रों वाला, धनी और रूपवान तथा सुन्दर होगा।

सुखी विनय-विज्ञान-विद्या-रूप-गुणान्वितः।
धनी, शान्ति, करश्चन्द्रे, मध्यगे, शनि जीवयोरिति ॥

—जातक परिजात

इसका भी वही अर्थ है जो मानसागरी के आधार पर पहले बताया गया है।

(viii) *यदि शुक्र और शनि दुरधरा योग बनाते हैं*—जातक की पत्नी उम्र में बड़ी होगी, वह चतुर, स्त्रियों का प्रिय, धनी, राजा से सम्मानित, अनेक विज्ञानों, कलाओं में प्रवीण, शिक्षित होगा। वह पारिवारिक परम्परा को निभाएगा।

कुण्डली XXV

जातक ने बी. एस. सी. किया, पर्यटन में डिग्री ली और विदेश (फ्रांस) प्रशिक्षण के लिए गया।

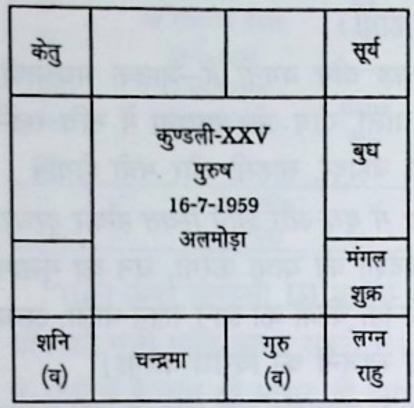

कुण्डली XXVI

यह जन्मकुण्डली श्री अटल बिहारी बाजपेयी की है। लग्न पर मतभेद है किन्तु बृहस्पति और शनि से यह योग बनता है। योग यही होगा क्योंकि जन्म तारीख सही है।

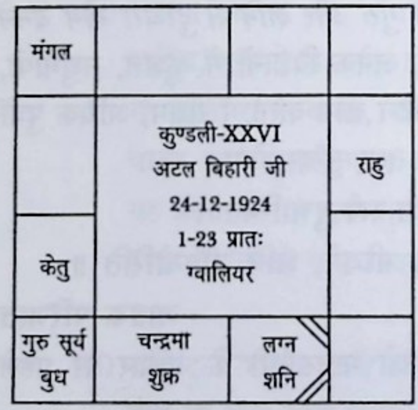

अन्य मामलों की तरह इस जातक के बारे में भी ज्योतिषियों तथा राजनीतिज्ञों ने भ्रांति उत्पन्न कर रखी है।

(क) कहीं जन्म तिथि 24 या 25 दिसम्बर मिलती है तो दूसरी और 25 दिसम्बर 1926 भी विद्वानों ने ले रखी है। टाइम्स ऑफ

इण्डिया दिनाँक 25 दिसम्बर 1997 ने उनकी ठीक तिथि 25 दिसम्बर 1926 बताई है।

(ख) जन्म समय में भी अंतर पड़ा हुआ है। कन्या, तुला तथा वृश्चिक लग्न लिए जा रहे हैं।

(ग) आज के जाने माने ज्योतिषाचार्य ने 25 दिसम्बर 1924 तथा वृश्चिक लग्न को लिया है तथा 'जरनल ऑफ ऐस्ट्रोलोजी' (जुलाई-सितम्बर 1997) में कहा है कि जिस व्यक्ति से उन्हें यह विवरण प्राप्त हुआ है उसने यह बात किसी को नहीं बतानी है। उनका कहना है कि उन्होंने पहले दो बार सफल भविष्यवाणी की है जो लिखित में है। सभी अन्य जन्मपत्री त्रुटिपूर्ण है। मुझे भी इन महाशय ने पहले वाजपेयी जी की कुण्डली कन्या लग्न की दी थी।

13 दिसम्बर 1999 को प्रधानमंत्री की शपथ के लिए मैंने उनका मुहूर्त निकाल कर दिया था। आधार यही कुण्डली थी।

(घ) पाठकों से निवेदन है, इन समस्याओं से बचें, इसलिए यह उदाहरण दिया है।

13.5 (4) केमद्रुम योग

(*i*) चन्द्रमा के साथ या चन्द्रमा से दूसरे में तथा 12वें या चन्द्रमा से त्रिकोण में कोई ग्रह नहीं हो (सूर्य को छोड़कर) तो केमद्रुम योग बनता है। इस योग को खराब योग माना जाता है।

फल

(क) इस योग में जन्म लेने वाला जातक कलंकित होगा, बुद्धिहीन तथा अशिक्षित होगा, निर्धन तथा दुखों से पीड़ित होगा।

—पराशर

(ख) यदि जातक राजपरिवार से है तो वह अप्रसिद्ध होगा तथा इस योग के कारण दयनीय जीवन व्यतीत करेगा। वह अनैतिकता का अभ्यस्त, निर्धन तथा दास तथा दुष्ट होगा। —मानसागरी

(ग) *इस योग से सभी शुभ योग रद्द हो जाते हैं।* जातक की पत्नी और पुत्र नहीं होंगे, सदा ही दुख, चिंता, उत्पीड़न आदि से घिरा रहेगा। वह दूरस्थ स्थानों का भ्रमण करेगा, अपनी ही जाति के लोगों के बीच खुश रहेगा, गाली देने वाला, सदा काम करने वाला, गन्दा कपड़ा पहनने वाला तथा दीर्घजीवि होगा।

(घ) जातक विरासत में प्राप्त सम्पत्ति, धन से खुश रहेगा। यदि दुरधरा योग हो तो जातक के पास सवारी आदि, दान देने वाला, नौकरों वाला होगा। किन्तु जिसका जन्म केमद्रुम में होता है वह नीच, दुखी, दुराचारी, गरीब, एजेन्ट या वाहक का काम करता है। दीनहीन, चिंतित, नीच काम करने वाला, गरीब, दासता करने वाला या नौकर और दुष्ट होगा। राजपरिवार में जन्म लेने पर भी स्थिति वही होगी।

—मानसागरी

(*ii*) (क) **केमद्रुम भंग**

यदि चन्द्रमा केन्द्र में हो या कोई अन्य ग्रह केन्द्र में हो तो केमद्रुम योग रद्द हो जाता है। कुछ विद्वान ज्योतिषियों का कहना है कि यदि चन्द्रमा नवांश में केन्द्र में हो तब भी केमद्रुम योग रद्द हो जाता है। **—मानसागरी**

केन्द्रे शीतकरेऽथवा ग्रहयुते केमद्रुमों नेष्यते।
केचित्केन्द्रनवांशकेष्विति बदन्त्युक्तिः प्रसिद्धान ते ॥

नोटः इस बारे में कोई उल्लेख नहीं है कि चन्द्रमा को लग्न से या कहीं से केन्द्र में होना चाहिए। केन्द्र में ग्रह के बारे में भी उल्लेख है किन्तु कहां से केन्द्र, स्थिति स्पष्ट नहीं है। व्यवहार में ये हैं (*i*) लग्न से केन्द्र में चन्द्रमा (*ii*) लग्न से या चन्द्रमा से केन्द्र में ग्रह।

(iii) चंद्रमा के साथ ग्रह

(ख) यदि बली चन्द्रमा शुभ और सम भावों (वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन) में हो अथवा चन्द्रमा के साथ बुध, गुरु

और शुक्र भी हो तो केमद्रुम योग में जन्म लेने के बावजूद जातक प्रसिद्ध, पुत्रों वाला, धनी होगा। ऐसा ऋषियों का मत है।

(ग) यदि जन्मकुण्डी में केमद्रुम योग है किन्तु चन्द्रमा सभी ग्रहों से दृष्ट है तो जातक की पूर्णायु होगी और केमद्रुम योग के सभी अशुभ फल समाप्त हो जाएंगे। जातक शत्रुओं पर विजयी होगा तथा सम्राट बनेगा। —मानसागरी

(*iii*) कुछ विद्वान ज्योतिषियों का कहना है—

(क) यदि चन्द्रमा से चौथे भाव में कोई ग्रह हो (सूर्य को छोड़कर) तो **सुनफा योग** बनता है।

(ख) यदि चन्द्रमा से दसम् भाव में कोई ग्रह हो (सूर्य को छोड़कर) तो **अनफा योग** बनता है।

(ग) यदि चन्द्रमा से चौथे और 10वें दोनों में ग्रह पड़े हों तो **दुरधरा योग** बनता है।

(घ) यदि चन्द्रमा से चौथे और 10वें में कोई ग्रह न हो तो **केमद्रुम योग** बनता है।

(ङ) **तथापि कुछ आचार्यों का मत है—**

(1) यदि चन्द्रस्थ नवांश राशि से दूसरे में कोई ग्रह हो (सूर्य को छोड़कर) तो **सुनफा योग** बनता है।

(2) उपरोक्त (1) की स्थिति में 12वें में कोई ग्रह हो तो **अनफा योग** बनता है।

(3) यदि दोनों में ग्रह पड़े हों तो दुरधरा योग बनता है।

(4) यदि दूसरे और 12वें में कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम योग बनता है।

चन्द्राच्चतुर्थे सुनफा, दशमस्थितैः कीर्तितोऽनफा विहगैः।
उभयस्थिते, दुर्रूधरा केमद्रुम संज्ञितोऽन्यथा योगः ॥

टिप्पणी—ऊपर बताई गई स्थिति सामान्य नहीं है किन्तु विद्यार्थियों के ज्ञान के लिए दे दी गई है।

(*iv*) मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि से बनने वाले सुनफा और अनफा योग प्रत्येक मामले में 31 है तथा दुरधरा योग 180 है।

विद्यार्थियों/पाठकों को चाहिए कि वे प्रयोग करें और उनका पता लगाएं।

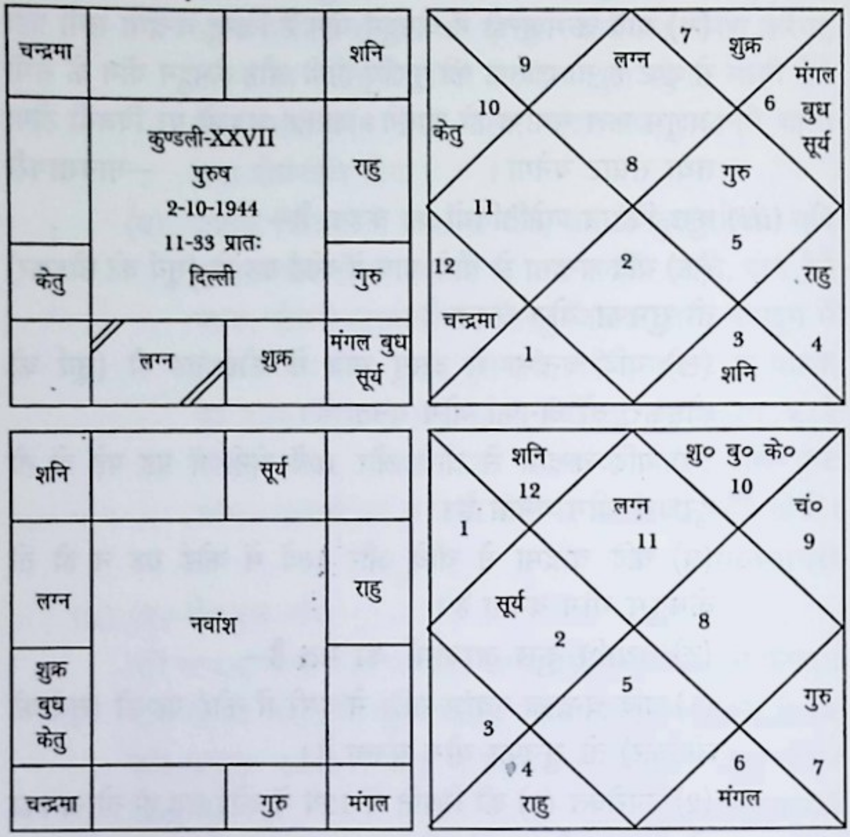

कुण्डली **XXVII**

(1) इस जन्मकुण्डली में केमद्रुम योग है।

(2) केमद्रुम योग समाप्त हो रहा है–

(क) चन्द्रमा से केन्द्र में ग्रह (शनि, मंगल और बुध) हैं और लग्न से केन्द्र में भी बृहस्पति है।

पाठक अन्य सिद्धांतों को लागू करें।

जीवन की घटनाएं–

1. 11वीं अनुत्तीर्ण	1961	बुध/शनि
पुनः अनुर्तीण	1962	केतु/केतु
उत्तीर्ण	1963	केतु/शुक्र

2. पिता का देहांत 1965 (जनवरी) केतु/मंगल

3. बी.ए. पास किया 1966 केतु/बृहस्पति

4. बम्बई में नौकरी की 1967-69 केतु/शनि और बुध

5. कारोबार में हानि (1965 में अपने नाम से आरंभ किया)। बिहार सरकार से अपने नाम लाइसेंस प्राप्त किया। 1967 के बाद (जब वह बम्बई गया) उसका भाई कारोबार देख रहा था। केतु/राहु और बृहस्पति।

6. दिल्ली वापस आया और छः महीने के लिए नौकरी की 1969 शुक्र/शुक्र

7. फरवरी, 1970 में वह बिहार गया और अपना कारोबार संभाल लिया, लाभ हुआ और सभी कर्ज से मुक्त हो गया (शुक्र/शुक्र)

8. 16 जून, 1970 को विवाह हुआ (शुक्र/शुक्र/मंगल), 15-3-78 को पुत्र हुआ (शुक्र/राहु) 8.10.83 को लड़की हुई (शुक्र/शनि/शु)।

9. 1989 में दिल्ली आया (सूर्य/सूर्य)

10. 1991 में केरल गया (सूर्य/बृहस्पति)

11. 2.5.92 से 11.9.92 तक मालिकों और श्रमिकों से कष्ट में रहा। श्रमिकों से पिटने के बाद दिल्ली वापस आ गया।

12. 18.10.1992 को मां का देहांत हुआ (सूर्य/शनि)।

13. आज तक अस्थिर है तथा संघर्षरत है।

चं 29-36 राहु 8-3	लग्न 9-17		
	कुण्डली-XXVIII पुरुष 19-12-1931 2.06 सांध्य शनिवार		बृहस्पति (व) 29-34
शु बु श मं सूर्य			केतु 8-3

कुण्डली XXVIII

लग्न 0/09°-17′	सूर्य 8/3°-35′	चंद्रमा 11/29°-36′
मंगल 8/14°-7′	बुध 8/08°-22′	बृहस्पति 3/29-34′(व)
शुक्र 8/29°-24′	शनि 8/29°-25′	राहू 11/08°30′
केतू 5/08°-30′		

बुध महादशा भोग्य = 6 मास 4 दिन

कुण्डली XXVIII

चन्द्रमा से केन्द्र में ग्रह होने के कारण केमद्रुम योग समाप्त हो रहा है। जातक अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र है। शिक्षा अधिक नहीं मिली। उसका विवाह कम उम्र में हो गया। पहला पुत्र 15.2.1950, को, दूसरा 5.8.1951 को और तीसरा 27.4.1953 को हुआ। वह जीवन का आनन्द लेता रहा। उसके पिता सबका पालन-पोषण कर रहे थे। उसने अनेक कारोबार किए किन्तु हानि हुई। वह असावधान, नशे का अभ्यस्त तथा पतंगबाजी का बहुत शौकीन था। बच्चे जीवन में ठीक हैं। पिता का देहान्त 1983 में तथा मां का देहान्त 1985 में हो गया। वे अपनी सम्पत्ति छोड़ गए। नशा, खराब आदतों तथा गुस्सा आदि के कारण बच्चों ने उसे घर से निकाल दिया। उससे पहले चोरी के जुर्म में वह जेल भी गया। तब से वह भिखारी की तरह दयनीय जीवन बिता रहा था। इस पर योग समझने के विचार से चर्चा की गई है। कुण्डली के पूरे विश्लेषण तथा दशाक्रम के आधार पर ही फल निर्भर करना है। इन योगों से हमें मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

(*ii*) चंद्रमा से द्वितीय तथा द्वादश में कोई ग्रह नहीं है इसलिए **केम द्रुम योग** बन रहा है।

फल—जातक राजसिक परिवार में जन्म लेकर भी कोई पहचान नहीं बना पायेगा और कष्टतम जीवन व्यतीत करेगा। (देखें पैरा 13.5 (4) (*i*) (क से घ तक))

केम द्रुम भंग

इस कुण्डली में योग भंग भी हो रहा है। क्योंकि—बलवान चंद्रमा शुभ व सम राशि में है। इसलिए जातक पुत्रवान, धनवान, संपन्नता की भावना वाला, विजयी होकर राजा बनेगा।

(क) यदि सारे ग्रह तीन भावों में बैठे हों तो **'शूल योग'** बनता है–ऐसा जातक सुस्त, क्रूर, समाज से तिरष्कृत, घायल, लड़ाकू, शरीर की खाल में फाँस के समान होता है।

(ख) **हंसयोग**–उच्च का बृहस्पति केन्द्र में होने से खुला रंग, उभरे गाल, सुन्दर मुख, शरीर सुनहरे रंग की चमक वाला होगा। वह जल क्रीड़ा में रूचि लेने वाला, शीघ्र क्रोधित होने वाला, यौन सुख का लालची व अतृप्त रहने वाला। सुन्दर पत्नी सुडौल शरीर वाली होगी। वह शारीरिक व सांसारिक सुखों का भोक्ता होगा। 100 वर्ष तक सुख भोगेगा।

(ग) **दैन्य योग**–चतुर्थेश व द्वादशेश का स्थान परिवर्तन।
यहाँ चतुर्थेश चंद्रमा राहू के साथ है तथा मंगल से पीड़ित है, मंगल चतुर्थ व नवमेश भावों को भी देख रहा है तथा सूर्य के साथ बैठा है (जो पिता का कारक है) दशमेश शनि को पीड़ित कर रहा है।

(घ) जो ग्रह छठे, आठवें तथा बारहवें भावों के स्वामी से संबंध बनाए हो या मारक (द्वितीयेश च सप्तमेश) के साथ हों, जातक का जीवन अति दुखपूर्ण हो जाता है जब इन ग्रहों की दशा आती है।

इस कुण्डली में षष्ठेश (बुध), अष्टमेश (मंगल) तथा द्वादशेश बृहस्पति की दृष्टि (जो वक्री है) नवम भाव, पंचमेश सूर्य तथा नवमेश गुरु अष्टमेश मंगल के प्रभाव में है। पंचमेश सूर्य तथा नवमेश गुरु अष्टमेश मंगल के प्रभाव में है। जातक ने सूर्य की दशा तक सभी प्रकार के सुख सुविधा भोगी। चंद्रमा की दशा में उसकी संगति बिगड़ी और गिरावट शुरु हुई। मंगल की दशा में क्रूर व आक्रमक हो गया तथा माता पिता का शत्रु बन गया। चंद्रमा की दशा 1965 से 1975 तक तथा मंगल की दशा 1982 तक रही।

राहू दशा उसे निम्नतर स्तर पर ले गई, वह शराब की लत में पड़ गया। 1 अक्टूबर 1983 पिता का देहांत, 1984 नवम्बर में माता का देहांत हुआ। राहू/शनि की दशा में उसे कुछ समय के लिए तिहाड़ जेल में रहना पड़ा

क्योंकि उसने पड़ोसी के यहाँ चोरी की थी। जनवरी 1985 में उसे बेटों तथा पत्नि ने घर से निकाल दिया। वह एक भिक्षुक की भाँति एक मंदिर के बाहर रहने लगा और एक संयासी का जीवन बिताने लगा जब तक उसकी मृत्यु नहीं हुई। ऊपर हंसयोग में वर्णित प्रभाव को पैरा (ख) में देखें।

सारांश—कुण्डली में विद्यमान योग भी उसको सामान्य जीवन नहीं दे पाए। क्योंकि उसके अपने कर्म बिगड़ गए थे। इसका अर्थ हुआ कि भाग्य अकेला कुछ नहीं कर सकता जब तक कि कर्म न किया जाए। शुक्र, सूर्य, बृहस्पति तथा शनि सभी संधि में है। मृत/बाल अवस्था में है। इसलिए सहायक नहीं हुए।

यह उदाहरण पाठकों की जानकारी योगों के फल समझाने के लिए दी है। कुण्डली का सम्पूर्ण विश्लेषण, जीवन में आने वाली दशा क्रम का अध्ययन आवश्यक है। योग तो केवल मार्गदर्शन करते है कर्मों के करने के लिए।

13.5 (5) गजकेसरी योग

केन्द्रे देवगुरौ लग्नाच्चन्द्रद्वा शुभदृगयुते।
नीचास्तारिगृहैहीने योगेऽयं गजकेसरी ॥ **—पराशर**

यदि बृहस्पति नीच का न हो, अस्त न हो, शत्रु राशि में न हो और लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित हो और दूसरे शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो गजकेसरी योग बनता है।

फल—जातक धनी, बुद्धिमान, सभी गुण सम्पन्न, राजा का प्रिय होगा।

(*i*) केन्द्रेस्थिते देवगुरौभृगांकात् योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दु सुतैः शशांके नीस्तहीनैर्गज केसरीस्यात ॥

जब चन्द्रमा से केन्द्र में बृहस्पति स्थित हो तो गजकेसरी योग बनता है। इसके अतिरिक्त यह कहा गया है कि चन्द्रमा अस्त न हो, निर्बल न हो और शुक्र, बृहस्पति, बुध से दृष्ट हो तो गजकेसरी योग बनता है। **—जातक परिजात**

फल—गजकेसरी योग में उत्पन्न जातक बलवान धनी, लाभ कमाने वाला होता है; वह मेधावी, तेज और राजा का प्रिय होता है।

(*iii*) गजकेसरी योग से अन्य अरिष्ट योग ठीक वैसे ही समाप्त हो जाते हैं जैसे एक शेर हजारों हाथियों को मार डालता है। जातक अमीर, अपने समुदाय, गांव, नगर या देश का प्रधान और दीर्घजीवी होता है। **—जातक देशमार्ग**

(*iv*) जब किसी जन्मकुण्डली में चन्द्रमा और बृहस्पति एक-दूसरे से केन्द्र में हों तो गजकेसरी योग बनता है। **—फलदीपिका**

फल—जातक शेर की तरह अपने शत्रुओं का नाश करता है। वह सभा को विवेक तथा उत्तम ढंग से संबोधित करता है। उसकी अनेक इच्छाएं और महत्वाकांक्षाएं होगी। वह कामुक तथा भावुक होगा। वह दीर्घजीवि, प्रतिष्ठित, बुद्धिमान तथा लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होगा।

(*v*) **निष्कर्ष**—(क) इस योग के फल तथा प्रभावों के बारे में सभी विद्वानों का मत प्रायः एक जैसा ही है। सभी मतों में जो एक बात सामान्य है वह यह है कि बृहस्पति और चन्द्रमा एक-दूसरे से केन्द्र में हों। अंतर यह है कि

(1) बृहस्पति लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हो,

(2) अन्य शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों,

(3) चन्द्रमा अस्त या निर्बल न हो और शुक्र, बृहस्पति और बुध से दृष्ट हो। यह अन्य प्रकार का गजकेसरी योग होता है।

—जातक परिजात

यदि चन्द्रमा बली हो और शुक्र, बृहस्पति और बली बुध से दृष्ट हो तो यह उत्तम फल देता है। यदि शुक्र और चन्द्रमा में परस्पर दृष्टि संबंध हो तो बहुत अच्छा फल होता है।

(ख) *एक प्रसिद्ध तमिल प्राचीन पुस्तक 'स्वामीयम्' में इस प्रकार कहा है*—बली चन्द्रमा हो और बृहस्पति चन्द्रमा से 4 या 10 में हो तो गजकेसरी योग बनता है।

(ग) दूसरा मत यह है कि चन्द्रमा और बृहस्पति परस्पर केन्द्र में हों और *चन्द्रमा से पंचम में बुध न हो ना ही चंद्रमा पर दृष्टि हो*

तथा चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तभी गजकेसरी योग बनता है।

(घ) एक अन्य मत यह है कि *शुक्र की महादशा काल में भी गजकेसरी का फल मिलता है।*

इन अनेक मतों के साथ निम्नलिखित को स्वीकार करना श्रेष्ठ होगा–

"चन्द्रमा से बृहस्पति केन्द्र में हो या दोनों परस्पर एक-दूसरे से केन्द्र में हो तो गजकेसरी योग बनता है।

शुभ ग्रह शुक्र की दृष्टि से इस योग के शुभ फलों में वृद्धि होती है। जातक विनम्र उदार, गांव, नगर या राष्ट्र का निर्माता न्यायाधीश होगा, प्रसिद्ध तथा स्थिर प्रतिष्ठा वाला होगा।

(*vi*) कुण्डली **XXIX** (नाटेबल हारोस्कोप पृष्ठ 401)

राहु		चन्द्रमा 26.0 शनि	
लग्न	XXIX डा० बी.वी. रमन		सूर्य
			मंगल बुध शुक्र
	गुरु 11-59		केतु

बृहस्पति और चन्द्रमा परस्पर एक-दूसरे से केन्द्र में हैं तथा उनकी एक दूसरे पर दृष्टि भी है। चन्द्रमा उच्च राशि में होकर योग की क्षमता को बढ़ा रहा है। बृहस्पति भी लग्न से केन्द्र में है। बृहस्पति का राशि स्वामी मंगल जो दसमेश है, भी लग्न से केन्द्र में है और बृहस्पति पर दृष्टि डाल रहा है। इस प्रकार कर्म स्थान काफी बली है। वे अपनी महानता के लिए प्रसिद्ध हैं, वर्तमान युग के महान् ज्योतिषी हैं, अतुलनीय, विनम्र स्वभाव, उदार, अच्छा शिक्षक और विश्व ज्योतिष संघ के प्रधान हैं। वे **भीष्म पितामह** के नाम से प्रसिद्ध हैं।

राहु			
	XX/XXX के. एन. राव 12–10–1931 7–45 प्रातः आ० 16 11उ० देशा० 81–07 पूर्व		बृह०
शनि		लग्न मंगल शु. चन्द्रमा	सूर्य बुध केतु

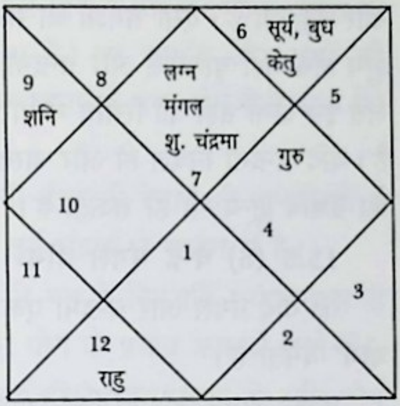

बृहस्पति और चन्द्रमा परस्पर एक दूसरे से केन्द्र में हैं किन्तु एक दूसरे पर दृष्टि नहीं है। बृहस्पति उच्च का है। यह योग काफी बली है। किन्तु चन्द्रमा नीच राशि की ओर अग्रसर है तथा अस्त से अभी बाहर निकला है। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त, विद्वान और शास्त्रों आदि में कुशल, सरकारी सेवा में उच्च स्थान प्राप्त, प्रसिद्ध ज्योतिषी और आधुनिक काल में ज्योतिष के योग्य शिक्षक जो उस संस्था के प्रधान हैं जहाँ लगभग 500 विद्यार्थी, दैवी विज्ञान–ज्योतिष के अध्ययन में लगे हैं। उनके साथ संकाय सदस्य में 20 ज्योतिष के शिक्षक हैं जो उनके द्वारा प्रशिक्षित है तथा ज्योतिष की महान् सेवा में सहायता कर रहे हैं। वे डॉ० रमन के समान अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं। लोग उन्हें 'विवेकानन्द' कहते हैं। उन्होंने अनेक शोध कार्य किए हैं (जो एस्ट्रोलोजिकल मेगजिन, टाइम्स ऑफ एस्ट्रोलोजी, ज्योतिषमती, रश्मि विज्ञान आदि में छप चुके हैं) और अनेक पुस्तकों के लेखक हैं।

(*vii*) यह योग 48 (12 × 4) हैं। प्रत्येक राशि में चन्द्रमा से यह 1/7, 1/4, 1/10 और दोनों एक ही राशि में है। प्रत्येक योग (48 प्रकार के) के फल एक जैसे नहीं होंगे। चन्द्रमा दो राशियों (वृषभ और कर्क) में बली होता है, बृहस्पति तीन राशियों (कर्क, धनु और मीन) में बली होता है। चन्द्रमा वृश्चिक में तथा बृहस्पति मकर में निर्बल होता है। इस योग के फल तदनुसार बदलते रहते हैं। उपरोक्त दो उदाहरणों में, पहले उदाहरण में यह योग शनि से प्रभावित है और चन्द्रमा सूर्य की ओर अग्रसर है। अतः निर्बल है। दूसरे मामले में चन्द्रमा अभी अस्त से बाहर आया है तथा नीच राशि की

ओर बढ़ रहा है। ऐसा समझा जा सकता है कि उन मामलों में फल अधिक शुभ होंगे जहाँ बृहस्पति और चन्द्रमा दोनों ही अच्छी स्थिति में हो और जैसे जैसे इन दोनों ग्रहों की स्थिति में गिरावट आती है, शुभ फल में कमी आती है। यदि चन्द्रमा निर्बल हो ओर अस्त हो और प्रभावित भी हो तो इस योग का प्रभाव शून्य भी हो सकता है।

13.5 (6) चन्द्र मंगल योग

(*i*) यदि मंगल और चन्द्रमा एक ही राशि में स्थित हों तो **'चन्द्र मंगल योग'** बनता है।

फल—जातक को अनैतिक साधनों से आय होती है, वह स्त्रियों का सौदा करने वाला, मां के प्रति कठोर तथा उसके साथ दुर्व्यवहार करेगा, अन्य संबंधियों के साथ भी दुर्व्यवहार करेगा।

(*ii*) डॉ० रमन ने अपनी पुस्तक "तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग" में दोहराया है कि **यह योग उत्तम काम** करता है तथा **जातक धनी** होता है। वह शराब व मधुशाला आदि का व्यापार करता है। यदि मंगल और चन्द्रमा उत्तम स्थिति में हों तो आय प्रतिष्ठित साधनों से होगी। अर्थात् यदि चन्द्रमा और मंगल वृषभ, मकर, मेष या वृश्चिक में हो और उनपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ऊपर (*i*) में वर्णित फल नहीं भी हो सकते हैं क्योंकि उनकी अच्छी या बुरी स्थिति के आधार पर ही फल होंगे।

(*iii*) पैरा 13.5 (5) (*vi*) में कुण्डली XXVIII में चन्द्रमा और मंगल दोनों एक साथ स्थित हैं। दोनों ही अच्छी स्थिति में हैं (न अपनी राशि में हैं और न ही बली हैं) किन्तु शुभ ग्रह शुक्र के साथ हैं और बृहस्पति उससे दशम् में (चन्द्रमा और मंगल से) है। ऊपर (*i*) के अनुसार फल नहीं हैं। अतः योग की व्याख्या उचित विश्लेषण के बाद ही की जानी है।

13.5 (7) चन्द्राधि योग

(क) जब चन्द्रमा से 8, 6 और 7वें में शुभ ग्रह हों तो अधियोग बनता है।

जिस जातक की जन्मकुण्डली में यह योग हो वह राजा, मंत्री या सेना का मुख्या होता है। **प्राशर**

(ख) **जातक परिजात** के अनुसार इस योग में उत्पन्न जातक पुलिस या सेना का प्रधान, मंत्री या शासक होता है। वह समृद्धि और सुखों की चरमसीमा पर होता है, शत्रुओं का दमन करता है तथा दीर्घजीवी होता है। वह रोग और खतरे से दूर होता है।

नोटः श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथा श्री मोरारजी देसाई की कुण्डलियों में यह योग है। मोरारजी की कुण्डली में सूर्य चंद्रमा से सप्तम में है।

(ग) विद्वान ज्योतिषियों का यह भी मत है कि यदि सूर्य चन्द्रमा से विपरीत स्थित हो (सम सप्तम) तो इस योग के प्रभाव कम हो जाते हैं।

(घ) **भटोत्पल** ने श्रुतकृति से निम्नलिखित सात प्रकार के अधि योग का उल्लेख किया है। तीन शुभ ग्रह (बुध, बृहस्पति और शुक्र) चन्द्रमा से 6, 7 व 8वें भाव में है।

(*i*) सभी (तीन) 6, 7 व 8 में

(*ii*) 6 और 7 में

(*iii*) 6 और 8 में

(*iv*) 7 और 8 में

(*v*) केवल 7 में

(*vi*) केवल 8 में

(*vii*) केवल 6 में

(ङ) यह योग शुभ फलदायक और बली तभी होगा यदि 6, 7 व 8 में स्थित शुभ ग्रह बल में उत्तम, मध्यम या साधारण हों जैसा कि **बाद्रायन** और **पराशर** द्वारा वर्णित है। *उन्हें ग्रसित और अशुभ ग्रहों से दृष्ट नहीं होना चाहिए।*

(च) यदि चन्द्रमा से 6, 7 व 8 में अशुभ ग्रह हों तो इसे **पापाधि योग** कहा जाएगा (पैरा 13.5 (2) (*ii*) में श्रीमती इन्दिरा गांधी की कुण्डली देखें) और विपरीत परिणाम होंगे। यदि 6, 7 व 8वें में शुभ ग्रह हों तो इसे **शुभाधि योग** कहा जाएगा।

पैरा 13.5 (5) (*vi*) में कुण्डली सं. XXIX (डॉ० बी.बी. रमन) में चन्द्रमा से सप्तम् में बृहस्पति है अतः चन्द्राधि योग बनता है। पैरा 13.5

(4) (*iv*) में कुण्डली XXVII देखें। 6 (सिंह) में बृहस्पति, 7 (कन्या) में सूर्य, बुध, मंगल और 8 (तुला) में शुक्र से चन्द्राधि योग बनता है। कोई भी योग अकेला पूरा फल देने के लिए सक्षम नहीं है जब तक योग बली न हो और योग में शामिल ग्रह की दशा न हो। योग के आधार पर फल बताने से पूर्व जन्मकुण्डली का पूरा विश्लेषण करना उत्तम होता है।

13.5 (8) अमल योग

(i) यदि लग्न या चन्द्रमा से दसम् में केवल शुभ ग्रह हो तो अमल योग बनता है।

जिस जातक की जन्मकुण्डली में यह योग हो वह राजा (सरकार) से सम्मान पाता है, सुखों का भोग करता है। वह दान देने में रुचि रखता है, संबंधियों का शौकीन, दूसरों का सहायक तथा पवित्र और सदाचारी होगा।

—पराशर

(*ii*) यदि दसम् में शुभ ग्रह के साथ अशुभ ग्रह भी हो तो इस योग का फल दूषित हो जाता है। यदि दसम् भाव में बली शुभ ग्रह हो तो जातक को स्थायी नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

(*iii*) **फलदीपिका** के अनुसार भी जब लग्न या चन्द्रमा से दसम् में शुभ ग्रह हो तो यह योग बनता है। जातक सदाचारी होगा, धर्म में आस्था रखने वाला, सुखी, भाग्यशाली, राजा से सम्मानित, स्नेही स्वभाव, और मुख पर सदा ही मुस्कान रखने वाला होगा। पैरा 13.5 (5) (*vi*) में दी गई दोनों ही कुण्डलियों में लग्न से दसम् में बुहस्पति है। श्री के.एन. राव की कुण्डली में बृहस्पति उच्च का है अतः लग्न तथा चन्द्रमा दोनों से ही दसम् में है अतः यह काफी बली है।

इस प्रकार इस योग के लिए वर्णित सभी गुण इनमें मौजूद हैं। यद्यपि इन्हें राजा (सरकार) से सम्मान प्राप्त नहीं हुआ है, मंत्री तथा सरकार के उच्च पदाधिकारी इन दोनों के पास आते रहते हैं। ये दोनों ही अपनी सफल भविष्यवाणी के लिए प्रसिद्ध हैं।

13.5 (9) गरुड़ योग

(*i*) यदि जातक का जन्म दिन का हो, चन्द्रमा बली हो और चन्द्रमा का नवांश स्वामी उच्चं का हो तो गरुड़ योग बनता है।

जिस जातक की कुण्डली में यह योग हो वह पवित्र, सुलझी हुई वाणी, शत्रुओं से भयभीत, और 34 वर्ष की आयु में विष से खतरा होता है।

(*ii*) पैरा 13.5 (4) (*iv*) में कुण्डली XXVIII में यह योग विद्यमान है। चन्द्रमा का नवांश स्वामी गुरु उच्च का है, जन्म दिन का है, और चन्द्रमा शुभ है।

(*iii*) पैरा 13.5 (5) (*vi*) में कुण्डली X में भी चन्द्रमा का नवांश स्वामी गुरु दसम् भाव में उच्च का है तथा जन्म दिन का है।

दोनों कुण्डलियों के बीच अंतर तथा परिणाम में अंतर को पाठक भली प्रकार समझ सकते हैं। इस बात पर बल दिया जाता है कि किसी भी योग के फल की व्याख्या दशाक्रम और कुण्डली में ग्रह के योगों के उचित अध्ययन के बाद ही की जानी चाहिए।

सूर्य संबंधी योग

13.6 (1) वेसि योग

(*i*) यदि सूर्य से दूसरे भाव में कोई ग्रह हो (चन्द्रमा को छोड़कर) तो यह योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न व्यक्ति समदर्शी, विश्वासी, अकर्मण्य, लम्बे शरीर वाला, खुश और थोड़ा धनवाला होता है। —पराशर

(*ii*) जातक उत्कृष्ट व्यक्तित्व वाला, स्नेही बचन बोलने वाला, अच्छी स्मृति वाला, आमोद और यौन आनन्द में रुचि लेने वाला, धीमी गति, सात्विक स्वभाव, शरीर का एक भाग बली होगा तथा भेंगा होगा।

—मानसागरी

(*iii*) इस योग वाला जातक खुश, समृद्ध, उदार और शासक वर्ग का प्रिय होगा। यह फल शुभ ग्रहों के अनुसार होगा यदि पाप ग्रह हो तो फल विपरीत होगा।

(क) यदि सूर्य से दूसरे में गुरु हो— विश्वासी, चतुर और बुद्धिमान, साहसी और युद्ध के क्षेत्र में बली तथा उत्साही होगा।

(ख) यदि सूर्य से दूसरे में शुक्र हो—प्रसिद्ध, कुशल, सुस्थापित, बहादुर आदि होगा।

(ग) यदि सूर्य से दूसरे में बुध हो– मधुरभाषी, सुन्दर शरीर, दूसरों को बेवकूफ बनाने वाला होगा।

(घ) यदि मंगल के कारण वेसि योग बनता है– जातक युद्ध कला में प्रसिद्ध, रथ चलाने वाला तथा सभी प्रकार से प्रसिद्ध होगा।

(ङ) यदि शनि के कारण वेसि योग बनता है, जातक व्यापार में कुशल, दूसरों का धन चुराने वाला, दूसरों का धन हड़पने वाला तथा उपदेशकों से शत्रुता आदि करने वाला होगा।

पैरा 13.5 (5) (*vi*) में दी गई दोनों ही कुण्डलियों में XXIX तथा XXX में यह योग विद्यमान है और सूर्य से दूसरे में किसी में भी शनि नहीं है।

(घ) जातक सुन्दर, प्रसन्न, मेधावी, शौर्य, राजा और सदाचारी होगा।

–फलदीपिका

(ङ) यदि सूर्य से दूसरे में बुध, गुरु और शुक्र हों और वे अस्त अथवा अशुभ ग्रह से दृष्ट न हों तो जातक तीन समुद्रों की सीमा के भीतर शासन करेगा। **–सारावली**

13.6 (2) वासि/वोसि योग

यदि सूर्य से 12 में कोई ग्रह (चन्द्रमा को छोड़कर) हो तो यह योग बनता है।

(क) इस योग में उत्पन्न व्यक्ति कुशल, दानवीर, विद्वान, बलवान, दान देने वाला, प्रसिद्ध होगा **–पराशर**

(ख) जातक की दृष्टि कमजोर, शांति से बात करने वाला, परिश्रमी, युवा से पूर्ण शरीर, हमेशा नीचे देखने वाला होगा–

(*i*) यदि यह योग 12वें में बुध के कारण बनता है–लोग उसे गरीब समझते हैं, वह विनम्र, निर्बल या बेशर्म होगा।

(*ii*) यदि मंगल के कारण वोसि योग बनता है–जातक अपनी मां का हत्यारा, समाज सेवक और दूसरों की सहायता करने वाला होगा।

(*iii*) यदि सूर्य से 12वें में बृहस्पति के कारण यह योग बनता है–जातक कंजूस, दिन के समान चमक वाला होगा।

(*iv*) यदि सूर्य से 12वें में शुक्र से यह योग बनता है–जातक डरपोक, कामुक, परिश्रम नहीं करने वाला तथा दूसरों के नियंत्रण में रहने वाला होगा।

(*v*) यदि सूर्य से 12वें में शनि के कारण योग बनता है, जातक अन्य स्त्रियों के साथ यौन संबंध रखेगा तथा देखने में अधिक उम्र का तथा दयालु आदि होगा। –मांनसागरी

(ग) जातक प्रसिद्ध सर्वप्रिय, अमीर और समृद्ध होगा। वह शासित तथा राजा का प्रिय होगा। मंत्रेश्वर ने शुभ और अशुभ ग्रहों से बने योगों के बीच अन्तर बताया है। –फलदीपिका

(घ) जातक उत्कृष्ट वाणी वाला, अच्छी याददास्त, दोषमुक्त आंखों, बगल में देखने वाला, उत्तम शरीर वाला; ईमानदार और राजा के समान होगा। –सारावली

(*i*) यदि बृहस्पति से वेसि योग बनता है– जातक साहसी, विवेकी, धर्मी, अपने बचन पर कायम रहने वाला होगा।

(*ii*) यदि शुक्र से वेसि योग बनता है–जातक साहसी, प्रसिद्ध, सदाचारी और प्रतिष्ठित होगा।

(*iii*) सूर्य से 12वें में बुध के कारण वेसि योग में जातक सुन्दर, मधुरभाषी और आज्ञाकारी होगा।

(*iv*) यदि मंगल से वेसि योग बनता है–जातक प्रसिद्ध, स्वअर्जित धन का आनन्द लेने वाला और युद्ध में विजयी होगा।

(*v*) यदि सूर्य से 12वें में शनि हो–जातक दुष्ट, चोर बड़ों से घृणा करने वाला, पवित्र पत्नी वाला तथा व्यापारी होगा। –सारावली

(ङ) इस योग का बल सूर्य की स्थिति पर निर्भर करता है और उन ग्रहों पर निर्भर करता है जिनसे यह योग बनता है। इस योग में शामिल ग्रहों की नवांश स्थिति का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है।

कुण्डली XXXI शनि की दशा शेष 4 वर्ष 11 महीने 27 दिन

	गुरु (व) 23-24-24	राहु 29-36-55	
शनि 7-14-13	XXXI महिला 21-12-1964 22-30 कलकत्ता		चंद्रमा 13-9-41
			लग्न 21-33-57 मंगल 27-13-15
सूर्य 6-31-11	शुक्र 9.39 बुध (व) 29.51.36 केतु		

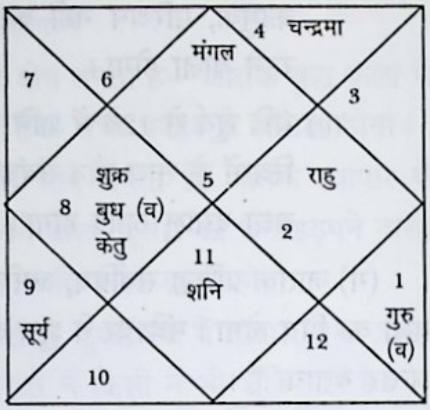

इस कुण्डली में बुध और शुक्र से वेसि योग बन रहा है। जातक सदाचारी, सुन्दर और मधुभाषी है।

13.6 (3) उभयचारी योग

जब सूर्य से 2 और 12 में दोनों में कोई ग्रह (चन्द्रमा को छोड़कर) हो तो उभयचारी योग बनता है।

(*i*) जातक राजा या राजा समान और सुखी होगा —**पराशर**

(*ii*) जातक आकर्षक शरीर वाला, मधुभाषी, विश्व को आनन्दित करने वाला, वाकूपटु, प्रसिद्ध और धनी होगा।

अशुभ उभयचारी योग में उत्पन्न व्यक्ति अर्थात् जब सूर्य से दूसरे और 12वें में अशुभ ग्रह हों तो जनता में अपमान के कारण मानसिक पीड़ा और धन तथा सौभाग्य से वंचित रहेगा।

शुभ उभयचारी योग अर्थात् जब सूर्य से 2 और 12 में शुभ ग्रह हों तो स्वस्थ और शत्रुविहीन होगा। जब कि पाप कर्तरी योग से जातक दयनीय, पत्नी से बच्चों के सुख से वंचित, त्रुटिपूर्ण अंग और अल्पायु होगा।

—**फलदीपिका**

(*ii*) जातक सौभाग्यशाली, एक समान शरीर वाला बलवान, विद्वान, सुखी, सब चीजों से परिपूर्ण, अनेक नौकरों वाला, राजा के समान, संबंधियों की सुरक्षा करने वाला, सभी सुखों का भोग करने वाला तथा उत्साही होगा।

—**सारावली**

जातक सहनशील और परिस्थितियों के अनुसार चलने वाला, समदर्शी, समान शरीर वाला, शांत और बलवान होगा —मानसागरी

जातक रूपवान, अनेक नौकरों वाला, भाईयों तथा निकट संबंधियों पर आश्रित, सर्वदा सुखी, जीवन में आनन्द का भोग करने वाला होगा (कुण्डली VII, XVI, XVII, XX, XXII, तथा XXVII देखें)।

13.6 (4) बुध आदित्य योग

यदि सूर्य और बुध एक राशि में साथ-साथ स्थित हो तो इसे बुध आदित्य योग कहा जाता है।

इस योग में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, सम्मान पानेवाला, कार्य करने में निपुण, प्रसिद्ध और आराम और सुख में जीने वाला होगा।

इस योग के लिए यह आवश्यक है कि बुध अस्त न हो अन्यथा योग निर्बल हो जाएगा। यह योग अधिकतर कुण्डलियों में पाया जाता है (देखें कुण्डली XII, XVIII, XXVI, XX, XXII, XXIII)।

13.7 (1) लग्नाधि योग

लग्न संबंधी योग—जब लग्न से 7 और 8 में शुभ ग्रह हो और अशुभ ग्रह से दृष्ट न हो अथवा अस्त न हो अथवा अशुभ ग्रह से युक्त न हो तो लग्नाधि योग बनता है।

(क) जातक महान व्यक्ति, शास्त्रों का ज्ञाता तथा सुखी होता है।

—पराशर

यहाँ पर महर्षि पराशर ने छठे भाव को शामिल नहीं किया है जबकि लग्नाधि योग में 6ठा भाव शामिल किया गया है। कहीं पर यह भी कहा गया है कि लग्न से दसम् में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

(ख) जातक परिजात के अनुसार—

यदि लग्न से 6, 7 और 8 में शुभ ग्रह हों और अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट न हों तो जातक वैज्ञानिक शोध करेगा, दर्शन में प्रशिक्षित होगा, सेना में उच्च पद पर होगा। वह उदार, प्रसिद्ध और सौभाग्यशाली तथा सुखों का भोग करने वाला होगा।

(ग) 6, 7 और 8 में शुभ ग्रह होने पर लग्नाधि योग बनता है।

फलदीपिका में मंत्रेश्वर ने इसे और चन्द्राधि योग को एक समान माना है। देखें कुण्डली I

13.7 (2) अमल योग

पैरा 13.5 (8) में वर्णित योग और यह योग दोनों एक जैसे हैं। चन्द्रमा या लग्न, से दसम् में शुभ ग्रह हों तो अमल योग बनता है। (देखें कुण्डली II, VIII, IX और X)।

पंचमहापुरुष योग–

13.7 (3) रुचक योग

(क) यदि मंगल मेष या वृश्चिक (स्वराशि) में हो या मकर (उच्च राशि) में हो और लग्न से केन्द्र में स्थित हो तो रुचक योग बनता है।

–फलदीपिका

जातक साहसी कार्य करके धन प्राप्त करेगा, उसका मुखमण्डल लम्बा, साहसी और बलवान, शत्रुओं पर विजय पाने वाला और घमण्डी होगा, वह अपने अच्छे गुणों के लिए प्रसिद्ध, सेना का नायक होगा। वह जीवन में सफल रहेगा।

(ख) जातक दीर्घजीवी, आकर्षक मुखमण्डल वाला, मजबूत शरीर वाला, रक्तयुक्त होगा। वह अपने साहस के कारण सफल रहेगा, सम शरीर, सांवला रंग, नीले बाल और सुन्दर, भौहें होंगी, जांध और घुटने पतले होंगे। मंत्रों में कुशल, प्रतिष्ठित, योद्धा, शत्रुओं का विनाश करने वाला, उसकी आवाज में शंख जैसी प्रतिध्वनि होगी, स्वभाव से कठोर, लोगों, ईश्वर और ब्राह्मणों आदि का आदर करने वाला होगा। जातक के पैर में त्रिशूल, तीर, जाल (चक्र) आदि चिन्ह होंगे। उसकी उंगली सीधी, मंत्री के कार्य, युद्धकला और तंत्र विद्या में निपुण होगा। आयु 70 वर्ष तथा मंदिर के पास मृत्यु होगी।

(ग) इस योग में उत्पन्न व्यक्ति शरीर से बलवान, भाग्यशाली, प्रसिद्ध और उत्तम गुणों वाला होगा। वह विज्ञान में कुशल तथा पवित्र भजन (स्तोत्र) में पारंगत तथा जादू की कला में निपुण होगा। वह शासक, प्रिय आकर्षक, व्यक्ति, उदार, विजयी, धनी आदि होगा। वह सुख और आराम के साथ 70 वर्षों तक जीवित रहेगा और सेना का नायक होगा।

–जातक परिजात

(भाग I के पैरा 8.5 में गुरु नानक की कुण्डली देखें)

13.7 (4) भद्र योग

यदि बुध मिथुन (स्वराशि) या कन्या (स्वराशि तथा उच्च) में हो और लग्न से केन्द्र में स्थित हो तो भद्र योग बनता है।

टिप्पणी—केन्द्राधिपत्य दोष के कारण इस योग का महत्त्व कम हो जाता है।

(क) जातक की मुखाकृति सिंह के समान, घुटने से पांव तक हाथी के समान, जांध मोटे, छाती चौड़ी, हाथ की ओर गोलाकार, कामुक, नर्म गाल, विद्वान, हाथ और पैर कमल के फूल के समान, मजबूत, योग विद्या में निपुण होगा —**मानसागरी**

(ख) जातक का चेहरा बाघ के समान, घुटने से पांव तक हाथी के समान, छाती चौड़ी, कमाण्डिंग स्वभाव, हट्टा-कट्टा, गोल हाथ, शासक, सगे-संबंधियों की सेवा करने वाला होगा। वह 80 वर्षों तक जीवित रहेगा तथा कमाण्डिंग पद पर होगा, प्रसिद्ध और धनी होगा। —**जातक परिजात**

(ग) जातक दीर्घजीवी, बुद्धिमान, पवित्र विचारों वाला तथा स्वच्छ शरीर वाला होगा। वह विद्वानों द्वारा प्रशंसित, अमीर और सम्पन्न होगा तथा प्रिय वाणी बोलने वाला होगा। —**फलदीपिका**

(घ) बुध बुद्धि का कारक होता है और बुध में अन्तर्निहित स्वभाव के अनुसार भद्र योग का फल होगा। देखें कुण्डली XXXII.

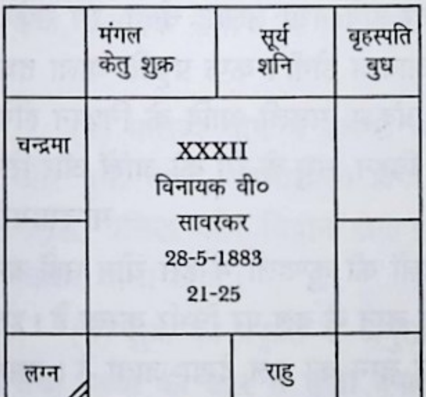

वे काफी साहसी थे। उनके साहस का अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है कि जब वे पुलिस की सुरक्षा में भारत आ रहे थे तो समुद्र में कूद पड़े। वे अपनी आकर्षक बात तथा तर्क की परिपक्वता के कारण एक परिष्कृत वक्ता के रूप में प्रसिद्ध थे। देश-भक्ति तथा लोकतंत्र की भावना के कारण वे एक देश-भक्त और राष्ट्रवादी बन गए तथा शासकों के साथ खतरनाक टकराव हुआ। वे एक निःस्वार्थी देशभक्त थे जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया।

13.7 (5) हंस योग—यदि बृहस्पति कर्क, धनु या मीन राशि में हो तथा लग्न से केन्द्र में हो तो हंस योग बनता है।

(क) इस योग में उत्पन्न जातक शासक, सरकारी सेवा में उच्च पदधारी, उत्तम व्यक्तित्व वाला, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने वाला होगा। उसके हाथों और पैरों पर शंख, कमल, मछली और अंकुश के निशान होंगे। वह सदाचारी और स्वादिष्ट भोजन का शौकीन होगा। **—फलदीपिका**

(ख) वह भाग्यशाली, लाल मुख और उभरे हुए नाक, सुडौल पैर, सुन्दर अंग, बतख की आवाज वाला होगा, उसकी पत्नी सुन्दर होगी, वह स्नेह के देवता के समान प्रिय होगा। उसके पास सभी सुख होंगे तथा वह धर्मग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए सर्वदा इच्छुक रहेगा। वह मेधावी होगा, 82 वर्षों तक जीवित रहेगा तथा सद्गुणों से परिपूर्ण होगा।

—जातक परिजात

(ग) जातक के मुखमण्डल पर लाली होगी, उसके नाक, चेहरा और सभी कर्मेन्द्रिय बतख के समान सुन्दर होंगे तथा ललाट चौड़ा, रंग सफेद, लाल उंगलियाँ तथा हंस के समान आवाज होगी। कफ प्रकृति वाला तथा उसके हाथों और पैरों शंख, कमल, अंकुश, मछली आदि के निशान होंगे, मालाकार, हाथ और पैरों पर घड़े का चिह्न, मधु के रंग की आंखें और सिर सुन्दर गोलाकार होगा। **—मानसागरी**

(घ) (*i*) स्थिर राशि के लग्न वालों की कुण्डली में हंस योग नहीं बन सकता है। योग का बल लग्न के बल पर निर्भर करता है। इस मामले में बृहस्पति और लग्न का बल देखा जाता है। दसम् केन्द्र अति बली केन्द्र होता है।

(*ii*) बृहस्पति शुभ होने के कारण केन्द्र का स्वामी होने पर केन्द्राधिपत्य दोष होता है। इस कारण योग का महत्त्व कम हो जाता है।

(*iii*) हंस योग की व्याख्या करते समय उचित जाँच करने में अति सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि इस योग में उत्पन्न, व्यक्ति उत्कृष्ट व्यक्तित्व वाला तथा नैतिकता से परिपूर्ण होता है।

(*iv*) पैरा 13.5 (5) (*vi*) में दिए गए दो उदाहरण इस योग में सर्वोत्तम उदाहरण हैं। इन दोनों व्यक्तियों में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो इस योग के लिए बताए गए हैं। वे स्नेह के देवता के समान प्रिय, अपने नैतिक गुणों तथा उत्कृष्ट आचरण, पवित्र धर्मग्रन्थों के ज्ञान के कारण आदरणीय हैं।

13.7 (6) मालव्य योग—यदि शुक्र, वृषभ, तुला या मीन राशि में हो और वह राशि लग्न से केन्द्र में हो तो मालव्य योग बनता है।

(क) वह जातक भावभंगिमा तथा शालीन शरीर वाला, स्त्री की आंखों के समान आंखें, रूपवान, मेधावी, शक्तिशाली, बच्चों वाला, पत्नी, सवारी वाला और धनवान होगा। वह धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने वाला होगा। विद्वान तथा ऊर्जा के प्रयोग में चतुर, परामर्श देने में सक्षम, उदार, परस्त्रीगामी और 77 वर्षों तक जीवित रहेगा। **—जातक परिजात**

(ख) जातक के होंठ पतले, शरीर स्वस्थ, लाल रंग के शरीर, मजबूत जोड़, पतली छाती, चन्द्रमा के समान चमक, लंबी नाक, सुन्दर गाल, चमकीली आंखें, युद्ध में मान और विजय पाने में सक्षम, घुटने तक लम्बे हाथ, राजा के समान 70 वर्षों तक जीवित रहने वाला होगा।

—मानसागरी

(ग) मालव्य योग में उत्पन्न व्यक्ति मजबूत अंगों वाला, धनी, पत्नी और पुत्रों वाला, भाग्यशाली होगा। वह जीवन का आनन्द लेने वाला, समृद्ध, प्रसिद्ध और विद्वान होगा। उसके पास गाड़ियाँ होंगी तथा संयम विचार वाला होगा। **—फलदीपिका**

(घ) शुक्र की प्रकृति के अनुसार मालव्य योग जातक को धनी, पत्नी तथा बच्चों की ओर से सुखी बनाता है। नाम और प्रसिद्धि अर्जित करने

वाला होगा। शुक्र सवारी, संवेदनशीलता, संगीत, नृत्य, ललित कला, ऐशो आराम और सभी प्रकार के भौतिक सुखों का कारक होता है। अतः यह योग भी इन चीजों की प्रवृत्ति देता है। इसमें जीवन में भौतिकता की प्रधानता होती है जब कि हंस योग में आदर्शवाद, आध्यात्म, विशाल मस्तिष्क और निःस्वार्थ की प्रधानता होती है। व्याख्या के लिए पैरा 13.5 (5) (*vi*) में दी गई कुण्डली देखें। शुक्र तुला लग्न में हैं।

13.7 (7) सस/ससक योग—यदि शनि मकर, कुंभ या तुला में लग्न से केन्द्र में हो तो सस योग बनता है।

(क) जातक राजा, मंत्री, जंगल और पहाड़ों में रहने वाला नायक, कठोर हृदय वाला, दानशील, क्रोधित आंखों वाला होगा। धातु संबंधी कर्म में सफल, मातृभक्त, बहादुर होगा और 70 वर्षों तक जीवित रहेगा।

—जातक परिजात

(ख) जातक बलवान्, गांव का प्रधान या राजा, दुष्ट स्वभाव, स्त्रियों की संगति में रहने वाला, दूसरों की सम्पत्ति का प्रयोग करने वाला, सुखी तथा सबसे स्वागत पाने वाला होगा।

जातक के दांत छोटे और चेहरा छोटा होगा, पहाड़ों में रहने वाला, क्रोधी स्वभाव, धोखेबाज, बहादुर और साहसी, दूरस्थ स्थानों, जंगलों, पहाड़ों, किला, नदी किनारे रहने का शौकिन, मध्यम शरीर वाला होगा। वह प्रसिद्ध होगा।

वह सेना एकत्र करने में व्यस्त, धातु कर्म में कुशल, पत्नी से प्यार करने वाला, चोर या दूसरों की सम्पत्ति विरासत में पाने वाला, मां का आदर करने वाला, पतली छाती व सुड़ौल ज़ांघों वाला, बुद्धिमान तथा दूसरों की कमजोरी शीघ्र समझने वाला होगा। उसके हाथों और पैरों पर शंख, तीर, मृदंग, वीणा, भाला के निशान होंगे। **—मानसागरी**

(ग) जातक, बलवान, गांव का प्रधान या राजा, स्वभाव से दुष्ट, स्त्रियों की संगति में रहने वाला, दूसरों की सम्पत्ति का उपयोग करने वाला, सुखी होगा। **—फलदीपिका**

(घ) शनि कठोर, नीच, अप्रतिष्ठित और पापी होता है। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर सस योग में ये सभी प्रभाव होते हैं। वह दूसरों की पत्नियों के साथ रहेगा और दूसरों का धन प्राप्त करने के लिए सभी प्रकार की चरित्रहीनता कर सकता है। वह युद्ध का ठेकेदार होगा तथा गरीबों के बल पर करोड़ों धन बना सकता है।

इस योग की व्याख्या के लिए चन्द्रमा की स्थिति पर उचित ध्यान देना चाहिए। यदि चन्द्रमा बुरे प्रभावों से मुक्त हो तो व्यक्ति चरित्रहीन नहीं होगा तथा दूसरों की सम्पत्ति हड़प नहीं करेगा।

(ङ) **पंचमहापुरुष योग** के बारे में ये सभी बातें हैं। ये पाँच योग जन्म लग्न तथा चन्द्र लग्न दोनों से देखे जाते हैं। **यदि ये योग उक्त दोनों लग्नों से बनते हैं तो अधिक प्रभावी होंगे।** इससे जातक सम्राट बनता है, उसमें पूर्णता आती है, भाग्यशाली होगा। यदि सभी पाँच या चार या तीन या दो या एक योग पाए जाते हैं तो जातक क्रम से उच्च कोटि का सम्राट, राजा या राजा के समान होगा, गांव या नगर का प्रधान होगा।

अन्य योग–

13.8 केदार योग

यदि सभी सातों ग्रह केवल चार राशियों में स्थित हो तो इससे केदार योग बनता है।

(क) जातक के पास धन और कृषि भूमि होगी। **–फलदीपिका**

(ख) उसके पास तीर धनुष होंगे। धनी, विनम्र, कृषि का शौकिन, समाज सेवा में रुचि लेने वाला, दूसरों की सहायता करने वाला, आचरण और साहस आदि के संबंध में दूसरों से उत्तम होगा।

13.9 सकट योग

(क) यदि सभी ग्रह लग्न और सप्तम भाव में स्थित हों तो सकट योग बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति सवारियों से संबंधित होता है या ड्राइवर होगा। **–मानसागरी**

(ख) यदि बृहस्पति से 6, 8 या 12 में चन्द्रमा हो तो सकट योग बनता है। *जातक जन्म समय दुखी तथा दुर्भाग्य शाली होगा, अप्रसिद्ध, साधारण*

जीवन व्यतीत करने वाला होगा। कभी-कभी उसका भाग्य बिगड़ जाता है, कभी समाप्त प्रायः हो जाता है। **यदि लग्न से केन्द्र में चन्द्रमा हो तो यह योग समाप्त हो जाता है।** **—फलदीपिका**

(ग) यदि चन्द्रमा से 6, 8 या 12 में बृहस्पति हो और बृहस्पति लग्न से केन्द्र में न होकर कहीं और हो तो सकट योग बनता है।

—जातक परिजात

सकट योग के साथ राजपरिवार में जन्म लेकर भी जातक दरिद्र हो जाता है और कष्ट में रहता है तथा उसके भाग्य में परिश्रम करना होता है। वह सदा ही दुखी रहता है तथा राजा के लिए बेरुचि का पात्र बन जाता है।

(ङ) जातक का भाग्य समाप्त हो जाता है तथा वह इसे पुनः प्राप्त कर सकता है। वह गरीब, दुखों से घिरा हुआ, संबंधियों से घृणित और साधारण व्यक्ति बन जाता है।

(घ) बराह मिहिर और पराशर ने भी ऊपर (क) में वर्णित **सकट योग** बताया है।

यहाँ पर विद्वानों में मतभिन्नता है। डॉ० बी.वी. रमन ने अपनी पुस्तक "तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग" में कहा है कि बृहस्पति से चन्द्रमा के 6, 8 या 12 में होने पर संकट योग बनता है। कोई भी ग्रह किसी ग्रह से 6 या 8 में (महादशानाथ) कष्ट देता है। उसकी अन्तर्दशा में बुरे फल होते हैं।

13.10 महाभाग्य योग

(क) (*i*) पुरुष—यदि जन्म दिन (सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच) का है और लग्न चन्द्रमा, सूर्य, विषम राशियों (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ) में हो तो इससे महाभाग्य योग बनता है।

(*ii*) स्त्री—यदि जन्म रात्रि का है और लग्न, सूर्य व चन्द्रमा सम राशियों (वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) में हो तो महाभाग्य योग बनता है।

(ख) इस योग से जनता में प्रचुर ख्याति प्राप्त होती है, जातक दानशील, प्रतिष्ठित, राजा या राजा के समान होगा तथा 80 वर्षों तक

जीवित रहेगा। उसका आचरण निर्मल होगा। इस योग में उत्पन्न स्त्री अतिभाग्यवान, उत्तम गुणों वाली तथा मधुर व्यवहार वाली होगी।

—फलदीपका

पैरा 13.5 (2) (*ii*) में श्रीमती इंदिरा गांधी की कुण्डली **III** इस योग का उदाहरण है।

(ग) लग्न शरीर होता है, चन्द्रमा मानस (मस्तिष्क) होता है तथा सूर्य आत्मा है। सूर्य, पुरुष, विषम राशि पुरुष तथा सूर्य दिवा बली होता है। यदि ये तीनों ही बली हों तो जातक में उच्च पद प्राप्त करने की क्षमता होती है।

स्त्री के मामले में चन्द्रमा रात्रि बली होता है, सम राशि स्त्री है, चन्द्रमा स्त्री है। यदि ये सभी बली हों तो जातक उच्च पद प्राप्त कर सकता है। इन दोनों ही मामलों में स्थिति उत्तम होती है।

13.11 विपरीत राजयोग

यह योग तभी बनता है जबकि 6, 8 और 12 के स्वामियों के बीच आपस में राशि परिवर्तन योग हो। सर्वप्रथम 6, 8 और 12 वें भावों के बारे में समझना आवश्यक है।

(*i*) यदि वे अपनी राशि में हों।

(*ii*) यदि वे परस्पर एक-दूसरे की राशि में हों।

षष्ठेश की स्थिति

(*i*) छठा भाव रोग आदि से संबंधित होता हैं। जो राशि छठे भाव में पड़ जाती है वह शरीर के संबंधित अंग में रोग का द्योतक होती हैं।

(*ii*) छठे भाव का स्वामी यदि षष्टम में हो या लग्न अथवा 8 में हो तो अल्सर रोग या शरीर पर चोट का दाग देता है।

ग्रह छठे भाव का स्वामी होकर या किसी अन्य भाव का स्वामी होकर छठे भाव में स्थित हो तो वह शरीर के उस अंग का द्योतक होता है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। उस ग्रह का कारकत्व जो छठे भाव या षष्टेश से संबंधित होता है

सूर्य—पिता, सिर

चन्द्रमा–माता, चेहरा यह बताता है कि वह जातक चोट या अल्सर से पीड़ित होगा। —अध्याय 25/60

यदि छठे भाव का स्वामी छठे में हो तो जातक अपने संबंधियों से शत्रुता करेगा तथा अन्य लोगों से मित्रता। धन का मध्यम भोग करने वाला होगा —पराशर अध्याय 2/4

यदि षष्ठेश छठे भाव में हो तो जातक का शरीर रोगी, शत्रु वाला, कंजूस, सुखी, जन्म से मृत्युपर्यंत कष्टों से मुक्त रहेगा। किन्तु गन्दगी में रहना पसंद करेगा। —मानसागरी

जातक के पास गाड़ियाँ होंगी और रोग से मुक्त रहेगा। वह दीर्धजीवी होगा। उसमें बदले की भावना होगी।

षष्ठेश षष्ठभाव स्वराशि का होने से भाव बलवान होगा। फल होगा कि जातक के शरीर में सहन शक्ति होगी। वह शत्रु पर विजय प्राप्त करेगा और रोग का दमन करेगा। उस ग्रह से प्रतिनिधित्व शरीर के अंगों में तथा जो राशि छठा भाव बनी उससे प्रतिनिध्वि अंग में रोग होगा। हो सकता है कि वह परेशानी या रोग उसे कुछ ग्रह की दशा में आए।

***(ii)* षष्ठेश अष्टम में**–जातक रोगी, शत्रुता रखने वाला, दूसरों की सम्पत्ति की इच्छा रखने वाला, दूसरों की पत्नियों में रुचि लेने वाला तथा अपवित्र होगा। —पराशर

चिरकालिक पेट का रोगी, टी.बी, यदि शनि हो, सर्प से भय यदि मंगल हो, विष से भय यदि बुध हो, ठंडक से भय यदि चन्द्रमा हो, शेर से भय यदि सूर्य हो, मानसिक कष्ट, पागलपन यदि बृहस्पति हो, नेत्र संबंधी रोग यदि शुक्र हो। —मानसागरी

टिप्पणी

छठा भाव रोग, शत्रुता, चोरी, बदला, आक्रमण आदि का है। अष्टम भाव अचानक होने वाली घटना, हानि, गुप्त बात, नुकसान आदि का है। दोनों के स्वभाव का मिलना होगा यदि षष्ठेश अष्टम भाव में हो तब जातक लम्बी बिमारी से ग्रस्त होगा, उसे भारी हानि होगी जिसके कारण अधिक व्यय करना होगा। उसमें परिश्रम करने की क्षमता व सहन शक्ति प्रतिरोध

की भावना का भी ह्रास होगा। इसकी ओर व्याख्या की जा सकती है। परन्तु पुस्तक के पृष्ठ बढ़ाने पढेंगे। पाठकों को इशारा मात्र दे दिया है वह अधिक बुद्धिमान है स्वयं भी समझ सकते हैं।

(*iii*) षष्ठेश 12वें में—जातक व्यसन पर व्यय करेगा, विद्वानों का निरादर करेगा तथा जीवों को कष्ट देगा (नैतिकता पर प्रश्न चिन्ह तथा अन्य स्त्रियों के साथ यौन संबंध रखेगा)। —पराशर

जातक को जानवरों के कारण हानि होगी, यात्रा पर अधिक व्यय, भाग्यवादी तथा अधिक प्रयास न करने वाला होगा —मानसागरी

खा. (*i*) अष्टमेश 8 में—जातक दीर्घजीवी, चोर, स्वयं दोष युक्त तथा दूसरों पर दोषारोपण करने वाला होगा। —पराशर

जातक व्यापार करेगा, स्वस्थ शरीर, प्रसिद्ध होगा। वह आडम्बरी तथा कपटी परिवार में जन्म लेगा। —मानसागरी

जातक के पति/पत्नी का आचरण संदेहास्पद होगा तथा पैतृक सम्पत्ति का स्वामी होगा। उसकी पत्नी की भी आय होगी।

(*ii*) अष्टमेश 12 में—जातक बुरे कर्मों में लिप्त रहेगा तथा अल्प आयु होगा। यदि उन भावों में अशुभ ग्रह हो तो जातक के बुरे कर्म अधिक होंगे। —पराशर

जातक, कठोर, चोर, दुष्ट, निर्दयी, विकलांग, अर्थहीन बातें करने वाला, मृत्यु के बाद कौवा की योनि प्राप्त करने वाला तथा गिद्ध का आहार बनेगा।

(*iii*) अष्टमेश छठे में—जातक शत्रुओं पर विजयी, रोगी और बाल्यकाल में सर्प और जल से खतरा होगा। —पराशर

जातक की राजा से शत्रुता होगी या राजा का विरोध करेगा। यदि अष्टमेश बृहस्पति हो तो जातक को शारीरिक रूप से क्षति, यदि शुक्र हो तो रोग, यदि चन्द्रमा हो तो बीमारी, यदि मंगल हो तो क्रोध, यदि बुध हो तो डरपोक और यदि शनि हो तो मुख में कष्ट हो। —मानसागरी

अष्टमेश का छठे भाव में होना स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं है, किन्तु आयु लम्बी होती है। (इस संदर्भ में देखें पैरा 13.11 (1) A (*ii*)

गा. (*i*) द्वादशेश 12वें में—जातक अत्यधिक व्यय करेगा, शारीरिक सुख, से वंचित, चिड़चिड़ा तथा ईर्ष्यालु होगा। —पराशर

जातक सभी प्रकार के सुखों से पूर्ण, एक ही स्थान पर रहने वाला, कंजूस, पशुओं का शौकिन, गांव या नगर का प्रधान तथा अल्पायु होगा।

—मानसागरी

***(ii)* द्वादशेश अष्टम में**—जातक को लाभ हो सकता है, सौजन्यता की बातें करने वाला, मध्यम आयु वाला होगा। सभी गुणों में कुशल होगा (लाभान्वितः सदाप्रियवांगः मध्यमायुश्च, संपूर्णयुग संयुतः)। —पराशर

जातक के पास साधनों का अभाव होगा जिस कारण उसे सफलता नहीं मिलेगी या कोई कार्य नहीं कर सकेगा। उसमें शत्रुता की भावना होगी। यदि ग्रह शुभ हो तो वह धन एकत्र करेगा। —मानसागरी

***(iii)* द्वादशेश छठे में**—जातक अपने ही लोगों से शत्रुता करेगा, क्रोधी, पापी, दयनीय और दूसरों की पत्नियों के पास जाने वाला होगा।

—पराशर

जातक कंजूस, आंख में कष्ट, गंभीर रूप से बीमार, यदि द्वादशेश शुक्र हो तो जातक अंधा होगा। यदि शनि हो तो गंभीर रोग देता है।

—मानसागरी

13.11 (2) **महर्षि पराशर** ने षष्टेश की स्थिति का निम्न प्रकार वर्णन किया है—

(*i*) षष्ठेश 12वें भाव में।

(*ii*) षष्ठेश और द्वादशेश दोनों छठे भाव में या 12वें में।

(*iii*) षष्ठेश लग्न में हो और द्वादशेश अष्टम में हो।

षष्टेश, और द्वादशेश की उपरोक्त तीनों स्थितियों में आयु लम्बी होती है।

12वां भाव विस्तर सुख, सुन्दर मकान, विलासी विस्तर, सुगंधी का होता है और इसे भोग व आनन्द का भाव कहा जाता है। महर्षि पराशर ने आगे कहा है कि **द्वादशेश यदि 6/8 या शत्रु नवांश या नीच नवांश या नवांश में अष्टम में हो तो जातक पत्नी सुख से वंचित रहता है,** अधिक व्यय के कारण कष्ट में रहेगा तथा सामान्य सुखों से भी वंचित रहेगा।

13.11 विपरीत राजयोग की एक झलक

13.11/(3) यह पाया गया है कि 6, 8 या 12वें का स्वामी यदि एक दूसरे की राशि में हों तो सामान्यतः जातक को रोग और कष्ट देते हैं। षष्ठेश का अष्टम में होना, अष्टमेश का छठे में, अष्टमेश का 12 में और द्वादशेश का अष्टम में होना विपरीत राजयोग बनाता है। विपरीत राजयोग में जन्मकुण्डली में ग्रहों की कतिपय स्थिति के कारण वह फल मिलता है जो उस योग से प्रत्याशित नहीं होता।

यदि ग्रहों की कतिपय स्थिति के कारण राजयोग का फल प्राप्त हो किन्तु इस कारण कि योग दोषयुक्त है, राजयोग भंग हो जाता है। किन्तु ग्रहों की कतिपय स्थिति के कारण उस ग्रह की स्थिति के कारण बुरे फल प्रत्याशित हों और कुण्डली में उस ग्रह की स्थिति के कारण उस योग में बुरे फल देने की शक्ति न हो तो यह विपरीत राजयोग होता है।

कुण्डली ने XXIV पैरा 13.5(2) श्री मोरार जी देसाई के मामले में द्वादशेश शुक्र अष्टम भाव में है, तथा षष्ठेश मंगल अष्टम भाव में है। यह षष्ठेश व द्वादशेश ने दो विपरीत राजयोग बनाए हैं। पाठकगण शास्त्रीय आधार पर किए गई चर्चा को ध्यान दे तो इसका फल समझ सकेंगे।

इसको इस स्थिति में नहीं लेकर इसकी व्याख्या पूरी तौर पर करनी होगी। बुध (लग्नेश चतुर्थेश उच्च के गुरु से दृष्ट जो कि सप्तमेश व दशमेश है) का भी विचार करना है। शुक्र द्वादशेश के साथ पंचमेश भी है, यहाँ उसका शनि अष्टमेश से स्थान परिवर्तन भी हैं। पंचमेश व अष्टमेश का स्थान परिवर्तन बना। विपरीत राजयोग छठे, सातवें तथा आठवें भावेशों के द्वारा एक-दूसरे के घर में बैठने से बना है। चाहे एक साथ बैठे हों या अलग-अलग बैठे हों या स्थान परिवर्तन हो उत्तम फल देंगे ऐसा कहा गया है। परन्तु सही ढंग से उनका अलग-अलग अध्ययन करके खुले दिमाग से सोचना होगा।

13.11 (4) रन्ध्रेशो व्ययषष्टगो रिपुपुतौ रन्ध्रे व्यये वा स्थिते।
रिः पेशोऽपि तथैव रन्ध्ररिपुभे यस्यास्ति तस्मिन्वदेत्।।
अन्योन्यर्क्षगता निरीक्षणयुताश्चान्यैरयुक्तेक्षिता।
जातो सौ नृपतिः प्रशस्तविभवो राजाधिराजेश्वरः।।

—उत्तरकालामृत

(*i*) यदि अष्टमेश द्वादश या षष्ठ में स्थित हो

(*ii*) यदि षष्ठेश अष्टम या द्वादश में स्थित हो

(*iii*) यदि द्वादशेश षष्ठ या अष्टम में स्थित हो

बुरे भावों के ये स्वामी यदि एक साथ हों या परस्पर एक दूसरे से दृष्ट हो या एक दूसरे की राशि में हों और यदि ये किसी अन्य ग्रह से दृष्ट न हों अथवा किसी अन्य ग्रह से युक्त न हों तो जातक जीवन में उन्नति करता है, राजा के समान जीवन व्यतीत करता है और उसके पास प्रचुर धन होता है।

13.11 (5) इसके पीछे यह तर्क है कि जब अशुभ ग्रह निर्बल हो तो बुरे फल कम होंगे क्योंकि ग्रह अपना पूरा फल देने के लिए बलवान नहीं है।

बुरे ग्रह बुरे भाव में अपना बुरा प्रभाव खो देते हैं और उस भाव के बुरे फल का भी नाश कर देते हैं।

यदि वे अपंग हैं तो बुरे प्रभाव समाप्त हो जाते हैं और जातक समृद्ध होता है।

ज्योतिष का यह सुस्थापित सिद्धांत है कि 6, 8 और 12वें भावों के स्वामी जिस भाव में पड़ जाते हैं उस भाव का बुरा फल देने लगते हैं। भाव के फल का नाश करते हैं। ध्यान देने योग्य बातें: 6, 8 और 12वें भावों के स्वामी शत्रु भाव में हो या नीच के हों या अस्त हों तो विपरीत राजयोग का फल देते हैं।

13.11 (6) फलदीपिका के अनुसार–6, 8 या 12वें भावों के स्वामियों के बीच राशि परिवर्तन हो तो यह राजयोग न होकर **दैन्य योग** होता है।

इससे यह स्पष्ट है कि 6, 8 और 12वें भावों में अवस्थित होने से स्वामियों के बीच यदि राशि परिवर्तन हो तो राजयोग बनता है न कि उनके द्वारा स्थान परिवर्तन से। (श्लोक 32/योगाध्याय)

13.11 (7) (*i*) यदि छठे भाव में, अशुभ ग्रह हो या अशुभ ग्रह से दृष्ट हो या षष्ठेश छठे भाव में हो तो **हर्ष योग** बनता है।

(*i*) यदि अष्टमेश अष्टम भाव में हो तो **सरल योग** बनता है।

(*iii*) यदि द्वादशेश द्वादश भाव में हो तो **बिमल योग** बनता है। ये योग बहुत उत्तम फल देते हैं। —**फलदीपिका**

(iv) **(क) हर्ष योग का संबंध छठे भाव से होता है**—यदि 6, 8 और 12वें भावों के स्वामी छठे भाव में हों तो जातक सुखी और उत्तम भाग्य वाला होगा। उसका शरीर सुड़ौल होगा। वह पाप कर्मों से दूर रहेगा, शत्रुओं पर विजयी होगा। वह उच्च पदाधिकारियों की संगति में रहता है। जातक धनी, वैभवशाली, प्रसिद्ध होगा और मित्रों तथा पुत्रों से सुखी रहेगा।

(ख) उदाहरण—

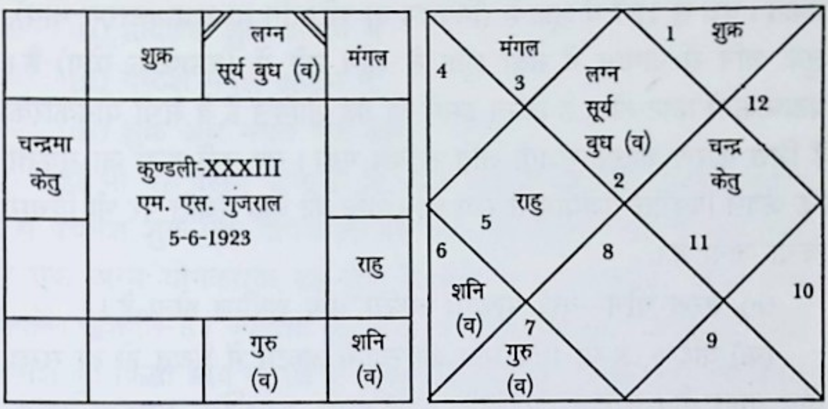

(देखें श्री के.एन. राव की पुस्तक 'पेशा में उतार-चढ़ाव') जातक की बुध/शुक्र/बुध की दशा थी (28-8-83 तक) जबकि उनको भविष्यवाणी की गई थी कि अप्रत्याशित ढंग से उनके पक्ष में निर्णय होगा। यह भविष्यवाणी तीन विपरीत राजयोगों के कारण की गई थी—षष्ठेश शुक्र द्वादश में, अष्टमेश बृहस्पति छठे में, दोनों की एक दूसरे पर दृष्टि है। बुध की महादशा थी जो इस लग्न के लिए योगकारक है तथा चतुर्थेश सूर्य के साथ राजयोग बना रहा है। शुक्र (विपरीत राजयोग) की अन्तर्रदशा तथा प्रत्यंतर में बुध है। बुध/शुक्र/शनि में कष्ट आरंभ हुआ। (23.10.83 से 4.4.83)। महादशा नाथ और प्रत्यंतर दशा नाथ दोनों ही योगकारक हैं और बली होकर लग्न तथा पंचम में स्थित हैं। किन्तु जातक को मानसिक कष्ट हुआ। यहाँ शुक्र (विपरीत राजयोग में) ने जातक के पक्ष में फल नहीं दिया यद्यपि शुक्र लग्नेश भी है। यह सरलता से कहा जा सकता है कि छठे (विवाद भाव) भाव का स्वामी होकर शुक्र ने कष्ट दिया। इस क्षति की पूर्ति हो सकती है क्योंकि

लग्नेश होने के कारण शुक्र केन्द्र तथा त्रिकोण दोनों का स्वामी है। यहाँ बुध/शुक्र दुर्द्वादश है, शुक्र तथा शनि षडाष्टक में है इसलिए इस दशा में कष्ट आया।

विपरीत राजयोग वर्तमान पद से निचले पद पर ले जाता है किन्तु हमेशा के लिए नहीं क्योंकि इसमें दो योगकारक तथा लग्नेश शामिल है। हम एक दूसरे से महादशा/अन्तर्दशा/प्रत्यंतर दशा को अनदेखी नहीं कर सकते। बुध से 12वें में शुक्र है (निर्वसन या परिवर्तन या स्थानान्तरण भाव), शुक्र शनि से अष्टम में तथा शुक्र से शनि छठे में (षडाष्टक योग) है। षडाष्टक में कष्ट होता है किन्तु इसमें जो ग्रह शामिल हैं वे सभी योगकारक हैं जिस कारण जातक स्थायी क्षति से बच गया। यह नहीं कहा जा सकता कि केवल विपरीत राजयोग से रक्षा हुई। शनि की वक्र स्थिति पर भी विचार किया जाना है।

(*v*) **सरल योग**—यहाँ मुख्यतः अष्टम भाव शामिल होता है।

(क) यदि 6, 8 या 12वें भाव का स्वामी अष्टम में स्थित हो तो सरल योग बनता है। जातक दीर्घजीवी, दृढ़निश्चयी, भयरहित, समृद्ध, विद्वान, धनी तथा बच्चों वाला होगा। वह सभी उद्यमों में सफल तथा शत्रुओं पर विजयी होगा। वह प्रसिद्ध होगा।

(ग) उदाहरण—

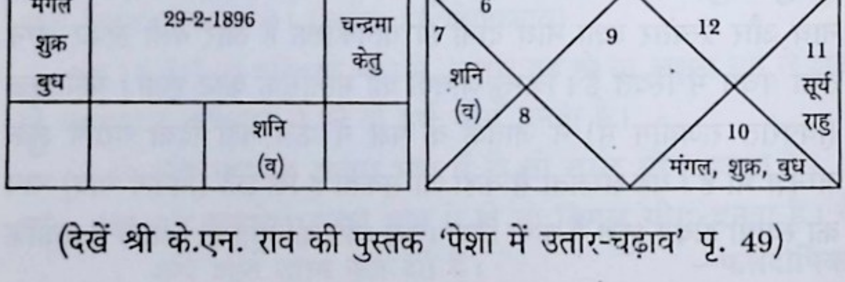

(देखें श्री के.एन. राव की पुस्तक 'पेशा में उतार-चढ़ाव' पृ. 49)

श्री के.एन. राव ने यह भविष्यवाणी की थी कि 11 जुलाई से 17 जुलाई 1979 के बीच श्री मोरार जी देसाई प्रधानमंत्री पद से हट जाएंगे। इस भविष्यवाणी का आधार तथा कुण्डली का विश्लेषण उनकी पुस्तक में दिया गया है (देखें)। 7 मई 1979 से 23 सितम्बर 1979 तक बुध/शुक्र/बृहस्पति की दशा थी। 11 जुलाई से 22 जुलाई 1979 तक चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा थी।

ये निम्न प्रकार से विपरीत राजयोग है–

(*i*) द्वादशेश शुक्र अष्टम में

(*ii*) षष्ठेश मंगल अष्टम में

(*iii*) शुक्र और मंगल एक साथ

यहाँ भी यह देखने योग्य है कि जिन ग्रहों से विपरीत राजयोग बनता है वे पंचमेश शुक्र एक योगकारक ग्रह तथा एकादशेश मंगल है और दोनों ही एक अन्य योगकारक ग्रह बुध के साथ हैं। जो लग्नेश (केन्द्र और त्रिकोण स्वामी) है। ज्योतिष का एक यह भी सिद्धांत है कि जब कभी लग्नेश की किसी भाव या ग्रह के साथ युति होती है तो वह उनसे बल प्राप्त करता है। यहाँ पर अष्टम भाव बली है (मोरारजी दीर्घजीवी हैं) क्योंकि राजयोग (बुध-शुक्र), मंगल, शुक्र और बुध की युति। इन सबके अतिरिक्त शुभ ग्रह बृहस्पति अपने उच्च स्थान से इन पर दृष्टि दे रहा है। पंचमेश शुक्र तथा अष्टमेश शनि का स्थान परिवर्तन भी एक राज योग है।

लग्नेश बुध शुक्र के साथ (सशक्त राजयोग बनाता है और शुक्र एकादशेश की युति है) की अन्तर्दशा तथा दशमेश का बृहस्पति (उच्च, वक्री दूसरे भाव से शुक्र और बुध पर दृष्टि पुनः राज़योग सप्तम और दसम् चतुर्थेश व पंचमेश के साथ) की प्रत्यंतर दशा थी। इस प्रकार केवल विपरीत राजयोग है जिससे उत्तम या शुभ या पदच्युति आदि फल बनता है। श्री के.एन. राव की पुस्तक में विस्तृत से देखें।

श्री राव का निष्कर्ष यह है कि जब कभी मुख्य घटक (की प्लानेट) अष्टम में हों तो किसी की मृत्यु के बाद अचानक उत्थान होता है। श्री मोरारजी देसाई का राजयोग किसी अन्य की मृत्यु और अपयश के बाद फलित हुआ और उनके विरुद्ध षड़यंत्र से हुआ।

(*i*) **विमल योग**—इस योग का संबंध द्वादश भाव से है। यदि 6, 8 और 12 भावों के स्वामी 12वें में हो तो जातक धन की बचत करने में चतुर होगा। कंजूसी से व्यय करेगा, दूसरों के प्रति उत्तम व्यवहार करेगा, वह सुखी होगा, सम्मानित व्यवसाय करेगा। उसका आचरण उत्तम होगा। वह स्वतंत्र तथा अपने गुणों के लिए प्रसिद्ध होगा।

(ख) उदाहरण—

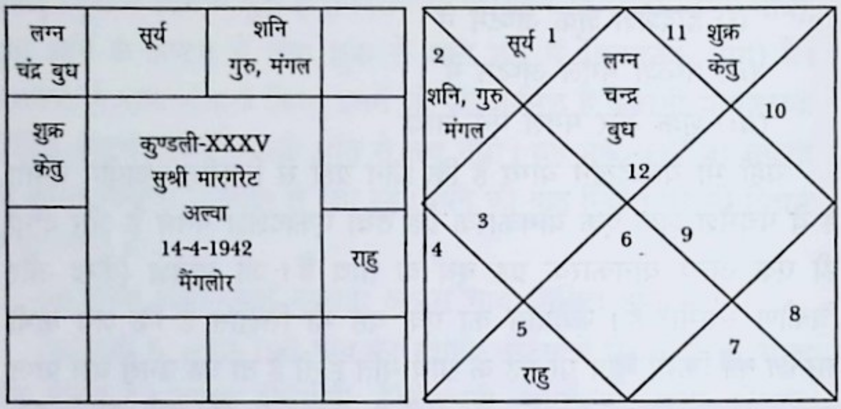

(देखें श्री के.एन. राव की पुस्तक 'पेशा में उतार-चढ़ाव' पृष्ठ 94)

उनके चुनाव के समय भविष्यवाणी की गई थी। उस समय शुक्र/राहु/बृहस्पति की दशा थी। शुक्र (तृतीयेश और अष्टमेश) 12वें में है जिससे विपरीत राजयोग बनता है क्योंकि अष्टमेश 12वें में है कोई अप्रत्याशित बात अवश्य होगी क्योंकि अष्टमेश विपरीत राजयोग में शामिल है।

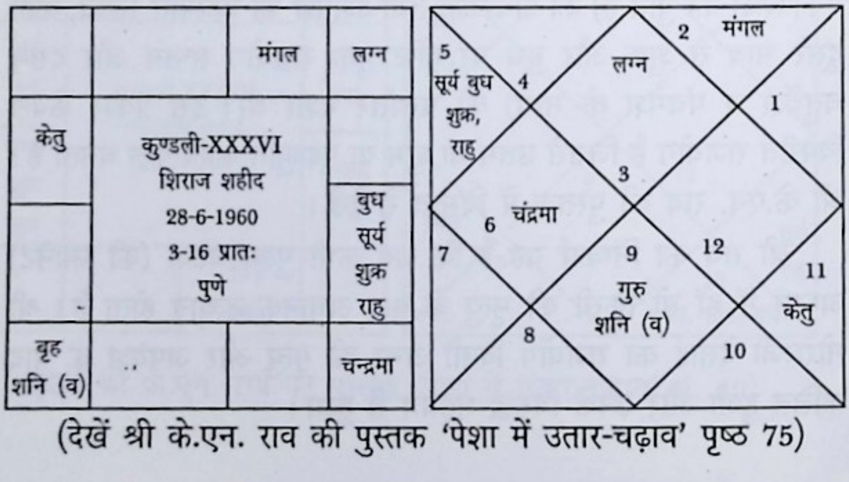

(देखें श्री के.एन. राव की पुस्तक 'पेशा में उतार-चढ़ाव' पृष्ठ 75)

(ग) यह कुण्डली गोल्फ के खिलाड़ी की है। षष्ठेश 12वें में है जिससे विपरीत राजयोग बनता है। 24.12.1984 को जब उन्होंने अपने जीवन की सर्वोत्तम विजय प्राप्त की तो राहु/शुक्र की दशा थी।

महर्षि पराशर ने जब 6, 8 और 12वें भावों के स्वामी अपने भाव में हों तो उसे विपरीत राजयोग का नाम नहीं दिया है बल्कि उन्होंने कहा है कि बुरे प्रभावों में वृद्धि होती है। जबकि **फलदीपिका और उत्तरकालामृत ने इसे विपरीत राजयोग** कहा है। ज्योतिष प्रवीण के विद्यार्थियों के लिए इसे विपरीत राजयोग मानना ही काफी होगा और यह निष्कर्ष निकालें कि विपरीत राजयोग में जातक को शुभ फल मिलता है।

डॉ० बी.वी रमन के अनुसार इन तीन योगों से हमें यह संकेत मिलता है कि दुःस्थान के स्वामी दुःस्थान में बैठकर किस प्रकार अशुभ स्वामित्व के कारण बुरे प्रभावों पर काबू पा लेते हैं। वास्तविक व्यवहार में अतिसुखद फल विपरीत फल देते हैं।

अतः इन तीनों योगों की व्याख्या करते समय ज्योतिषियों को बुरे भावों के स्वामियों के बुरे प्रभावों को भी ध्यान में रखना चाहिए। ज्योतिषी को व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर व्याख्या करनी चाहिए।

राजयोग

13.12 (1) महर्षि पराशर के अनुसार राजयोग से व्यक्ति को राजकीय सम्मान मिलता है।

येषां विज्ञानमात्रेण राजपूज्यो जनो भवेत।

जब केन्द्र और त्रिकोण के स्वामी

(क.) (क) एक ही राशि में हों

(ख) एक दूसरे की राशि में हों

(ग) आपस में दृष्टि संबंध हो (परस्पर दृष्टि)

(घ) 1/7 में हों

उपरोक्त चारों स्थितियों में राजयोग बनता है। इस योग वाला जातक राजा और प्रसिद्ध होता है।

(ख.) महर्षि पराशर ने आगे कहा है कि–

(क) यदि कोई ग्रह केन्द्र और त्रिकोण दोनों का ही स्वामी हो और केन्द्र और त्रिकोण में हो तो अत्यधिक प्रबल राजयोग का फल देता है।

(ख) यदि राहु–केतु केन्द्र या त्रिकोण में हों और केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी के साथ युति हो तो भी राजयोग बनता है।

(ग) यदि लग्नेश और पंचमेश के बीच राशि परिवर्तन हो तो जातक को **सर्वोच्च राजयोग** का फल प्राप्त होता है।

(घ) (*i*) यदि आत्मकारक और पुत्रकारक लग्न, पंचम, उच्च राशि, स्वराशि या स्वनवांश में हों और शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो जातक महाराजा होता है।

(*ii*) यदि लग्नेश और आत्मकारक लग्न, पंचम् या सप्तम् में शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हों तो राजयोग बनता है।

(ङ) (*i*) यदि लग्नेश या आत्मकारक से 2, 4 और 5 में शुभ ग्रह हों तो जातक राजा बनता है।

(*ii*) इसी प्रकार यदि लग्नेश या आत्मकारक से 3 और 6 में अशुभ ग्रह हों तो जातक राजा बनता है।

(*iii*) महर्षि पराशर ने कहा है कि यदि एक ग्रह की भी दृष्टि लग्न या होरा लग्न या घटिक लग्न पर हो तो जातक राजा बनता है।

टिप्पणीः

(1) घटिक लग्न

सूर्योदय से गिनती करने पर प्रत्येक घटी (24 मिनट) बाद लग्न बदलता है। इसकी गणना निम्न प्रकार से की जाती है–

(*i*) जन्म समय घटी और विघटी में लिखें।

(*ii*) जितनी घटी बीत गई है उस संख्या को राशि या घटी लग्न मानें। विघटी को 2 से भाग करने पर अंश और कला निकल आता है।

(*iii*) इस प्रकार भागफल को राशि, अंश, कला मानकर सूर्योदय के समय सूर्य के अंश, कला में जोड़े, सही घटीक लग्न निकल

आएगा–

उदाहरण

जन्म समय	30 घटी और 30 विघटी
सूर्योदय	5–40 प्रातः
सूर्य का भोगांश	5रा 12°0′
30 घटी ÷ 12	शेष 6
30 विघटी ÷ 2	15 अर्थात 15 अंश

इस प्रकार 6 रा. 15 अंश सूर्योदय के समय सूर्य के भोगांश में जोड़े

(*i*) $6 \times 30 = 180 + 15 = 195°$

(*ii*) $5 \times 30 = 150 + 12 = 162°$

जोडें : $195° + 162° = 357° \div 30 =$ 11रा 27°

घटीक लग्न मीन 27° होगा।

(2) होरा लग्न–यह लग्न सूर्योदय से 2½ घटी (60 मिनट या एक घंटा) बाद बदलता है। इसकी गणना निम्न प्रकार की जाती है–जन्म समय और सूर्योदय समय में अंतर को 2½ से भाग दें। भागफल राशि और अंश सूर्य के भोगांश में जोड़ें। यह होरा लग्न होगा।

उदाहरण–

जन्म समय	30 घटी 30 विघटी
सूर्य का भोगांश	5रा. 12°0′

जन्म समय घटी और पल में है जो सूर्योदय के बाद का है। अतः सूर्योदय को घटाने की आवश्यकता नहीं है।

जन्म समय ÷ 2½ अर्थात $30.5 \div 2.5 = 12.5$ या12रा 5°0′

सूर्य के भोगांश में जोड़े

5रा 12°10′ + 12^रा 5°0′ = 5रा. 17°10′

पराशर के अनुसार योग

(ग) इस प्रकार होरा लग्न कन्या 17°10′ होगा।

(*i*) यदि एक ही ग्रह सभी षड्वर्गों (राशि, होरा, द्रेष्कोण, त्रिशांश,

नवांश और द्वादशांश) में लग्न में हो या लग्न पर दृष्टि दे रहा हो तो निस्संदेह राजयोग बनता हैं।

(*ii*) यदि लग्न, दूसरे और चौथे में शुभ ग्रह हों और तीसरे में अशुभ ग्रह हों तो जातक राजा या राजा के समान होगा

(*iii*) यदि 3, 6 और 8 में नीच के ग्रह हों, लग्नेश उच्च का हो या स्वराशि में हो और लग्न पर दृष्टि दे रहा हो तो राजयोग बनता है।

(*iv*) यदि दसमेश स्वराशि या उच्च का हो और लग्न पर दृष्टि डाल रहा हो तो राजयोग बनता है।

(*v*) यदि षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादशेश में से एक भी ग्रह नीच का हो और लग्न पर दृष्टि डाल रहा हो तो राजयोग बनता है।

(*vi*) यदि चतुर्थेश दशम में हो और दशमेश चतुर्थ में हो और चतुर्थेश और दशमेश पंचमेश तथा नवमेश से दृष्ट हो तो जातक को राज्य प्राप्त होता है।

(*vii*) यदि पंचमेश लग्न में हो, चतुर्थेश या दसमेश नवम् या लग्न के स्वामी के साथ हो तो जातक राजा बनता है।

(*viii*) चन्द्रमा और शुक्र 3 और 11 में हो या एक दूसरे पर दृष्टि डाल रहे हों तो राजयोग बनता है।

(*ix*) (क) यदि एक, दो या तीन ग्रह उच्च के हों तो जातक क्रमशः धनी, राजा के समान या राजा होगा यदि जातक का जन्म राजपरिवार में हुआ हो।

(ख) यदि पांच ग्रह उच्च के हों तो निम्न परिवार में जन्म लेने वाला जातक भी राजा होगा।

13.12 (2) राज योग उत्तरकालामृत के अनुसार–

(*i*) नवमेश नवम् में और दशमेश दशम् में।

(*ii*) नवमेश दशम् में और दशमेश नवम् में (परिवर्तन)।

(*iii*) नवमेश दशम् में और दशमेश नवमेश की राशि में (परिवर्तन)।

(*iv*) यदि नवमेश और दसमेश के बीच परस्पर पूर्ण दृष्टि परिवर्तन हो। उपरोक्त स्थिति में राजयोग बनता है।

13.12 (3) सवार्थ चिन्तामणि में भी कहा गया है कि

(*i*) यदि अनेक ग्रह अपनी उच्च राशि में हों तो जातक राजाओं का राजा होता है।

(*ii*) यदि बृहस्पति लग्न में बली हो और पांच ग्रह उच्च के हों तो जातक राजा बनता है।

(*iii*) यदि कुंभ लग्न की कुण्डली में शुक्र उच्च का हो और चार अन्य ग्रह उच्च के हों (नवांश में कोई ग्रह नीच का न हो) तो जातक राजा बनता है।

अन्य ग्रहों के लिए भी इसी प्रकार की स्थिति पर विचार किया जाना है।

(*iv*) यदि लग्न से भिन्न केन्द्र में चन्द्रमा हो या चन्द्रमा त्रिकोण भाव में हो, बृहस्पति और शुक्र बली हों तो वह व्यक्ति राजा या राजा के समान होता है।

13.12 (4) सारावली के अनुसार राजयोग

(*i*) पैरा 13.12 (*i*) ग (*ix*) में जिन योगों का वर्णन किया गया है उनका वर्णन सारावली में भी दिया है। यदि सूर्य, मंगल, शनि, बृहस्पति सभी चार अथवा इनमें से तीन उच्च के हो और उनमें से एक लग्न में हो तो निम्न परिवार में उत्पन्न व्यक्ति भी राजा बनता है (इन सभी अलग अलग स्थितियों में 16 राजयोग बनते है)।

(*ii*) यदि लग्न या चन्द्रमा वर्गोत्तम हो (जब ग्रह नवांश में उसी राशि में हो और लग्न में स्थित ग्रह भी) और उन पर पांच या छः (चन्द्रमा को छोड़कर) ग्रहों की दृटि हो तो जातक राजा बनता है।

(*iii*) यदि लग्न में उच्च का सूर्य (मेष लग्न) और साथ में चन्द्रमा हो तो जातक शासक बनता है।

(*iv*) यदि शुक्र कुंभ में, मंगल मेष में और बृहस्पति कर्क में हो तो

जातक राजा बनता है। उसकी दूरस्थ स्थानों पर प्रसिद्धि होगी।

(*v*) बृहस्पति, कर्क लग्न में, सूर्य दशम (मेष) में, बुध और शुक्र 11वें (वृषभ) में हों तो जातक सम्राट बनता है।

(*vi*) यदि चन्द्रमा और बृहस्पति धनु में, मंगल मकर में और बुध कन्या लग्न में हों तो वह व्यक्ति राजा बनता है।

(*vii*) तुला लग्न की कुण्डली में यदि शनि और मंगल मकर में हो (अथवा चतुर्थ में हो), चन्द्रमा धनु के पहले भाग में हो तो जातक शासक बनता है और अपने शत्रुओं द्वारा पूजित होता है।

(*viii*) यदि कन्या लग्न की कुण्डली में उच्च का बुध, बृहस्पति और चन्द्रमा मीन में, मंगल और शनि मकर में और शुक्र मिथुन में हो तो जातक अपने शत्रुओं का नाश करेगा और राजा बनेगा।

(*ix*) यदि मेष लग्न की कुण्डली में सूर्य तथा बृहस्पति सिंह में, शनि कुंभ में, चन्द्रमा वृषभ में और मंगल वृश्चिक में हो तो जातक राजा बनता है।

(*x*) यदि मेष लग्न की कुण्डली में सूर्य, बृहस्पति धनु में और चन्द्रमा तथा शनि तुला में हो तो जातक राजा बनता है।

राजयोगों पर विचार

13.12 (5) विभिन्न पुस्तकों में ऋषियों द्वारा सैकड़ों योगों का वर्णन किया गया है। इन योगों को पढ़ने और इनका प्रेक्षण करने पर यह स्पष्ट होता है कि ग्रहों, लग्न और प्रकाश युक्त ग्रहों की बली स्थिति और केन्द्र तथा त्रिकोण के साथ उनके संबंध राजयोग के फल देते हैं।

प्राचीनकाल में ये योग राजाओं को भविष्यफल बताने के लिए लाभप्रद थे। आज राजयोग के अर्थ की व्याख्या इस रूप में नहीं की जा सकती कि इन योगों के कारण जातक राजा बनेगा। गणतंत्र के आधुनिक युग में इन योगों का अर्थ यह होगा कि जातक सरकार में उच्चपदासीन होगा। संसद सदस्य, मंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री आदि बन सकता है।

यदि राजयोग से संबंधित ग्रहों का संबंध सूर्य और चन्द्रमा से हो तो इसका फल राजनैतिक शक्ति होता है। यदि इस योग का संबंध मंगल से हो तो जातक तानाशाह या सेना में उच्च अधिकारी या कमान्डर-इन-चीफ होता है। अतः ग्रहों की स्थिति के अध्ययन से तथा जन्मकुण्डली की पूरी जांच से किसी योग के पूरे फल का पता लग सकता है।

13.12 (6) केन्द्र तथा त्रिकोण स्वामियों से निम्नप्रकार के राजयोग बन सकते हैं–

लग्नेश से

(क) (*i*) लग्नेश और चतुर्थेश।

(*ii*) लग्नेश और सप्तमेश।

(*iii*) लग्नेश और दसमेश (बली केन्द्र)।

(*iv*) लग्नेश और पंचमेश।

(*v*) लग्नेश और नवमेश (बली त्रिकोण)।

(*vi*) उपरोक्त राजयोग निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं–

(*i*) लग्नेश और केन्द्र के स्वामी किसी केन्द्र या त्रिकोण में एक साथ हों।

(*ii*) लग्नेश और त्रिकोण स्वामी किसी त्रिकोण या केन्द्र में एक साथ हों।

(*iii*) लग्नेश या त्रिकोण स्वामी के साथ परिवर्तन योग हों।

(*iv*) लग्नेश और किसी केन्द्र स्वामी या त्रिकोण स्वामी के साथ परस्पर दृष्टि परिवर्तन हो।

(*v*) लग्नेश और केन्द्र या त्रिकोण स्वामी या दोनों ही लग्न, केन्द्र या त्रिकोण में हो।

चतुर्थेश से

(ख) (*i*) चतुर्थेश और पंचमेश एक साथ हों।

(*ii*) चतुर्थेश और नवमेश एक साथ हों।

(*iii*) 4, 5 और नवम् स्वामियों के साथ राशि परिवर्तन हो।

(*iv*) चतुर्थेश 5 या 9 में।

उपरोक्त बली राजयोग होते हैं।

(*v*) चतुर्थेश और सप्तमेश के बीच राशि परिवर्तन

(*vi*) चतुर्थेश और दशमेश के बीच राशि परिवर्तन भी राजयोग का फल देता है।

सप्तमेश से

(ग) (*i*) सप्तमेश और पंचमेश एक साथ हों।

(*ii*) सप्तमेश और नवमेश एक साथ हों।

(*iii*) सप्तमेश पंचम् या नवम् में।

(*iv*) सप्तमेश और दशमेश के बीच राशि परिवर्तन।

दशमेश से

(घ) (*i*) दशमेश पंचम् भाव में।

(*ii*) दशमेश नवम् भाव में।

(*iii*) दशमेश पंचम् और नवम् स्वामी के साथ उत्तम राजयोग देता है।

नोट—ऊपर क (*iv*) में लग्नेश से संबंधित योगों के सिद्धांत उसी प्रकार से लागू किए जाएंगे जैसे 4, 7 और 10 का किया जाता है।

(ङ) बली त्रिकोण स्वामियों (लक्ष्मी स्थान) और केन्द्र स्वामियों (विष्णु स्थान) से लक्ष्मी नारायण का अनुग्रह प्राप्त होता है। जातक सभी प्रकार के सुखों का भोग करेगा, जीवन में नाम, प्रसिद्धि, उच्च पद आदि प्राप्त करेगा। यदि इस योग में 2 और 11 के स्वामी शामिल हों तो धन आदि प्राप्त होता है।

13.12 (7) राजयोग भंग—राजयोग रद्द करने वाले योग भी होते हैं। *विद्यार्थियों के लाभ के लिए इनमें से कुछ योग नीचे दिए जाते हैं—*

(*i*) नीच का बृहस्पति, वे ग्रह यदि नीच के हों जबकि उनमें से एक ग्रह दूसरे में हो और दसम् में अशुभ ग्रह हो तो राजयोग का नाश हो जाता है।

(*ii*) ऊपर (*i*) की स्थिति में यदि कोई ग्रह उच्च का न हो।

(*iii*) क्षीण चन्द्रमा किसी राशि के अंतिम अंश पर हो।

(*iv*) यदि लग्न, चन्द्रमा या दोनों ही किसी ग्रह से दृष्ट न हों।

(*v*) यदि केन्द्र भाव में कोई ग्रह न हो।

(*vi*) *नीच का सूर्य सभी प्रकार के राजयोग का नाश करता है।*

(*vii*) यदि लग्न में नीच का ग्रह हो और दसम् में अशुभ ग्रह हो तो हम देख सकते हैं कि बृहस्पति (सतत तथा स्वस्थ प्रगति, शांति और उपशमन के लिए महत्त्वपूर्ण) और शुक्र (राजसी, सांसारिक सुख का कारक) और दसम् भाव का बली होना बलवान राजयोग के लिए आवश्यक है और इससे शुभ तथा पूर्ण फल प्राप्त होता है।

13.12 (8) (क) उदाहरण–

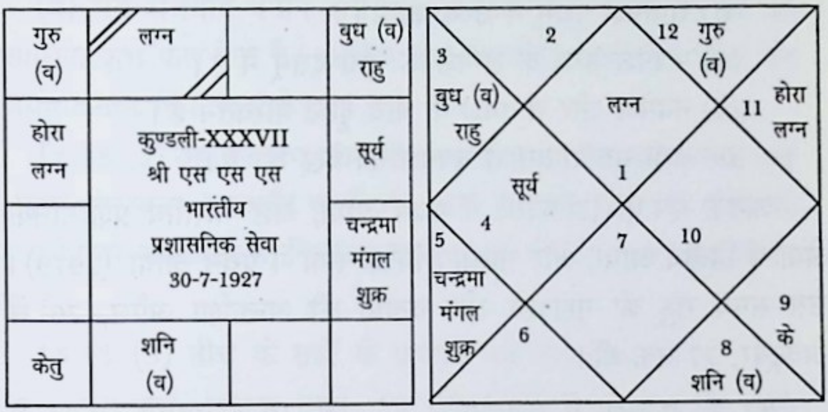

(देखें श्री के.एन. राव की पुस्तक "पेशा में उतार-चढ़ाव" पृष्ठ 99)

(*i*) लग्नेश मंगल, चतुर्थेश चन्द्रमा, द्वितीयेश और सप्तमेश शुक्र के साथ त्रिकोण में है।

(*ii*) चतुर्थेश चन्द्रमा और पंचमेश सूर्य के बीच राशि परिवर्तन है। देखें 13. 12 (1) (*i*)

(*iii*) चन्द्रमा और शुक्र एक साथ हैं। देखें 13.12 व

(*iv*) चन्द्रमा त्रिकोण में है, बृहस्पति और शुक्र बली है। देखें 13.12 (3)

राजयोग के कारण जातक को जीवन में उच्च पद प्राप्त हुआ। इस योग में पंचम भाव शामिल है जो प्रथम पुत्र के उज्ज्वल भविष्य का द्योतक है।

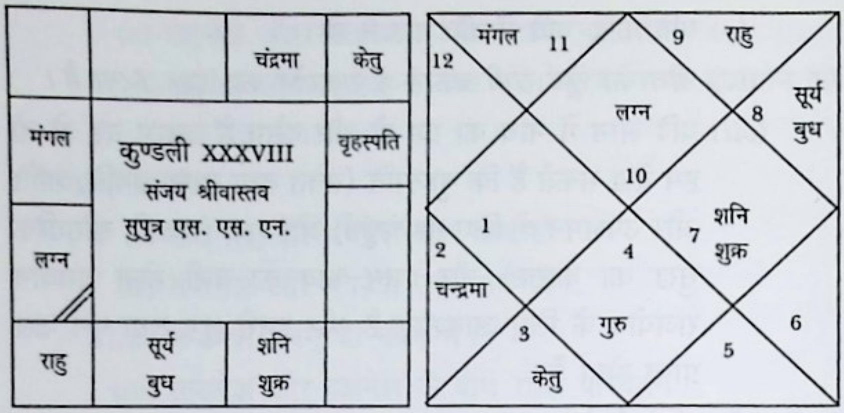

(*i*) सप्तमेश पंचम् में उच्च का है।

(*ii*) पंचमेश उच्च के लग्नेश के साथ दसम् में है।

(*iii*) नवमेश और सप्तमेश के बीच दृष्टि परिवर्तन है।

(*iv*) बली गुरु सप्तम से नवमेश को देख रहा है।

जातक एम.ए. (इतिहास) में प्रथम आया, और भारतीय प्रशासनिक सेवा में द्वितीय आया, और भारतीय विदेश सेवा में प्रथम आया (1979)। उस समय राहु की महादशा और चन्द्रमा की अन्तर्दशा अप्रैल, 76 से अक्टूबर, 77 तक थी।

पुत्र की कुण्डली में राजयोग में 5, 7, 9, 10 के स्वामी लग्नेश से संबंधित हैं। लग्नेश उच्च का दशम में पंचमेश और दसमेश शुक्र के साथ है। जातक ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और उच्च नौकरी प्राप्त की।

(ख) पैरा 13.11 (7) (*vi*) में सुश्री मारगेट अल्वा की कुण्डली (कुण्डली XXXV) देखें जो विमल योग की कुण्डली है। उसमें निम्नलिखित राजयोग हैं–

(*i*) लग्नेश बृहस्पति नवमेश मंगल के साथ है।

(*ii*) पंचमेश चन्द्रमा चतुर्थेश और सप्तमेश बुध के साथ लग्न में है।

विद्यार्थी इस पुस्तक में दी गई कुण्डलियों को देखें और यह पता लगाएं कि उनमें कितने योग और राजयोग (जिनका इन पाठों में वर्णन किया गया है) विद्यमान हैं।

यहाँ पर विस्तृत विवरण नहीं दिया जा सकता क्योंकि विभिन्न योग तथा उनकी उपयोगिता के बारे में पहले ही बताया जा चुका है।

13.13 नीच भंग राजयोग–

13.13 (1) (क) यहाँ पर नीच का अर्थ उन ग्रहों से है जो नीच राशि में स्थित है। यह माना जाता है कि नीच राशि में स्थित ग्रह विपरीत फल देते हैं।

(ख) भंग का अर्थ खण्डित होना है। यदि कोई ग्रह नीच का है तो कुछ अन्य ग्रहों की स्थिति या नीच के ग्रह पर उनकी दृष्टि के कारण नीच के प्रभाव कम हो जाते हैं।

(ग) जब राजयोग बनाने वाले ग्रह का नीच भंग होता है तो वह ग्रह अत्यधिक शुभ फल देता है। इसलिए नीच के खण्डित होने को 'नीच भंग राजयोग' नाम दिया गया है।

13.13 (2) यह राजयोग प्रथम नीच का फल देता है। अतः अच्छा फल से पहले तिरस्कार, पदच्युति या किसी प्रकार का कष्ट होता है। नीच का ग्रह सर्वप्रथम कष्ट देता है, फिर उस कष्ट को दूर करता है तथा शुभ प्रभाव देता है।

13.13 (3) नीच के ग्रहों के प्रभावों को समझें–

(*i*) **सूर्य**–जातक रूखा, बड़ा चेहरा वाला, स्वस्थ शरीर वाला होगा। वह अपनी पत्नी से अधिक प्यार करेगा।

(*ii*) **चन्द्रमा**–जातक नर्तक, संगीतज्ञ, मूर्खों की संगति में रहने वाला, अनाप शनाप बोलने वाला, गन्दे दिमाग, सन्देहास्पद चरित्र आदि वाला होगा।

(*iii*) **मंगल**–धनी, स्थिर प्रगति, जीवन में सुखी, चालाक, विज्ञान में कुशल, रात्रि में घूमने वाला, महान चोर और दुष्ट होगा।

(*iv*) **बुध**–जातक की पत्नी आज्ञाकारी, सुन्दर, बुद्धिमान, उच्च नैतिकता वाली होगी। उसके सन्तान नहीं होंगी।

(*v*) **बृहस्पति**–उसकी पत्नी सुन्दर होगी। उसके पास सोना, फल और फूल होंगे तथा उनका भोग करेगा, उसे सभी स्थानों पर

आदर और सम्मान मिलेगा। वह अनेक लोगों का पालन पोषण करेगा तथा विदेश में रहेगा।

(*vi*) **शुक्र**—जातक हमेशा सुखी रहेगा, सभा में अच्छा बोलने वाला, विद्वान, राजनीति में कुशल, कीमती पत्थरों से सम्मान पाने वाला होगा।

(*vii*) **शनि**—शत्रुओं का नाश करने वाला, स्वस्थ शरीर, आकर्षक चेहरे वाला, सम्राट, स्वतंत्र विचारों वाला, पत्नी से सुखी, भाईयों वाला और अपनी जाति के लोगों से सम्मान पाने वाला होगा। **—मानसागरी**

13.13 (4) यदि ग्रह का नीच भंग हो जाता है तो यह योग बनता है। **नीच भंग के सिद्धांत निम्नवत् हैं—**

(*i*) जिस राशि में ग्रह नीच का होता है वह राशि चन्द्रमा या लग्न से केन्द्र में होनी चाहिए।

(*ii*) जिस राशि में ग्रह नीच का है उस राशि में उच्च का होने वाला ग्रह चन्द्रमा या लग्न से केन्द्र में हो।

(क) व्याख्या—

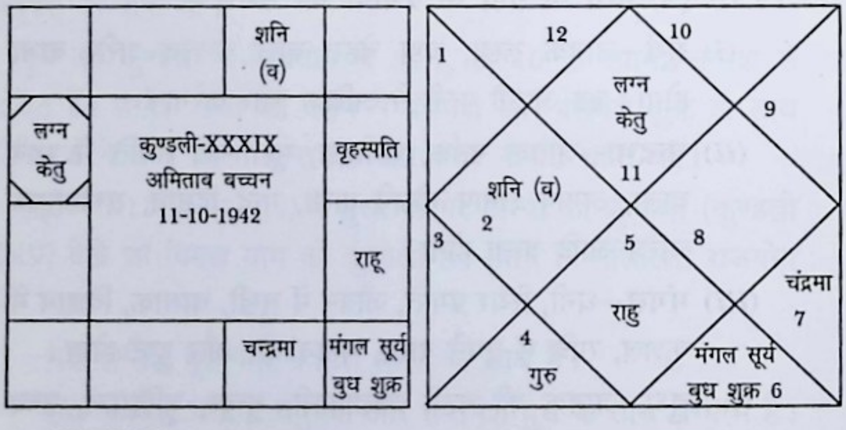

उदाहरण—

(क) शुक्र कन्या में नीच का है, बुध, चन्द्रमा या लग्न से केन्द्र में है। *यहाँ बुध शुक्र के साथ ही है।*

(ख) शनि और सूर्य का उदाहरण लेते हैं। सूर्य तुला में नीच का होता है, यदि शनि जो तुला में उच्च का होता है, चन्द्रमा या लग्न से केन्द्र में हो। नीच भंग हो जाता है तथा इससे नीच भंग राजयोग बनता है। जातक राजा बनेगा।

(*iii*) यदि किसी ग्रह की नीच राशि का स्वामी और उस ग्रह की उच्च की राशि का स्वामी परस्पर एक दूसरे से केन्द्र में हों।

ऊपर (*iii*) के उदाहरण में यदि तुला का स्वामी शुक्र और मेष का स्वामी मंगल दोनों परस्पर एक दूसरे से केन्द्र में हों तो जातक राजा बनेगा।

(*iv*) यदि नीच के ग्रह पर उस राशि स्वामी की दृष्टि हो। उदाहरणस्वरूप यदि मेष में नीच के शनि पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक प्रसिद्ध शासक बनेगा।

(*v*) यदि नीच राशि का स्वामी और नीच का ग्रह जिस राशि में उच्च का होता है उस राशि का स्वामी दोनों ही लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हों। उदाहरणस्वरूप शुक्र तुला का स्वामी और गुरु (शुक्र की उच्च राशि का स्वामी लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हो। यहाँ पर नियम (*iv*) नीच राशि का स्वामी (बुध) शुक्र के साथ है (दृष्टि नहीं बल्कि युति है)।

(ख) व्याख्या–

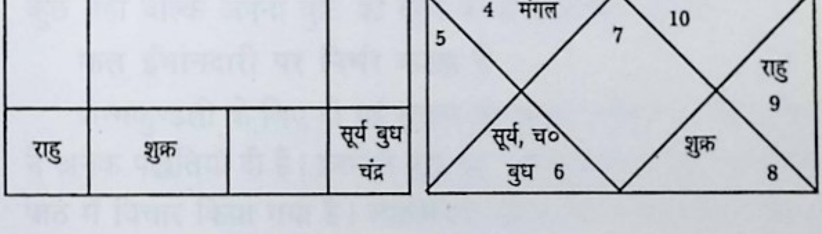

(देखें श्री के.एन. राव की पुस्तक ''पेशा में उतार-चढ़ाव'' पृष्ठ 62) यहाँ पर मंगल नीच का है। नियम (*iv*) नीच का ग्रह लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में होना चाहिए। *यहाँ पर मंगल लग्न से केन्द्र में है। नियम (v) नीच का ग्रह जिस राशि में उच्च का होता है वहाँ का स्वामी चन्द्रमा या लग्न से केन्द्र में हो। यहाँ पर शनि लग्न से केन्द्र में है।*

(ग) पैरा **13.11** (7) VI कुण्डली XXXV में सुश्री मारग्रेट अल्वा की कुण्डली देखें। उनकी कुण्डली में बुध नीच का है किन्तु भंग निम्न प्रकार हो रहा है—नियम (*vi*) नीच का ग्रह लग्न या चन्द्रमा से केन्द्र में हो। यहाँ पर नीच का बुध लग्न और चन्द्रमा दोनों से केन्द्र में है।

श्री राव ने अपनी पुस्तक में यह बताया है कि लग्न में राजयोग होने के कारण ही उनका राज्य सभा का सदस्य होना संभव हुआ। अर्थात् चन्द्रमा + बुध और अन्य राजयोग मंगल + बृहस्पति तथा अष्टमेश शुक्र द्वादश में। उनका विवाह बुध/शनि दशा में हुआ।

❑❑❑

पाठ–14
जातक निर्णय–एक सामान्य ज्ञान

14.1 अर्थ

पूर्व के तेरह पाठों को पढ़ने के बाद हमने जो ज्ञान प्राप्त किया उसकी प्रयुक्ति में इस पाठ से सहायता मिलेगी। निर्णय से हमारा तात्पर्य कुण्डली में बल के बारे में एक मत निर्धारित करना है या यों कहें कि जातक की जन्मकुण्डली में प्रदर्शित शुभ और अशुभ संकेतों की ओर ध्यान दिलाया जा सकता है। डॉ० रमन के शब्दों में–जातक निर्णय में ज्योतिषी को अनेकों संकटों से गुजरना पड़ता है। प्रत्येक भाव के कारक अलग अलग होते हैं और किसी विशेष भाव में पाए जाने वाले योग भावों के विभिन्न कारकों को भिन्न-भिन्न तरीके से प्रभावित कर सकते हैं।

14.2 ज्योतिष एक उत्कृष्ट विज्ञान

खगोल शास्त्र और गणित ज्योतिष वह विज्ञान है जिससे जन्मकुण्डली तैयार करने, जन्म समय दशा शेष निकालने, विभिन्न वर्गों को तैयार करने, अष्टक वर्ग आदि बनाने में सहायता मिलती है। फलित, ज्योतिष सभी विज्ञानों में उत्कृष्ट है जिससे ग्रहों के इन योगों के प्रभाव का पता लगाने में सहयोग मिलता है। जातक को बिना देखे या उसके बारे में कुछ जाने बिना या उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त किए बिना उसके बारे में भूत, वर्तमान तथा भविष्य की बातें बताई जा सकती है। यदि भविष्यवाणी में त्रुटि होती है तो इसका दोष ज्योतिषी को दिया जा सकता है जो जातक को इस बात के लिए दोषी ठहरा सकता है कि उसने गलत कुण्डली दी। यह कुछ नहीं बल्कि अपनी त्रुटि को दूसरे के ऊपर सरका देना है।

फल ईमानदारी पर निर्भर करता है

जन्मकुण्डली के लिए दी गई सूचना की सत्यता जाँचने के लिए ऋषियों ने अनेक पद्धतियाँ दी हैं। इनमें से कुछ पर "जन्म समय में संशोधन' नामक पाठ में विचार किया गया है। ज्योतिषियों को महर्षि पराशर द्वारा दिए गए

अनुदेशों (देखें गणित ज्योतिष भाग I पृ० 1–3) का अनुपालन करना चाहिए। यदि वह ऐसा करता है तो गलती करने की संभावना कम हो जाएगी या यदि वह गलती करता है तो वह अपनी गलती को निष्ठापूर्वक स्वीकार कर लेगा। प्रयोजन में निष्ठा अनिवार्य है।

14.3 भविष्यफल कथन की सफलता ईश्वरीय अनुकम्पा पर निर्भर करती है

जन्मकुण्डली, वर्गों को तैयार करना, दशा की गणना आदि और जन्मकुण्डली का समुचित विश्लेषण ये सभी ज्योतिषी के हाथ में है। कुछ बातें हैं जो मानव के हाथ में नहीं है जिसे कृपा (ईश्वर की कृपा) कहते हैं जिससे सही भविष्यवाणी करने में सहायता मिलती है। ज्योतिषी मात्र ईश्वर का दूत होता है। उसे **दैवज्ञ** कहा जाता है क्योंकि वह जातक या राष्ट्र के भूत, वर्तमान और भविष्य बताने की क्षमता रखता है। जातक को भविष्यवाणी के लिए ज्योतिषी के पास जाने से पूर्व अपने इष्ट या ईश्वर या देवता की आराधना करनी चाहिए और अनुरोध करना चाहिए कि वह जिस ज्योतिषी के पास जा रहा है वह उसके भविष्य के बारे में बता सके या वह इस दिशा में मार्गदर्शन दे सके कि वह अपने भविष्य को किस प्रकार ढाल सके तथा उसके सामने आई समस्या का निराकरण किस प्रकार हो।

14.4 *जन्मकुण्डली में चार तत्त्व होते हैं अर्थात् अग्नि, पृथ्वी, वायु और जल और मानव शरीर में भी पाँच तत्त्व होते हैं। आकाश तत्त्व जन्मकुण्डली में नहीं होता है।* जन्मकुण्डली का विश्लेषण करते समय चार तत्त्वों पर आसानी से विचार किया जा सकता है किन्तु पांचवे तत्त्व को छोड़ना होगा। विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों और इन तत्त्वों के साथ उनके संबंध पर विस्तार से विचार करते हैं–

(क) ज्ञानेन्द्रियाँ

1. अग्नि-नेत्र (चक्षुरिन्द्रिय)

इसमें *सूर्य देवता* की प्रधानता होती है। काम में ईश्वर के 'रूप का दर्शन' होता है या ब्रह्माण्ड या हमारे इर्द गिर्द जन समूह का दर्शन होता है, *ज्ञान बढ़ता* है।

2. पृथ्वी–नाक (घ्राणेन्द्रिय)–इसमें देवता अश्विनी कुमार की प्रधानता होती है। इसका काम गन्ध ज्ञान या सांस लेना है।

3. वायु–त्वचा (त्वगिन्द्रिय)–इसमें वायु देवता की प्रधानता होती है। इसका काम महसूस करना या स्पर्श करना है।

4. जल–जीभ (जिव्हा)–इसमें जल देवता वरूण की प्रधानता होती है। इसका काम स्वाद (रस ज्ञान) लेना है।

5. आकाश–कान (श्रोतेन्द्रिय)–इसमें दिशा देवता (दिक्) की प्रधानता होती है। इसका काम आवाज या शब्द को सुनना है।

(ख) कर्मेन्द्रियाँ

6. हाथ (हस्तेन्द्रिय)–इसमें इन्द्र की प्रधानता होती है। इसका काम लेना व देना, काम करना है (ग्रहण करना, त्याग करना तथा बल पराक्रम)।

7. चरण–इसमें **विष्णु देवता** की प्रधानता होती है। इसका काम धार्मिक सफलता प्राप्त करना, मानवता की सेवा करना, योग क्रिया से पराशक्तियों को प्राप्त करना है।

8. वाणी–इसमें **सरस्वती** की प्रधानता होती है। इसका काम बोलना है।

9. गुह्येन्द्रिय–इसमें **परमानन्द** का निवास स्थान के स्वामी **प्रजापति** की प्रधानता होती है। इसका काम सन्तति बढ़ाना है।

10. गुदा–इसमें मित्र की प्रधानता होती है। इसका काम मल-मूत्र का त्याग करना है।

(ग) इन्द्रियों से संबंधित ग्रह

पांच ज्ञानेन्द्रियों के स्वामी क्रमशः नीचे दिए जाते हैं–

(*i*) सूर्य, चन्द्रमा (*ii*) मंगल और शनि (*iii*) बुध (*iv*) चन्द्रमा (*v*) बृहस्पति।

(घ) पांच कर्मेन्द्रियों के स्वामी क्रमशः निम्नवत् हैं–

(*vi*) मंगल (*vii*) शनि (*viii*) बुध (*ix*) शुक्र, मंगल (*x*) सूर्य।

14.5 ज्योतिषी का कर्तव्य

सर्वप्रथम ज्योतिषी को चाहिए कि वह अपनी ज्ञानेन्द्रियों पर नियंत्रण रखें जिसे वह साधना से प्राप्त कर सकता है। उसका अपना ज्योतिष में विश्वास होना चाहिए और उसकी अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

लाभ हानि जीवन मरण यश अपयश प्रभु हाथ

लाभ–हानि, जीवन–मृत्यु, यश–अपयश सब सर्वशक्तिमान ईश्वर के हाथ में है। उसे अपने यश की चिंता नहीं करनी चाहिए और स्वयं की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। यदि वह ऐसा करता है तो निश्चयपूर्वक यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष पर उसका विश्वास नहीं है।

तीसरी बात यह है कि *उसे किसी अन्य ज्योतिषी के बारे में निन्दा नहीं करनी चाहिए। उसे दैवज्ञ कहा गया है जिसका अर्थ उस व्यक्ति से है जो भविष्य या प्रारब्ध या दैव्य को जानता है।* इच्छा, गुस्सा और लालच विनाशकारी होता है और ये नरक के मार्ग हैं। इनका तिरस्कार कर देना चाहिए।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा, लोभस्तमादेतत् त्रयं त्यजेत्।। (गीता 16–21)

14.6 जातक निर्णय

महान शिक्षक श्री एम.एस. सीतारमैया जिन्हें जन्मकुण्डली के निर्णय करते समय मैंने सुना हैं वह एक सूरदास होते हुए भी इस युग के इकलौते "जन्मपत्री चित्रण (Delination) में" पूर्ण दक्ष थे तथा मेरे गुरु श्री के. एन. राव जिन को सुनकर मैंने जन्मकुण्डली के विश्लेषण की पद्धति सीखी है, ज्योतिष का यह भाग (फलित कथन) अत्यधिक कठिन होता है। जन्मकुण्डली पर उचित निर्णय तथा ग्रहों के योगों का विश्लेषण के बाद ही भविष्यवाणी की जा सकती है। ज्योतिष के एक विद्यार्थी के रूप में जन्मकुण्डली के विश्लेषण और उस पर निर्णय करने की उचित पद्धति स्पष्ट करने का प्रयास करता हूं। उत्तम व्याख्या का श्रेय भी मेरे शिक्षकों को जाता है। पाठकों से प्रार्थना है कि मेरी त्रुटियों को मुझे अवश्य लिखें।

14.6 (1) जन्मकुण्डली में ध्यान में रखने योग्य महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर एक नज़र–

(*i*) केन्द्र स्थान (1, 4, 7, 10)

(क) क्या केन्द्र में ग्रह हैं अथवा नहीं

(ख) क्या सौम्य ग्रह स्थित हैं

(ग) क्या क्रूर ग्रह स्थित हैं

(घ) क्या सौम्य और क्रूर दोनों ही स्थित हैं।

जिस जन्मकुण्डली में केन्द्र में ग्रह हों वह कुण्डली बली होती है। यदि ये ग्रह सौम्य हैं तो यह उत्तम होता है। केन्द्र में सौम्य ग्रह के होने पर कुण्डली बली होती है और जातक को सभी प्रकार के अरिष्ट से रक्षा होती है। यदि केन्द्र में क्रूर ग्रह हों तो वे भी कुण्डली को बल प्रदान करते हैं। परन्तु जिस भाव में है उसके सुख को भंग करते हैं। यदि केन्द्र में सौम्य और क्रूर दोनों ही प्रकार के ग्रह हों तो मिश्रित परिणाम होता है।

(*ii*) अब त्रिकोण स्थान की स्थिति की जांच करें। यदि त्रिकोण में भी ग्रह हैं तो जन्मकुण्डली उत्तम फल देने के लिए सक्षम है। ऐसी जन्म कुण्डली में बल होता है।

(*iii*) जन्मकुण्डली में विद्यमान योगों तथा राजयोगों की जांच करें।

(*iv*) ग्रहों की अवस्था की जांच करे।

(*v*) जन्म समय किस ग्रह की भोग्य दशा थी और दशाक्रम की जांच करें जो जातक के जीवन काल में आने वाली है।

14.6 (2) जातक निर्णय की पद्धति

भावों की स्थिति एवं विशेषता।

भावों तथा उनके कारकों की स्थिति–जन्मकुण्डली के प्रत्येक भाव अनेक घटनाओं के द्योतक होते हैं। चौथे भाव से माता, सवारी, गृह सम्पत्ति, भूमि आदि देखे जाते हैं। ज्योतिषी को चाहिए कि इनमें से किसी एक की समुचित संकेत की जांच करे। निम्नलिखित के अध्ययन से यह पता लगाने में सहायता मिलती है कि किसी भाव विशेष का कौन सा कारक किस समय पर प्रभावी होता है।

(*i*) प्रथम भाव का विश्लेषण तथा जातक के स्वास्थ्य के लिए—लग्न, लग्नेश, सूर्य और चन्द्रमा का विश्लेषण करें

(क) यदि चारों ही उत्तम स्थिति में है, सौम्य ग्रहों से दृष्ट हैं तो जातक का स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

(ख) यदि उनमें से कोई एक पीड़ित हो तो कुछ समस्याएँ हो सकती है।

(ग) यदि इनमें से दो पीड़ित हों तो जातक का स्वास्थ्य खराब होगा।

(घ) यदि तीनों ही पीड़ित हों तो जातक कष्ट में यानि रोगी होगा।

(ङ) यदि चारों ही पीड़ित हो तो स्वास्थ्य पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह लग जाता है।

(*ii*) चौथे भाव का विश्लेषण

बारह भावों का विश्लेषण इसी प्रकार करना चाहिए। चौथे भाव से एक उदाहरण लेकर स्पष्ट करें।

(क) यदि चतुर्थेश और चतुर्थ भाव दोनों ही उत्तम स्थिति में हों तो परिवार में सुख शांति रहेगी, जातक के पास भूमि, सम्पत्ति, सवारी और उत्तम शिक्षा आदि होगी। यदि वे पीड़ित हों तो विपरीत परिणाम होगा। यदि चौथे भाव का स्वामी निर्बल, अस्त, नीच और अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो तो चौथे भाव से संबंधित सभी कार्य बुरी तरह प्रभावित होंगे। किसी भी भाव पर ग्रहों के प्रभाव में अन्तर जानने में कारक से सहायता मिलती है। क्योंकि एक भाव के कई अर्थ होते हैं पर प्रत्येक के लिए कारक होता है।

(ख) ऊपर दी गई परिस्थिति में हमारे सामने एक महान् समस्या आती है। यदि शुभ ग्रह हों और शुभ प्रभाव हों तो चतुर्थेश और चतुर्थ भाव दोनों ही उत्तम स्थिति में होते हैं। ऐसी परिस्थिति में उत्तम शिक्षा, मकान की प्राप्ति, सवारी की प्राप्ति आदि की भविष्यवाणी की जा सकती है। यदि ये पीड़ित हों तो क्या ज्योतिषी को माता के स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवार में कष्ट या जातक के स्वास्थ्य की समस्या, सम्पत्ति की हानि या दुर्घटना आदि के बारे में भविष्यवाणी करनी चाहिए। ऐसी स्थिति में हमें कारक की सहायता लेनी होती है। चौथे भाव के लिए कारक निम्नलिखित हैं—

(*i*) चन्द्रमा—माता

(*ii*) शुक्र—गृह, सवारी

(*iii*) बुध—शिक्षा

(*iv*) भूमि—मंगल

(ग) मान लें कि चन्द्रमा पीड़ित है। हम आसानी से मां को कष्ट बता सकते हैं। महर्षियों ने ऐसी स्थिति में यह सुझाव दिया है कि निम्नलिखित बातों का गहन विश्लेषण करना चाहिए।

(*i*) चतुर्थ से चतुर्थ (अर्थात् सप्तम) देखें। (भावात्भावम्)

(*ii*) चन्द्रमा से चतुर्थ का अध्ययन करें।

यदि इन दोनों से भी इसी प्रकार के फल प्रदर्शित होते हैं तो माता के बारे में तदनुसार भविष्यवाणी करनी चाहिए। उपरोक्त (क) से (ग) तक एक ही प्रकार का फल प्राप्त हो रहा है। इसलिए हमारा फलित ठीक है।

(घ) भविष्यवाणी को पुखता तौर पर सही करने के लिए ऋषियों ने वर्गों का प्रयोग बताया है। इसलिए हम यहाँ "द्वादशांश" कुण्डली देखेंगे।

जातक की मनोवृत्ति, आत्मा व स्वास्थ्य के लिए लग्न, लग्नेश तथा सूर्य का विश्लेषण करें।

उदाहरण—दिनांक 12 अप्रैल 1940, रात्रि 1-23 पर, 27-53 उ., 79-55 पूर्व, एस.एन.के. जातक को माता का सुख जन्म के बाद तीन वर्ष के अंदर छिन गया था। यहाँ चतुर्थ भाव, माता का कारक चंद्रमा पीड़ित है।

कुण्डली XLI

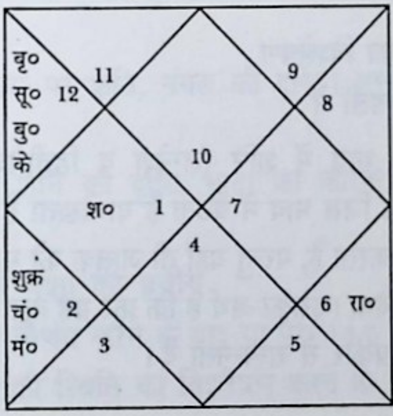

चंद्रमा की भोग्य दशा = 7 वर्ष 5 मास 9 दिन

ल. = 9/01-13'-36", सू = 11/28°-44'-38", चं = 01/13°-24'-38" (पु. न.), मं 01/13°-36'-49" (पु. न.) बुध 11/01°-09'-03" (पु. न.), गु 11/28°-47'-43" (c) शुक्र 1/14°-16'-55" (पु. न.) श. 0/09°-40'-28" (c) राहु 5/26°-54'-11" केतु 11/26°-54'-11"

(घ) भविष्यवाणी को सही करने के लिए ऋषियों ने विभिन्न वर्गों का सुझाव दिया है।

विचाराधीन मामले में द्वादशांश का अध्ययन करना आवश्यक है।

यदि ऊपर (क) से (घ) तक सभी मामलों में (वर्ग को लेकर) एक प्रकार की स्थिति दिखती है तो दी गई भविष्यवाणी सही होगी।

द्वादशांश चक्र

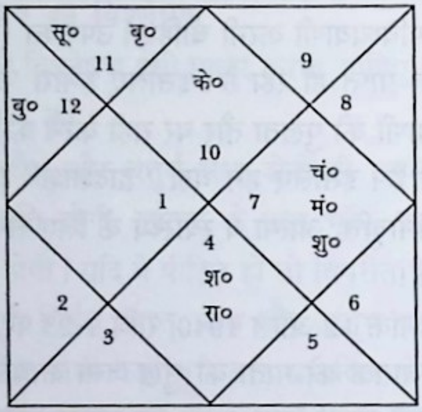

द्वादशांश में भी वह ही स्थिति है। चंद्रमा पीड़ित तथा चतुर्थ भाव पीड़ित।

चतुर्थ भाव का विश्लेषण

(*i*) जन्म कुण्डली में

(*i*) चतुर्थ भाव में शनि (लग्नेश व द्वितीयेश), शास्त्रानुसार तो लग्नेश जिस भाव में बैठता है या देखता है उस भाव के फल में वृद्धि करता है, परन्तु यहाँ तो जातक को माता के सुख से वंचित करा दिया। इसका अर्थ है कि क्रूर ग्रह क्रूर ही रहेगा, भले ही वह सभी प्रकार से सम्पन्नता दे।

(*ii*) चतुर्थ भाव के दोनों ओर क्रूर ग्रह व सौम्य ग्रह है। अशुभ कर्तरी का भी बुरा प्रभाव पड़ रहा हैं।

(*iii*) माता का कारक चंद्रमा भी पीड़ित है। मंगल तथा चंद्रमा अंशों में बहुत समीप है। दोनों ही चंद्रमा के नक्षत्र में है। चंद्रमा भी चतुर्थी का बलहीन है।

(*iv*) चंद्रमा से चतुर्थ भाव पर मंगल की दृष्टि, उसका स्वामी सूर्य केतू से पीड़ित है।

नोटः पंचम तथा एकादश भाव यदि पीड़ित हों तब भी माता-पिता के सुख में कमी या उनके साथ रहने का अवसर कम मिलता है।

नवमांश चक्र

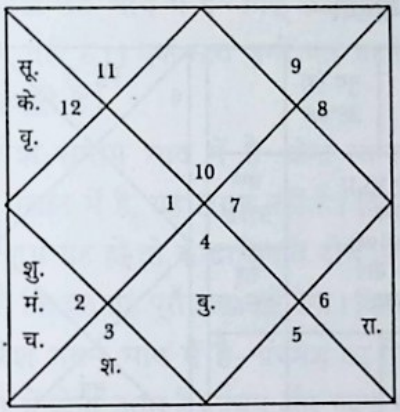

यहाँ भी स्थिति में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

द्वादशांश चक्र

लग्न में केतू, उस पर शनि, मंगल की दृष्टि। लग्नेश शनि राहू से पीड़ित है।

चतुर्थ भाव पर शनि की दृष्टि, माता का कारक चंद्रमा मंगल से पीड़ित है।

14.7 फलित में दशा का प्रयोग

जन्मकुण्डली पर निर्णय करने के बाद या पैरा 14.6 में बताए गए ढ़ंग से सभी बारह भावों की स्थिति का विश्लेषण करने के बाद ज्योतिषी को

चाहिए कि दशाक्रम का अध्ययन करें। दशा अर्थात् वर्तमान दशा व अन्तर्दशा से उस अवधि के दौरान होने वाली घटनाओं का संकेत मिलता है। यदि जन्मकुण्डली में उत्तम राजयोग विद्यमान है किन्तु उस राजयोग में शामिल ग्रहों की दशा उस जातक के जीवनकाल में नहीं आती हैं तो उस विशेष राजयोग का पूरा फल जातक को नहीं मिलेगा। यदि कोई अरिष्ट योग है तो उसके साथ भी ऐसा ही होगा। अरिष्ट योग या राजयोग में शामिल ग्रह की दशा अन्तर्दशा जब तक नहीं आएगी तब तक जातक न तो अरिष्ट योग के कारण पीड़ित होगा और न ही राजयोग के कारण उत्तम फल का आनन्द लेगा। अन्तर्दशा की लघु अवधि के दौरान इन योगों का कुछ फल मिलेगा।

14.8 (1) व्याख्या–

मंगल 28°58' चन्द्रमा 11°57'	शनि (व) 29°21'	गुरु (व) 28°58'	
केतु 23°51'	कुण्डली XLII पुरुष 25-12-1941 7-40 सायं आगरा		लग्न 9°12'
शुक्र 22°503'			राहु 23°51'
सूर्य 10°16' बुध 12°516'			

मंगल		केतु	
	नवांश		गुरु शुक्र सूर्य बुध
शनि	राहु	चन्द्रमा	लग्न

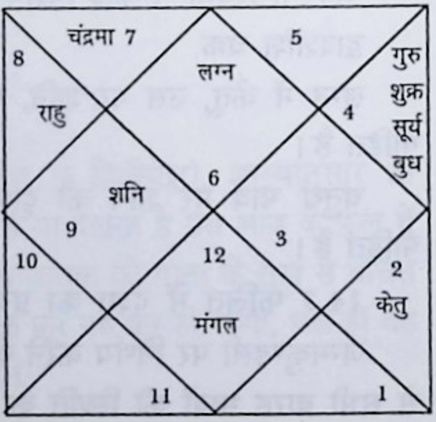

जन्म समय विंशोत्तरी दशा शेष–शनि 6 वर्ष 8 महीने 20 दिन अब हम क्रमबार अध्ययन करेंगे

जन्मकुण्डली का पठन

(*i*) **लग्नेश नवम् में स्थित है**–जब हम देखते हैं कि लग्नेश नवम् में है तो यह प्रदर्शित होता है कि प्रथम भाव और भाग्य स्थान के साथ कोई संबंध है। केन्द्र–त्रिकोण स्थान (लग्न केन्द्र और त्रिकोण दोनों ही होता है) स्वामी की त्रिकोण में स्थिति अत्युत्तम होती है। जातक अपना भाग्य स्वयं बनाएगा।

(*ii*) **द्वितीयेश छठे भाव में है**–दूसरे भाव के स्वामी का संबंध छठे भाव से है जो धन के लिए अच्छी स्थिति नहीं होती।

(*iii*) **तृतीयेश छठे भाव में है**–त्रिक् स्थान का स्वामी बुरे भाव में खराब नहीं है।। एक साथ जन्में भाई बहनों के साथ समस्या हो सकती है।

(*iv*) **चतुर्थेश सप्तम भाव में है**–केन्द्र स्थान का स्वामी अन्य केन्द्र स्थान में है, यह खराब नहीं है। किन्तु केन्द्र का स्वामी यदि शुभ ग्रह हो तो **केन्द्राधिपति दोष** होता है। इसका अर्थ यह है कि वह ग्रह पूरा फल नहीं देगा। किन्तु मित्र राशि में है।

(*v*) **पंचमेश नवम् भाव में है**–पंचमेश का मित्रराशि में त्रिकोण स्थान में होना उत्तम है। पंचम् और नवम् भाव के साथ संबंध है। इसका अर्थ यह है कि जातक के बच्चे जीवन में उन्नति करेंगे।

(*vi*) **षष्ठेश एकादश भाव में है**–षष्ठेश बृहस्पति वक्री होकर एकादश में है जो उसकी शत्रु राशि है और एक त्रिडाय भाव है किन्तु बुरे भाव के स्वामी के लिए यह अच्छा है। जातक के शत्रु होंगे और शत्रु के कारण लाभ होगा।

(*vii*) **सप्तमेश दसम् भाव में है**–शनि और दसमेश मंगल के बीच संबंध सम का है। यहाँ पर शनि नीच राशि में है और वक्री भी है। इससे सप्तमेश के लिए बहुत अच्छा और शुभ फल

प्रदर्शित नहीं होता। केन्द्र का स्वामी अशुभ ग्रह (शुभ माना जाता है) दूसरे केन्द्र स्थान में है, और शुभ बन गया है। जातक की पत्नी/पति सक्रिय तथा कमाण्डिंग स्वभाव की होगी/होगा।

(*viii*) **अष्टमेश शनि दसम् में है**—अष्टमेश यदि नीच का हो तो अच्छा नहीं होता क्योंकि शनि आयु स्थान का स्वामी है। अष्टमेश का दसम् भाव में होना पुनः अच्छा नहीं होता क्योंकि दसम् कर्म स्थान होता है। इससे व्यवसाय में बाधाएं आएंगी या स्थानान्तरण होता रहेगा।

(*ix*) **नवमेश बृहस्पति एकादश में है**—ऊपर (*vi*) देखें। लाभ भाव में नवमेश का होना उत्तम है।

(*x*) **दसमेश मंगल नवम् भाव में है**—मंगल के लिए अति उत्तम स्थिति है। इससे कर्म स्थान और भाग्य स्थान के बीच संबंध प्रदर्शित होता है। बली केन्द्र स्थान का स्वामी बली त्रिकोण भाव में **'धर्म कर्मादि'** योग बनाता है।

(*xi*) **एकादशेश शुक्र सप्तम भाव में है**—एकादशेश शुक्र सप्तम में मित्र राशि में है। यह उत्तम है।

(*xii*) **द्वादशेश बुध छठे में हैं**—बुध सम राशि में है और विपरीत राजयोग बनाता है।

गहन अध्ययन

14.8 (1) *ग्रहों और उनके प्रभावों में सहसंबंध पर विचार*

लग्नेश की स्थिति

(क) लग्नेश नवम् में मंगल के साथ, पंचमेश और दसमेश से राजयोग बनता है। इन पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है। चन्द्रमा और बृहस्पति का राशि स्वामी 'गुरु' है जो एकादश भाव में हैं।

(ख) जातक अपने प्रयासों, कर्म और विवेक से अपना भविष्य बनाने में सक्षम होगा। पंचम् भाव शिक्षा, संतान, मस्तिष्क, बुद्धि, मानसिकता, प्रवृत्ति आदि के लिए होता है। ये सभी काफी बली है क्योंकि पंचमेश नवम् स्थान (भाग्य) में है।

(ग) उसकी संतान जीवन में उन्नति करेगी क्योंकि पंचमेश बली है तथा बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव पर है।

(घ) लग्नेश चन्द्रमा पंचमेश (पूर्व जन्म का पुण्य कर्म) मंगल के साथ है जो पूर्व जन्म में पवित्र कर्म का द्योतक है। नवम् भाव धर्म है। लग्नेश, चन्द्रमा का नवम् भाव (धर्मस्थान) से संबंध और पंचम् (मस्तिष्क) तथा दसम् (कर्म) से संकेत मिलता है कि जातक अपने विचारों, कर्म और वाणी से धार्मिक होगा।

(ङ) पंचम नवम् भाव से नवम् होता है जहां का स्वामी मंगल लग्न में पंचमेश (चंद्रमा) (नवम् भाव को लग्न मानें) चन्द्रमा के साथ है (चन्द्रमा जन्म लग्न का स्वामी भी है)। यहां भी यदि हम नवम् भाव देखें तो पंचम् और नवम् के बीच संबंध है जिससे यह प्रदर्शित होता है कि जातक का पिता भी धार्मिक संस्कार विरासत में लेगा।

(च) नवमेश एकादश में है, पिता से लाभ और सौभाग्य के कारण सफलता। उसे धर्मलाभ होगा।

14.8 (2) द्वितीय भाव तथा उसका स्वामी

(क) द्वितीयेश सूर्य छठे भाव में तृतीयेश व द्वादशेश बुध के साथ है जिससे यह पता लगता है कि जातक कर्ज या ऋण में होगा या चोरी या पाकेट कटने के कारण धन की हानि होगी। वह सम्पत्ति बनाने के लिए कर्ज ले सकता है। साथ में जन्में भई बहनों पर व्यय कर सकता है। भाई बहनों के साथ सम्पत्ति को लेकर विवाद होगा।

(ख) सप्तमेश और अष्टमेश वक्री शनि की दसम् दृष्टि सूर्य और बुध पर (शनि को मीन में मानकर) है। यह माना जाता है कि वक्री ग्रह पहले भाव से दृष्टि देते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि सूर्य (द्वितीयेश), बुध (तृतीयेश और द्वादशेश) भी शनि के दसम् दृष्टि से प्रभावित हैं (शनि सप्तमेश और अष्टमेश है)। यह स्थिति शुभ नहीं है। शनि और सूर्य आपस में शत्रु हैं (सूर्य द्वितीयेश है)।

(ग) वक्री बृहस्पति मेष से दूसरे भावे को दृष्टि से प्रभावित करेगा और यहां का स्वामी सूर्य और बुध छठे भाव में हैं जो.बृहस्पति की अपनी राशि

है। बृहस्पति 9, 6 और 11 को प्रभावित कर रहा है। इस प्रकार जातक की वित्तीय स्थिति खराब नहीं होगी।

(घ) दूसरे भाव में राहु है। वक्री होने के कारण बृहस्पति भी दूसरे भाव पर पंचम् दृष्टि डाल रहा है। जातक को अत्यधिक व्यय करना पड़ेगा। ग्यारहवें भाव से बृहस्पति की दृष्टि के कारण जातक धनाभाव महसूस नहीं करेगा।

14.8 (3) तृतीय भाव तथा तृतीयेश

(क) तृतीयेश बुध छठे भाव में द्वितीयेश सूर्य के साथ है और शनि तथा बृहस्पति से दृष्ट है। तीसरा भाव मंगल और चन्द्रमा से दृष्ट है। बृहस्पति की दृष्टि तृतीयेश पर भी है। वक्री होने के कारण शनि की सप्तम दृष्टि तीसरे भाव पर है और दशम दृष्टि तृतीयेश पर है।

(ख) तृतीयेश और धनेश (द्वितीयेश) एक साथ हैं अतः जातक अपने प्रयासों से धन अर्जित करेगा। उसे अपनी आय से कुछ भाग अपने भाई बहनों पर व्यय करना होगा या पैतृक सम्पत्ति को लेकर छोटे भाइयों के साथ झगड़ा होगा। षष्ठेश की दृष्टि से ये संकेत मिलता है कि जातक ऋणी होगा, नवमेश की दृष्टि का अर्थ पिता से वित्तीय सहायता या देयता (देनदारी), कुछ समस्याएं होंगी। तीसरे भाव पर पंचमेश व नवमेश मंगल तथा लग्नेश चन्द्रमा की दृष्टि से यह प्रदर्शित होता है कि भाइयों बहनों के कारण जातक की शिक्षा में बाधाएं आएंगी या वह उनकी शिक्षा में मदद करेगा। वह जीवन में जल्द ही कमाना शुरू करेगा। उसके छोटे भाई बहन होंगे। उन्हें या उनसे कुछ कठिनाई हो सकती है। इस योग पर नवमेश बृहस्पति की दृष्टि भी है। वह पिता की आर्थिक सहायता करेगा। पिता से विशेष आशा नहीं होगी। सप्तमेश भी दृष्टि से इस योग में शामिल है। विवाह के बाद उस पर अंकुश लग जाएगा जिस कारण परिवार से अलग रहने की स्थिति आ जाएगी।

(ग) बृहस्पति की दृष्टि के कारण पिता तथा भाइयों के साथ सौहार्द बना रहेगा।

14.8 (4) चतुर्थ भाव तथा चतुर्थेश

चतुर्थेश शुक्र सप्तम में है और षष्ठेश एवं नवमेश बृहस्पति से दृष्ट है। यह उत्तम स्थिति है। सप्तमेश शनि की भी दृष्टि है जो अष्टमेश भी है।

सप्तमेश की दृष्टि चौथे भाव और चतुर्थेश पर भी है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि मकान तथा सवारी के लिए पत्नी कारण या स्रोत बन सकती है। चौथे भाव पर पंचमेश और दसमेश मंगल की दृष्टि से यह बताता है कि जातक अपने प्रयासों से मकान और गाड़ी खरीदने के लिए साधन तैयार करेगा। शनि और मंगल की दृष्टि से यह पता लगता है कि विवाह के बाद पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यों के बीच सामंजस्य में कठिनाई होगी। जातक को संयुक्त परिवार से अलग रहना होगा। दसमेश की दृष्टि से यह पता लगता है कि संयुक्त परिवार से अलग रहने का एक कारण उसके व्यवसाय या जॉब का स्वरूप होगा।

(*i*) जातक ने 1978 में स्कूटर खरीदा।

(*ii*) सितम्बर, 1978 में टी.वी. सेट

(*iii*) 1980 में उसे फ्लैट मिला

(*iv*) 18 जनवरी 1991 में नया स्कूटर खरीदा।

14.8 (5) पंचम भाव तथा पंचमेश

पंचमेश मंगल नवम् भाव में लग्नेश चन्द्रमा के साथ बलवान राजयोग बना रहा है। इस पर कोई अशुभ दृष्टि नहीं है। मंगल का राशि स्वामी गुरू की दृष्टि पंचम् भाव पर भी है। शनि वक्री है और मेष में 29°21' पर है। जन्म से पहले 13 दिसम्बर 1941 शनि वृषभ में था। इस प्रकार पंचम् भाव पर शनि का प्रभाव है। शनि वक्री है। शनि का एक प्रभाव यह होगा कि वह पंचमेश के साथ है। शिक्षा के संबंध में अच्छी स्थिति के बावजूद शिक्षा में बाधा आएगी और जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाएगा। उस विशेष अवधि के दौरान चल रही दशा पर बहुत कुछ निर्भर करता है।

जातक ने बुध (कर्क लग्न के लिए अशुभ है) की महादशा और बृहस्पति (कर्क लग्न के लिए शुभ) की अन्तर्दशा में 1962 में बी.ए. पास किया। उसने मई 62 में प्राइवेट नौकरी की। इससे पिछले पैरे में दिए गए विवरण की पुष्टि होती है।

14.8 (6) षष्ठ भाव तथा षष्ठेश

जहां तक छठे भाव का संबंध है, दूसरे भाव की स्थिति पर विचार करते समय हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। उसे दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

14.8 (7) सप्तम भाव तथा सप्तमेश

(क) अब सातवें भाव पर विचार करें, सप्तमेश दसम् भाव (कर्मस्थान) में है, सप्तम् में शुक्र (कारको भाव नाशाय) है (अर्थात् किसी भाव का कारक यदि उसी भाव में हो तो अच्छे फल का नाश हो जाता है)। बृहस्पति और शनि का भी संबंध है (जो पैरा 14.8 (5) में पहले ही बताया जा चुका है) और पिछले पैरे में की गई चर्चा से स्पष्ट है। इससे यह पता चलता है कि सप्तमेश और नवमेश के बीच कोई संबंध नहीं है किन्तु सप्तमेश शनि के वक्री होने के कारण लग्नेश और मंगल (पंचमेश और दसमेश), दसम् भाव, नवम् भाव और नवमेश, चतुर्थ भाव और चतृर्थेश से संबंध बनता है, अपनी राशि में (सप्तम) पर दृष्टि है और पंचम् भाव तथा पंचमेश से संबंध बनाता है।

(ख) शनि ऐसा ग्रह है जिसका जातक के भाग्य पर पूरा नियंत्रण है। विवाह के बाद जातक उन्नति करेगा और सभी कार्यों में सफल होगा। यह कहा जा सकता है कि उसकी पत्नी सभी कार्यों को संभाल लेगी। जातक का विवाह 29 वर्ष की आयु में 29 मई, 1979 को हुआ (देखें 14.8 (10), विवाह के बाद ही सभी पदोन्नतियां हुई।

14.8 (8) अष्टम भाव तथा अष्टमेश

अष्टमेश पुनः शनि है। दसम् में (बलवान केन्द्र) शनि अत्युत्तम है। इस पर कोई दृष्टि नहीं है। शनि से दूसरे तथा 12वें दोनों में शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हैं। यह भी उत्तम है। अष्टम में केतु स्वास्थय के लिए अच्छा नहीं है और वैवाहिक सुख के लिए भी अच्छा नहीं है। मंगल और शनि के साथ लग्नेश अच्छा नहीं है। इस पर कोई शुभ दृष्टि नहीं है। यह खराब स्थिति है। केवल लग्न पर शुक्र की दृष्टि शुभ है। लग्न पर चर्चा करते समय हम स्वास्थ्य पर पहले ही चर्चा कर चुके हैं। अष्टम भाव आयु

भाव कहलाता है, केन्द्र में शनि और शुक्र (शुभ) से अच्छी आयु दिखती है। दसम् भाव में अष्टमेश के कारण नौकरी में बाधा या परिवर्तन है। व्यवसाय में परिवर्तन होगा। किन्तु ये सब उत्तम भविष्य के लिए होगा।

14.8 (9) नवम् भाव तथा नवमेश

हम नवम् भाव पर पहले ही पर्याप्त चर्चा कर चुके हैं। उसे संक्षेप में दोहराया जाता है।

नवम् भाव में लग्नेश चन्द्रमा और पंचमेश तथा दसमेश मंगल है जो उत्तम है। नवमेश बृहस्पति 11वें में (खराब नहीं है) है। वक्री का अर्थ बलवान या वहाँ पर वक्री शनि का भी प्रभाव है। मिश्रित फल प्रत्याशित है। क्रूर मंगल और शनि का प्रभाव अच्छा नहीं है। नवमेश बृहस्पति पर वक्री शनि का प्रभाव भी उत्तम नहीं है। मंगल और चन्द्रमा का राजयोग है किन्तु इन प्रभावों के कारण जातक का बहुत अच्छा उत्थान नहीं भी हो सकता है। दसम् भाव पर विचार करते समय इसकी जांच की जाएगी। पैरा 14.8 (1) में नवम् को लग्न मानकर नवम् भाव पर चर्चा की गई है जिसमें पिता के लिए उत्तम स्थिति पाई गई। नवम् भाव पर बुरे प्रभाव और शत्रु भाव में नवमेश की स्थिति जिसपर शनि की दृष्टि है, के कारण लाभ और सुख, सहायता और पिता के साथ में कमी दिखती है। पिता का कारक सूर्य भी शनि से दृष्ट है जिससे पिता का कठिन समय प्रदर्शित होता है।

14.8 (10) दशम भाव एवं दशमेश

दसमेश मंगल लग्नेश चन्द्रमा के साथ है। पैरा 14.8 (1) में पहले ही इसकी व्याख्या की जा चुकी है। दसम् और नवम् के बीच संबंध का अर्थ कर्म और भाग्य, कर्म और धर्म, जातक का धर्म से गहरा संबंध, धर्म में पूरा विश्वास होगा और धार्मिक कार्य करेगा। पिता का आदर करेगा और अपने से बड़ों का आदर करेगा। कर्म, भाग्य और लग्न स्वामियों के बीच संबंध के कारण जातक अपने प्रयासों से अपना भाग्य बनाएगा और माता पिता से अधिक सहायता नहीं मिलेगी क्योंकि नवम् भाव और नवमेश पीड़ित है। यदि उचित समय पर शुभ ग्रहों की दशा हों तो उत्तम फल, होता है।

जातक का व्यवसाय

आइए, व्यवसाय से संबंधित घटनाएं देखें। इन भावों से संबंधित ग्रहों की दशा के संबंध में नवम् और दसम् भाव का विश्लेषण–

महत्त्वपूर्ण घटनाएं	दशाकाल
(*i*) जातक ने मई 1962 में पहली नौकरी की	बुध/बृहस्पति
(*ii*) दिसम्बर, 1963 में नौकरी में परिवर्तन	बुध/शनि
(*iii*) 5 फरवरी, 1965 को सरकारी नौकरी	बुध/शनि
(*iv*) दिल्ली स्थानान्तरण के कारण जुलाई 1980 से सितम्बर, 1986 स्थान परिवर्तन	शुक्र/राहु
(*v*) 13 सितम्बर, 1986 को कानपुर स्थानान्तरण	शुक्र/शनि
(*vi*) 29 फरवरी, 1988 को प्रतिनियुक्ति पर दिल्ली	शुक्र/शनि
(*vii*) 13 अप्रैल 1989 को प्रतिनियुक्ति से वापस, किन्तु विशेष वेतन पर मुख्यालय में तैनात	शुक्र/बुध

बली दसमेश के कारण जातक को सभी उपलब्धियां प्राप्त हुई। प्रश्न उठ सकता है कि ऊपर दी गई स्थितियों में चन्द्रमा या मंगल (राजयोग कारक) और नवमेश बृहस्पति शामिल नहीं है। बृहस्पति और शनि, शनि, मंगल और चन्द्रमा का बुध और सूर्य के साथ संबंध पिछले पैरे में दिया गया है। जातक ने शुक्र की महादशा में चन्द्रमा मंगल और बृहस्पति की अन्तर्दशा में विभागीय परीक्षा पास की। इस परीक्षा में पास करने पर ही वह पदोन्नति का हकदार बना।

14.8 (11) (क) अपनी बातचीत में हमने सारे मुद्दे शामिल कर लिए हैं। यदि 11वें और 12वें भावों के संबंध में चर्चा की जाती है सारे मुद्दे शामिल कर लिए हैं।

(ख) ग्यारहवां भाव, लाभ, बड़ा भाई, पंचम से सप्तम आदि से संबंधित होता है। जीवन में पत्नी की सहायता से वित्तीय सम्पन्नता तथा लाभ होगा क्योंकि एकादशेश तथा कारक शुक्र सप्तम में है, किन्तु सप्तमेश शनि और नवमेश गुरु की दृष्टि के कारण एक से अधिक पत्नी नहीं होगी। बृहस्पति की दृष्टि से जातक में एक से अधिक पत्नी की इच्छा पर नियंत्रण होगा।

14.8 (12) द्वादश भाव व भावेश

द्वादशेश बुध द्वितीयेश के साथ छठे भाव में है। 12वें भाव पर मंगल और शनि की दृष्टि है। 12वें भाव और स्वामी पर भी अशुभ प्रभाव के कारण यौन जीवन में विघ्न हो सकता है। साधारणतः इस प्रकार विवाह में विलम्ब या विवाह के पश्चात् आपस में समस्याएं होती है। द्वादशेश पर बृहस्पति की दृष्टि के कारण क्षति से रक्षा हो रही है। जातक का विवाह 29 वर्ष 4 महीने की आयु में काफी विलम्ब से हुआ।

14.9 ग्रहों की सक्रियता की संस्थिति

ऊपर के पैरे में विश्लेषण के बाद जन्मकुण्डली में अन्य तथ्यों का अध्ययन आवश्यक है।

(1) लग्नेश तुला नवांश में मंगल से दृष्ट है और कोई शुभ दृष्टि नहीं है। राशि कुण्डली में चन्द्रमा भी मंगल से पीड़ित है और नवांश में भी चन्द्रमा पर मंगल का प्रभाव है जो स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है।

(2) पंचमेश मंगल वर्गोत्तम (अर्थात् राशि और नवांश कुण्डली में एक ही राशि में है) है। नवांश में उच्च के बृहस्पति की मंगल पर दृष्टि है। पंचमेश की स्थिति में सुधार हो गया। अतः जातक अपना अध्ययन जारी रख सका और तीन विभागीय परीक्षाएं पास की।

(3) सप्तमेश शनि जन्मकुण्डली में नीच का होकर अशुभ राशि में है। नवांश में बृहस्पति की राशि में जाने के कारण स्थिति में सुधार हो गया। जन्मकुण्डली में शनि के साथ बृहस्पति (बृहस्पति वक्री होने के कारण मेष से प्रभाव देता है) का संबंध है और नवांश में शनि गुरु की राशि में है। शनि पर कोई दृष्टि नहीं हे। जातक की पत्नी शिक्षित और अच्छे स्वभाव की होगी।

(4) नवांश में नवमेश बृहस्पति उच्च का है और नवांश लग्न के स्वामी के साथ है। स्थिति में सुधार है।

(5) सूर्य और बुध के योग से बुध–आदित्य योग बनता है। जातक चतुर, बुद्धिमान आदि और गणित में कुशल होगा।

(6) मंगल और चन्द्रमा एक साथ हैं जिससे **'चन्द्र मंगल योग'** बनता है। इसका अर्थ यह हे कि जातक की आय चरित्रहीनता से होगी, स्त्रियों को बेचने वाला, मां के साथ दुर्व्यवहार करने वाला, मां तथा अन्य संबंधियों को कष्ट देने वाला होगा। इस योग में अन्तर यह है कि चन्द्रमा लग्नेश है, मंगल योग कारक है (पंचमेश और दसमेश)। यह योग नवम् भाव में बन रहा है। अतः इस योग का वही फल नहीं होगा जो प्राचीन पुस्तकों में दिया गया है। मां के साथ जातक का सौहार्दपूर्ण संबंध नहीं भी हो सकता हे। अपनी पत्नी के साथ भी अच्छा संबंध नहीं होगा, वह उनके प्रति कठोर भी हो सकता है किन्तु इस योग का फल शुभ होगा।

(7) लग्नादि योग

यदि लग्न से 6, 7 व 8 में ग्रह हों तो शुभ योग बनता है। यदि शुभ ग्रह हों तो यह अच्छा योग बनता है या यदि अशुभ ग्रह हो तो बुरा योग बनता है और यदि शुभ व अशुभ दोनों हो तो मिश्रित परिणाम होगा। जातक विनम्र, विश्वासी, सुखी जीवन, सुख और आराम से घिरा हुआ, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, स्वस्थ और दीर्घजीवी होगा।

उदाहरण वाली कुण्डली में यह योग शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों से बनता है।

(8) दुरधरा योग

चन्द्रमा से दोनों ओर ग्रह हैं तो दुरधरा योग बनता है। जातक सुन्दर, धनी होगा और उसके पास गाड़ी होगी। जातक के पास स्कूटर था। अब नवम्बर 1983 में उसने कार खरीद ली थी।

(9) वेसि योग

यदि सूर्य से दूसरे भाव में कोई ग्रह (चन्द्रमा को छोड़कर) हो तो यह योग बनता है। जातक भाग्यशाली, सुखी, सदाचारी, प्रसिद्ध और कुलीन होगा।

(10) विपरीत राजयोग

12वें भाग का स्वामी बुध छठे भाव में विपरीत राजयोग बनाता है (देखें पैरा 14.8 (10), बुध दशा का फल)

(11) नीच भंग

जन्मकुण्डली में एकमात्र शनि नीच का है। इसका नीच भंग हो रहा है।

(क) यानि की उच्च राशि का स्वामी शुक्र केन्द्र में है। शुक्र लग्न से सप्तम् में और शनि से 10वें में है)।

(ख) मेष में उच्च में होने वाला सूर्य चन्द्रमा से केन्द्र में और शनि से त्रिकोण में है।

(ग) शनि भी लग्न से केन्द्र में है।

फल–उपरोक्त चर्चा का पैरा 14.8 (10) देखें। बुध की महादशा (विपरीत राजयोग कारक ग्रह) में शनि की अन्तर्दशा के दौरान जातक को उत्तम फल प्राप्त हुआ।

पूर्व के पाठों के साथ पाठ 10 से 13 में दी गई चर्चा यदि अच्छी तरह समझ ली जाए तो इस पाठ को समझने में कठिनाई नहीं होगी। ज्योतिष के आधारभूत सिद्धांतों को समझ लेने के बाद ही जातक निर्णय संभव है। दूसरी ओर इस पाठ में वर्णित विश्लेषण की पद्धति का क्रमवार पालन करें।

इस प्रकार के बातचीत का लाभ व्याख्यान की बजाए व्यक्तिगत बातचीत से उठाया जा सकता है। सैद्धान्तिक पक्ष को लिखकर स्पष्ट किया जा सकता है किन्तु व्यावहारिक पक्ष को पढ़ाना संभव नहीं हैं तथापि हमने प्रयास किया है कि ज्योतिष प्रवीण के विद्यार्थी को विषय का ज्ञान प्राप्त हो।

अभ्यास

1. ग्रह अपनी बली स्थिति में शुभ फल देते हैं। आप बली, अधिकतर बली या सबसे अधिक बली स्थिति से क्या समझते हैं?
2. यदि कोई ग्रह केन्द्र का स्वामी हो तो किस प्रकार के फल की आशा की जा सकती है और कब? क्या शुभ और अशुभ ग्रहों के फल में अन्तर होता है।
3. विपरीत राजयोग क्या है? क्या यह अन्य राजयोगों के समान फल देता है।
4. ग्रह नीच का है, ऐसा क्यों कहा जाता है? नीच का ग्रह शुभ फल देता है या अशुभ नीच भंग कब होता है।

5. जब दुःस्थानों के स्वामी दुःस्थान में न हों तो विपरीत राजयोग उत्तम फल नहीं देता है।
6. टिप्पणी लिखें–

   (*i*) केमद्रुम योग (*ii*) हंस योग

   (*iii*) दुरधरा योग (*iv*) सस योग
7. "चन्द्र मंगल" योग से जातक जीवन में सम्पन्न होता है" अपनी टिप्पणी लिखें।
8. अधि योग से आप क्या समझते हैं?
9. योग क्या है? क्या यह योगकारक से भिन्न होता है? क्या वे प्रत्येक राशि के लिए निर्धारित हैं।
10. निम्नलिखित को स्पष्ट करें–

    (क) यदि एक नीच के ग्रह से अन्य नीच का ग्रह दृष्ट हो जो जातक भिखारी बनता है या राजा।

    (ख) क्या त्रिकोण स्वामियों के साथ केन्द्र के स्वामियों के योग से कोई राजयोग बनता है।
11. यदि 6, 8 व 12 के स्वामी 6, 8 व 12 से भिन्न भाव में परस्पर युक्त हों या परस्पर एक दूसरे से दृष्ट हों तो क्या इससे राजयोग बनता है?
12. आप पंचमहापुरुष योग से क्या समझते हैं?
13. क्या गजकेसरी योग एक बली योग है? गजकेसरी योग कितने प्रकार के होते हैं।
14. यदि चन्द्रमा की दृष्टि मंगल पर हो या मंगल की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो क्या इसे "चन्द्र मंगल" योग मानते हैं।
15. किसी जन्मकुण्डली में केन्द्र भाव का महत्त्व क्या है?
16. यदि किसी जन्मकुण्डली में ऋषियों द्वारा बताए गए योग विद्यमान न हो तो कुण्डली निर्बल होगी और जातक जीवन में उन्नति नहीं करेगा और जातक भविष्य के योग या जन्म समय दशा शेष पर निर्भर करता है, व्याख्या करें।

□□□

पाठ—15

नवांश पर विस्तृत विचार

15.1 सभी वर्गों में नवांश का महत्त्व सबसे अधिक है। 27 नक्षत्रों के चार-चार चरण किये गए तो 108 हुए। एक राशी के नौ बराबर भाग करने से 12 × 9 = 108 अथवा प्रत्येक राशि में 9 चरण होंगे, जैसे–

मेष में,	4	अश्विनी	(केतू)	मिथुन	2	मृगशिरा	(मंगल)
	4	भरणी	(शुक्र)		4	आर्दा	(राहू)
	1	कृतिका	(सूर्य)		3	पुर्नवसु	(गुरु)
वृष में,	3	कृतिका	(सूर्य)	कर्क	1	पुर्नवसु	(गुरु)
	4	रोहिणी	(चंद्रमा)		4	पुष्या	(शनि)
	2	मृगशिरा	(मंगल)		4	आश्लेषा	(बुध)
	18				18 = 36		

चार-चार राशियों के तीन क्रम इसी में इस ही प्रकार 27 नक्षत्रों के होते (ऊपर 4 राशियें में 9 नक्षत्र उनके 9 × 4 = 36 चरण) सिंह से वृश्चिक तक तथा धनु से मीन तक (36 × 3 = 108 कुल)। यह ही 108 नवांश एक कुण्डली (12 राशियों) के बनते हैं।

यहाँ आपने देखा–

(*i*) सूर्य — एक राशि में एक चरण
दूसरी राशि में 3 चरण

(*ii*) मंगल — एक राशि में दो चरण
दूसरी राशि में भी 2 चरण

(*iii*) गुरु — एक राशि में एक चरण
दूसरी राशि में 3 चरण

यह तीन ग्रह दो-दो राशियों में अपना प्रभाव बनाए रहते हैं।

15.2 षोडश वर्गों में नवांश का महत्त्व सबसे अधिक उपयोग है क्योंकि हर नक्षत्र के चरण 3°-20' तक का उपयोग होता है।

12 नवांशों मेष से मीन तक का एक चक्र 40° (3°-20' × 12) में होता है, ऐसे 9 चक्र होते हैं। किसी जातक के जीवन की बहुत सी बातों का पहले से पता लगाया जा सकता है।

15.3 इस "भाव शूचक नवांश पधति की चर्चा करते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं–

(*i*) राशि तुल्य नवांश तथा

(*ii*) नवांश तुल्य राशि

15.4 प्रयोग

कुण्डली

जन्म लग्न 9/18°-08′	सूर्य 9/0°-25′	चंद्रमा 2/0°-22′
मंगल 11/28°-02′	बुध 8/22°-27′ (व) (अ)	गुरु 5/8-31′
शुक्र 8/08°-19′	शनि 7/17°-23′	राहू 7/4°17′
केतू 1/4°-17′		

D/11

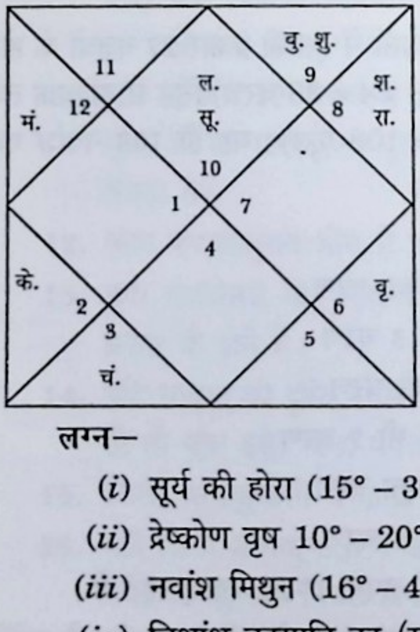

नवांश

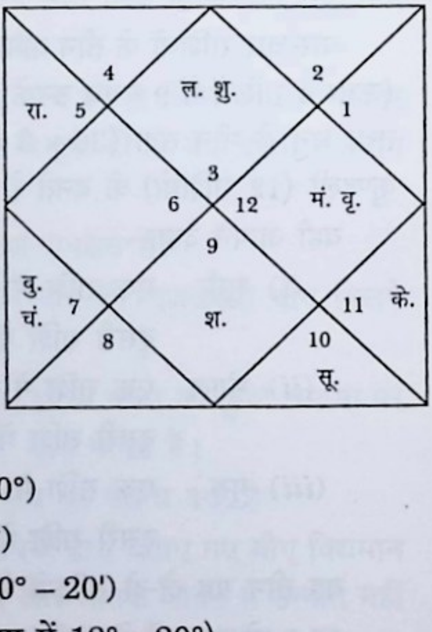

लग्न–

(*i*) सूर्य की होरा (15° – 30°)

(*ii*) द्रेष्कोण वृष 10° – 20°)

(*iii*) नवांश मिथुन (16° – 40° – 20')

(*iv*) त्रिशांश बृहस्पति का (सम में 12° – 20°)

नोट : पाठकों को याद दिलाने के लिए प्रत्येक ग्रह के एक नवांश (3°–20') को पार करने में जो समय लगता है–

सूर्य	3 दिन 8 घंटे	बृहस्पति	1 मास 10 दिन
चंद्रमा	0-6.1 घंटे	शुक्र	2 दिन 16 घंटे
मंगल	4 दिन 10.½ घंटे	शनि	3 मास 10 दिन
बुध	2 दिन 5.½ घंटे	रा./के.	2 मास 2 दिन

15.5

1. सूर्य मकर राशि, मकर नवांश वर्गोत्तम, मकर राशि जन्मांग में प्रथम भाव है। — लग्नामशा
2. चंद्रमा मिथुन राशि, तुला नवांश में होने से तुला राशि जन्मांग में **दशम भाव** है। — कर्मांशा-केंद्रामशा
3. मंगल मीन राशि, मीन नवांश वर्गोत्तम में है। मीन राशि जन्मांग का **तीसरा भाव** है। — विक्रमांशा युक्त
4. बुध धनु राशि, तुला नवांश, तुला जन्मांग में **10 भाव** है। — कर्मांशा केंद्रामशा
5. गुरु कन्या राशि, मीन नवांश, **मीन** राशि जन्मांग का **तृतीय भाव**। — विक्रमांश युक्त
6. शुक्र, धनु राशि, मिथुन नवांश, मिथुन राशि जन्मांग **छठा भाव** है। — षष्ठामशा युक्त
7. शनि वृश्चिक राशि धनु नवांश, धनु जन्मांग का **द्वादश भाव**। — व्ययांशा युक्त
8. राहु वृश्चिक राशि, सिंह नवांश, सिंह जन्मांग में **अष्टम भाव**। — अष्टमांशा युक्त
9. केतु वृष राशि, कुंभ नवांश, कुंभ जन्मांग का **द्वितीय भाव**। — वित्तांशा युक्त

15.6 एक अनूठा विचार है जहाँ 12 नवांशों को एक और नाम (उपनाम), उनके नवांश राशि के जन्मांग चक्र में होने पर "भाव सूचक नवांश" मिला।

भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा कहीं-कहीं इसका प्रयोग किया गया है–

(*i*) होरा सारा (7/24) लग्नामशा - निधनामामशये

(*ii*) जातक पारिजात (5/82) निधनामामशाये रंध्रामशा

(*iii*) भाव प्रकाशिका (5/75) धनामशासथे

(*iv*) संतान दीपिका (श्लोक 2/12) पुत्रामशे

नोट : जो राशि केंद्र में पड़ती है उसको **"केंद्रांशे"** या (1, 4, 7, 10) कोण (5, 9 कोणेशे)।

(*v*) **ध्रुव नाड़ी**–केन्द्रांशगे शुक्रे राजयोगो भविष्यति।

उपरोक्त चर्चा राजयोगों के अध्ययन व जन्मकुण्डली का मूल्यांकन करने में सहायक होती है। यदि अधिक भाव भाग्यामशा, कर्मामशा, लाभांशा, लग्नामशा या सुखामशा में हो तो जातक प्रसन्न, राजा की तरह सम्मानित जीवन यापन करेगा। इससे विपरीत यदि अधिक ग्रह षष्ठामशा, निधानामशा, व्ययामशा या अष्टामशा में हो तो कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

(*vi*) **शनि का गोचर**–

(क) किसी भाव से अष्टमेश जिस नवांश में है, शनि जब उस ही नवांश में, उन ही अंशों पर से गोचर करेगा या त्रिकोण से गोचर करेगा, उस भाव के फल का नाश करेगा।

(ख) लग्नेश जिस नवांश में हो या उससे त्रिकोण में, उस राशि स्वामी अंशों पर से, जातक के ननिहाल (मामा, नानी) को कष्ट होगा।

(ग) द्वितीयेश जिस नवांश राशि में है या त्रिकोण में या द्वितीयेश द्वारा दृष्ट राशि से (उन्हीं अंशों पर) उसकी पत्नी की मृत्यु हो/संताप।

15.7 यम घण्ट (अशुभ योग)

जन्म कुण्डली के शुभ योगों को घटाता है–

वार	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
यमघण्ट योग	मघा	विशाखा	आर्दा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त

15.8 गुलिका– गुलिक/मान्दि एक ही बात है। पाप ग्रहों में सबसे बली माना गया है। मूलतः गुलिकाल में जन्म अशुभता को बढ़ाता है। दिन और रात के अलग-अलग बराबर 8 भाग करने पर जो भाग हानि का होता है, वही गुलिक होता है। उस भाग के प्रारंभ में जो लग्न अपने स्थान पर हो, वह ही गुलिक स्पष्ट होता है।

नोट : पराशर जी ने गुलिकाल के प्रारंभ पर अपने स्थान पर उदित होने वाले लग्न को ही गुलिक स्पष्ट कहा है।

दिनमान व रात्रिमान के बराबर 8 भाग करो। दिन में वारपति से और रात्रि में वारपति से 5वें वारपति से सप्ताह के वारों को क्रम से गिने। जो आठवाँ अंश है वह शनि का होगा। वह ही गुलिका खण्ड होगा। शनि के अष्टमांश के आरंभ क्षण का अपने स्थान पर लग्न स्पष्ट ही गुलिका स्पष्ट होगा।

15.9 वैनाशिक नक्षत्र जन्म नक्षत्र से (अभिजित सहित 38 में से) जो 23वाँ नक्षत्र ही वैनाशिक होगा साधरणतया चंद्रमा से 10वें घर में पड़ता है। जिस भी भाव के निकट पड़ता है उस भाव के फल की हानि वाला है।

❑❑❑

अनुबद्ध I

बालारिष्ट/योगारिष्ट

(पैरा 11.5 (*ii*) को देखें)

केवल दिन के जन्म के लिए, रात्रि के जन्म में यह दोष नहीं होते।

सारिणी

संख्या	नक्षत्र	दिन मृत्यु	दिन रोग
1	भरणी	चतुर्थ चरण	द्वितीय चरण
2	मृगशिरा	–	चतुर्थ चरण
3	आर्द्रा	द्वितीय चरण	–
4	आश्लेषा	तृतीय चरण	प्रथम चरण
5	उ. फाल्गुन	–	तृतीय चरण
6	हस्त	प्रथम चरण	–
7	स्वाति	–	चतुर्थ चरण
8	विशाखा	द्वितीय चरण	
9	मूल	चतुर्थ चरण	द्वितीय चरण
10	श्रावण	–	तृतीय चरण
11	धनिष्ठा	प्रथम चरण	–
12	उ. भाद्रा	तृतीय चरण	प्रथम चरण

अनुबद्ध II
गण्डमूल

(पैरा 11.5 (*iv*) को देखें)

नक्षत्रों के बुरे प्रभाव

गण्ड-मूल सारिणी

तीनों नक्षत्रों के विभिन्न चरणों में जन्म होने का फलः

चरण	पुष्य व पू. आषाढ व चित्रा
प्रथम	पिता के लिए अरिष्ट कारक
द्वितीय	माता के लिए अरिष्ट कारक
तृतीय	जातक के लिए कष्ट प्रद
चतुर्थ	मामा के लिए कष्ट प्रद

नक्षत्र	मूल ज्येष्ठा	मघा आश्लेषा	रेवती, अश्विनी	जन्म समय
मूल, ज्येष्ठा	पिता के लिए अरिष्ट			दिन में
मघा, आश्लेषा	माता के लिए अरिष्ट			रात्रि में
रेवती, अश्विनी	स्वयं के लिए अरिष्ट			संध्या में

नोट–

1. इन छः नक्षत्रों में जन्म लेने वाला जातक माता-पिता, परिवार व अपने स्वास्थ्य के लिए कष्ट प्रद होता है। यदि जीवित रह जाता है तो उच्च वैभव प्राप्त करता है।
2. यदि जन्म प्रातः काल में हो सभी गण्ड मूल नक्षत्र पशु व धन हानी दर्शाते हैं।

3. यदि जन्म बालिका का हो–

मूल (1, 2, 3)	आश्लेषा (2, 3, 4)	ज्येष्ठा	विशाखा (4)
पिता के लिए अरिष्ट	माता के लिए कष्ट प्रद	पति के बड़े भाई (ज्येष्ठ) के लिए कष्ट	पति के छोटे भाई (देवर) के लिए कष्ट

अनुबद्ध III
आयुर्दया का विश्लेषण

(देखें पैरा 11.17)

मध्य, अल्प तथा पूर्ण आयु जानने के लिए पैरा 11.12 में दी गई "सिद्धांत की सारणीबद्ध प्रयुक्ति" की सारणी को देखें। विस्तृत रूप से आयुनिर्णय के लिए कुण्डली में अवस्थित ग्रहों की स्थिति तथा योगों का अध्ययन करने के उपरान्त प्राप्त आयु की अवधि में वृद्धि व ह्रास भी किया जा सकता है।

पैरा 11.15 में दिए गए उदाहरण में आयु अवधि के नियम लगाने के बाद पूर्ण आयु प्राप्त हुई। (जो कि 70 वर्ष से ऊपर की होती है) जन्म कुण्डली का पूर्ण विश्लेषण नीचे दिया जा रहा है।

1. **लग्न** को लग्नेश दृष्टि दे रहा है। (अच्छा है) वक्री गुरु की नवम दृष्टि भी आ रही है। कोई शुभ/अशुभ दृष्टि नहीं है।

लग्नेश एक क्रूर ग्रह है, जो कि अष्टमेश भी है। लग्नेश मंगल सप्तम में बैठ कर लग्न को देख रहा है। मंगल लग्नेश होने के कारण अष्टमाधिपति के दोष से मुक्त है। इसलिए सीधा-सीधा मारक भी नहीं बनेगा। परंतु अंतर्दशा में अपने स्वभावानुकूल दुष्टप्रभाव देकर हानि पहुंचा सकता है। (दुर्घटना से मृत्यु)

2. **लग्नेश** मंगल शुक्र की राशि में बैठा है (बुरा नहीं है) वक्री होने से शनि की तृतीय दृष्टि मंगल पर ठीक नहीं है।

3. **जीवन तथा स्वास्थ्य का कारक चंद्रमा**

चंद्रमा केतु के साथ (दोनों एक ही अंशों पर है) शनि की दृष्टि है, मंगल चंद्रमा से अष्टम में है। गुरु की दृष्टि सौम्य है। परन्तु वह स्वयं षष्ठ भाव में बुध की राशि में राहू तथा शनि से पीडित है। द्वादशेश होने के

कारण मारकेश भी हो जाता है, लग्न से षष्ठ रोग स्थान में तथा चंद्रमा से सप्तम में और लग्नेश मंगल में द्वादश में बैठा है। इसीलिए चंद्रमा जो कारक है वह पीड़ित है। गुरु के प्रभाव से कुछ शुभता अवश्य प्राप्त होती है।

4. प्रथम भाव का कारक सूर्य

सूर्य राशि (शत्रु) की राशि में मंगल से दृष्ट, शुक्र (शत्रु) के साथ युति कर रहा है। गुरु की शुभ दृष्टि है।

5. अष्टमेश व अष्टम भाव दोनों शनि से पीड़ित है।

6. तृतीय भाव (अष्टम से अष्टम) पर शनि की दृष्टि, तृतीयेश बुध कुंभ में शनि (मित्र) की राशि में बैठा है। यहां शनि व बुध (षष्ठेश व लाभेश) का स्थान परिवर्तन भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि दोनों अशुभ भाव है।

7. शनि आयुष कारक वक्री होकर मित्र राशि में बैठा है (अच्छी स्थिति है) शनि की राहू के साथ षष्ठ भाव में स्थिति, षष्ठेश व एकादशेश का स्थान परिवर्तन (दोनों अशुभ स्थान/भाव है), दोनों ही मारक हैं (देखें पैरा 10.10)

निर्णयः पैरा 1 से 7 तक के अध्ययन से नियम जो पैरा 11.11 (1) में दिए गए हैं ऐसा प्रतीत होता है कि आयु की प्राप्ति अवधि में कुछ कमी होगी।

8. तृतीय तथा एकादश भाव में कोई क्रूर ग्रह नहीं है, षष्ठ भाव में दो पापी ग्रह और एक शुभ ग्रह बैठा है।

9. केन्द्र में शुभ ग्रह

शुभ ग्रहों के केन्द्र में होने से आयु की वृद्धि होती है। दो क्रूर ग्रह तथा एक सौम्य ग्रह केन्द्र में है। सौम्य ग्रह शुक्र द्वितीय एवं सप्तम भावों का स्वामी होकर मारक है।

10. अष्टम भाव का स्वामी मंगल एक क्रूर ग्रह जो स्वयं दूसरे क्रूर ग्रह शनि से दृष्ट है। शनि की दृष्टि अष्टम भाव पर ठीक नहीं है। कोई शुभ दृष्टि भी नहीं है।

निर्णयः पैरा 11.11 में दिए गए पूर्ण आयु के नियम यहां नहीं लागू हो रहे हैं।

11. गजकेसरी योग

इस योग से दीर्घ आयु प्राप्त होती है, परन्तु यह योग भी पीड़ित है। यह योग भी षष्ठ एवं द्वादश भाव में बन रहा है, इसलिए इसका फल पूर्ण नहीं हो सकता।

12. पूर्ण आयु से मध्य आयु होने के निम्नलिखित कारण हैं–

(*i*) जन्म पत्री में दुर्घटना के योग विद्यमान हैं।

(क) चंद्रमा से मंगल अष्टम भाव में है।

(ख) लग्न से केन्द्र में दो क्रूर और एक एक शुभ ग्रह, परन्तु वह भी अस्त है।

(ग) लग्नेश मंगल तथा चंद्रमा दोनों पीड़ित हैं।

(घ) चंद्रमा से गुरु केन्द्र में है परन्तु वह भी शनि व राहू से युति कर रहा है।

(ङ) लग्न से अष्टम भाव में कोई सौम्यग्रह नहीं है। शनि की क्रूर दृष्टि अष्टम भाव व अष्टमेश मंगल पर है। (शनि अष्टम में होने से आयु वृद्धि करता है परन्तु उसकी दृष्टि शुभ नहीं होती)

निर्णयः जब भी क्रूर ग्रहों का गोचर इन संवेदनशील बिन्दुओं पर से गुजरता हे तथा साथ ही अशुभ या पापी या मारक ग्रहों की दशांर्तदशा आ जाए जो जातक को मृत्यु भय होता है। जातक की मृत्यु एक दुर्घटना में हुई। उस समय चंद्रमा की महादशा, गुरु का अंतर तथा बुध का प्रत्यंतर चल रहा था।

(क) चंद्रमा द्वादश में निर्बल तथा पीड़ित है।

(ख) गुरु नवमेश तथा द्वादशेश, महादशानाथ से सप्तम में वह भी षष्ठ भाव में पीड़ित है। राहू रहस्यमय घटना दिखाता है। महादशा नाथ से सप्तम में बैठना भी मारकत्व देता है।

(ग) प्रत्यंतर दशा बुध तृतीयेश तथा षष्ठेश (अशुभ स्थानों का स्वामी) एकादश अशुभ स्थान में, महादशा नाथ चंद्रमा से द्वादश तथा अंर्तदशा नाथ से छठे (षडाष्टक योग बना रहा है।) मंगल अष्टमेश बुध के नवांश में बैठा है (देखें पैरा 11.22.11)

(घ) गोचर–चंद्रमा सिंह में (जन्म राशि से छठे स्थान), शनि (वक्री) तृतीय भाव में होकर चंद्रमा को दशम दृष्टि से देख रहा है साथ ही गोचर के चंद्रमा तृतीय तथा मंगल को सप्तम दृष्टि से देख रहा है। मंगल वृश्चिक राशि अष्टम भाव से गुजर रहा था। गोचर में लग्नेश मंगल राहू व शनि से पीड़ित था।

लग्नेश, लग्न तथा चंद्रमा का पीड़ित होना और अशुभ व मारक ग्रहों की अंतर्दशा/प्रत्यंतर दशा जातक की आयु को खण्डित करके दुर्घटना में अकाल मृत्यु/मृत्यृ दे गई।

जातक के मित्र श्री झा, जो हमारे पास ज्योतिषीय चर्चा के लिए आया करते थे, के द्वारा यह निर्देश कि वह उस उत्सव में न भाग ले, उनके जीवन को भय है, मेरे गुरु जी के घर पर यह समाचार सुनाने को कह दिया गया था। परन्तु होनी बलवान है।

इति

मूल त्रिकोण

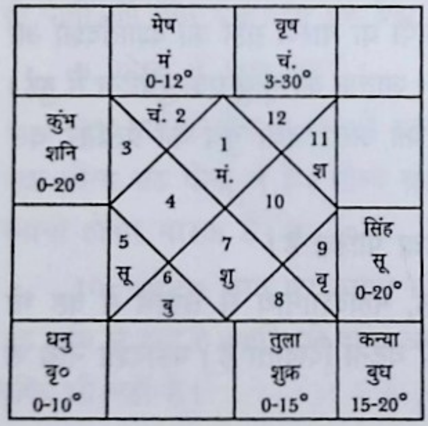

उच्च स्थान

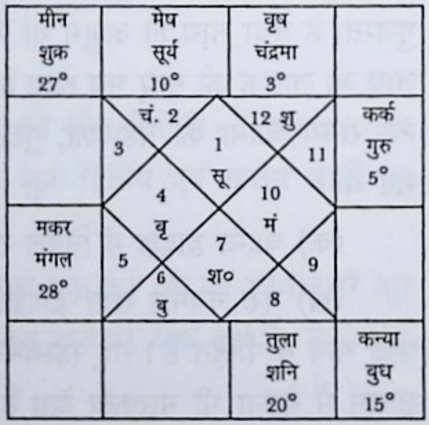

नवांश चक्र

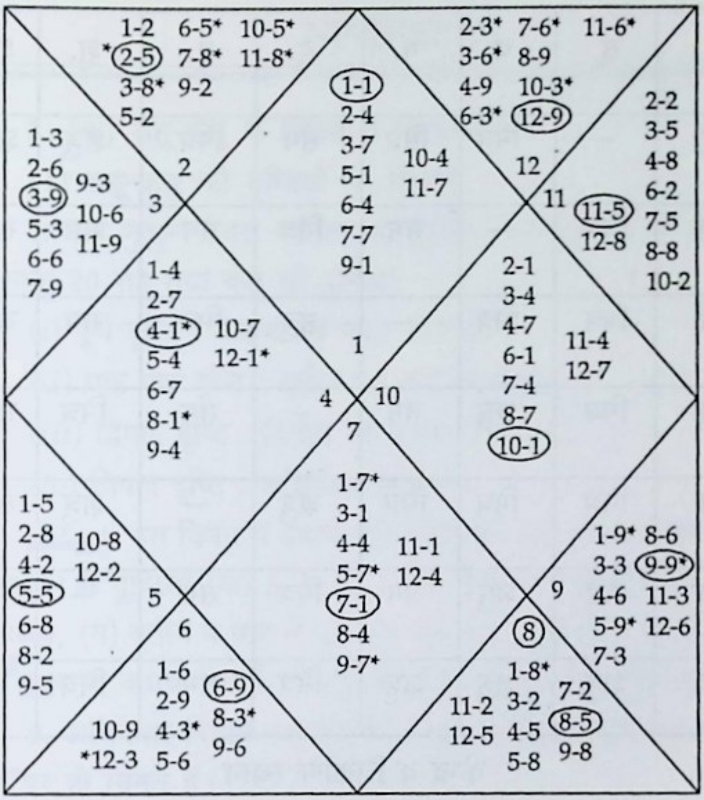

नोट—(*i*) जितने गोले लगे हैं वह वर्गोत्तम नवांश को दिखाते हैं, जैसे चर में पहला, स्थिर में पांचवाँ तथा द्विस्वभाव में नवाँ वर्गोत्तम होता है।

(*ii*) जिन पर * लगा है वह वृष में 6, कर्क में 3, कन्या में 3, तुला में 3, धनु में 3, मीन में 6, कुल 24 पुष्कर नवांश है। जिसमें वृष में 1, कर्क में 1, धनु में 1, कुल 3 वर्गोत्तम भी हैं।

नवजात शिशु की कुण्डली में (पायों का ज्ञान)

लग्न से चंद्रमा की स्थिति का फल

प्रथम, षष्ठ व एकादश में हो तो **सोने** के पाये-अशुभ

द्वितीय, पंचम नवम में हो तो **चांदी** के पाये-शुभ

तृतीय, सप्तम, दशम में हो तो **तांबे** के पाये-शुभ

चतुर्थ, अष्टम, द्वादश में हो तो **लोहे** के पाये-अशुभ

शत्रु-मित्र-चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सू.	–	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चं	मित्र	–	सम	मित्र	सम	सम	सम
मं	मित्र	मित्र	–	शत्रु	मित्र	सम	सम
बु	मित्र	शत्रु	सम	–	सम	मित्र	सम
बृ	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–	शत्रु	सम
शु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	–	मित्र
श.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	–

केन्द्र व त्रिकोण स्थान

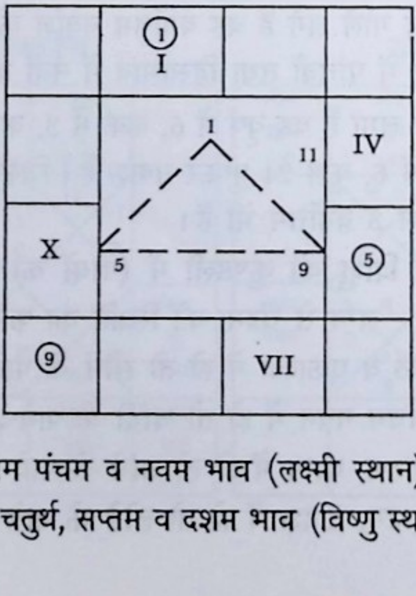

त्रिकोण स्थान-प्रथम पंचम व नवम भाव (लक्ष्मी स्थान) जैसे①,⑤,⑨
केन्द्र स्थान-प्रथम, चतुर्थ, सप्तम व दशम भाव (विष्णु स्थान) I, IV, VII, X

अनुबद्ध IV
स्पष्टीकरण

I. (क) राहू-केतु के विषय में विचार

(1) राहू-केतु की दृष्टियों पर विचार

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ पर्वतीय की पुस्तक जातकभूषणम् में अध्याय 2/श्लोक 20 राहू तथा केतु की दृष्टियां

(*i*) पूर्ण दृष्टि : सप्तम एवं नवम भाव पर

(*ii*) एक पाद दृष्टि : तृतीय एवं षष्ठ भाव पर

(*iii*) द्विपाद दृष्टि : द्वितीय एवं दशम भाव पर

(*iv*) त्रिपाद दृष्टि : अधिष्ठित राशि में

नोट—1. इस विषय में प्रमाण नहीं मिलते हैं। पाराशर होरा (बम्बई से प्रकाशित) में दृष्टियां (क) 5, 7, 9, 11 वीं पूर्ण (ख) दूसरी तथा दशमी (द्विपाद), (ग) तृतीय व षष्ठ में एक पाद एवं (घ) अपनी राशि में जहां बैठा है, केतू अन्धा बताया गया है। परन्तु विद्वान इसे विश्वसनीय नहीं मानते हैं।

2. अधिकतर विद्वान राहू-केतु का प्रभाव अधिष्ठित राशि एवं सप्तम राशि पर ही मानते हैं।

3. वैद्यनाथ ने जातक पारिजात में सूर्य मंगल की ऊपर की ओर, बुध, शुक्र की कटाक्ष, चंद्र गुरु की सम तथा राहू व शनि की अधोदृष्टि बताई है।

(ख) राहू-केतु की अन्य ग्रहों के साथ मैत्री पर विचार

	सम	शत्रु	मित्र	मत
(क) राहू	बुध	सूर्य, चंद्र, मंगल	शनि, शुक्र व गुरु*	मुकुन्द दैवज्ञ एवं
(ख) केतु	बुध, गुरु	शुक्र, शनि	सूर्य, चंद्र, मंगल	सर्वार्थचिंतामणि, गोपाल रत्नाकर
(*ii*) राहु-केतु	मंगल	सूर्य, चंद्र, गुरु	बुध, शुक्र, शनि	मंत्रेश्वर

(*iii*) राहू-केतु	मेष, धनु, मीन	सिंह तथा कर्क	तुला, मकर	अन्य विद्वान
(*iv*) राहू	मंगल, गुरु, शनि	चंद्रमा	सूर्य, बुध, शुक्र	पी. एस. शास्त्री
(*v*) राहू केतु	गुरु गुरु बुध	सूर्य, चंद्र, मंगल शुक्र, शनि	शुक्र, बुध, शनि सूर्य, चंद्र, मंगल	चमत्कार चिंतामणि
(*vi*) राहू-केतु	–	सूर्य	शनि, चंद्र गुरु	फलदीपिका

*जातक भूषणम में मुकुन्द दैवज्ञ ने गुरु को राहू का मित्र केतु को सम माना है।

नोट–(1) राहू-केतु की मैत्री ऋषि सम्मत नहीं हैं। (2) बाद के आचार्यों ने राहू की कुंभ एवं केतु की सिंह राशि को मूल त्रिकोण मानकर ऐसा निर्णय लिया है जो आर्ष मत नहीं है।

(ग) (1) व्यवहार में किसी ग्रह के मित्र उन राशियों के स्वामियों को मानते हैं जो उनकी मूल त्रिकोण राशि से चौथी, बारहवीं, पांचवीं, नौवीं और आठवीं होती है। उसकी उच्च की राशि का स्वामी भी उसका मित्र होता है।

जो राशियां उस ग्रह की मूल त्रिकोण राशि से तीसरी, छठी, ग्यारहवीं, सातवीं तथा दसवीं होती उनके स्वामी शत्रु होते हैं।

(ग) (2) सम वह ग्रह है जो एक प्रकार से मित्र और दूसरी प्रकार की गणना से शत्रु बन जाते हैं।

यदि राहु की कुंभ राशि मूल त्रिकोण राशि है तो (*i*) शुक्र (वृष तथा तुला), बुध (मिथुन व कन्या), शनि (मकर) मित्र हुए। (*ii*) मंगल (मेष व वृश्चिक) चंद्रमा (षष्ठ), गुरु, धनु (एकादश), सूर्य (सप्तम) शत्रु हुए।

(*iii*) राहू तथा केतू की उच्च, मूल त्रिकोण एवं स्व राशियां, देखें तालिकाः

	स्वराशि	उच्च राशि	मूल त्रिकोण राशि	मत
(*i*) राहू केतू	कुंभ कन्या	वृष वृश्चिक	मिथुन धनु	पाराशर
(*ii*) राहू	कन्या	मिथुन	कुंभ	जातक पारिजात
(*iii*) राहू केतू	कुंभ वृश्चिक	वृष वृश्चिक	मिथुन कन्या	उ. कालामृत
(*iv*) राहू केतू	कन्या मीन	मिथुन धनु	सिंह कुंभ	गोपाल रत्नाकर
(*v*) राहू केतू	कुंभ वृश्चिक	– –	– –	जैमिनी
(*vi*) राहू-केतु	कुंभ	मिथुन	कन्या	प्रो पी. एस. शास्त्री
(*vii*) राहू केतू	– –	– –	कुंभ सिंह	अन्य विद्वान

नोट–उत्तर कालामृत के अनुसार तुला को राहू की मित्र राशि माना हैं, केतु की मित्र राशि मकर व सिंह को उसकी शत्रु राशि माना है।

(घ) राहु-केतु से फलादेश पर विचार

(*i*) यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेशसंयुतौ।

तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ।।13।। लघुपाराशरी

राहू-केतु जिस भाव में स्थित हों अथवा जिस-जिस भावेश से युति करें उनके अनुसार (शुभाशुभ या सम) फल देते हैं।

(*ii*) इसकी अपनी कोई राशि नहीं होती। वह त्रिकोण में हों तो शुभफल, त्रिषडाय में हो तो पापफल, केन्द्र, द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो समफल प्रदान करते हैं।

अष्टम भाव में स्थित होने पर अति पाप फल। परन्तु लग्न में हो तो पूर्ण शुभ फल देते हैं।

(*iii*) भाव एवं भावेश दोनों के शुभाशुभ के अनुसार फल का विचार करना चाहिए। यदि वह केन्द्र में त्रिकोणेश के साथ या त्रिकोण में केन्द्रेश के साथ हो तो वह योगकारक हो जाता है।

यदि वह त्रिकोण में त्रिकोणेश के साथ हो तो पूर्ण शुभ, त्रिषडाय में किसी त्रिषडायधीश के साथ हो तो पूर्ण पाप, द्वितीय या सप्तम में मारकेश के साथ हो तो पूर्ण मारकेश तथा केन्द्रेश के साथ बैठने पर सम फल करता है।

यदि त्रिकोण में त्रिषडायधीश के साथ हो तो त्रिकोण एवं त्रिषडाय के बलाबल के अनुसार मिश्रित फल कथन करना है।

एक से अधिक ग्रहों के साथ होने पर, जिस भाव व भावेशों के साथ बैठा है उनके शुभाशुभ या मिश्रित के अनुसार प्रभाव होगा।

नोटः राहू-केतु की किसी न किसी भाव में तो स्थिति रहती है परन्तु उनकी किसी भावेश से युति कभी-कभी होती है। भाव में स्थिति से अधिक भावेश से युति का फल अधिक होता है।

(*iv*) **तमो ग्रहौ शुभारुढ़ाव सम्बन्धेन केनचित्।**
अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योगकारकौ।।36।। लघुपाराशरी

राहु केतु शुभ स्थान में अवस्थित हों, किसी योगकारक से सम्बन्ध करते हों या नहीं, तब भी योगकारक ग्रह की अन्तर्दशा में योगज फल देते हैं।

यह जिस भाव में हो उस भाव के अनुसार फल देते हैं। पंचम तथा नवम में स्थित राहू/केतु त्रिकोणेश के समान शुभ फल देते हैं।

(क) केन्द्राधिपत्य दोष

II. (क) **न दिशन्ति शुभं नृणां सौम्याः केन्द्राधियाः यदि।**
क्रूराश्चेदशुभं ह्योते प्रबलाश्चोत्तरोत्तरम्।।7।। लघुपाराशरी

यदि शुभ ग्रह केन्द्रेश हों तो मनुष्य को शुभ फल तथा पापग्रह केन्द्रेश हों तो अशुभ फल देते नहीं देते। ये उत्तरोत्तर बलवान होते हैं। गुरु, शुक्र शुभ ग्रह युत बुध एवं पूर्ण चंद्रमा ये चारों शुभ ग्रह होते हैं। यदि यह चतुर्थ, सप्तम या दशम भाव के स्वामी हों तो अपनी दशा अन्तर्दशा में शुभ फल नहीं देते। गुरु एवं शुक्र में मारकत्व होने पर यह दोष बलवान हो जाता है।

(ख) केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान्गुरुशुक्रयोः
मारकत्त्वेऽपि तयोर्मारकस्थान संस्थितिः
बुध स्तदनु चंद्रोऽपि भवेत्तदनुताद्विधः।।10½।। लघुपाराशरी

गुरु तथा शुक्र में कारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर केन्द्राधिपत्य-दोष. बलवान होता है। इनकी कारक स्थान में स्थिति बलवान होती है। उसके बाद बुध तथा उसके बाद चंद्रमा भी वैसे ही होते हैं।

(ग) त्रिक एवं त्रिषडाय के स्वामी

(*i*) लाभेश एकादशेश प्रबलतम पापी

(*ii*) अष्टमेश प्रबलतम पापी

(*iii*) द्वितीय एवं द्वादश भाव पापी नहीं होते इसलिए पापफल दायक नहीं देते।

(*iv*) तृतीय एवं षष्ठ स्थान पापी परन्तु लाभेश व अष्टमेश से कम पापी होते हैं।

(घ) त्रिक स्थान के स्वामी

त्रिषडायधिपा सर्वे ग्रहा पापफलप्रदाः पाराशर 32/4)
व्ययद्वितीयरन्ध्रेशाः साहचर्यात् फलप्रदाः।।

तृतीय, षष्ठ तथा एकादश के स्वामी क्रूर होते हैं तथा दुष्फल देते हैं। द्वितीयेश, द्वादशेश एवं अष्टमेश का फल उनकी संगति पर निर्भर करता है।

(ङ) फलदीपिका योगाध्याय श्लोक

(ख) (*i*) यदि कोई भावेश 2, 8, 12 में होकर भी शुभयुक्त दृष्ट हो, राशि नवांशादि में बली हो तो अशुभफल नहीं देता है।

(*ii*) 6 8, 11 के स्वामी यदि बलवान हों और केन्द्र व त्रिकोणों में बैठे हों तथा 1, 10, 4, 9 भावेश निर्बल, रश्मिहीन हों और 6, 8, 12 में बैठे हों तो अशुभ योग बनता है।

(*iii*) 6, 8 12 भावों के स्वामी निर्बल होकर केंद्र व त्रिकोण में बैठे हों तथा 1, 10, 4 तथा 9वें भावों के स्वामी बलवान होकर 6, 8, 12 में अवस्थित हो तो जातक धनवान, भाग्यवान, धार्मिक एवं सर्वसौख्य सम्पन्न होता है।

(*iv*) 6, 8, 12 के स्वामी इन्हीं भावों में बली हों तो और भी शुभ होते हैं।

(*v*) द्वितीयेश तथा द्वादशेश–यह पापी नहीं हैं और दुष्फल नहीं देते।

अनुबद्ध V
(अध्याय 13)
ज्योतिषी योगों पर चर्चा

योगों के न होने पर जातक को जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त होना असंभव होता है। जातक विद्वान, बलवान परिश्रमी तथा योग्य होने पर भी किसी की सहायता के बिना ध्येय की प्राप्ति नहीं कर पाता। मानव सामाजिक प्राणी है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम व योग की आवश्यकता होती है। प्रभु की कृपा प्राप्त करने के लिए भक्ति व साधना करनी होती है।

ज्योतिष में ग्रह स्थिति के फल में अन्य ग्रहों के संबंध (योग) होने पर चार चाँद लग जाते हैं। अनेकों पुस्तकों में योग के फलों की चर्चा हुई है। परन्तु योग के बनने के पीछे रहस्य की चर्चा कहीं नहीं हुई है। यह भी जानना होगा कि योग का फल कितना और कब होगा। *ज्योतिषिय सूत्रों का अर्थ लगाते समय उनका आधुनीकरण करना होगा।* ऋषियों ने योगों को नाम दिया है जो उनके प्रभाव को इंगित करता है।

1. ग्रहों के मध्य कई प्रकार के संबंध होते हैं, इन संबंधों को ही योग कहा गया है; उनमें से कुछ की चर्चा अध्याय 13 में कर चुके हैं, कुछ और मुख्य-मुख्य योगों की चर्चा यहां कर रहे है।

(*i*) स्थान परिवर्तन—जब ग्रह परस्पर राशियों में स्थान परिवर्तन कर लेते हैं तो यह योग बनता है जैसे मेष का स्वामी मंगल सिंह राशि में बैठ जाए और सूर्य मेष राशि में बैठा हो। गुरु कुंभ में शनि की राशि में शनि मीन/धनु में गुरु की राशि में बैठा हो।

उदाहरण यह एक प्रकार का सब से उत्तम राज योग है।

श्रीमति इन्दिरा गाँधी की कुण्डली परिवर्तन योग—

(*i*) मंगल तथा सूर्य-द्वितीयेश तथा पंचमेश

(*ii*) गुरु तथा शुक्र-लाभेश तथा षष्ठेश

(*iii*) शनि तथा चं० सप्तमेश तथा लग्नेश

(देखें पैरा 13.5 (*ii*)

(*ii*) जब दो ग्रहों की युति एक ही भाव में हो, जैसे सूर्य तथा मंगल दोनों ही मेष या सिंह राशि में हो। दोनों में एक केन्द्र तथा दूसरा त्रिकोण का स्वामी हो। यहां मेष लग्न या सिंह जो भी हो तो सूर्य तथा मंगल दोने मिलकर राज योग बनायेंगे।

(*iii*) **परस्पर दृष्टि संबंध** जब दो ग्रह एक दूसरों को सम-सप्तग, चतुर्थ दशम अथवा मंगल व शनि आमने सामने हो (मेष व तुला) या मिथुन में मंगल व कन्या में शनि हो, यह योग संभव होता है।

(*iv*) जब ग्रह परस्पर **एक दूसरे से केंद्र** में हों उपरोक्त (*iii*) में केन्द्र में भी है और परस्पर दृष्टि भी है।

(*v*) एक दूसरे से **त्रिकोण में** हों

(*vi*) **एकाकी संबंध**–एक ग्रह दूसरे ग्रह को देखता हो परन्तु दूसरा न देखे। श्री एल. एन. मिश्रा की कुण्डली में गुरु कन्या से दशम भावस्थ सूर्य व शुक्र को मकर राशि में देख रहे हैं। परन्तु वह दोनों गुरु को नहीं देख रहे।

(*vii*) **सूक्ष्म संबंधः**

(क) नक्षत्रों का परिवर्तन–जैसे (पैरा 11.15) श्री एल. एन. मिश्रा जी की कुण्डली में मंगल-गुरु एक दूसरे के नक्षत्र में हैं। मंगल 6/28°-40 वृहस्पति का नक्षत्र, बृहस्पति (5/26°-0') मंगल के नक्षत्र में।

(ख) सूर्य (9/19-55) चंद्रमा के नक्षत्र में चंद्रमा बुध के नक्षत्र में, बुध मंगल के नक्षत्र में/मंगल स्वयं वृहस्पति के नक्षत्र परिवर्तन किए हुए है। इस प्रकार सूर्य, चंद्रमा, बुध मंगल तथा गुरु का भी परस्पर संबंध है।

यदि ग्रह परस्पर शत्रु न हों तो निश्चित रूप से एक दूसरे को बल प्रदान करते हैं।

अध्याय 13 में सूर्य, चंद्रमा तथा लग्न से बनने वाले कुछ योगों की चर्चा की गई थी। केन्द्र-त्रिकोण के संबंधों द्वारा बनने वाले राजयोगों की भी चर्चा की गई थी।

समय की मांग तथा कुछ पाठकों के आग्रह को ध्यान में रखते हुए कुछ अन्य योगों की चर्चा की जा रही है।

यदि एक शुभ ग्रह स्वराशि, मित्र राशि, मूलत्रिकोण राशि, उच्च की राशि का होकर 12 राशियों में से किसी स्थान पर भी बैठा हो तो निम्नयोग बनते हैं–

(*i*) **चमर योग**–जब उपरोक्त स्थिति का ग्रह लग्न में बैठा हो–जातक शुभ आचरण वाला होकर शुक्ल पक्ष के चंद्रमा की तरह उन्नति करेगा।

(*ii*) **धन योग**–यदि उपरोक्त स्थिति का ग्रह द्वितीय भाव में बैठा हो–जातक धनवान होगा, उसके पास धान्य, रत्नों की भरमार होगी और वह राजा होगा। देखें श्री रामाकृष्णा परमहंस की कुण्डली (पैरा 8-11), श्री गोलवाकर जी (पैरा 8.10)

(*iii*) **शोर्य योग**–यदि उपरोक्त ग्रहस्थिति तृतीय भाव में हो। ऐसा जातक प्रसिद्ध, अन्य लोगों पर शासन करने वाला, मित्रता पूर्ण व्यक्तित्व, राजा के कार्य में संलग्न, बहादुर, यशस्वी बहिन भाई वाला होगा (देखें गुरु नानक की कुण्डली (पैरा 8.5)

(*iv*) **जलाधि योग**– यदि उपरोक्त स्थिति चतुर्थ भाव में हो। जातक का एक बड़ा परिवार होगा, गाय, भैंस, अन्य पशु, वस्त्राभूषण सुन्दर भवन, वाहनों का स्वामी, राजा से सम्मान प्राप्त, भगवान व ब्राह्मणों का सम्मान व पूजा करने वाला होगा। आज के युग में वह एक भवननिर्माण करने वाला (बिल्डर) होगा। (देखें कुण्डली पैरा 13.5 पर)

(*v*) **छत्र योग**– उपरोक्त स्थिति यदि **पंचम भाव** में स्थित हो। जातक का जीवन सुखी, सम्पन्न, सु संतान वाला, भाग्यवान, धनवान उच्चविचारों वाला, मधुर भाषी, तीव्र बुद्धि, अच्छा मार्गदर्शक और सम्मानित व्यक्ति होगा। देखें कुण्डली श्री मुरारजी देसाई पैरा 13.5 (2) तथा वीर सावरकर पैरा 13.7 (4) पर

(*vi*) **अस्त्र योग**– यदि उपरोक्त स्थिति षष्ठ भाव में हो। जातक वीर शत्रु हन्ता, झगड़ालू, क्रूर, सुहढशरीर वाला अक्खड़पन वाला स्वाभिमानी होगा।

(*vii*) यदि उपरोक्त स्थिति सप्तम भाव में हो। जातक सम्पन्न और गुणों में पिता से भी आगे निकलने वाला, सुन्दर, दूसरों के द्वारा प्रशंसनीय और धनवान होगा।

(*viii*) **असुर योग**– उपरोक्त ग्रह स्थिति यदि अष्टम भाव में हो। जातक कहानीयाँ पढ़ने वाला, दूसरों के काम में व्यवधान डालने वाला, दूसरों के लिए समस्या उत्पन्न करने वाला, स्वार्थी होगा।

(*ix*) **भाग्य योग**– नवम भाव में जब उपरोक्त ग्रह अवस्थित हो, जातक के उपर छत्र, पालकी पर चढ़ने वाला, उसके सम्मुख ढोल बाजा बजता जाए, स्थिर लक्ष्मीवान, राजाओं द्वारा सम्मानित पित्रों की पूजा करने वाला ब्राह्मणों का आदर, भगवान का भक्त, चरित्रवान पारिवारिक परम्पराओं का मानने वाला होता है।

(*x*) **ख्याति योग**– दशम भाव में यदि उपरोक्त ग्रह स्थिति हो तो जातक अपने कर्मों के कारण सम्मानित व प्रशंसा प्राप्त करेगा। उसका व्यवहार उसकी प्रशंसा का कारण होगा, सज्जनों का ध्यान रखने वाला, साधु विद्वान व सन्तों का आदर करने वाला, अपार धन, सम्पत्ति, पुत्रपौत्रादि भाग्य, पत्नी से प्रसन्नता तथा यशश्वी, जन्म से राजा और अपने आधीनों की रक्षा तथा नियमों का पालन करता होगा। (देखें डा० रमन तथा श्री के. एन राव की कुण्डली पैरा 13.5 (5)

(*xi*) **पारिजात योग**– एकादश भाव में उपरोक्त स्थिति होने पर यह योग बनता है। ऐसा जातक पृथ्वी, धन सम्पत्ति सुखी परिवार, सुन्दर व धार्मिक सुचरित्र, महान व्यक्तियों की गाथा सुनने वाला धार्मिक यात्रा व उत्सव मनाने वाला।

(*xii*) **मूसल योग**– द्वादश भाव में बैठा हुआ ग्रह, स्वक्षेत्री, मित्र क्षेत्री, उच्च का, मूलत्रिकोण आदि का हो तो यह योग बनता है। जातक धन संचय करने वाला परिश्रम करने वाला कभी साहस न छोड़ने वाला, हताश न होने वाला, क्रूर बिना सोचे विचारे काम

करने वाला फिजूल खर्च न करने वाला, मृत्यु उपरांत मोक्ष प्राप्त करने वाला होता है।

2. **गौरी योग**– यदि चंद्रमा स्वराशि, उच्चका होकर गुरू से दृष्ट हो और लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो।
   जातक सुन्दर, यशस्वी, राजा का मित्र, गुणी, पुत्रवान, सम्मानित परिवार से, परिश्रमी, सफल तथा शत्रु पर काबू पाने वाला होगा।
3. **वसुमान योग**– सभी सौभ्य ग्रह तृतीय, षष्ठ, दशम तथा एकादश भाव में हो।
   जातक धनवान परिवार (में जन्म लेगा) से होगा।
4. **पुश्कल योग**– लग्न पर बलवान ग्रह की दृष्टि हो, लग्नेश तथा चंद्रमा की राशि केन्द्र में हो और मित्र राशि में हो।
   जातक को राजा से सम्मान, यशस्वी होगा, सुन्दर वस्त्राभूषण का स्वामी मधुर भाषी सामर्थवान व्यक्ति होगा।
5. **शुभ माला योग**– सभी ग्रह लगातार पाँच/छः/सात भावों में, बिना बीच में कोई भाव खाली छोड़े, अवस्थित हों।
   जातक नेता बनता है, राजा द्वारा प्रशंसित, अधिकार प्राप्त करता है, दानी, दूसरे के लिए कल्याण कार्य करने वाला व उनका सहायक होता है (समाज सेवी/नेता) बन्धु, पत्नि व पुत्रों का प्यारा होता है।
6. **अशुभमाला योग** (माटिका योग) यदि सभी ग्रह छठे, आठवें तथा द्वादश भावों में अवस्थित हों। जातक गन्दे आचरण वाला, गमगीन, डरपोक, झगड़ालू, बदनाम तथा विद्वानों का अनादर करने वाला होता है।
7. **लक्ष्मी योग**– नवमेश तथा शुक्र उच्च राशि में अवस्थित हों, या स्व राशि में हो तथा साथ ही केन्द्र व त्रिकोण में भी हों
   जातक का अच्छा स्वास्थ्य, सम्मानित विद्वान, भाग्यवान भार्या वाला, परिवार में सुख-सम्पदा भरपूर, लक्ष्मी देवी की साक्षात कृपा सुन्दर व मूल्यवान वाहन, प्रसन्न एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व जिसे सभी प्यार करते हों, राजा के सदृश्य और दानवीर होगा।

8. सरस्वती योग—शुक्र, बृहस्पति तथा बुध लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम, पंचम, नवम तथा द्वितीय तथा गुरू उच्च का, स्वराशि का या मूलत्रिकोण का हो।

देखें कुण्डली श्री रामा कृष्ण परमहंस

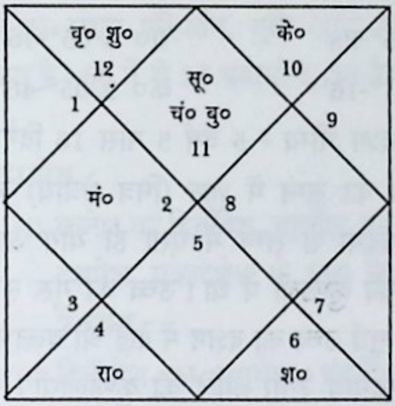

लग्न = 10/9° शु० 11/29°-10′

सू० = 10/9°-13 श० 05/7°-21′

चं० = 10/10–20 रा० 03/02°–00′

मं० = 1/24–0 के० 09/02°–0′

बु० = 10/7–0 वृ० = 11/10–20

राहू महा दशा शेष = 13 वर्ष 0 मास 18 दिन वृ० स्वराशि का द्वितीय में, शुक्र उच्च का, बुध लग्न में (मित्र राशि का)

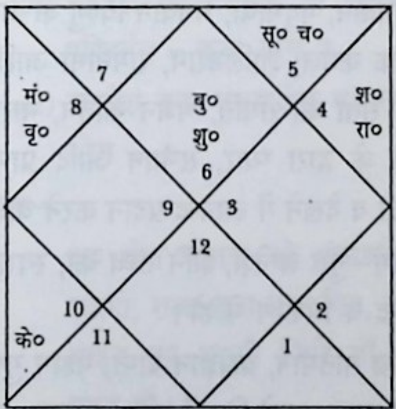

डा० राधा कृष्णन

जन्मतिथि = 5 सितम्बर 1888

लग्न– 5/02°-10'	वृ० 7/06°-57'
सू० 4/20°-40'	शु० 5/05°-28'
चं० 4/03°-15'	श० 3/22°-04'
मं० 5/05°-28'	रा० 3/05°-46'
बु० 5/01°-16'	क० 9/05°-46'

के० महादशा भोग्य - 5 वर्ष 3 मास 16 दिन

बुध उच्च का लग्न में शुक्र (मित्र क्षेत्रीय) लग्न में, गुरु (मित्र क्षेत्रीय) चंद्रमा से लग्न में ऐसा ही योग आदि शंकराचार्य जी महाराज की कुण्डली में था। उच्च का गुरू लग्न में, बुध व शुक्र दशम में, सूर्य उच्च का दशम में देखें श्री वल्लभाचार्य, ऐनी वसन्त, डा० रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि की कुण्डलीयाँ।

9. **श्री कंठ योग**–लग्नेश, सूर्य, चंद्रमा यदि उच्च के हो, स्वराशि के हों, मित्र राशि के हों तथा केन्द्र व त्रिकोण में हों।
   जातक एक संत होगा, शिव भक्त होगा, शैव होगा, सतों की सेवा करने वाला, सभी धार्मिक व्यक्तियों व महान लोगों का सम्मान करेगा। रूद्राक्ष धारण करने वाला होगा।

10. **श्रीनाथ योग**–नवमेश, शुक्र तथा बुध उच्च के, स्वगृही, मित्रगृही तथा केन्द्र व त्रिकोण में अवस्थित हों।
   जातक धनवान, मृदुभाषी, भगवान विष्णु के अस्त्र शस्त्र का चिन्ह (शंख, चंक्र कमल, शालिगराम, रामनौमी आदि) उसके शरीर पर होगें, उसे संतो की संगति, भजन कीर्तन, नारायण की भक्ति में रत, सभी के द्वारा प्यार, सम्मान आदि प्राप्त कर्ता आकर्षण, प्रसन्न मुद्रा व देखने में आनन्द प्रदान करने वाला व्यक्तित्व होगा।

11. **वृन्ची योग**–गुरू लग्नेश, शनि उच्च का, स्वराशि, मित्र राशि का होकर केन्द्र व त्रिकोण में हो।
   जातक तीव्र मतिमान, ब्रह्मज्ञान प्राप्त, महान गुणों से सम्पन्न, वेदों को मानने वाला, अच्छे शिष्यों वाला, सज्जन, धनवान अच्छे (भद्र)

परिवार वाला, तेज मुख पर, चिरजीवी, इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाला, संयंमी और राजा से आदर प्राप्त करने वाला।

12. (क) **महायोग** (ख) **खलयोग** तथा (ग) **दैन्य योगों** की चर्चा "फलदीपिका" में वर्णित हैं। 66 ऐसे योग बताये गये हैं। जहाँ दो ग्रहों का स्थान परिवर्तन, युति आदि सभी बारह भावों को लिया गया है। 66 में से 28 **महायोग**, 30 **दैन्य योग** तथा 8 **खल योग** हैं।

(क) **महायोग**

(*i*) लग्नेश का द्वितीयेश, चतुर्थेश, पंचमेश नवमेश सप्तमेश, दशमेश, एकादशेश के साथ स्थान परिवर्तन = **कुल 7 योग**

(*ii*) द्वितीयेश का चतुर्थेश, पंचमेश, सप्तमेश, नवमेश, दशंमेश, एकादशेश के साथ स्थान परिवर्तन = **6 योग**

(*iii*) चतुर्थेश का पंचमेश, सप्तमेश, नवमेश, दशमेश, एकादशेश के साथ राशि परिवर्तन = **कुल 5 योग**

(*iv*) पंचमेश का सप्तमेश, नवमेश, दशमेश, तथा एकादशेश के साथ स्थान परिवर्तन = **कुल योग 4**

(*v*) सप्तमेश का नवमेश, दशमेश, तथा एकादशेश के साथ राशि परिवर्तन = **कुल योग = 3**

(*vi*) नवमेश का दशमेश या एकादशेश के साथ राशि परिवर्तन = **कुल योग 2**

(*vii*) दशमेश तथा एकादशेश का स्थान परिवर्तन = **कुल योग = 1**

फल—

यह योग जातक को सामर्थ्यवान, वस्त्राभूषणों का स्वामी, राजा द्वारा सम्मानित, उच्च पदासीन, पुत्रवान, वाहन का स्वामी जिसे माँ लक्ष्मी का आर्शिवाद प्राप्त हो।

(ख) **खल योग**—यहाँ महत्त्वपूर्ण घटक तृतीय भाव है—

(*i*) लग्नेश तथा तृतीयेश का राशि परिवर्तन
(*ii*) तृतीयेश तथा द्वितीयेश का स्थान परिवर्तन
(*iii*) तृतीयेश तथा चतुर्थेश का स्थान परिवर्तन
(*iv*) तृतीयेश तथा पंचमेश का राशि परिवर्तन
(*v*) तृतीयेश तथा सप्तमेश का राशि परिवर्तन
(*vi*) तृतीयेश तथा नवमेश का स्थान परिवर्तन
(*vii*) तृतीयेश का दशमेश के साथ स्थान परिवर्तन
(*viii*) तृतीयेश तथा एकादशेश का स्थान परिवर्तन

फल—

उपरोक्त स्थिति में जातक क्रूर, कभी-2 भाग्योदय, कभी-कभी विनम्र, कभी रूखा, भद्दा व्यवहार करने वाला कभी सफल, कभी असफल, कभी निर्धन कभी धनवान कभी भी स्थिर जीवन न प्राप्त करने वाला।

(ग) **दैन्य योग**—यह योग छठे, आठवें तथा बाहरवें भावों के स्वामियों का अन्य एकादश भावों के स्वामियों के साथ स्थान परिवर्तन होने से बनता है।

(*i*) षष्ठेश का अन्य एकादश भावों में से किसी एक के साथ स्थान परिवर्तन = कुल 11 योग
(*ii*) अष्टमेश का अन्य एकादश भावों के स्वामीयों में से किसी भावेश के साथ स्थान परिवर्तन = कुल 10 योग
(*iii*) द्वादशेश का अन्य एकादश भावों के स्वामियों में से किसी एक के साथ स्थान परिवर्तन = कुल 9 योग

फल—

उपरोक्त योगों में उत्पन्न जातक बदनाम, मूर्ख, बकवास करने वाला, गन्दे कार्य करने वाला, शत्रुओं द्वारा पीड़ित, अभद्र भाषी, निष्फल रहने वाला, अस्थिर बुद्धि आदि के कारण दुखी।

13. **पर्वत योग**—यदि लग्नेश केन्द्र/त्रिकोण में तथा उच्च का व स्वराशि का हो (लग्न में ही हो)

जातक धनवान, सुखी, प्रयत्नों में सफलता प्राप्त करने वाला, स्थिर लाभ प्राप्ती, धर्मशाला, मन्दिर बनवाने वाला, राज होगा।

14. **खल योग**—जिस राशि में लग्नेश बैठा हो, उसका स्वामी, जिस राशि में बैठा हो, उसका स्वामी यदि उच्च का, स्वराशि का होकर केन्द्र में बैठा हो यदि लग्नेश लग्न में हो तब ही यह फल होगा। ऐसा जातक उन्नतिशील, लगातार स्मृद्धि प्राप्त करने वाला, प्रसन्न चित्त, समाज कल्याण कार्यों में रत स्थिर व्यवसाय, सम्मानित व्यक्ति होगा।

15. **शंख योग**—नवमेश तथा दशमेश एक साथ हों, केन्द्र या त्रिकोण में अवस्थित हों।

या

क्रेन्द्र व त्रिकोण के स्वामी एक साथ किसी शुभ भाव में बैठ जाऐं। जातक राजा के समान होगा, मूल्यवान व सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, बाजे व शंख ध्वनि के साथ यात्रा करने वाला, पालकी में चलने वाला तथा उसके सिर पर छत्र का होना, आगे-आगे हाथीयों का होना। स्त्रियों की संगति में सभी सुख प्राप्त करने वाला होगा।

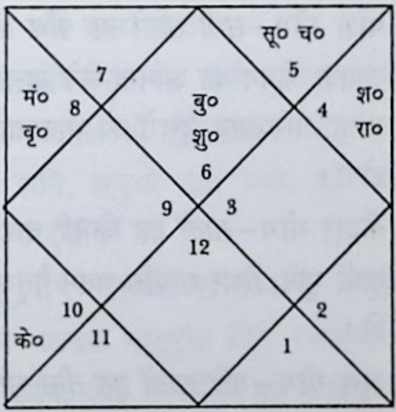

डा० एस राधा कृष्णन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति

लग्न 5/02°-70' गुरू 7/06°-51'

सू० 4/20°-40' शु० 5/05°-28'

चं० 4/03°-15' श० 3/22°-04'

मं० 7/04°-01' रा० 3/05°-46'

बु० 5/01°-16' क० 9/05°-46'

केतू महादशा शेष = 5 वर्ष 3 मास 16 दिन

नवमेश तथा दशमेश लग्न में अवस्थित है, दशमेश उच्च का है, नवमेश मित्र क्षेत्रीय है।

16. यदि किसी कुण्डली में उपरोक्त योग विद्यमान न हो, तब निम्न बिन्दुओं पर विचार करें–

(*i*) **वकलाकी-वीणा योग**–*यदि सातों ग्रह सात भावों में अवस्थित हो*–

जातक संगीत, नृत्य में रूचि रखने वाला सांसारिक सुखों का आनन्द लेने वाला एक धनवान व्यक्ति होगा।

(*ii*) **दामिनी योग (धामा योग)**–*यदि सात ग्रह छः राशियों में अवस्थित हों,*

जातक राजा होगा, दूसरों के लिए त्याग करने वाला, दानी कृपालु स्वभाव वाला होगा।

(*iii*) **पाश योग**–*सभी सातों ग्रह पाँच भावों में बैठे हों*–

जातक जीवन का आनन्द लेने वाला, सुविचार व व्यवहार वाला, चरित्रवान, दूसरों की सहायता करने वाला, धनवान होगा।

(*iv*) **केदार योग**–*सातों ग्रह किन्ही चार भावों में हों*

कृषी भूमि, स्थिर सम्पत्ति-भवन पैतृक धन के रूप में प्राप्त हो।

(*v*) **शूल योग**–*यदि सातों ग्रह तीन भावों में हो,*

जातक निर्धन, क्रूर, हिंसक प्रकृति का होगा।

(*vi*) **युग-यिगा**–*यदि सातों ग्रह दो राशियों में हो,*
जातक निर्धन व पाखण्डी होगा।

(*vii*) **गोल योग**–*यदि सातों ग्रह किसी एक राशि में हों।*
जातक निर्धन, नीच लोगों की संगति करने वाला, अल्पायु, पापरत, तथा परिपक्व कारीगर नहीं होगा।
नोटः उपरोक्त सभी योग "शांक्य (संख्या) योग, नाभस योगों की चतुर्थ श्रेणी में आते हैं।

17. **अशुभ योग**–*यदि किसी भाव का स्वामी छठे, आठवें तथा बाहरवें भाव में, किसी पाप ग्रह के साथ बैठा हो या पाप ग्रह द्वारा दृष्ट हो, निम्नलिखित योगों को जन्म देता है–*

(*i*) **अव योग**–*लग्नेश यदि इस स्थिति में हो।*
जातक बदनाम, दर्दनीय स्थिति, कमज़ोर, अल्पायु वाला, दुष्टों द्वारा अपमानित, चरित्रहीन, अपंग शरीर वाला, गन्दा रहने वाला तथा व्यवसाय में उतार-चढाव झेलने वाला होगा।

(*ii*) **निस्व**–*यदि द्वितीयेश उपरोक्त स्थिति में हो।*
जातक का परिवार नहीं होगा, नीच संगति, आँख तथा दन्त रोग, बुद्धिहीन, अपुत्रवान, अशिक्षित, शत्रु द्वारा धन हानि पाने वाला होगा।

(*iii*) **मृति योग**–*तृतीयेश यदि उपरोक्त अवस्था में हो।*
फल–जातक को छोटे भाई का सुख न हो, धन, स्वास्थ्य की हानि, शत्रुओं द्वारा त्रस्त, बुरे स्वभाव व कर्मों के कारण दुखी।

(*iv*) **कुहू योग**–*चतुर्थेश का उपरोक्त स्थिति में होना–*
फल–जातक मातृसुख हीन, धनहीन, मित्रहीन, सम्पत्ति की हानि, कोई सम्मानित पद न प्राप्त हो, निवास स्थान की हानि, अपवित्र स्त्रियों को प्यार करने वाला होगा।

(*v*) **पामर योग**–*पंचमेश का उपरोक्त स्थिति में जाना*–
जातक एक कष्टमय जीवन भोगने वाला, भगवान में आस्था न रखने वाला, झूठा, धोखेबाज, बच्चों से दुःख पाने वाला, पापी तथा बुरी संगत में रहने वाला होगा।

(*vi*) **हर्ष योग**–*षष्ठेश का उपरोक्त स्थिति में होना।*
जातक का अच्छा स्वास्थ होगा, सुख भोगने वाला शत्रु-हन्ता, प्रसिद्ध सज्जनों व विद्वानों द्वारा प्यार प्राप्त करने वाला, समुचित (शानदार) मित्र व प्रतिभावान पुत्रों वाला होगा।

(*vii*) **दुष्कृति योग**–*सप्तमेश का पूर्वकथित स्थिति में अवस्थित होना*–
फल–जातक का पत्नि/पति से वियोग, अन्य पुरूष/स्त्री के साथ यौन संबंध होना, यौन रोग का होना, मधुमेह, सरकार से कष्ट तथा संबंधियों द्वारा तिरस्कृत

(*viii*) **सरल योग**–*अष्टमेश का उपरोक्त स्थिति में बैठना*–
फल–जातक दीर्घ जीवी, स्थिर बुद्धि, निडर, उन्नतिशील, विद्वान, प्रसिद्ध, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला होगा।
नोटः (*vi*), (*viii*), (*xii*) विपरीत राज योगों में आते हैं। दुष्प्रभाव के स्थान पर शुभ फल दाता हो जाते हैं।

(*ix*) **निर्भाग्य योग**–*नवमेश का उपरोक्त स्थिति में बैठना*–
फल–जातक पैतृक सम्पत्ति का नाश करने वाला, संत्तों व गुरूओं का अपमान करने वाला, अधार्मिक कर्मरत, पुराने, फटे आदि वस्त्र धारण करने वाला दयनीय स्थिति में रहने वाला होगा।

(*x*) **दुर्योग**–*दशमेश का पूवोक्त स्थिति में होना*–
फल–जातक को कर्मों का फल नहीं प्राप्त होगा, उसमें हीनता मनोग्रंथी होगी। स्वार्थी, क्रान्तिवादी, अपनी पिपासा

की शान्ति के लिए कार्य करने वाला, विदेश में वास करने वाला।

(*xi*) **दरिद्र योग**—*लाभेश का उपरोक्त स्थिति में (6, 8, 12 भावों में बैठकर क्रूर ग्रह से पीड़ित होगा)*

फल—जातक कर्ज में डूबा, गरीबों से भी गरीब, कर्ण रोग से पीड़ित, सज्जन मित्रों से वचिंत गलत दिशा में प्रयत्न करने वाला, अप्रिय भाषी दूसरों के नीचे काम करने वाला, बिना किसी प्रकार की सहायता प्राप्त करने वाला होगा।

(*xii*) **विमल योग**—*यदि द्वादशेश उपरोक्त स्थिति में अवस्थित हो।*

फल—जातक, धनवान, मिश्रित स्वभाव वाला, सुन्दर व्यवहार वाला, प्रसन्न, स्वतंत्र, उच्च कोटि का विचारक, अपने गुणों के कारण विख्यात।

18. उपरोक्त योगों के फल जानने के लिए पाठकों को किसी विद्वान, अनुभवी ज्योतिष शिक्षक का मार्गदशन, अपना ज्ञान तथा अनुभव करना होगा।

(*i*) यदि षष्ठेश, अष्टमेश तथा द्वादशेश शुभ ग्रहों के साथ व उनसे दृष्ट हों, बलवान हो (राशि व नवॉश में), और केन्द्र व त्रिकोण में हों, अति शुभ प्रदान करते हैं।

(*ii*) यदि यह तीनों (6, 8, 12 के स्वामी) बलवान होकर केन्द्र/त्रिकोण में अवस्थित हो— शुभ फल देते हैं। यदि प्रथम, दशम चतुर्थ, नवम के स्वामी षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव में हो और बलहीन हों— दुर्योग बनाते हैं।

(*iii*) यदि (*ii*) की स्थिति को बदल दिया जाए यानि षष्ठेश, अष्टमेश तथा द्वादशेश निर्बल होकर केन्द्र त्रिकोण में बैठे तथा लग्नेश, चतुर्थेश, दशमेश, नवमेश बलवान होकर छठे, आठवें व बारहवें भाव में बैठे हों, जातक भाग्यवान, धनी, धार्मिक तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होगा।

चेतावनी

19. योगों की व्याख्या करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा।

(*i*) किसी भी योग का फलित करने से पहले देश, काल, पात्र का विचार आवश्यक है।

(*ii*) कोई भी ग्रह अपना नैसर्गिक गुण व स्वभाव नहीं छोड़ता।

(*iii*) प्रत्येक भावेश को अपने भाव का फल देना होता है, हाँ, युति, दृष्टि, अवस्था, आदि के कारण कुछ फल की मात्रा में अन्तर आता है। ऐसा इसलिए होता है कि विचाराधीन भावेश निम्नलिखित फल देता है–

(क) ग्रह का अपना नैसर्गिक गुण

(ख) स्वराशि का स्वामी होने के कारण

(ग) जिस भाव में बैठा है उसका

(घ) अन्य ग्रहों से युति/दृष्टि के कारण

(ङ) जिन ग्रहों के नक्षत्र में/नवांश में वह बैठा हो।

इसका अर्थ है कि ग्रह का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है जब वह दूसरे ग्रह के घर में बैठता है, युति करता है। ग्रह स्वराशि का होकर स्वस्थ रहता है और अपना फल सरलतापूर्ण दे देता है।

(*iv*) योग/ग्रह स्थिति जन्म कुण्डली में जातक के साथ होने वाली घटनाओं का सकेंत करती है। परन्तु जातक का स्तर परिवार व समाज में, जिस वातावरण में वह रहता है इन सभी का प्रभाव भी अन्तर डालता है।

□□□

अनुबद्ध VI
(अध्याय 5)
ग्रहों का गोचर, भावों का आंकलन एवं दशाओं का फलित में प्रयोग

1. पिछले अध्यायों के अध्ययनोपराँत हमें ज्ञात हो गया है कि ग्रहों भचक्र में भ्रमण करते रहते हैं उनका भ्रमण नक्षत्रों के उपर से होता रहता है। हम यह भी जान चुके हैं कि ग्रहों की एक अपनी-अपनी गति है जिससे वह भचक्र का पूरा चक्कर लगाते हैं।

जन्म कुण्डली हमें जन्म के समय ग्रहों की आकाशीय स्थिति का ब्यौरा देती है। जिन राशियों में जन्म के समय ग्रह बैठे होते हैं वह उनकी जन्म की राशि कहलाती है। इस विषय पर अधिक प्रकाश हेतू उदाहरण के लिए भूतपूर्व भारत के प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर जी की जन्म कुण्डली लेते हैं।

उनका जन्म चैत्र शुक्र 15 (पूर्णिमा) सम्वत् 1984 शाके 1844 तदानुसार 17 अप्रैल 1927 को प्रातः 6:15 बजे बलिया, यूपी के पास एक गाँव में हुआ।

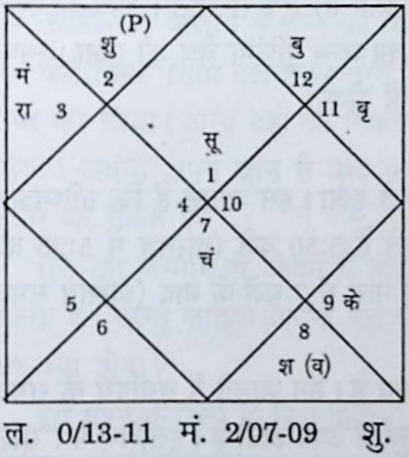

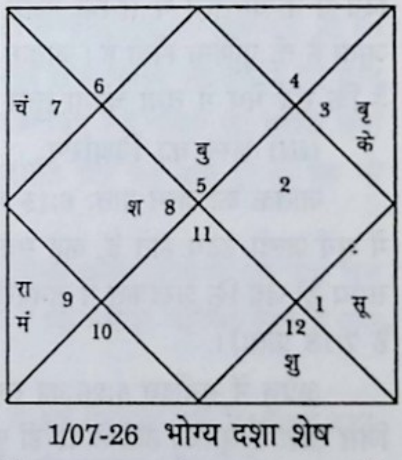

ल. 0/13-11	मं.	2/07-09	शु.	1/07-26	भोग्य दशा शेष	
सू. 0/03-11	बु.	11/06-33	श (व)	7/14-04	मं.	2 व 6 म 2 दि
चं. 6/01-53	बृ.	10/27-56	रा.	2/07-12	नोटः (P) पुष्कर नवांश	

(*i*) हम जानते हैं कि सूर्यदेव का मेष राशि में प्रवेश 13/14 अप्रैल को प्रतिवर्ष होता है। 13 अप्रैल को वैशाखी का उत्सव मनाया जाता है। इसलिए अनुमान लगाया जा सकता है कि 17 अप्रैल को भी सूर्य देव मेष राशि ही में होंगे। सूर्य 1 दिन (24 घण्टे) में एक डिग्री चलता है। इसलिए 17 ता. को मेष में 17 – 14 = 3 डिग्री के करीब होंगे। नीचे दिए गए चक्र में देखें तो सूर्यदेव मेष में 3°-11′ मिनट पर हैं।

(*ii*) जातक चैत्र शुक्र 15 (पूर्णिमा) को पैदा हुआ है इसलिए चंद्रमा सूर्य से सप्तम अथवा तुला राशि में होंगे। इस पूर्णिमा को ही चैत्र मास शुरु होगा। अथवा फाल्गुण मास का अंत होगा।

हिन्दी मास का नाम पूर्णिमा पर जिस नक्षत्र में चंद्रमा होता है गत मास का नाम उसी नक्षत्र के आधार पर होता है। फाल्गुण मास पूर्ण हुआ तो उस दिन चंद्रमा फाल्गुणी नक्षत्र में होगा (अथवा) सिंह/कन्या में होगा। चंद्रमा एक दिन में लगभग 12° से 16° तक चलता है या कहे एक राशि पार करने में 2¼ या 2½ दिन लेता है। इस हिसाब से 180° – 15 दिन में चलकर चंद्रमा मीन राशि में सूर्य के साथ आता है। जब दोनों एक ही अंश पर होते हैं तब अमावस्या होती है। मीन की अमावस्या से भारती विक्रमी संवत्सर प्रारंभ होता है। यानि चैत्र शुक्र पक्ष शुरु हुआ और चंद्रमा पुनः 15 दिन में कन्या/तुला में (चित्रा नक्षत्र होता है) सूर्य से सप्तम भाव में पहुँच जाता है तो पूर्णिमा होती है। जातक का जन्म पूर्णिमा चैत्र को हुआ। स्पष्ट है कि सूर्य मेष में तथा चंद्रमा तुला में होगा।

(*iii*) लग्न का निर्धारण

जातक का जन्म प्रातः 6:15 बजे हुआ। हम जानते हैं कि ग्रीष्मऋतु में सूर्य जल्दी उदय होते हैं, कह सकते हैं 5:30 बजे (वास्तव में 5:26 का समय है) जब कि शरदऋतु में जनवरी मास में 7 बजे के बाद (वास्तव समय है 7:18 प्रातः)।

अप्रैल में सूर्योदय 5:26 का समय है। हम जानते हैं सूर्योदय के समय जिस राशि में सूर्यदेव होते हैं वह ही पूर्व में उदय होती है। इसलिए मेष राशि 5:26 प्रातः 3° के आसपास (जो सूर्यदेव के अंश 17 अप्रैल का है) उदय हुई। जातक का जन्म भी 6:27 का है। इसलिए जातक सूर्योदय के 6:27-5:26 = 1 घण्टा - 1 मिनट बाद पैदा हुआ।

(*iv*) लग्न के अंश ज्ञात करने का प्रयास

14 अप्रैल को प्रातः 1-29 पर अर्धरात्रि में सूर्यदेव का मेष राशि में प्रवेश हुआ। सूर्य का भोगांश 0 रा/0°-0′ था।

जन्म समय	17 दिन	6 घं.	15 मिनट
सूर्य मेष प्रवेश	14 दिन	1 घं.	29 मिनट
अंतर	3 दिन	4 घं.	46 मिनट

इसलिए सूर्य के अंश होंगे

3 दिन = 3°

4 घ. 46 मिनट

अर्थात् सूर्यदेव 0/3°-11′ के आस पास होंगे। कुण्डली के अनुसार सूर्य के भोगांश हैं 0/3°-11′ लग्न 1° चलने में 4 मिनट लेता है।

सूर्योदय व जन्म समय का अंतर = 1 घं. 1 मिनट

मेष राशि का उदय 3°-11′ पर हुआ, यहाँ ये चलकर 1 घं. 1 मि. में लग्न पहुँचेगा = 15°-11′ के आस-पास।

स्थानीय शुद्धि आदि के कारण कुछ अंतर भी पड़ सकता है परन्तु अंदाजन यही होगा।

कुण्डली मे वास्तव में लग्न की डिग्री कम्पयुटर ने 16°-18′-11′ दी है।

यहाँ बिना पंचांग देखें हमने लग्न, सूर्य तथा चंद्रमा की स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लिया। अन्य ग्रहों की स्थिति के लिए हमें पंचाग का सहारा लेना पड़ेगा। अथवा अपने ज्ञान से यदि मन्दगति ग्रहों का पता हो तो वह भी बैठाए जा सकते हैं।

(*v*) इस जन्मांग से जीवन में होने वाली सभी घटनाओं का पता चल सकता है। परन्तु जातक जानना चाहता है कि उसका भविष्य कैसा है और कब-क्या होगा।

इस प्रश्न के उत्तर के लिए ऋषियों ने कई विधियाँ जैसे विशोंत्तरी दशा, वर्षफल, प्रश्न कुण्डली तथा गोचर आदि का प्रावधान किया है।

पाश्चात्य ज्योतिषियों ने भी बहुत से तरीके निकाल रखे हैं। और नए तरीके ढूँढ़ रहे हैं ताकि सही समय ज्ञात हो सके। अभी वह **प्राथमिक**

दिशाएँ, माध्यमिक दिशाएँ, रैडिक्स विधि, द्वादशामशा विधि (कार्टर द्वारा बताई गई) प्रोग्रैस्ड चार्ट (एलन लिओ द्वारा निर्धारित)। परन्तु भारतीय वैदिक ज्योतिष में ऋषियों ने अति उत्तम विधि बताई हैं। जिन की चर्चा आगे की है।

3. गोचर तथा दशाएँ

गोचर दशाओं द्वारा इशारा की गई घटनाओं के घटित होने का समय बताती है।

दशा भुक्ति जन्म नक्षत्र पर आधारित होती है, जिस नक्षत्र में चंद्रमा होता है वह ही जन्म नक्षत्र होता है तथा उसके स्वामी की दशा ही मिलती है। इसलिए गोचर का अध्ययन भी चंद्रमा की राशि से ही देखा जाता है। गोचर दशा भुक्ति द्वारा प्राप्त होने वाले फलों में संशोधन करता है।

यदि उपरोक्त दोनों बिन्दुओं (दशा तथा गोचर) पर विचार करें तो फल होंगे:

(क) दशा तथा गोचर दोनों शुभ परिणाम व सफलता बताते हैं तो निश्चित फल उत्तम होंगा।

(ख) यदि उनमें से एक अशुभ फल दिखाता हैं तो फल मिश्रित होगा।

(ग) यदि दोनों ही अशुभ फल दर्शाते हैं तो अति कष्टदायक फल होगा।

टिप्पणी

दशाएँ आमतौर पर वही घटना बताती है जिसकी होने की संभावनाएँ होती हैं। उसके लिए देश, काल, तथा पात्र का विचार आवश्यक है। मानो दशा विवाह के लिए अनुकूल समय बताती है, परन्तु जातक की आयु या पारिवारिक रिवाज विवाह नहीं बताते तो कैसे होगा। दशा निर्णायक नहीं होती। इस ही प्रकार गोचर भी पुख्ता तौर पर नहीं कह सकता कि इस समय विवाह होगा।

4. प्रश्न उठता है कि फिर कैसे पता चलेगा?

(*i*) प्रथम प्रश्न है कि क्या जन्मांग में विवाह का प्रावधान है। जिसका निर्णय भाव, भावेश, कारक आदि का अध्ययन करके ही जाना जा सकता है।

(*ii*) देश, काल तथा पात्र का विचार।

(*iii*) दशाक्रम।

(*iv*) गोचर का विचार। क्या गोचर भी दशा के साथ-साथ विवाह का समय बता रहा है?

5. कुछ पारिवारिक तथा व्यवहारिक कारणों से गोचर विचार

5.1 मूर्ति निर्णय

(क) जब कोई ग्रह नई राशि में प्रवेश करता हो।

(ख) उस समय गोचर का चंद्रमा भी किसी न किसी राशि में होगा।

(ग) जन्म कुण्डली में अवस्थित चंद्रमा की राशि से गोचर के चंद्रमा की राशि (ख) तक गणना करें, ऐसी स्थिति का फल नीचे दे रहे हैं।

			चंद्रमा की राशि से गोचर का चंद्रमा (भाव)
(*i*) स्वर्ण मूर्ति	अति उत्तम	पूर्ण	1, 6, 11
(*ii*) रजत मूर्ति	उत्तम	3/4	2, 5, 9
(*iii*) ताम्र मूर्ति	अच्छा	1/2	3, 7, 10
(*iv*) लौह मूर्ति	मध्यम/अच्छा	1/4	4, 8, 12

नोटः नवजात शिशु की कुण्डली में भी इसका विचार होता है। यह पाद/पाए के नाम से जाने जाते हैं। क्रम यही है फल भिन्न है।

(*i*), (*iv*) बहुत खराब होते हैं। परन्तु (*ii*) तथा (*iii*) शुभ (*iii*) सबसे उत्तम (*iv*) सबसे कष्टप्रद।

5.2 शनि की 7½ साल की दशा (साढ़े साती)

सभी इससे डरते हैं तथा इसे अति कष्टदायक मानते हैं। परन्तु ऐसा नहीं पाया जाता है। शनि के गोचर का कई प्रकार से विचार किया जाता है। जैसे–

(क) **अर्धाष्टम शनि**–(लघु कल्याणी) जन्म राशि से चतुर्थ में जब शनि देव गोचर करें।

(ख) **अष्टम शनि**–(कल्याणी) "शनि की ढइया (2½ वर्ष) जब जन्म राशि से अष्टम भाव में शनि गोचर करें।

(ग) **कटंक शनि**—शनि का जन्म राशि से पंचम भाव में गोचर, अर्ध अष्टम शनि से खराब होता है।

(घ) **साढ़े साती** (7½ वर्ष के लिए शनि)—जन्म राशि से द्वादश, जन्म राशि पर तथा द्वितीय भाव में शनि देव का भ्रमण सबसे भयानक माना गया है जिसका पूरा ध्यान दिया जाए।

(ङ) **अंग शनि**—शनि का गोचर 12 भावों में काल पुरुष के प्रति अंग पर उसका प्रभाव पड़ता है।

5.3 शनि भचक्र का पूरा चक्कर 30 वर्ष में लगाता है। एक राशि में शनि देव 2½ वर्ष रहते हैं। उपरोक्त चर्चा पर विचार करें तो देखेंगे जन्म राशि से यदि शनि

(*i*) 3, 6, 11 भावों में गोचर करता है तो शुभफल देता है, अशुभ नहीं।

(*ii*) जब चतुर्थ भाव में आता है, तो 'अर्धाष्टक' के नाम से जाना जाता है और अशुभ फल देता है।

(*iii*) जब पंचम, सप्तम, नवम तथा दशम भाव में जाते हैं तो मध्यम बुरे फल होते हैं।

(*iv*) जब अष्टम भाव में आते हैं तो 'ढइया' कहलाती है, कुछ अधिक कष्टप्रद होते हैं।

(*v*) 'साढ़े साती' 7½ वर्ष का चक्कर जब शनिदेव द्वादश प्रथम तथा द्वितीय भाव से भ्रमण करते हैं तो अत्यन्त कष्टप्रद होते हैं।

5.4 उपरोक्त स्थिति का विचार करने पर शनि देव के प्रथम 'पर्याय' 30 वर्षों में केवल $2\frac{1}{2} \times 3 = 7\frac{1}{2}$ वर्ष ही शुभ होते हैं।

मानव जीवन यदि 90 वर्ष (पूर्णायु) का हो तो (शनि के तीन पर्यायों' में केवल $7\frac{1}{2} \times 3 = 22\frac{1}{2}$ वर्ष ही चैन से या शुभ समय होगा। बाकि जीवन कष्टमय होगा।

किसी-किसी जातक के लिए शनि देव की चतुर्थ पर्याय भी हो सकता है। इस कुल समय को निम्न नाम करण दें।

1. 'प्रथम पर्याय' को "मंगु" कहते हैं, बचपन में स्वास्थय खराब रहें।
2. द्वितीय पर्याय को "पंगु" कहते हैं। इसमें शुभ फल, सफलता, विद्याध्ययन, विवाह, संतान, नौकरी, या व्यापार प्राप्त होना अच्छा है। कुछ कठिनाइयाँ या परेशानी हो सकती है, माता पिता व परिवार को लेकर।
3. तृतीय पर्याय को "कंगु" कहते हैं। कठिनाई, मानसिक चिन्ता, स्वास्थ्य समस्या, संबंधियो की मृत्यु, सभी वृद्ध अवस्था की समस्याएँ हैं।
4. चतुर्थ या अंतिम पर्याय को मरण शनि कह सकते हैं। इसमें मरण कष्टप्रद भी हो सकता है। यदि स्वास्थ्य खराब हो।

5.5 अंग शनि

(*i*) शनि का साढ़े साती का समय, द्वादश प्रथम तथा द्वितीय भाव पर होता है। इसको भी त़ीन भागों में बाँटा जाता है

(क)	प्रथम 2½ वर्ष	शनि सिर अथवा उपर के भाग में
(ख)	द्वितीय 2½ वर्ष	शनि हृदय अथव मध्य शरीर पर
(ग)	तृतीय 2½ वर्ष	टाँगे अथवा नीचे के शरीर पर

एक तमिलऋषि पुल्लियाणी का कहना है–

(एक तमिल पुस्तक में कहा है)

राशि चक्र में चरम (चर), स्थिर तथा उबयम (मुटैबल) राशि होती है। इनका क्रम मेष (चरम) वृष (स्थिरम), अगली मिथुनम (उबयम) आदि चलता है।

इनके अनुसार साढ़े साती चर राशि के लिए बहुत खराब स्थिर राशि में कम अशुभ उबयम (द्वि स्वभाव) के लिए अशुभ नहीं होती।

तमिल ऋषि ने राशियों को दो भागों में बाँटा हैं–

(क) कटकम–कर्क से कुंभ तक (उलटे क्रम से), इसका स्वामी चंद्रमा को बनाया। इन छः राशियों में दो राशि कर्क तथा मेष अधिक कष्टप्रद होती है। क्योंकि शनि कर्क से सप्तम का स्वामी है इसलिए कर्क के लिए ज्यादा कष्टप्रद।

(ख) सिंगम–स्थिर राशियाँ, यह क्रम सिंह से मकर तक है इसमें दो स्थिर राशियाँ सिंह तथा वृश्चिक आती है। इन्हें चर राशि से बाद में कष्ट होगा। सूर्य शनि की शत्रुता के कारण सिंह वाले को ज्यादा कष्ट।

(ग) उबयम राशि वालों को इन दोनों के मुकाबले कम कष्ट होगा।

नोटः इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए पुस्तक श्री यू.एस. पुल्लियाणी की "गोचर फलदीपिका" देखें।

5.6 शनि महाराज के वाहन

वाहन पता लगाने के लिए जब शनि राशि में प्रवेश करें उस समय चंद्रमा गोचर में जिस नक्षत्र में बैठा है देखें। जन्म नक्षत्र से उस नक्षत्र तक गणना करें तथा प्राप्त संख्या को 9 से भाग दे। प्राप्त लब्धि के अनुसार नाम नीचे देखेंः

	फल
1. शनि का वाहन–गधा	बुरा प्रभाव
2. शनि का वाहन–घोड़ा	सफलता
3. शनि का वाहन–हाथी	सुख सम्पदा
4. शनि का वाहन–भैंस	मध्यम फल
5. शनि का वाहन–सिंह	शत्रु नाश
6. शनि का वाहन–गीदड़	शोक प्राप्त हो
7. शनि का वाहन–कौआ	लड़ाई, झगड़ा
8 शनि का वाहन–मोर	लाभ
9. शनि का वाहन–हंस	सुख-सम्पदा

5.7 शनि के 'पर्याय के फल'

लेखक के विचारः पाठक ध्यान दे मानव जीवन में साढ़ेसाती कम से कम व अधिक से अधिक व्यक्तियों के जीवन में तीन बार आती है। तीनों का एक सा प्रभाव नहीं हो सकता। पहले पर्याय में जातक का बचपन, कुमार अवस्था होती है जबकि उसका जीवन अधिक तक माता-पिता पर आश्रित होता है, उसे कष्ट का अनुभव कम होता है यदि उसका अपना

स्वास्थ्य ठीक रहे। दशा खराब हो तो पढ़ाई वगैरा में बाधा। यह सब भी लग्न व चंद्र राशि पर निर्भर करता है।

द्वितीय पर्याय में जातक एक युवा गृहस्थी होगा जिसके आगे पारिवारिक समस्यायें तथा काम काज संबंधित समस्याएँ हो सकती हैं। इस स्थिति में उसे परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। चिन्ता सता सकती है।

तृतीय पर्याय में जातक को प्रौढ़/वृद्धावस्था, संतान को उनके जीवन में स्थापित करने, विवाह आदि कार्यों को लेकर, तनाव वाला जीवन हो सकता है। यहाँ फिर दशाओं पर निर्भर करता है।

5.8 शनि का बारह भावों में भ्रमण (पर्याय फल)

प्रथम भाव/जन्म राशि—साढ़े साती का मध्य भाग होगा। चंद्रमा पर शनि का गोचर स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें उत्पन्न कर सकता है।

द्वितीय भाव—साढ़े साती का अंतिम चरण। उपरोक्त प्रभाव ही अधिक होंगे।

तृतीय भाव—गोचर शुभ होगा। जातक की आयु 5 वर्ष से उपर होगी। वह पाठशाला में प्रवेश पाएगा तथा नए-नए मित्र व साथी बनेंगे। खेल-कूद मस्ती लेने का समय होगा।

चतुर्थ भाव—(अर्धाष्टम शनि) जातक की आयु आठ-दस वर्ष के मध्य होने पर उसकी माँग बढ़ती है पूरी न होने पर कष्ट होता है। खेलकूद में चोट आदि लगने का समय होता है।

पंचम, षष्ठ तथा सप्तम भाव—आयु होगी 11 से 18 वर्ष तक। जिसमें बनने बिगड़ने का अवसर होता है। जातक युवा होने लगता है। पढ़ाई का बोझ, भविष्य की चिन्ता, जीवन में कुछ प्राप्त करने की अभिलाषा आदि के कारण कष्ट।

अष्टम भाव—आयु वर्ग 18 से 21 जीवन में स्थापित होने का समय, भविष्य की चिन्ता, सफलता। असफलता का भय आदि का कष्ट।

नवम, दशम, एकादश भाव—प्रसन्न रहने का समय आयु वर्ग 22 से 28 तक नौकरी-व्यापार की प्राप्ति, विवाह आदि से सम्मान, समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होना शुभ फल। यहाँ पुनः दशाओं पर निर्भर करता है।

द्वादश भाव–साढ़े साती का श्री गणेश समस्यापूर्ण समय। इसके फल पुनः लग्न व चंद्रमा की राशि पर निर्भर करते हैं। अनुभव में देखा शनि के प्रभाव राशि से राशि में भिन्न हो जाते हैं। जातक के जीवन में होने वाली घटनाओं को कोई भी ग्रह अपने पर्याय से बदल नहीं सकता। भाग्य तो प्रारब्ध रुप में प्राप्त हो चुका है। गोचर व दशा उसके होने के समय का ज्ञान देती है। शनि का गोचर भी खराब और अच्छे को अच्छा करता पाया गया है।

नोटः ग्रहों का विभिन्न राशियों में होने का फल जानने के लिए "नवग्रह द्वादश भाव" पुस्तक देंखे।

5.6 बृहस्पति के पर्याय के फल

बृहस्पति 12 वर्ष में एक चक्कर पूरा करता है। एक जातक के जीवन में अधिक से अधिक 5 से 8 तक चक्कर लगाता है। बृहस्पति का हर भाव में गोचर अन्य ग्रहों की भांति फल देता है। शनि की तरह इसका कोई अलग से भयानक प्रभाव नहीं होता।

7.1 सभी ग्रहों का पर्याय एक सामान्य रुप से हो सकने वाली घटना की सूचना देता है। इसको अधिक सरल व उपयोगी बनाने हेतु हमने दोहरा गोचर अर्थात् शनि व गुरु का मिला जुला प्रभाव लेकर होने वाली घटना का पक्का संकेत करने की सरल विधि निकाली है।

हमने देखा जिस भाव पर भी शनि व गुरु का सामूहिक प्रभाव पड़ रहा है उस ही भाव/भावों से संबंधित कुछ घटना होने वाली है। इसका शुभ/अशुभ होना कुण्डली के प्रारब्ध दशाक्रम पर निर्भर करता है।

5.7.2 इसकी सत्यता हम चर्चित कुण्डली (श्री चंद्र शेखर जी) पर लगा कर दर्शाते हैं।

(*i*) 1951 में इन्होंने एम.ए. (राजनीति) पास की, जिस समय इनकी आयु (1951-1927, 24 वर्ष) थी इसका अर्थ है कि गुरु का दूसरा चक्कर पूरा हो रहा है। इनका जन्मकालीन बृहस्पति कुंभ में बैठा है। गोचर का बृहस्पति उस बृहस्पति के ऊपर से गोचर कर रहा है और इनके पंचम भाव तथा लाभ भाव को प्रभावित कर रहा है। बृहस्पति इस समय इनकी जन्म राशि से चतुर्थ व पंचम का गोचर कर रहा था जो कि शुभ फल प्रदाता हुआ।

(*ii*) शनि का पहला चक्कर, उसमें आधे से अधिक अथवा 3/4 भाग पार कर चुका। शनि, सिंह राशि में, चंद्रमा से एकादश (शुभ) तथा लग्न से पंचम भाव (शुभ) में गोचर कर रहा था। तत्पश्चात् कन्या राशि में प्रवेश किया। साढ़े साती शुरु हो गई। शुभ फल पढ़ाई में सफलता प्राप्त हुई। चंद्रमा की राशि से शनि शुभ (योग कारक है) उसी ही समय में राजनीति में आ गए और पार्टी के मंत्री बन गए।

कुण्डली का अध्ययन/विवरण

लग्नेश मंगल तृतीय भाव में उच्च के राहू के साथ, नवमेश गुरु से दृष्ट है। तृतीय भाव के प्रभाव से वह नेतागिरी में आ गया। राहू की दशा में ही वह विद्यार्थियों का नेता बन गया होगा।

1955 में वह पी.एस.पी. के महामंत्री बन गए जिस समय बृहस्पति मिथुन में था नवम व नवमेश को देख रहा था। चंद्रमा से भी नवम भाव में गोचर कर रहा था। साढ़े साती चल रही थी। शनि 2½ साल पूरे कर चंद्रमा के ऊपर भ्रमण कर रहा था। वहाँ से पंचमेश सूर्य को, नवम भाव को देख रहा था। साढ़े साती जातक के लिए शुभ रही। बृहस्पति (नवमेश) की दशा में केतू नवमस्थ का अंतर था, जिसके बाद शुक्र का अंतर आने को था।

दशमांश चक्र में बृहस्पति (चतुर्थेश व सप्तमेश) होकर तृतीय में बैठा है। पंचमेश शनि के साथ। शुक्र (द्वितीयेश व भाग्येश) सप्तम (दशम से दशम) में उच्च का बैठा है। केतू षष्ठ भाव में बैठा है।

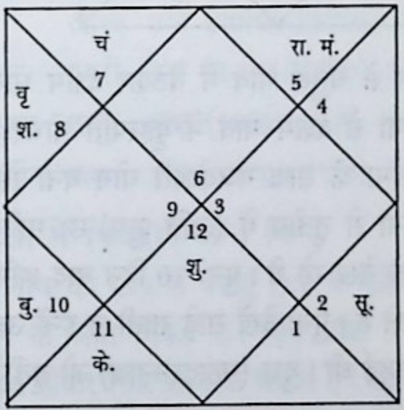

1962 में वह यू.पी से राज्य सभा के लिए चुने गए। बृहस्पति की महादशा में राहू (उच्च का) तृतीय में लग्नेश मंगल के साथ का अंतर था। गोचर में शनि देव मकर राशि में (दशम भाव) तथा बृहस्पति कुंभ में (लाभ भाव में) नवमेश गुरु पर गोचर कर रहा था। कुछ समय पूर्व दशम राशि में होकर गया था। शनि व गुरु दोनों सप्तम भाव (पदोन्नति का भाव) को देख रहे थे। यह गुरु का तीसरा पर्याय था जो लग्न से लाभ भाव व चंद्रमा से पंचम भाव में हो रहा था। शनि का दूसरा पर्याय था जो राशि से चतुर्थ में तथा लग्न से दशम में था।

उनके जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना जब वह भारत के प्रधानमंत्री बने।

गोचर

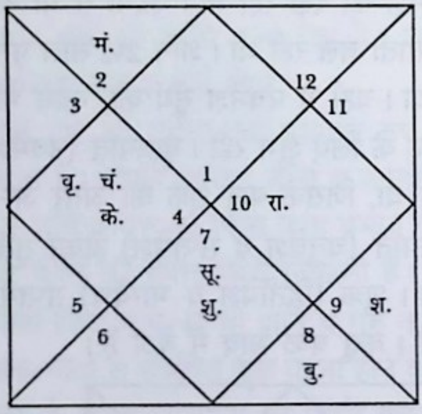

दशा थी
बुध/चंद्रमा/बुध

बृहस्पति लग्न से चतुर्थ भाव में बैठकर दशम भाव को देख रहा है। तथा तुला के चंद्रमा से दशम भाव में/बृहस्पति गोचर में उच्च बलवान हैं तथा गोचर के चंद्रमा के साथ गजकेशरी योग बना रहे हैं। शनि लग्न से नवम भाव में चंद्रमा से तृतीय में (अति शुभ) छः महीने पूर्व शनि (व) थे तथा दशम भाव को देख रहे थे। पुनः 10 दिन बाद शनि दशम भाव (मकर में) प्रवेश करने वाले हैं। पुनः देखें साढ़े साती ने इन्हें उच्च पद दिया। अभी साढ़े साती समाप्त हुई थी। बुध (महादशानाथ) जो तृतीयेश व षष्ठेश होकर तथा चंद्रमा से नवम व द्वादश का स्वामी होकर षष्ठ में है, नीच का है। परन्तु नवमांश में उच्चभिलाषी है। चंद्रमा वर्गोत्तम है।

दशमांश चक्र में बुध लग्नेश होकर पंचम भाव में है। चंद्रमा द्वितीय भाव में बैठा है। चंद्रमा तथा बुध एक दूसरे से केंद्र में है।

शनि का तीसरा पर्याय है शनि तृतीय में गोचर कर रहा है। बृहस्पति का षष्ठ पर्याय है और जातक के दशम भाव (चंद्रमा से) गोचर कर रहा है।

5.9 कुण्डली का विवेचन

इस कुण्डली में शुक्र (स्वग्रही), पुष्कर नवांश में (उत्तम), शनि (पंचम नवमांश में) वर्गोत्तम, लग्न (पंचम नवमांश में), सूर्य (उच्च का) वर्गोत्तम, चंद्रमा (पक्ष बली) वर्गोत्तम, इन ग्रहों की स्थिति जातक के लिए अति शुभ फलदायक थी।

उच्च के वर्गोत्तम सूर्य, पंचमेश का लग्न में बैठना जातक को ऊँची पढ़ाई, तीव्र, बुद्धि, समाज में प्रतिष्ठा देने वाला हुआ। शनि दशमेश वक्री होकर बलवान था, पंचम नवमांश में व वर्गोत्तम होने व अपने परम मित्र शुक्र से परस्पर दृष्टि संबंध बनाए हुए है। शुक्र भी स्वग्रही है तथा पुष्कर नवमांश में है। शुक्र द्वितीयेश (वाक शक्ति व धन का स्वामी) दशम भाव से पंचम में तथा दशमेश से दृष्टि संबंध अति शुभ फल प्रदाता बना। शुक्र सप्तम का स्वामी, दशम से दशम होने के कारण समाज में प्रतिष्ठित पद प्राप्ति दिखाता है।

पुष्कर नवांश

राशि	तत्व	नवांश
मेष, सिंह, धनु	अग्नि	7वाँ (20°00-23°20), 9वाँ (26°40-30°00)
वृष, कन्या, मकर	पृथ्वी	3रा (6-40°-10°00), 5वाँ (13°20-16°40)
मिथुन, तुला, कुम्भ	वायु	6ठा (16°40-20.0), 8वाँ (23°20-26°40)
कर्क, वृश्चिक, मीन	जल	1ला (00°00-3°20), 3रा (6°40-10°00)

5.10 कुण्डली में विद्यमान अन्य बिन्दु

(*i*) बुध नीच का D/1 में परन्तु D/9 में सिंह राशि में अपने उच्च स्थान के अति निकट है। मित्र राशि में है। दशमांश में भी लग्नेश होकर मित्र शनि के घर में है। शनि के नक्षत्र में भी है।

(*ii*) बृहस्पति शत्रु राशि में है। परन्तु अपने नक्षत्र में है। नवमांश में मिथुन राशि में, अपने उच्च के स्थान के अति निकट है।

(*iii*) मंगल लग्नेश होकर तृतीय भाव में नीच के बिन्दु के निकट है। राहू के साथ राहू के नक्षत्र में (राहू उच्च का है) नवमांश में मंगल धनु राशि में है।

पुनः यह भी अपने उच्च के स्थान के अति समीप है।

(*iv*) राहू, उच्च का, स्व नक्षत्र में नवांश में नीच का, लग्नेश मंगल के साथ तृतीय भाव में बैठा है।

(*v*) चंद्रमा, चतुर्थेश, पक्ष बली है। लग्नेश मंगल के नक्षत्र में है। वर्गोत्तम है। चतुर्थेश होकर पंचमेश सूर्य के साथ पारस्परिक दृष्टि संबंध बनाकर राजयोग दे रहा है।

(*vi*) यदि हम चंद्रमा से कुण्डली का अध्ययन/विवेचन करें

(*i*) चतुर्थेश व पंचमेश शनि द्वितीय भाव में लग्नेश शुक्र से परस्पर दृष्टि संबंध—राजयोग।

(*ii*) चंद्रमा दशमेश लग्न में, पक्षबली, सूर्य से सप्तम में (जो एकादशेश होकर उच्च का सप्तम में (दशम से दशम) बैठा है।

(*iii*) तृतीय भाव में उच्च का केतु जिसे द्वितीयेश व सप्तमेश मंगल परस्पर दृष्टि दे रहा है। केतू के स्थान का स्वामी गुरु पंचम भाव में बैठा है।

(*iv*) नवमेश बुध षष्ठ भाव में, द्वादशेश भी है इसलिए विपरीत राजयोग बन रहा है। लग्न से देखें तब भी बुध विपरीत राजयोग बना रहा है।

(*v*) मंगल द्वितीयेश व सप्तमेश नवम भाव में बृहस्पति से दृष्ट है तथा उच्च के राहू के साथ उसके ही नक्षत्र में बैठा है।

5.11 श्री चंद्रशेखर जी की कुण्डली से उनके जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर दशा लगाकर ग्रहों के प्रभाव को देखते हैं।

1.	1951	एम. ए. (राजनीति) पास किया तथा पी.एस.पी. के बलिया जिले के मंत्री बने	बृहस्पति/शनि
2.	1955	पी.एस.पी. के बलिया जिले के मंत्री बने	बृहस्पति/शनि
3.	1962	यू.पी. प्रांत के राज्य सभा के सदस्य बने	बृहस्पति/शुक्र
4.	1964	पी.एस.पी. छोड़कर कांग्रेस पार्टी में गए	शनि/शनि

नोटः देखें दशमेश का अष्टम में बैठना तथा सप्तमेश शुक्र से (जो कि दशम से दशम का स्वामी है) परस्पर दृष्टि संबंध बनाए हैं। परिवर्तन हुआ, प्रदेश को छोड़ अखिल भारतीय पार्टी में आ गए।

5.	10-11-1990	भारत के आठवें प्रधानमंत्री बने	बुध/चंद्रमा/बुध
6.	6-3-1991	त्याग-पत्र प्रधानमंत्री पद से	बुध/चंद्रमा/शुक्र
7.	21-6-1991 तक	परन्तु केयर टेकर प्रधानमंत्री बने रहे। 21 जून को कुर्सी छोड़ दी	
8.	2007	मृत्यु	शुक्र/शुक्र

यहाँ हमने जन्मांग का निर्णय, भावों के बल व प्रभाव, ग्रहों के ऊपर से दिखने वाली स्थिति तथा आंतरिक बल की चर्चा, दशा व गोचर का पूरा प्रयोग व प्रभाव दर्शाने की चेष्टा की है। ताकि घटना का सही-सही भविष्य कथन व समय निर्धारण किया जा सके।

अनुबद्ध VII
इन्दु लग्न की गणना

यह जानने के लिए जातक की आर्थिक स्थिति क्या होगी और वह कब धनार्जन शुरू करेगा, हमें इन्दु लग्न की आवश्यकता होती है।

विधि–

1. सातों ग्रह (सूर्य से शनि तक) अपनी-अपनी कला का योग देते हैं–

ग्रह	सूर्य	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
कला	30	16	8	6	10	12	1

कुल जोड़ = 83

2. लग्न से नवमेश तथा चंद्रमा से नवमेश को निकाल कर उसकी कला नोट करें।
3. दोनों की कलाओं को जोड़ें।
4. जोड़ कर प्राप्त राशि को 12 से भाग दें, शेष को ध्यान दें।
5. शेष की राशि तक चंद्रमा से गिने और जो राशि प्राप्त होगी वह इन्दु लग्न होगा।

शुभ ग्रहों के प्रभाव हों तो जातक बहुत धनवान होता है। यदि वह केन्द्र में भी हो तो और अच्छे प्रभाव होंगे।

जब यहाँ बैठे ग्रह या राशि स्वामी की दशा व अंतर दशा में तथा जब गोचर में वह ग्रह बलवान हो तो जातक की नौकरी लगती है या आय शुरू होगी।

अनुबद्ध VIII
पुष्कर नवांश (पैरा 11.5 (ix))

1. प्रत्येक राशि के दो **पुष्कर नवांश** होते हैं, कुल 12 × 2 = 24 पुष्कर नवांश भाचक्र में होते हैं। यह सभी शुभ नवांश कहलाते हैं, जिनके स्वामी शुभ ग्रह होते हैं तथा यह शुभ फल दाता होते हैं, विशेषतया मुहूर्त में, जन्माँग में, प्रश्न कुण्डली में तथा अन्य सभी मामलों में इनका प्रयोग लाभदायक है।

इन 24 में 3 **पुष्कर नवांश** वर्गोत्तम होते हैं जैसे वृषभ नवांश का 5वाँ, कर्क नवांश का पहला तथा धनु नवांश का 9वां।

जो ग्रह भी इनमें अवस्थित होता है वह शुभ फल प्रदान करता है।

	नवांश	अंश
अग्नि तत्त्व राशियाँ	7वां, 9वां	20° से 23°–20' एवं
(मेष, सिंह तथा धनु)		26°–40' से 30° तक
पृथ्वी तत्त्व राशियाँ	3रा, 5वां	6°–40' से 10° एवं
(वृष, कन्या तथा मकर)		13°–20' से 16°40'
वायु तत्त्व राशियाँ	6वां, 8वां	16°–40' से 20° एवं
(मिथुन, तुला तथा कुंभ)		23°–20' से 26°–40'
जल तत्त्व राशियाँ	पहला, 3रा	00–0 से 3°–20' एवं
(कर्क, वृश्चिक एवं मीन)		6°–40' से 10°

2. **पंचम नवांश** (13°-20' से 16°-40') भी महत्त्वपूर्ण होता है। स्थिर राशियों वृष, सिंह, वृश्चिक तथा कुंभ में यह वर्गोत्तम होता है। इसलिए विशेष फलदाता होता है।

अनुबद्ध IX
वर्गों के स्वामियों के नाम

विषम राशियों में				सभी राशियों के लिए		
सप्तमांश (D/7)		दशमांश (D/10)		द्वादशांश (D/12)		
नाम	अंश	नाम	अंश	नाम	अंश	विशेष नाम
क्षार	0 से 4°-17'	इन्द्र	0 से 3°	गणेश	0° से 2°–30'	कुबेर
		अग्नि	3 से 4°-17' 4°-17' से 6°	अश्विनी-कु.	2°–30' से 5°	पतंगा
क्षीर	4°-17' से 8°-34'	यम	6 से 9°	यम	5° से 7°-30'	हाला
				अहि	7°-30' से 10°	किरीट
दधि	8°-34' से 12°-51'	—		—		—
		राक्षस	9° से 12°	गणेश	10° से 12°-30'	विहवाल
		वरूण	12° से 15°	अश्विनी-कु.	12°-30' से 15°	मायवी
आज्या	12°-51' से 17°-08'	—		—		—
		वायु	15° से 18°	यम	15° से 17°-30'	मोहन

विषम राशियों में				सभी राशियों के लिए		
सप्तमांश (D/7)		दशमांश (D/10)		द्वादशांश (D/12)		
नाम	अंश	नाम	अंश	नाम	अंश	विशेष नाम
इक्षुरस	17°-08' से 21°-25'	—		—		
		कुबेर	18° से 21°	अहि	17°-30° से 20°	किन्नर
		इशान	21° से 24°	गणेश	20° से 22°-30'	सर्प
मद्य	21°-25' से 25°-42'	—		अश्विनी-कु.	22°-30' से 25°	इन्द्र
		ब्रह्म (पद्मज)	24° से 27°	यम	25° से 27°-30'	लीला
शुद्ध जल	25°-42' से 30°	अनन्त	27° से	अहि	27°-30' से 30°	कोकिला

सम राशियों में				सभी राशियों के लिए		
सप्तमांश (D/7)		दशमांश (D/10)		द्वादशांश (D/12)		
नाम	अंश	नाम	अंश	नाम	अंश	विशेष नाम
शुद्ध जल	0° से 4°-17'	अनन्त	0 से 3°	गणेश	0 से 2°-3'	कुबेर
		ब्रह्म	3° से 6°	अश्विनी कु.	2°-30' से 5°	पतंगा
मद्य	4°-17' से 8°-34'		—		—	
		इशान	6° से 9°	यम	5° से 7°-30'	हाला
				अहि	7°-30' से 10°	किरीट
इक्षुरस	8°-34' से 12°-51'		—		—	
		कुबेर	9° से 12°	गणेश	10° से 12°-30'	विहवाला
		वायु	12° से 15°	अश्विनी-कु.	12°-30' से 15°	मायावी
आज्या	12°-51' से 17°-08'		—		—	
		वरुण	15° से 18°	यम	15° से 17°-30'	मोहन

सम राशियों में				सभी राशियों के लिए		
सप्तमांश (D/7)		दशमांश (D/10)		द्वादशांश (D/12)		
नाम	अंश	नाम	अंश	नाम	अंश	विशेष नाम
दधि	17°-8' से 21°-25'	—			17°-30'	
		राक्षस	18° से 21°	अहि	17°-30' से 20°	किन्नर
				गणेश	20° से 22°-30'	सर्प
		यम	21° से 24°		22°-30'	
क्षीर	21°-25' से 25°-42'	—		अश्विनी-कु.	22°-30' से 25°	इन्द्र
		अग्नि	24° से 27°	यम	25° से 27°-30'	लीला
क्षार	25°-42' से 30°	—			25°-42' से 27°-30'	
		इन्द्र	27° से 30°	अहि	27° से 30°	कोकिला

❑❑❑

श्री गणेशाय नमः   श्री दुर्गाय नमः   प्रातः कर दर्शनम   श्री सूर्य देवाय नमः   श्री सरस्वत्यै नमः

♓ राशि मीन ♃ स्वामी गुरु
द्विस्वभाव, जल, सम

पू. भाद्रा	1 3°-20'	बृहस्पति
उ. भाद्रा	2 6-40	शनि
	3 10-00	
	4 13-20	
	5 16-40	
रेवती	6 20-00	बुध
	7 23-20	
	8 26-40	
	9 30-00	

♈ राशि मेष ♂ स्वामी मंगल
चर, अग्नि, विषम

अश्विनी	1 3°-20'	केतू
	2 6-40	
	3 10-00	
	4 13-20	
भरणी	5 16-40	शुक्र
	6 20-00	
	7 23-20	
	8 26-40	
कृत्तिका	9 30-00	सूर्य

♉ राशि वृष ♀ स्वामी शुक्र
स्थिर, सम, पृथ्वी

कृतिका	1 3°-20'	सूर्य
	2 6-40	
	3 10-00	
रोहिणी	4 13-20	चंद्रमा
	5 16-40	
	6 20-00	
	7 23-20	
मृगशिरा	8 26-40	मंगल
	9 30-00	

♊ राशि मिथुन ☿ स्वामी बुध
द्विस्वभाव, वायु, विषम

मृगशिरा	1 3°-20'	मंगल
	2 6-40	
आर्द्रा	3 10-00	राहू
	4 13-20	
	5 16-40	
	6 20-00	
पुर्नवसु	7 23-20	बृहस्पति
	8 26-40	
	9 30-00	

♒ राशि कुंभ ♄ स्वामी शनि
स्थिर, वायु, विषम

धनिष्ठा	1 3°-20'	मंगल
	2 6-40	
शतभिषा	3 10-00	राहू
	4 13-20	
	5 16-40	
	6 20-00	
पू० भाद्रा	7 23-20	बृहस्पति
	8 26-40	
	9 30-00	

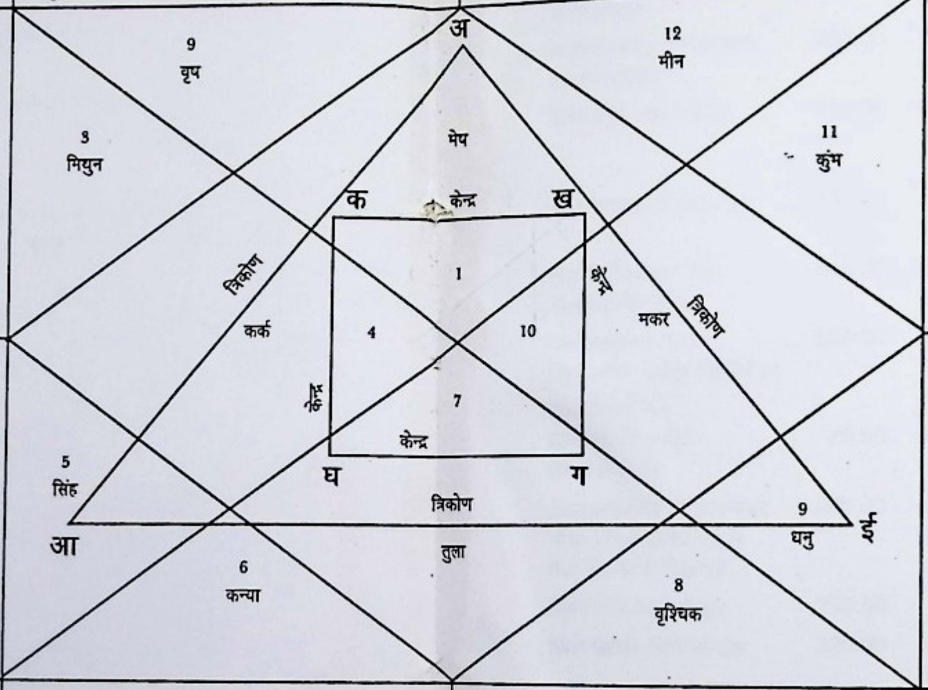

♋ राशि कर्क ☽ स्वामी चन्द्रमा
चर, जल, सम

पुर्नवसु	1 3°-20'	बृहस्पति
पुष्य	2 6-40	शनि
	3 10-00	
	4 13-20	
	5 16-40	
अश्लेषा	6 20-00	बुध
	7 23-20	
	8 26-40	
	9 30-00	

♑ राशि मकर ♄ स्वामी शनि
चर, पृथ्वी, सम

उ. आषाढा	1 3°-20'	सूर्य
	2 6-40	
	3 10-00	
श्रावण	4 13-20	चंद्रमा
	5 16-40	
	6 20-00	
	7 23-20	
धनिष्ठा	8 26-40	मंगल
	9 30-00	

♌ राशि सिंह ☉ स्वामी सूर्य
स्थिर, अग्नि, विषम

मघा	1 3°-20'	के.
	2 6-40	
	3 10-00	
	4 13-20	
पू. फाल्गुनी	5 16-40	शुक्र
	6 20-00	
	7 23-20	
	8 26-40	
उ. फाल्गुनी	9 30-00	सूर्य

♐ राशि धनु ♃ स्वामी गुरु
द्विस्वभाव, अग्नि, विषम

मूल	1 3°-20'	केतू
	2 6-40	
	3 10-00	
	4 13-20	
पू. आषाढा	5 16-40	शुक्र
	6 20-00	
	7 23-20	
	8 26-40	
उ. आषाढा	9 30-00	सूर्य

♏ राशि वृश्चिक ♂ स्वामी मंगल
स्थिर, जल, सम

विशाखा	1 3°-20'	बृहस्पति
अनुराधा	2 6-40	शनि
	3 10-00	
	4 13-20	
	5 16-40	
ज्येष्ठा	6 20-00	बुध
	7 23-20	
	8 26-40	
	9 30-00	

♎ राशि तुला ♀ स्वामी शुक्र
चर, वायु, विषम

चित्रा	1 3°-20'	
	2 6-40	मंगल
स्वाति	3 10-00	राहू
	4 13-20	
	5 16-40	
	6 20-00	
विशाखा	7 23-20	बृहस्पति
	8 26-40	
	9 30-00	

♍ राशि कन्या ☿ स्वामी बुध
द्विस्वभाव, पृथ्वी, सम

उ. फा.	1 3°-20'	सूर्य
	2 6-40	
	3 10-00	
हस्त	4 13-20	चंद्रमा
	5 16-40	
	6 20-00	
	7 23-20	
चित्रा	8 26-40	मंगल
	9 30-00	

अहिंसकस्य दान्तस्य धर्मार्जितधनस्य च।
सर्वदा नियमस्थस्य सदा सानुग्रहा ग्रहाः।।

(फलदीपिका अध्याय 26 श्लोक 50)

[illegible]ो व्यक्ति किसी की [illegible] नहीं चाहता, संयमी होता है (अपने मन [illegible] आचरण पर संय[illegible]ता है) तथा धर्म मार्ग से धनोपार्जन करता [illegible] सर्वदा शास्त्रोप[illegible] नियमों का पालन करता है, उस पर ग्रह [illegible]नुग्रह करते हैं।

Whom to Grahas Help

A Person who wishes no harm to anybody, is self restrained, earns wealth by fair means and follows the principles laid down by scriptures, is always gratified by the planets.

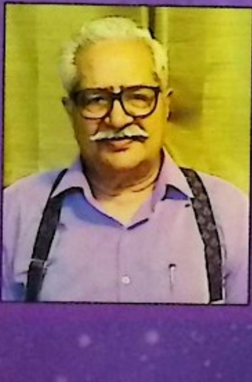

महेन्द्रनाथ केदार-पूर्व राष्ट्रीय उपप्रधान आइकास चेन्नई एवं महासचिव भारतीय प्राच्यं एवं सनातन विज्ञान संस्थान (पंजीकृत) दिल्ली।

आपके अनेकों शोध पत्र विभिन्न ज्योतिषीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं, आप एक अनुभवी प्राध्यापक के रूप में सम्मानित हैं आपके द्वारा अनेकों पुस्तकों की रचना एवं प्रकाशन हुआ है।

ISBN 80-86089-06-03
Price: ₹ 400.00